मुहर्रमुल हराम ता रबीउ़ल आख़िर (1442 हिजरी के) 4 माह के इस्लाही मौज़ूआ़त पर 20 बयानात



इस्लामी बयानात

(जिल्द : 1)

इस्लामी बहनों के लिए

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दावते इस्लामी)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पेहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिए اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रेहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़्यादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (यानी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइए ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

मजलिसे तराजिम हिन्द (दावते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़हा और सतर नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइए।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं!!!

...राबिता :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ू = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

मोहर्रमुल हराम से रबीउल आख़िर तक (1442 हिजरी के) 4 माह के इस्लाही मौज़ूआत पर 20 बयानात



इस्लामी बयानात

(जिल्द : 1)

इस्लामी बहनों के लिए

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दावते इस्लामी)

(शोबए बयानाते दावते इस्लामी)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना, दावते इस्लामी (हिन्द)

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

नाम किताब : इस्लामी बयानात (जिल्द : 1)

सफ़ह़ात : 464

पेहली बार : मोह़र्रमुल ह़राम 1442 (Sep-2020)

तादाद : 2100

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दावते इस्लामी)

नाशिर : मक्तबतुल मदीना दावते इस्लामी (हिन्द)

तस्दीक़नामा

तारीख़ : 10-06-2020 ह़वाला नम्बर : 244

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْن

तस्दीक़ की जाती है कि किताब **इस्लामी बयानात (जिल्द : 1)** (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिया इ़बारात, और फ़िक़्ही मसाइल वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दावते इस्लामी)

10-06-2020

www.dawateislami.net. E-mail : hindi book@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं ।

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इजतिमाअ़ में बयानात का शिडयूल

(4 माह : मोहर्रमुल हराम ता रबीउ़ल आख़िर 1442 हि. / सितम्बर ता दिसम्बर 2020 ई. के बयानात)

हफ़्ता	मुतवक़्क़ेअ़ इस्लामी तारीख़	ईसवी तारीख़	बयान का नाम	सफ़हा
पेहला हफ़्ता	यकुम मोहर्रमुल हराम	19 अगस्त	दुख्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही	
दूसरा हफ़्ता	7	26	इमामे हुसैन की इ़बादात	
तीसरा हफ़्ता	14	2 सितम्बर	वक़्त की अहम्मिय्यत	
चौथा हफ़्ता	21	9	मक़ामे सहाबा व अहले बैत	
पांचवां हफ़्ता	28	16	इस्लाम मुकम्मल ज़ाबितए ह़यात है	
पेहला हफ़्ता	5 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र	23	मुआशरे की रुसूमात	
दूसरा हफ़्ता	12	30	उम्मते मुस्त़फ़ा की ख़ुसूसिय्यात	
तीसरा हफ़्ता	19	7 अक्तूबर	आला ह़ज़रत का तसव्वुफ़	
चौथा हफ़्ता	26	14	तबर्रुकात की बरकतें	
पेहला हफ़्ता	4 रबीउ़ल अव्वल	21	आक़ा करीम की उम्मत से मह़ब्बत	
दूसरा हफ़्ता	11	28	कमालाते मुस्त़फ़ा	
तीसरा हफ़्ता	18	4 रबीउ़ल अव्वल	इमाम मालिक का इ़श्क़े रसूल	
चौथा हफ़्ता	25	11	इमदादे मुस्त़फ़ा	
पेहला हफ़्ता	2 रबीउ़ल आख़िर	18	अम्बियाए किराम की नेकी की दावत	
दूसरा हफ़्ता	9	25	ग़ौसे पाक का ख़ानदान	
तीसरा हफ़्ता	16	2 दिसम्बर	औलियाए किराम के पाकीज़ा औसाफ़	
चौथा हफ़्ता	23	9 दिसम्बर	अवरादो वज़ाइफ़ की बरकतें	

www.dawateislami.net

इजमाली फ़ेहरिस्त

नम्बर शुमार	बयान का नाम	सफ़ह़ा नम्बर
1	बयानात का शिडयूल	4
2	इजमाली फ़ेहरिस्त	5
3	किताब पढ़ने की निय्यतें	6
4	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	7
5	पेशे लफ़्ज़	9
6	दुख्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही	11
7	इमामे हुसैन की इबादात	33
8	करबला वालों के करीमाना अन्दाज़	52
9	यज़ीद का बुरा किरदार	75
10	वक़्त की अहम्मिय्यत	98
11	मक़ामे सह़ाबा ओ अहले बैत	122
12	इस्लाम मुकम्मल ज़ाबितए ह़यात है	142
13	मुआ़शरे की रुसूमात	165
14	उम्मते मुस्त़फ़ा की ख़ुसूसिय्यात	185
15	आला ह़ज़रत का तसव्वुफ़	208
16	तबर्रुकात की बरकतें	230
17	आक़ा करीम की उम्मत से मह़ब्बत	256
18	कमालाते मुस्त़फ़ा	277
19	इमाम मालिक का इ़श्क़े रसूल	299
20	इमदादे मुस्त़फ़ा के वाक़िआ़त	321
21	अम्बियाए किराम की नेकी की दावत	343
22	ग़ौसे पाक का ख़ानदान	366
23	औलियाए किराम के पाकीज़ा औसाफ़	387
24	अवरादो वज़ाइफ़ की बरकतें	410
25	सह़ाबियात और शौक़े इबादत	430
26	सितम्बर ता दिसम्बर 2020 ई. में इस्लामी बहनों के लिए होने वाले कोर्सिज़	453
27	कोर्सिज की तफ्सील	455
28	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	459
29	मआख़िज़ो मराजेअ़	466

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

''दावते इस्लामी के 10 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 10 निय्यतें''

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ यानी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث:۵۹۴۲)

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार ह़म्दो सलात व तअ़व्वुज़ व तस्मिया से आग़ाज़ करूंगी (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से इस पर अ़मल हो जाएगा)। (2) रिज़ाए इलाही के लिए इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगी। (3) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगी। (4) क़ुरआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगी। (5) जहां जहां **''सरकार''** का इस्मे मुबारक आएगा, वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, जहां जहां किसी सह़ाबी का नाम आएगा, वहां رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और जहां किसी बुज़ुर्ग का नाम आएगा, तो वहां رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पढ़ूंगी। (6) रिज़ाए इलाही के लिए इल्म ह़ासिल करूंगी। (7) अगर कोई बात समझ न आई, तो मदनिय्या इस्लामी बहन से पूछ लूंगी। (8) (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) ''याददाश्त'' वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगी। (9) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगी। (10) किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली, तो किसी मह़रम के ज़रीए नाशिरीन को तह़रीरी तौ़र पर मुत्त़लअ़ करूंगी।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)।

www.dawateislami.net

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तख़रीज
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब[1]

''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना

---

1 .....ता दमे तह़रीर (रबीउ़ल आख़िर 1437 हिजरी) 10 शोबे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने कुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शोबए अमीरे अहले सुन्नत مُدَّظِلُّه (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम। (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

www.dawateislami.net

अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे हाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए। آمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.



इबादत और ता'ज़ीम में फ़र्क़

इबादत का मफ़्हूम बहुत वाज़ेह़ है, समझने के लिये इतना ही काफ़ी है कि किसी को इबादत के लाइक़ समझते हुए उस की किसी क़िस्म की ता'ज़ीम करना **"इबादत"** कहलाता है और अगर इबादत के लाइक़ न समझें तो वोह मह़ज़ **"ता'ज़ीम"** होगी इबादत नहीं कहलाएगी, जैसे नमाज़ में हाथ बांध कर खड़ा होना इबादत है लेकिन येही नमाज़ की त़रह़ हाथ बांध कर खड़ा होना उस्ताद, पीर या मां बाप के लिये हो तो मह़ज़ ता'ज़ीम है इबादत नहीं।

(तफ़्सीर सिरातुल जिनान, पारह 1, अल फ़ातिह़ा, तह़्तुल आयत : 4, 1/47)

www.dawateislami.net

पेशे लफ़्ज़

आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **"दावते इस्लामी"** मुनज़्ज़म और मरबूत़ त़रीक़े से दीन का काम करने वाली तह़रीक है। दावते इस्लामी के तह़्त इस्लामी भाइयों के बारह और इस्लामी बहनों के आठ मदनी काम दावते दीन फैलाने के बड़े अहम ज़राएअ़ हैं। हज़ारों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इन मदनी कामों की बरकत से गुनाहों के रास्ते को छोड़ कर राहे हिदायत पर गामज़न हुवे हैं। इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के इन मदनी कामों में से एक अहम मदनी काम हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه दावते इस्लामी के तह़्त मुल्क व बैरूने मुल्क हज़ारों मक़ामात पर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त का सिलसिला सालों से जारी ओ सारी है। इन हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में लाखों इस्लामी बहनें और इस्लामी भाई शिर्कत करते हैं। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के लवाज़िमात में से एक अहम जुज़ बयान भी है। येह बयानात अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या में **शोबए बयानाते दावते इस्लामी** के तह़्त तय्यार होते हैं। अब तक इस शोबे में हफ़्तावार और दीगर इजतिमाआ़त के लिए 475 से ज़ाइद बयानात तय्यार हो चुके हैं।

मर्कज़ी मजलिसे शूरा की हिदायात के मुत़ाबिक़ इस्लामी बहनों के बयानात पेहले ही किताबी सूरत में शाएअ़ कर दिए जाते हैं। इस सिलसिले में सिने 1441 हिजरी के तमाम बयानात उर्दू ज़बान में तीन जिल्दों बनाम **"इस्लामी बयानात (जिल्द 1, 2 और 3)"** की सूरत में शाएअ़ हो चुके हैं। सिने 1442 हिजरी के पेहले चार माह के बयानात का मजमूआ़ आप के हाथों में हैं। इस में 17 बयानात हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त के हैं जबकि इस्लामी बहनों की फ़रमाइश पर 3 इज़ाफ़ी बयानात भी मजमूए़ का ह़िस्सा हैं।

www.dawateislami.net

शाएअ़ होने वाले तमाम बयानात दरजन से ज़ाइद मराहि़ल (मुत़ालआ़, तलाशे मवाद, तरतीब, फ़ॉर्मेशन, शोबा ज़िम्मेदार का फ़ाइनल करना, रुक्ने शूरा ह़ाजी अबू रजब मुह़म्मद शाहिद अ़त्त़ारी और ह़ाजी अबू माजिद मुह़म्मद शाहिद अ़त्त़ारी मदनी से तन्ज़ीमी तफ़्तीश, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के मुफ़्ती साहि़ब से शरई तफ़्तीश, मुकम्मल मवाद की तफ़्तीश, तख़रीज और तक़ाबुल, इंग्लिश अल्फ़ाज़ की ऐडीटिंग व मजलिसे तराजिम से चेकिंग, पेज सेटअप और पेराग्राफ़िंग, आयात पेस्टिंग, फ़ाइनल प्रूफ़ रीडिंग, इस्लामी बहनों की आ़लमी मजलिसे मुशावरत से इस की चेकिंग, कोरल पर पेस्टिंग और इस के लवाज़िमात) से गुज़ार कर इशाअ़त के लिए पेश किए जाते हैं । इन बयानात पर अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शोबए बयानाते दावते इस्लामी के सात इस्लामी भाइयों ने काम किया, बिल ख़ुसूस मुह़म्मद ह़ामिद सिराज अ़त्त़ारी मदनी, मुह़म्मद जान रज़ा अ़त्त़ारी मदनी, अ़ब्दुल जब्बार अ़त्त़ारी मदनी, मुह़म्मद मुन्ज़िम अ़त्त़ारी मदनी और ह़फ़ीज़ुर्रह़मान अ़त्त़ारी मदनी زَادَهُمُ اللّٰهُ عِلْمًا ने ख़ूब कोशिश की ।

इस्लामी बहनों में भी इशाअ़ते दीन के लिए मुख़्तलिफ़ मजालिस क़ाइम हैं, इन में से तीन मजालिस (मजलिसे शॉर्ट कोर्सिज़, मजलिसे दारुस्सुन्नह लिल बनात और मजलिसे मद्रसतुल मदीना बालिग़ात) के तह़्त मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ का सिलसिला साल भर जारी रेहता है । सितम्बर ता दिसम्बर 2020 ई. में इस्लामी बहनों के लिए होने वाले मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ का शिडयूल और तफ़्सीलात बयानात के बाद किताब के आख़िर में मुलाह़ज़ा फ़रमाएं ।

शोबए बयानाते दावते इस्लामी
(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

बयान : 1 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** पाक की ख़ातिर आपस में महब्बत रखने वाले जब आपस में मिलें और हाथ मिलाएं और नबी (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें, तो उन के जुदा होने से पेहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

---

1 . . . مُسْنَدُ اَبِيْ يَعْلٰى، مسند ۳/۹۵، حدیث: ۲۹۵۱

2 . . . معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़अ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रेकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। ❖ जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اِنْ شَآءَ الله आज हम आक़ा करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही से मुतअ़ल्लिक़ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ الله عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के वाक़िआ़त सुनेंगी, अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की ख़ैर ख़्वाहिए उम्मत के कुछ वाक़िआ़त भी सुनेंगी, आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का ज़िक्रे ख़ैर भी सुनेंगी, ख़ैर ख़्वाही की तारीफ़ भी सुनेंगी, इस की तरग़ीब पर मुश्तमिल अह़ादीसे त़य्यिबा भी

www.dawateislami.net

सुनेंगी, इस के साथ साथ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه समेत दीगर बुज़ुर्गों के ख़ैर ख़्वाही के कुछ वाक़िआ़त और उन से ह़ासिल होने वाले निकात भी सुनेंगी, ख़ैर ख़्वाही के दुन्यवी और उख़रवी फ़वाइद क्या क्या हैं, येह भी सुनेंगी। **अल्लाह** करे कि हम अव्वल ता आख़िर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल करें।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की एक ख़ानदान की ख़ैर ख़्वाही

एक रात अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मदीनए मुनव्वरा का दौरा फ़रमा रहे थे कि एक ख़ैमे पर नज़र पड़ी, जब क़रीब गए, तो आप को किसी के तक्लीफ़ में मुब्तला होने की आवाज़ आई। उस ख़ैमे के बाहर एक शख़्स बैठा था। आप ने सलाम के बाद उस से ह़ाल पूछा, तो मालूम हुवा ! वोह ख़लीफ़ए वक़्त से ही मिलने आया है, अलबत्ता उसे येह मालूम नहीं था कि ख़लीफ़ए वक़्त उस के सामने खड़े हैं। बहर ह़ाल उस ने बताया कि उस की ज़ौजा उम्मीद से है और बच्चे की पैदाइश का वक़्त क़रीब है। अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने घर तशरीफ़ लाए और अपनी ज़ौजए मोह़तरमा, ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम बिन्ते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से फ़रमाया : क्या तुम सवाब कमाना चाहती हो ? **अल्लाह** पाक ने उसे ख़ुद तुम तक पहुंचाया है। वोह केहने लगीं : बात क्या है ? आप ने बताया : किसी औ़रत के हां विलादत का वक़्त क़रीब है और उस के पास

www.dawateislami.net

कोई भी नहीं है। वोह केहने लगीं : अगर आप राज़ी हैं, तो मैं चलती हूं। फ़रमाया : ठीक है ! तुम ज़रूरी सामान ले लो। जब वहां पहुंचे, तो आप ने अपनी ज़ौजा को अन्दर भेज दिया और ख़ुद उस शख़्स के पास बैठ गए। उस से फ़रमाया : आग जलाओ। उस ने आग जलाई, तो आप ने हांडी उस के ऊपर रख दी। जब हांडी पक गई और उधर बच्चे की विलादत भी हो गई। आप की ज़ौजा (*Wife*) ने अन्दर से आवाज़ दी : ऐ अमीरल मोमिनीन ! अपने साथी को बेटे की ख़ुश ख़बरी दे दीजिए। जैसे ही उस शख़्स ने लफ़्ज़ **"अमीरल मोमिनीन"** सुना, तो डर गया और आ़जिज़ी के साथ थोड़ा सा पीछे हट कर बैठ गया। आप ने फ़रमाया : जैसे बैठे थे, वैसे ही बैठे रहो। फिर आप ने हांडी उठा कर अपनी ज़ौजा को दी और फ़रमाया : ख़ातून को पेट भर कर खिलाओ। फिर आप ने उस शख़्स को भी खाने के लिए दिया और फ़रमाया : कल सुब्ह़ मेरे पास आना, मैं तुम्हारी ज़रूरिय्यात को पूरा कर दूंगा। जब वोह शख़्स सुब्ह़ आप के पास आया, तो आप ने उस के बच्चे का वज़ीफ़ा (ख़र्चा) भी जारी किया और उसे भी माल वग़ैरा अ़ता किया।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने किस त़रह़ एक परेशान ह़ाल की ख़ैर ख़्वाही फ़रमाई, अपनी निगरानी में आग रौशन करवाई, अपने हाथों से हांडी चढ़ाई और खाना तय्यार करवाया फिर ख़ुद ही खाना निकाल कर अपनी ज़ौजए मोह़तरमा के ज़रीए उस औ़रत के लिए भेजा। ह़ालांकि येह वोही फ़ारूक़े आज़म हैं जिन के साए से शैत़ान भागता है।[2]

---

1 . . . التبصرة لابن جوزی، المجلس التاسع والعشرون فی فضل۔۔۔الخ، ۱/۴۲۰

2 . . . بخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن الخطاب، ۲/۵۲۶، حدیث: ۳۶۸۳

www.dawateislami.net

येह वोही फ़ारूक़े आज़म हैं जिन को हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने मुबारक से जन्नती होने की ख़ुश ख़बरी दी है ।[1] येह वोही फ़ारूक़े आज़म हैं जिन के बारे में हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह दुआ फ़रमाई है कि **ऐ अल्लाह** ! उमर बिन ख़त्ताब के ज़रीए इस्लाम को इज़्ज़त अ़ता फ़रमा ।[2] येह वोही फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه हैं जो यतीमों, बे सहारा लोगों की ख़ैर ख़्वाही के लिए रातों को जाग कर दौरा फ़रमाया करते थे । येह वोही फ़ारूक़े आज़म हैं जिन की राए के मुताबिक़ क़ुरआने करीम की कई आयाते मुबारका नाज़िल हुईं ।[3] येह वोही फ़ारूक़े आज़म हैं जिन का फ़रमान है : لَوْمَاتَتْ شَاةٌ عَلٰى شَطِّ الْفُرَاتِ ضَائِعَةً لَظَنَنْتُ اَنَّ اللهَ تَعَالٰى سَائِلِىْ عَنْهَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ अगर नहरे फ़ुरात के किनारे बकरी का बच्चा भी प्यासा मर गया, तो मैं डरता हूं कि **अल्लाह** पाक मुझ से उस के बारे में हिसाब न ले ले ।[4]

سُبْحٰنَ الله ! इतनी बुलन्दो बाला शानो शौकत के बा वुजूद अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه, प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के साथ ख़ैर ख़्वाही और ह़ाजत रवाई फ़रमा रहे हैं । लिहाज़ा अगर हमारी कोई इस्लामी बहन किसी तक्लीफ़ में हो या किसी भी मुआ़मले में उसे हमारी ज़रूरत हो और हम उस की परेशानी (Distress) दूर करने की क़ुदरत भी रखती हों, तो हमें भी अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه की सीरत पर अ़मल करते हुवे अपनी इस्लामी बहन की ख़ैर ख़्वाही करनी चाहिए । अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه की ख़ैर ख़्वाहिए

---

1 . . . بخاری کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن خطاب۔۔۔الخ، ۲/۵۲۵، حدیث: ۳۶۷۹

2 . . . ابن ماجہ، کتاب السنۃ، فضل عمر، باب، ۱/۷۷، حدیث: ۱۰۵

3 . . . تاریخ الخلفاء، ص۹۶؛ الصواعق المحرقۃ، ص۹۹

4 . . . حلیۃ الاولیاء، عمر بن خطاب، ۱/۸۹، رقم: ۱۴۱

www.dawateislami.net

उम्मत के मज़ीद वाक़िआ़त भी हम सुनेंगी लेकिन इस से पेहले आइए ! आप का मुख़्तसर तआ़रुफ़ सुनिए। चुनान्चे,

सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का मुख़्तसर तआ़रुफ़

❖ आप की कुन्यत "**अबू ह़फ़्स**" लक़ब "**फ़ारूक़े आज़म**" और नाम "**उ़मर**" है। ❖ आप के इस्लाम क़बूल करने से मुसलमानों को बेह़द ख़ुशी हुई और उन को बहुत बड़ा सहारा मिल गया, यहां तक कि हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों के साथ मिल कर ह़रमे मोह़तरम में खुल्लम खुल्ला नमाज़ अदा फ़रमाई। ❖ आप इस्लामी जंगों में मुजाहिदाना शान के साथ शामिल हुवे और तमाम मन्सूबा बन्दियों में रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वज़ीरो मुशीर की ह़ैसिय्यत से वफ़ादार साथी बन कर रहे। ❖ आप ने तख़्ते ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ रेह कर जा नशीने मुस्त़फ़ा की तमाम तर ज़िम्मेदारियों को बहुत ही अच्छे अन्दाज़ से सर अन्जाम दिया। ❖ आप मुरादे रसूल थे (यानी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दुआ़ओं की क़बूलिय्यत का नतीजा थे)। ❖ आप का दिल अन्वारे इलाही से ख़ूब रौशन था। ❖ आप अ़क़्लमन्दी और समझदारी के रौशन सूरज थे। ❖ आप की जुरअत व बहादुरी, आ़जिज़ी व सादगी, हिम्मत व मर्दानगी, ह़ौसला व इस्तिक़ामत, दियानत व अमानत, ज़िहानत व फ़त़ानत और सब्र की मिसालें आज भी तारीख़ के सफ़ह़ात में नक़्श हैं। ❖ आप ने अपनी एक एक आ़दत को सुन्नतों के सांचे में ढाल रखा था। अल ग़रज़ ! आप गुफ़्तारो किरदार के ह़क़ीक़ी ग़ाज़ी थे। ❖ बिल आख़िर

www.dawateislami.net

नमाज़े फ़ज्र में एक बदबख़्त ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पर ख़न्जर से वार किया और आप ज़ख़्मों की ताब न लाते हुवे तीसरे दिन शरफ़े शहादत से सरफ़राज़ हो गए । वफ़ात के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की उम्र शरीफ़ 63 साल थी । ❖ हज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप रौज़ए मुबारका के अन्दर अमीरुल मोमिनीन, हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पहलूए अन्वर में दफ़्न हुवे ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरुल मोमिनीन, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की आ़दते मुबारका थी कि हर वक़्त ग़म ख़्वारी फ़रमाते रेहते, सह़राए अ़रब की सख़्त धूप और रात की तारीकी भी मख़्लूक़े ख़ुदा की ग़म ख़्वारी से आप को न रोक सकी । आप की सीरत के कई ऐसे वाक़िआ़त मिलते हैं जिन में आप ने मख़्लूक़े ख़ुदा की देखभाल करते हुवे उन के मुख़्तलिफ़ मसाइल को ह़ल फ़रमाया । आइए ! इसी त़रह़ के कुछ वाक़िआ़त सुनती हैं । चुनान्चे,

भूके बच्चों वाली ख़ातून की ख़ैर ख़्वाही

मन्क़ूल है कि एक बार ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपने ख़ादिम, ह़ज़रते अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के साथ रात के वक़्त मदीने शरीफ़ का दौरा फ़रमा रहे थे । एक ख़ातून अपने बच्चों के साथ अपने घर में मौजूद थी, जो रात के वक़्त अपने बच्चों को बेहलाने के लिए हंडिया में पानी डाल कर चूल्हे पर चढ़ाए बैठी थी । ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उस की इस त़रह़ ख़ैर ख़्वाही फ़रमाई कि अपने कान्धों पर खाने का सामान ले कर आए,

1 . . . الرّیاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ، ۱/۲۸۵-۴۰۸-۴۱۸، ملخصاً وملتقطاً

www.dawateislami.net

अपने हाथों से पका कर उस ख़ातून के बच्चों को खिलाया, जब तक वोह बच्चे सो न गए आप वहीं रहे, बादे अज़ां आप तशरीफ़ ले आए।[1]

माज़ूर, नाबीना, बूढ़ी औ़रत की मदद

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से रिवायत है : एक बार रात के वक़्त ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْه अपने घर से निकले, तो ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللهُ عَنْه ने उन्हें देख लिया और चुपके चुपके उन का पीछा करने लगे कि देखूं अमीरुल मोमिनीन इस वक़्त कहां जा रहे हैं ? सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه एक घर में दाख़िल हो गए, कुछ देर के बाद बाहर आए और फिर एक और घर में दाख़िल हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللهُ عَنْه ने उस घर को ज़ेह्न में बिठा लिया और सुब्ह़ उस घर में गए, तो देखा कि उस में एक बूढ़ी, पाउं से माज़ूर, नाबीना ख़ातून रेहती है। उस से पूछा : مَا بَالُ هٰذَا الرَّجُلِ يَأْتِيْكَ؟ येह शख़्स तुम्हारे घर में क्यूं आता है ? उस ने कहा : येह शख़्स मेरे पास काफ़ी अ़र्से से आ रहा है, (मैं चूंकि माज़ूर हूं लिहाज़ा) येह मेरे घरेलू काम काज कर देता है, मेरी तकालीफ़ दूर कर देता है।[2]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه में ख़ैर ख़्वाही का कैसा जज़्बा था कि मुसलमानों के अमीर और ख़लीफ़ा होने के बा वुजूद लोगों के काम कर दिया करते थे। अगर हम भी अपना येह ज़ेह्न बना लें कि अपने घरवालों (मसलन वालिदैन, भाई, बहन) और मह़ारिम रिश्तेदारों समेत अपनी किसी भी

1 . . . الکامل فی التاریخ، ۲/۴۵۳ ملخصا

2 . . . حلیۃ الاولیاء، عمر بن الخطاب، ۱/۸۴

www.dawateislami.net

इस्लामी बहन को ख़्वाह उसे जानती हों या न जानती हों, किसी परेशानी में मुब्तला पाएंगी, तो रिज़ाए इलाही और ख़ैर ख़्वाही की निय्यत करते हुवे उस की मदद ज़रूर करेंगी। इस की बरकत से अज्रो सवाब के साथ साथ اِنْ شَآءَ الله एक पुर अम्न मुआ़शरा बनाने में भरपूर मदद मिलेगी।

शैख़ुल ह़दीस, ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक : اَلدِّيْنُ نَصِيْحَةٌ यानी दीन मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही ही है।[1] के तह़्त फ़रमाते हैं : दूसरों का भला चाहना और मुसलमान के साथ ख़ैर ख़्वाही करना। इस के मफ़्हूम में बड़ी वुस्अ़त (कुशादगी) है और ह़क़ीक़त तो येह है कि मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही येह एक ऐसा अ़मले ख़ैर है कि अगर हर मुसलमान इस तालीमे नुबुव्वत को ह़िर्ज़े जान बना कर (यानी बहुत अ़ज़ीज़ समझते हुवे) इस पर अ़मल शुरूअ़ कर दे, तो एकदम मुसलमानों के बिगड़े हुवे मुआ़शरे की काया पलट जाए और मुस्लिम मुआ़शरा आराम व राह़त और सुकून व इत़्मीनान का एक ऐसा गेहवारा बन जाए कि दुन्या ही में जन्नत के सुकून व इत़्मीनान का जल्वा नज़र आने लगे, न कोई मुसलमान किसी मुसलमान के साथ ख़ियानत करेगा, न चुग़ली, ग़ीबत और बोहतान तराशी का मुर्तकिब होगा, न ज़ुल्म के किसी पहलू को अपने गोशए ख़याल में आने देगा, न किसी के बनते हुवे काम में रोड़ा अटकाएगा बल्कि वोह सब का भला चाहेगा और सब के साथ भलाई करेगा, जिस का क़ुदरती नतीजा येह होगा कि लोग भी उस की ख़ैर ख़्वाही और भलाई करेंगे और वोह भी हर नुक़्सान से महफ़ूज़ रहेगा और हमेशा उस का भला होता रहेगा।[2]

1... مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الدین النصیحة، ص۵۱، حدیث: ۱۹۶

2...मुन्तख़ब ह़दीसें, स. 231, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

ख़ैर ख़्वाही की तारीफ़

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ैर ख़्वाही की तारीफ़ करते हुवे फ़रमाते हैं : इस्ति़लाह़ में किसी की ख़ालिस ख़ैर ख़्वाही करना जिस में बद ख़्वाही (बुरा चाहने) का शाइबा (शको शुबा) न हो या ख़ुलूसे दिल से किसी का भला चाहना "**नसीह़त (यानी ख़ैर ख़्वाही)**" है ।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! लफ़्ज़े ख़ैर ख़्वाही अपने मफ़्हूम के एतिबार से आ़म है, मसलन अपने मह़ारिम रिश्तेदारों, अपनी पड़ोसनों और दीगर इस्लामी बहनों के साथ नर्मी व भलाई से पेश आना, उन की माली मदद करना, उन की परेशानी दूर करना, उन्हें कपड़े फ़राहम करना, उन्हें खाना खिलाना, उन्हें आराम व सुकून पहुंचाना, उन की ज़रूरी ख़्वाहिशात को पूरा करना, शरई रेहनुमाई करना या करवा देना, भटकी हुई इस्लामी बहनों को राहे रास्त पर लाना, अल ग़रज़ ! किसी भी त़रह़ से उन के साथ ख़ैर ख़्वाही करना सवाब का काम है लेकिन अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना हमारी ह़ालत येह है कि हम "**या शैख़ ! अपनी अपनी देख**" के तह़्त सिर्फ़ अपने मुआ़मलात सुल्झाने की फ़िक्र में रेहती हैं । ❖ हमारे आस पास कितनी इस्लामी बहनें परेशान ह़ाल हैं, हमें इस का कोई एह़सास नहीं होता । ❖ वोह इस्लामी बहनें जिन से हमारा रोज़ाना वासित़ा पड़ता है, उन में से कितनी ख़ुश दिली से और कितनी परेशान चेहरों से हमें मिलती हैं, हमें इस की कोई फ़िक्र नहीं । ❖ हमारी जानने वालियों में से कितनी इस्लामी बहनें क़र्ज़ों में जक्ड़ी हुई हैं बल्कि ख़ानदान में हमारे कितने मह़रम रिश्तेदार ग़ुर्बत व इफ़्लास की चक्की में पिस रहे हैं, हमें इस की कोई

1...मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 557

www.dawateislami.net

ख़बर नहीं । ❖ हमारी पड़ोसनों को दो वक़्त का खाना भी नसीब होता है या नहीं, हमें इस से कोई सरोकार नहीं । ❖ पेहनने के लिए मुनासिब कपड़े भी मिलते हैं या नहीं, हमें इस से कोई ग़रज़ नहीं । ❖ कितनी बीमार इस्लामी बहनों की रातों की नींद और दिन का सुकून पैसा न होने की वज्ह से बरबाद हो रहा है, इस त़रफ़ हमारी तवज्जोह ही नहीं होती । आइए ! अपने अन्दर ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा बेदार करने के लिए 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनती हैं । चुनान्चे,

ख़ैर ख़्वाही के फ़ज़ाइल

❖ इरशाद फ़रमाया : लोगों के लिए भी वोही पसन्द करो, जो अपने लिए करते हो और जो अपने लिए ना पसन्द करते हो, उसे दूसरों के लिए भी ना पसन्द करो, जब तुम बोलो, तो अच्छी बात करो या ख़ामोश रहो ।[1]

❖ इरशाद फ़रमाया : दीन मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही ही है । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! किस के लिए ? इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक के लिए, उस की किताब के लिए, उस के रसूल के लिए, मुसलमानों के इमामों और अ़वाम के लिए ।[2]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा आख़िरी ह़दीसे पाक के तह़्त ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह पाक के लिए (बन्दों को) नसीह़त** येह है कि

1 . . . مسند امام احمد، مسند، حدیث معاذ بن جبل، ۸/۲۶۶، حدیث: ۲۲۱۹۳

2 . . . مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الدین النصیحة، ص ۵۱، حدیث: ۱۹۶

www.dawateislami.net

❖ **अल्लाह** पाक की ज़ात व सिफ़ात के मुतअ़ल्लिक़ ख़ालिस इस्लामी अ़क़ीदा रखना। ❖ ख़ुलूसे दिल से उस की इबादत करना। ❖ उस के महबूबों से महब्बत। ❖ दुश्मनों से अ़दावत (दुश्मनी) रखना। ❖ उस के मुतअ़ल्लिक़ अपने अ़क़ीदे ख़ालिस रखना। ❖ **किताबुल्लाह यानी कुरआने मजीद की (बन्दों को) नसीहत** येह है कि ❖ इस के किताबुल्लाह होने पर ईमान रखना। ❖ इस की तिलावत करना। ❖ इस में ब क़दरे ताक़त ग़ौर करना। ❖ इस पर सहीह अ़मल करना। ❖ **अल्लाह पाक के रसूल यानी हुज़ूर** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **की नसीहत** येह है कि ❖ उन्हें तमाम नबियों का सरदार मानना। ❖ उन की तमाम सिफ़ात का एतिराफ़ करना। ❖ जानो माल व औलाद से ज़ियादा उन्हें प्यारा रखना। ❖ उन की इताअ़त व फ़रमां बरदारी करना और ❖ उन का ज़िक्र बुलन्द करना। ❖ आ़म मुसलमानों की नसीहत (यानी ख़ैर ख़्वाही) येह है कि ब क़दरे ताक़त उन की ख़िदमत करना। ❖ उन से दीनी व दुन्यावी मुसीबतें दूर करना। ❖ उन से महब्बत करना। ❖ उन में इल्मे दीन फैलाना। ❖ नेक आमाल की रग़बत देना। ❖ जो चीज़ अपने लिए पसन्द न करे, उन के लिए पसन्द न करना।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही करने के बड़े फ़ज़ाइल हैं, येही वज्ह है कि हमारे बुज़ुर्गों के दिलों में उम्मत की ख़ैर ख़्वाही और ग़म ख़्वारी का जज़्बा कूट कूट कर भरा हुवा था, वोह मुक़द्दस हस्तियां लोगों की ख़ैर ख़्वाही करते और अपने दिलों को सुकून पहुंचाते थे। चुनान्चे,

---

1...मिरआतुल मनाजीह, 6 / 557, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

एक शराबी को सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म की नसीहत

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने एक मरतबा मुल्के शाम के एक बहादुर शख़्स को तलाश किया लेकिन वोह न मिला । आप को बताया गया कि वोह शख़्स शराब का आ़दी हो गया है । आप ने अपने लिखने वाले से फ़रमाया : लिखो ! उ़मर बिन ख़त्ताब की त़रफ़ से फ़ुलां के नाम ! तुम पर सलामती उतरे ! मैं तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** पाक का शुक्र गुज़ार हूं जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, जो गुनाहों को बख़्शने वाला, तौबा क़बूल करने वाला, सख़्त सज़ा देने वाला, बड़े इन्आ़म वाला है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है । फिर आप ने उस के ह़क़ में दुआ़ की : **अल्लाह** पाक उसे बीमारी से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दे, उस के दिल को फेर दे, उस को तौबा की तौफ़ीक़ दे दे । जब नुमाइन्दा वोह ख़त़ ले कर उस के पास पहुंचा । उस शख़्स ने ख़त़ पढ़ा, तो केहने लगा : "मेरा रब्बे करीम गुनाहों को बख़्शने वाला है, यक़ीनन **अल्लाह** पाक ने मेरी मग़फ़िरत का मुझ से वादा फ़रमा लिया है और वोही तौबा को क़बूल करने वाला है, उस की पकड़ बड़ी सख़्त है, **अल्लाह** पाक ने मुझे अपने अ़ज़ाब से डराया है, वोह बड़े इन्आ़म वाला है और उस का इन्आ़म ख़ैरे कसीर है, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है ।" वोह बार बार येही केहता रहा, यहां तक कि ज़ारो क़ित़ार रोने लगा फिर उस ने शराब पीने से सच्ची पक्की तौबा की और उसे बिल्कुल छोड़ दिया । जब ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को येह ख़बर मिली, तो आप ने फ़रमाया : तुम लोग भी इसी त़रह़ किया करो ! उसे सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश करो और उस की त़रफ़ ख़ुसूसी तवज्जोह करो, उस के लिए दुआ़ करो कि **अल्लाह** पाक

www.dawateislami.net

उसे तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और उस के ख़िलाफ़ शैत़ान की मदद न करो।[1]

सख़्त गोई की मिट जाए ख़स्लत नर्म गोई की पड़ जाए आ़दत
वासिता ख़ुल्के मह़बूब का है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 139)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ लोगों की दीनी तरबियत और उन की इस्लाह़ के बारे में कैसी कोशिश फ़रमाते थे। यक़ीनन आप की येह मदनी तरबियत सब के लिए एक मश्अ़ले राह है, आप ख़लीफ़ए वक़्त और बे पनाह मसरूफ़िय्यात के बा वुजूद अपनी बारगाह में आने वाले एक एक फ़र्द की ग़ैर ह़ाज़िरी को फ़ौरन मह़सूस कर लेते फिर उसे नज़र अन्दाज़ नहीं करते बल्कि उस के बारे में पूछते थे ताकि अगर उस के साथ कोई मस्अला (Problem) पेश आ गया हो, तो उसे ह़ल कर के ह़ाजत रवाई और ख़ैर ख़्वाही का सवाब ह़ासिल करें। बिलफ़र्ज़ अगर वोह बीमार हो गया है, तो उस का इ़लाज कराएं ताकि वोह तन्दुरुस्त हो जाए, किसी परेशानी में मुब्तला है, तो उस की परेशानी दूर करें।

मगर आह ! आज हमारी ह़ालत तो येह है कि अपने सगे भाइयों तक की कोई ख़ैर ख़बर नहीं लेतीं, हमारी इस्लामी बहनों में से कोई ग़ैर ह़ाज़िर हो जाए, तो हमें मालूम ही नहीं होता कि वोह कहां है ? और क्यूं नहीं आ रही ? और न ही हम कोशिश करती हैं कि उस की कोई ख़ैरिय्यत मालूम कर लें कि कहीं उस के साथ कोई आज़माइशी मुआ़मला तो दरपेश नहीं आ गया ? कहीं वोह बीमार तो नहीं हो गई ? **काश** ! हम भी सीरते फ़ारूक़ी पर अ़मल करने वालियां बन जाएं।

1... حلیۃ الاولیاء، یزید بن الاصم، ۴/۱۰۲

www.dawateislami.net

आइए ! मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही के ह़वाले से अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मामूलात के बारे में सुनती हैं :

अमीरे अहले सुन्नत और ख़ैर ख़्वाहिए उम्मत

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुसलमानों के साथ ख़ैर ख़्वाही फ़रमाते रेहते हैं, आप को जब किसी के बारे में मालूम होता है कि वोह किसी आज़माइश में मुब्तला या बीमार है, तो उस की इ़यादत करते हैं, बीमारों के लिए शिफ़ायाबी और परेशान ह़ालों की परेशानी दूर होने की दुआ़एं करते हैं, किसी इस्लामी भाई का इन्तिक़ाल हो जाए, तो फ़ोन कर के या सौती (ऑडियो) या सूरी (वीडियो) पैग़ाम के ज़रीए़ उस के रिश्तेदारों से ताज़ियत फ़रमाते, मर्ह़ूम के लिए बख़्शिश व मग़फ़िरत की दुआ़ फ़रमाते और ख़ैर ख़्वाही फ़रमाते हुवे घरवालों को नेकी की दावत देते हैं । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه सिर्फ़ ख़ुद ही मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही नहीं फ़रमाते बल्कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से तरबियत पाने वाले भी उम्मते मुस्लिमा की ख़ैर ख़्वाही के जज़्बे से सरशार होते हैं । जैसा कि :

मह़बूबे अ़त्तार, ह़ाजी ज़मज़म रज़ा अ़त्तारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बच्चों की अम्मी का केहना है : मर्ह़ूम को दुख्यारों की ह़ाजत रवाई और माली इमदाद का बहुत जज़्बा था, ख़ुद तो ग़रीब थे मगर मुख़य्यर इस्लामी भाइयों के ज़रीए़ ज़रूरतमन्दों की माली मुश्किलात ह़ल (Solve) फ़रमा देते और रिया (दिखलावे) से बचने के लिए उसे छुपाने की भी कोशिश फ़रमाते, मुझ से भी छुपाते, अलबत्ता कभी कभी बाहर से मालूम हो जाता ।[1]

1...मह़बूबे अ़त्तार की 122 ह़िकायात, स. 123

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ मर्ह़ूम निगराने शूरा, बुलबुले रौज़ए रसूल, ह़ाजी मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्त़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही में पेश पेश रेहते थे। आप की सीरत की ख़ुश्बूओं से लबरेज़ किताब **"अ़त्त़ार का प्यारा"** के सफ़ह़ा नम्बर 40 पर लिखा है : एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्त़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मेरे उस्तादे मोह़तरम हैं, اَلْحَمْدُ لِلّٰه मैं ने मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में आप से दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ व मख़ारिज के साथ कुरआने करीम पढ़ना सीखा है। आप दूसरों की परेशानियों और दुख दर्द को अपना दर्द समझते थे, दिल में कोई परेशानी हो अगर उन को बता दी जाती तो वोह अपना दुख समझ कर उतना प्यारा मश्वरा इनायत फ़रमाया करते कि ग़मज़दा को तसल्ली हो जाती जबकि ख़ुद कभी किसी से अपनी परेशानी बयान न करते और हरदम दामने सब्रो शुक्र थामे रखते।

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते
नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

(अ़त्त़ार का प्यारा, स. 40)

एक रुक्ने शूरा का बयान है : दावते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा में शामिल होने के कुछ अ़र्से बाद मेरे बच्चों की अम्मी के गले में कुछ इस त़रह़ की तक्लीफ़ हुई कि डॉक्टरों ने ऑप्रेशन तज्वीज़ कर दिया। इस आज़्माइश की वज्ह से मैं काफ़ी परेशान था, इस दौरान मुझे सब से ज़ियादा फ़ोन मर्ह़ूम निगराने शूरा, ह़ाजी मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त्त़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने किए। आप फ़ोन पर फ़रमाते : भाई ! घर में सब की त़बीअ़त कैसी है ? बच्चों की अम्मी की त़बीअ़त कैसी है ? आप मदनी कामों का शिडयूल अपने एतिबार से बनाइएगा, पेहले घर को देखिए, ऑप्रेशन करवाया या नहीं करवाया ? क्या रिपोर्ट आई ? कैसी त़बीअ़त है ? घरवालों का ख़याल रखिएगा। गुफ़्तगू का इख़्तिताम यूं फ़रमाते : मेरे लाइक़ कोई ख़िदमत हो,

www.dawateislami.net

तो ज़रूर इरशाद फ़रमाइएगा, किसी चीज़ की ज़रूरत हो, तो ज़रूर याद फ़रमाइएगा । इस के बाद आप ख़ूब दुआओं से नवाज़ते । हाजी मुश्ताक़ अत्तारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दिलजूई और ख़ैर ख़्वाही के येह मुख़्लिसाना अन्दाज़ आज भी याद आते हैं और आप की शफ़्क़तों की महक आज भी मेरे दिलो दिमाग़ को मेहका देती है ।[1] आइए ! **अल्लाह** पाक से दुआ करती हैं :

जो हैं बीमार सेह़त के त़ालिब — उन पे फ़रमा करम रब्बे ग़ालिब
तुझ से रह़मो करम की दुआ है — या ख़ुदा ! तुझ से मेरी दुआ है
आह ! रन्जो अलम ने है मारा — या इलाही ! मुझे दे सहारा
एक ग़मगीन दिल की सदा है — या ख़ुदा ! तुझ से मेरी दुआ है
मेरी जान आफ़तों से छुड़ाना — मूज़ी अमराज़ से भी बचाना
तुझ को सिद्दीक़ का वासित़ा है — या ख़ुदा ! तुझ से मेरी दुआ है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 136, 137)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मक़्सूज़ की इमदाद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के बारे में बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के वाक़िआत सुन रही थीं । हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ख़ैर ख़्वाहिए उम्मत के लिए हर वक़्त तय्यार रेहते और ख़ैर ख़्वाही का कोई भी मौक़अ़ हाथ से जाने नहीं देते, येही वज्ह है कि इन की पाकीज़ा सीरतों और उ़म्दा अख़्लाक़ की ख़ुश्बूएं आज भी माह़ोल को मेहका रही हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी सोहरवर्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी उम्मते मुस्लिमा के अ़ज़ीम ख़ैर ख़्वाहों में

1...अत्तार का प्यारा, स. 142

www.dawateislami.net

से एक हैं । जूदो सख़ावत, महरो महब्बत और मेहरबानी व शफ़्क़त में आप अपनी मिसाल आप थे, आप के ख़ज़ाने का मुंह ग़रीबों और हक़दार अफ़राद के लिए हर वक़्त खुला रेहता, मोहताज व मिस्कीन आते और आप के दरबार से मालामाल हो कर जाते । एक मरतबा आप अपने कमरे में मसरूफ़े इबादत थे, चन्द दरवेश भी आप के पास बैठे हुवे थे, अचानक आप अपने मुसल्ले से उठे और रक़म की एक थैली हाथ में लिए बाहर निकल गए, दरवेश भी हैरानी के आलम में आप के साथ हो लिए । बाहर आ कर देखा कि चन्द आदमी एक ग़रीब शख़्स को अपने क़र्ज़ की वुसूली के लिए तंग (Disturb) कर रहे हैं और उस शख़्स के पास एक कोड़ी भी नहीं थी । आप ने क़र्ज़ ख़्वाहों को बुला कर फ़रमाया : येह थैली ले लो और जिस क़दर इस शख़्स से लेने हैं, निकाल लो । एक क़र्ज़ ख़्वाह ने अपने क़र्ज़ से कुछ रुपये ज़ियादा लेने चाहे, फ़ौरन उस का हाथ ख़ुश्क हो गया । चिल्ला कर बोला : हुज़ूर मुआफ़ फ़रमाइए ! मैं ज़ियादा लेने से तौबा करता हूं । फ़ौरन उस का हाथ ठीक हो गया । मक़्रूज़ आप को दुआएं देने लगा । आप दरवेशों के साथ वापस तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने मुझे उस शख़्स की मदद के लिए भेजा था, اَلْحَمْدُلِلّٰه ! उस का मतलब पूरा हो गया ।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही कर के उन की मुश्किलात को दूर करते, अपने पास से ख़र्च कर के उन के क़र्ज़ उतरवाते और उन की ख़ुशियों के अस्बाब पैदा करते लेकिन अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना हमारी हालत येह है कि ❖ हम अपना काम करवाने के लिए कभी सगे रिश्तेदारों को

1...फ़ैज़ाने बहाउद्दीन ज़करिय्या मुल्तानी, स. 41

www.dawateislami.net

तक्लीफ़ पहुंचाती हैं, तो कभी किसी पड़ोसन को । ❖ कभी किसी को धमकी दे कर अपना काम निकलवाती हैं, तो कभी धोका दे कर दूसरों की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश करती हैं । ❖ कभी किसी को धोंस धड़ल्ले से क़ाबू करती हैं, तो कभी झूट बोल कर अपनी राह की रुकावटें साफ़ करने की कोशिश करती हैं । बस हमारी येही धुन होती है कि अपना काम होना चाहिए, अगर्चे इस से दूसरी इस्लामी बहन का बना बनाया काम बिगड़ जाए ।

याद रखिए ! दीने इस्लाम इन्सानियत का सब से बड़ा ख़ैर ख़्वाह है और अपने मानने वालों को भी दूसरों से ख़ैर ख़्वाही करने और उन से भलाई करने की तालीम देता है । मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही में मश्ग़ूल रेहना जहां दुन्या व आख़िरत में सआ़दत का बाइ़स है, वहीं रह़मते इलाही के ह़ुसूल का भी ज़रीआ़ है ।

बीमारों की इयादत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बीमार की इ़यादत करना भी ख़ैर ख़्वाही की एक सूरत है । अपनी इस्लामी बहनों और मह़ारिम रिश्तेदारों की बीमारी का एह़सास कर के, दिलजूई और दिलदारी की ख़ातिर अपनी मसरूफ़िय्यात से वक़्त निकाल कर इ़यादत के लिए जाना दीनो दुन्या के कई फ़वाइद का सबब है । सिलसिलए रफ़ाइ़य्या के अ़ज़ीम पेश्वा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद कबीर रफ़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बारे में मन्क़ूल है : वोह गांव के किसी शख़्स की बीमारी का सुनते, तो उस के पास जा कर उस की इ़यादत करते, अगर्चे रास्ता कितना ही दूर क्यूं न होता और (कभी कभार) जाने आने में एक दो दिन लग जाते । कभी यूं भी होता कि आप रास्तों पर

www.dawateislami.net

खड़े हो कर नाबीनाओं का इन्तिज़ार करते, अगर कोई मिल जाता, तो हाथ पकड़ कर उसे मन्ज़िल पहुंचा दिया करते।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गों का त़र्ज़े ज़िन्दगी किस क़दर ख़ूब था कि कहीं किसी के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आते, तो कहीं बीमारों की तीमारदारी किया करते, कहीं मोह़ताजों और परेशान ह़ालों की मदद फ़रमाते, तो कहीं नाबीनाओं की ख़ैर ख़्वाही फ़रमाया करते। ग़रज़ ! येह ह़ज़रात मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने ज़ीशान : "خَيْرُ النَّاسِ اَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ" बेहतरीन वोह है जो लोगों को फ़ाएदा पहुंचाए।[2] की अ़मली तस्वीर हुवा करते थे।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर इस गए गुज़रे दौर में हम सब इस्लामी बहनें एक दूसरे की ग़म ख़्वारी व ग़म गुसारी में लग जाएं, तो आनन फ़ानन दुन्या का नक़्शा ही बदल कर रेह जाए। आज भी अगर ख़ैर ख़्वाही की मुश्कबार हवा हमारे मुआ़शरे में चल पड़े, तो क़त्लो ग़ारतगरी, धोका देही, बद निय्यती, चोरी चकारी, झूट और बद दियानती, ग़ीबत और बद निगाही जैसे हज़ारों नासूर अपनी मौत आप मर जाएंगे। **अल्लाह** पाक हमें नफ़रतें मिटाने और मह़ब्बतें बढ़ाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत, चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से

1...फ़ैज़ाने सय्यिद अह़मद कबीर रफ़ाई, स. 13

2...جامع صغیر، ص۲۴۶، حدیث: ۴۰۴۴

www.dawateislami.net

महब्बत की, उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।[1]

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब सुनने की सआदत हासिल करती हैं। ❖ मेहमान को चाहिए कि अपने मेज़बान की मसरूफ़ियात और ज़िम्मेदारियों का लिहाज़ रखे। ❖ हज़रते मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेहमान को चार बातें ज़रूरी हैं : (1) जहां बिठाया जाए, वहीं बैठे। (2) जो कुछ उस के सामने पेश किया जाए, उस पर खुश हो (येह न हो कि केहने लगे : इस से अच्छा तो मैं अपने ही घर खाया करती हूं या इसी क़िस्म के दूसरे अल्फ़ाज़)। (3) मेज़बान से इजाज़त लिए बिग़ैर वहां से न उठे। (4) जब वहां से जाए, तो उस के लिए दुआ करे।[2] ❖ इसी तरह मेहमान को चाहिए कि घर या खाने वग़ैरा के मुआमलात में किसी क़िस्म की तन्क़ीद करे, न ही झूटी तारीफ़। ❖ मेज़बान भी मेहमान को झूट के ख़तरे में डालने वाले सुवालात न करे, मसलन केहना : **"हमारा खाना कैसा था ? आप को पसन्द आया या नहीं ?"** ऐसे मौक़ेअ पर अगर न पसन्द होने के बा वुजूद मेहमान मुरव्वत में खाने की झूटी

1. . . مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/ ۵۵، حدیث: ۱۷۵
2. . . فتاوی ھندیۃ، کتاب الکراھیہ، باب فی الھدایا والضیافات، ۵/ ۳۴۴

www.dawateislami.net

तारीफ़ करेगी, तो गुनहगार होगी । इस त़रह़ का सुवाल भी न करे कि **"आप ने पेट भर कर खाया या नहीं ?"** कि यहां भी जवाबन झूट का अन्देशा है कि आ़दते कम ख़ोरी या परहेज़ी या किसी भी मजबूरी के तह़्त कम खाने के बा वुजूद इसरार व तकरार से बचने के लिए मेहमान को केहना पड़ जाए कि **"मैं ने ख़ूब डट कर खाया है ।"** ❖ मेज़बान को चाहिए कि मेहमान से वक़्तन फ़ वक़्तन कहे कि **"और खाओ"** मगर इस पर इसरार न करे ।[1] कहीं इसरार की वज्ह से ज़ियादा न खा जाए और येह उस के लिए नुक़्सान देह हो । ❖ मेज़बान को बिल्कुल ख़ामोश न रेहना चाहिए और येह भी न करना चाहिए कि खाना रख कर ग़ाइब हो जाए बल्कि वहां ह़ाज़िर रहे ।[2]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) और 120 सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले **"101 मदनी फूल"** और **"163 मदनी फूल"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिए और पढ़िए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1 . . . فتاوىٰ هندية، كتاب الكراهيه، باب في الهدايا والضيافات، ٥/٣٤٤

2 . . . فتاوىٰ هندية، كتاب الكراهيه، باب في الهدايا والضيافات، ٥/٣٤٥

www.dawateislami.net

बयान : 2 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे क़रीब वोह शख़्स होगा, जो सब से ज़ियादा मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा।[1]

ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : क़ियामत में सब से आराम में वोह होगा जो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के साथ रहे और हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की हमराही नसीब होने का ज़रीआ़ दुरूद शरीफ़ की कसरत है। इस से मालूम हुवा कि दुरूद शरीफ़ बेहतरीन नेकी है कि तमाम नेकियों से जन्नत मिलती है और इस से बज़्मे जन्नत के दुल्हा (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) मिलते हैं।[2] इसी लिए तो मेरे आक़ा आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

ह़श्र में क्या क्या मज़े वारफ़्तगी के लूं **रज़ा**
लोट जाऊं पा के वोह दामाने आ़ली हाथ में

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 104)

1...ترمذی، ابواب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ...الخ، ۲/۲۷، حدیث: ۴۸۴

2...मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 100

www.dawateislami.net

मुख़्तसर वज़ाहत : ऐ रज़ा ! मैदाने ह़श्र में **अल्लाह** और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब अपने उ़श्शाक़ और दीवानों पर फ़ज़्लो करम फ़रमा रहे होंगे, तो उस आ़लम में मेरी बेख़ुदी का आ़लम कैसा होगा ? बस मैं तो सरकारे वाला तबार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामन थाम लूंगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।[1]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़अ़ की मुनासबत और नौइ़य्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है । ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी । ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी । ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी । ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी । ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी । ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और

1... معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

इनफ़िरादी कोशिश करूंगी । ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं । जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मोह़र्रमुल ह़राम का बा बरकत महीना जारी व सारी है, इस मुबारक महीने को शहीदाने करबला और बिल ख़ुसूस इमामे आ़ली मक़ाम, सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه के साथ एक ख़ास निस्बत है, इसी मुनासबत से आज के बयान में हम इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه के तक़्वा व परहेज़गारी, सदक़ा व ख़ैरात, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शानो अ़ज़मत, आक़ा करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आप رَضِیَ اللهُ عَنْه से मह़ब्बत और बिल ख़ुसूस (*Specially*) आप رَضِیَ اللهُ عَنْه की इ़बादत का ज़ौक़ो शौक़, इबादत के वाक़िआ़त और आख़िर में आ़शूरा (10 मोह़र्रमुल ह़राम) के दिन रोज़ा रखने के फ़ज़ाइल के ह़वाले से मदनी फूल सुनेंगी । **ऐ काश** ! हमें सारा बयान अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सुनना नसीब हो जाए । आइए ! सब से पेहले एक वाक़िआ़ सुनती हैं :

मह़ब्बते इमामे हुसैन का अज्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा अ़म्र बिन लैस के सामने उस की तमाम फ़ौज को जम्अ़ किया गया । अ़म्र बिन लैस ने जब अपनी फ़ौज की येह कसरत देखी, तो रो पड़ा और दिल ही दिल में केहने लगा : **ऐ काश** ! इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه की शहादत के वक़्त मैं वहां मौजूद होता और मेरे पास

www.dawateislami.net

इतनी फ़ौज होती, तो मैं अपनी जान, शानो शौकत और सारी फ़ौज को उन पर क़ुरबान कर देता । उस ज़माने के किसी वली को ख़्वाब में हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई । तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अम्र बिन लैस से केह दो कि उस के दिल में जो ख़याल आया है, हमें उस की ख़बर है और हम ने उस के इरादे को क़बूल कर लिया है, **अल्लाह** करीम तुम्हें उस इरादे और उस ख़याल पर अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाए । जब ख़्वाब देखने वाले ने अम्र बिन लैस को येह ख़ुश ख़बरी सुनाई, तो वोह ख़ुशी से झूम उठा और उस की आंखों से आंसूओं की झड़ी लग गई ।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि जो ख़ुश नसीब रिज़ाए इलाही और ख़ुश्नूदिए मुस्तफ़ा के हुसूल की ख़ातिर इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه से अ़क़ीदतो महब्बत का इज़्हार करे, अपने दिल में उन की ख़िदमत करने की तमन्ना बसाए, तो उस ख़ुश क़िस्मत पर प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़रूर करम होता है । जैसा कि बयान कर्दा वाक़िए में अपने एक ग़ुलाम के ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर अम्र बिन लैस के लिए ख़ुश ख़बरी इरशाद फ़रमाई और उस के दिल में आने वाले ख़याल को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमाया । आइए ! सुनती हैं कि अम्र बिन लैस को महब्बते इमामे हुसैन की वज्ह से और क्या मक़ामो मर्तबा मिला । चुनान्चे,

महब्बते इमामे हुसैन की वज्ह से मग़्फ़िरत हो गई

मन्क़ूल है कि अम्र बिन लैस को इन्तिक़ाल के बाद किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : **अल्लाह** पाक ने तेरे साथ क्या मुआ़मला

1...بستان الواعظین، مجلس فی فضل یوم عاشوراء وما جاء فیه، ص ۲۴۰ ملتقطا

www.dawateislami.net

फ़रमाया ? उस ने कहा : **अल्लाह** करीम ने मुझे बख़्श दिया । पूछा : किस सबब से ? उस ने कहा : एक मरतबा मैं पहाड़ से अपने लश्कर की कसरत देख कर ख़ुश हो रहा था, तो मैं ने तमन्ना की, कि "**काश** ! मैं उस वक़्त मैदाने करबला में होता जब यज़ीदी लश्कर इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ और दीगर अहले बैत पर ज़ुल्मो सितम कर रहे थे, तो मैं आप की कुछ ख़िदमत कर सकता ।" रब्बे करीम ने इसी निय्यत के सबब मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी ।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह ह़क़ीक़त है, जो इस्लामी बहन मह़ब्बते अहले बैत और सय्यिदुना इमामे हुसैन की मह़ब्बत को अपने दिल में बसा लेती है, वोह दुन्या व आख़िरत की बरकतों से ह़िस्सा पा लेती है क्यूंकि अहले बैते अत़्हार से मह़ब्बत करना ऐसा ही है जैसे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करना । अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बत दुन्या व आख़िरत की बे शुमार भलाइयों का सर चश्मा है, यहां तक कि अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बत शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा ह़ासिल होने का ज़रीआ़ है । जैसा कि :

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : जो वसीला ह़ासिल करना चाहे और येह चाहे कि मेरी बारगाह में उस की कोई ख़िदमत हो, जिस के सबब मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूं, उसे चाहिए कि मेरे अहले बैत की ख़िदमत करे और उन्हें ख़ुश करे ।[2]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें भी चाहिए कि अहले बैते अत़्हार और बिल ख़ुसूस सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सीरते

1...मदारिजुन्नुबुव्वत, बाब : नहम, ज़िक्रे हुक़ूक़ आं ह़ज़रत, 1 / 305, मुलख़्ख़सन
2...बरकाते आले रसूल, स. 110

www.dawateislami.net

तय्यिबा के रौशन पहलूओं पर अमल करें, इन मुक़द्दस हस्तियों का ख़ूब ख़ूब अदब किया करें, इन से दिलो जान से महब्बत करें क्यूंकि आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़राते हसनैने करीमैन से बे पनाह महब्बत फ़रमाते थे। चुनान्चे,

हज़राते हसनैने करीमैन से महब्बत

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा, तो हज़राते हसनैने करीमैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गोद में खेल रहे थे। मैं ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! क्या आप इन से महब्बत करते हैं ? नानाए हसनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं इन से महब्बत क्यूं न करूं ? जबकि येह मेरे दो फूल हैं जिन की महक मैं सूंघता हूं।[1]

किस ज़बां से हों बयां इज़्ज़ो शानो अहले बैत
मद्ह गोए मुस्तफ़ा है मद्ह ख़्वाने अहले बैत
मुस्तफ़ा इज़्ज़त बढ़ाने के लिए ताज़ीम दें
है बुलन्द इक़्बाल तेरा दूदमाने अहले बैत

(ज़ौक़े नात, स. 100)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रब्बे करीम ने हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه को बहुत सी ख़ुसूसिय्यात और बड़ी शानों से नवाज़ा था, आप رَضِیَ اللهُ عَنْه की इबादतो रियाज़त, तक़्वा व परहेज़गारी के वाक़िआत सुनने से पेहले आइए ! आप का मुख़्तसर ज़िक्रे ख़ैर और तआरुफ़ (Introduction) सुनती हैं। चुनान्चे,

1...معجم کبیر، ۴/۱۵۵، حدیث: ۳۹۹۰

www.dawateislami.net

मुख़्तसर तआ़रुफ़

❖ ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की विलादत 5 शाबान, 4 हि. को मदीना शरीफ़ में हुई। ❖ आप का नाम नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने "**हुसैन**" और "**शब्बीर**" रखा। ❖ ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की कुन्यत "**अबू अ़ब्दुल्लाह**" और लक़ब "**सिब्तु रसूलिल्लाह**" और "**रैह़ानतुर्रसूल**" है। ❖ ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जन्नती नौजवानों के सरदार हैं।[1] ❖ नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के कान में अज़ान दी।[2] ❖ ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ निहायत सख़ी और नेक ख़स्लत थे। ❖ ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने कई ह़ज पैदल किए थे। ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने मदीने शरीफ़ से पैदल चल कर 25 ह़ज किए।[3] ❖ ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अपने वालिदे माजिद, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से इ़ल्मे दीन का बेश बहा ख़ज़ाना पाया। ❖ ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की इ़ल्म से भरपूर गुफ़्तगू ऐसी दिलकश होती थी कि लोगों कि येह ख़्वाहिश होती कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ामोश न बैठें बल्कि इ़ल्मो ह़िक्मत के मदनी फूल लुटाते ही रहें। ❖ ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने जद्दे करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم, अपने वालिदे मोह़तरम, वालिदए मोह़तरमा और अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से अह़ादीस सुनीं और रिवायत

1...سیر اعلام النبلاء، الحسین الشہید...الخ، ۴/ ۴۰۲ ـ ۴۰۴ ملتقطا

2...کنز العمال، حصہ: ۱۲، ۸/ ۲۵۲، حدیث: ۳۵۹۹۳

3...اسد الغابۃ، رقم: ۱۱۷۳، الحسین بن علی، ۲/ ۲۸ ماخوذا

www.dawateislami.net

कीं । ❖ हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का मुस्तक़िल इल्मी हल्क़ा मस्जिदे नबवी में लगता, जिस में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ लोगों को फ़िक़्ही मसाइल से आगाह फ़रमाते थे । ❖ हज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शहादत 10 मोहर्रमुल हराम 61 हिजरी को मैदाने करबला में हुई ।

क्या बात **रज़ा** उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और हसन फूल

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 79)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

इमामे हुसैन की इबादत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सीरते त़य्यिबा के रौशन पहलूओं से मालूम हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हर वस्फ़ में अपनी मिसाल आप थे । येह औसाफ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को अपने ही घर से तरबियत में मिले थे क्यूंकि बच्चे की तरबियत का सब से पेहला मक्तब (स्कूल) उस का घर होता है, बच्चे के सब से पेहले उस्ताद, वालिदैन होते हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का घराना वही व इल्हाम का मर्कज़ और इल्मो इरफ़ान का चश्मा था, आप का घराना रश्के काइनात और मर्कज़े तजल्लियात था, आप का घराना इबादतो रियाज़त और सख़ावत का मर्कज़ था, आप का घराना ज़ोहदो तक़्वा और परहेज़गारी का सर चश्मा था, आप का घराना ग़रीबों की ह़ाजत रवाई और ग़म के मारों का सहारा था, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को तो बचपन में तालीमो तरबियत का ऐसा बा बरकत, नूरानी व रूह़ानी माह़ोल मुयस्सर आया कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की गोद से तरबियत मिली, हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ास फ़ैज़ान मिला । येही वज्ह थी कि

www.dawateislami.net

ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इल्मो फ़ज़्ल में यक्ताए ज़माना थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ईसार व तवक्कुल के पैकर थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ शुजाअ़त व बहादुरी में बे मिसाल थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तक़्वा व परहेज़गारी के पहाड़ थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सदक़ा व ख़ैरात के ख़ूगर थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सब्रो शुक्र के पैकर थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ भलाई के कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेने वाले थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इबादतो रियाज़त के शौक़ीन थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की नफ़्ली इबादतो रियाज़त, नफ़्ल नमाज़ों और भलाई के कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेने का तज़किरा मिलता है। आइए ! आप की इबादत के मुतअ़ल्लिक़ 2 रिवायात सुनती हैं। चुनान्चे,

नमाज़ व रोज़े के पाबन्द

1. अ़ल्लामा इब्ने असीर जज़री رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

كَانَ الْحُسَيْنُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ فَاضِلاً كَثِيْرَ الصَّوْمِ وَالصَّلٰوةِ وَالْحَجِّ وَالصَّدَقَةِ وَاَفْعَالِ الْخَيْرِ جَمِيْعِهَا

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कसरत से नमाज़ पढ़ते, रोज़ा रखते, ह़ज करते, सदक़ा व ख़ैरात करते और तमाम भलाई के कामों में ह़िस्सा लेते।[1]

2. आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के बेटे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : मेरे वालिदे गिरामी, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ दिन और रात में हज़ार रक्अ़त नवाफ़िल अदा फ़रमाया करते थे।[2]

1... اسد الغابة، رقم: ۱۱۷۳، الحسين بن علي، ۲/۲۸

2... عقد الفريد، باب من كلام الزهاد وأخبار العباد، ۳/۱۱۴ ملخصا

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का ज़ौक़े इबादत कैसा था । ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रोज़ों की कसरत फ़रमाते थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कसीर नवाफ़िल अदा करते थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कसरत से सदक़ा व ख़ैरात करते थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ नेक आमाल बजा लाते थे, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ह़ज के शौक़ीन थे, अल ग़रज़ ! आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ रब्बे करीम की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी और इबादतो रियाज़त में गुज़ारते और कोई लम्ह़ा (Moment) फ़ुज़ूलिय्यात में न गुज़ारते बल्कि हर वक़्त दिल यादे ख़ुदावन्दी में मसरूफ़ रेहता और ज़बान ज़िक्रे ख़ुदा से मामूर रेहती, गोया कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ उठते बैठते, चलते फिरते, खाते पीते, सोते जागते, गोया हर वक़्त रब्बे करीम का ज़िक्र करते और ख़ुसूसन नमाज़ की अदाएगी का बेह़द ख़याल फ़रमाते और बड़े ज़ौक़ो शौक़ से नमाज़ अदा फ़रमाते क्यूंकि नमाज़ की तालीम तो बचपन ही में नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़ासिल हुई थी, येह नबवी तरबियत का ही फ़ैज़ान था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़र्ज़ नमाज़ों के शैदाई थे, इस के साथ साथ नवाफ़िल की भी बड़ी कसरत फ़रमाते थे ।

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! क़ुरबान जाइए ! नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की इबादतो रियाज़त के ज़ौक़ो शौक़ पर कि जन्नती नौजवानों के सरदार हैं, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बुलन्द मर्तबा सह़ाबी हैं, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अहले बैते मुस्त़फ़ा में शामिल हैं, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ, अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के शहज़ादे हैं, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ, ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के जिगर के टुकड़े हैं, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ दो

www.dawateislami.net

जहां के मालिको मुख़्तार, मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नवासे हैं मगर फिर भी फ़राइज़ के साथ साथ नफ़्ली इबादत की कसरत फ़रमा रहे हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم इबादत और नफ़्ल नमाज़ों की कसरत किया करते थे जबकि दूसरी त़रफ़ हमारा ह़ाल येह है कि फ़र्ज़ नमाज़ों के मुआ़मले में सुस्तियां मुसल्सल बढ़ती जा रही हैं, कानों में अज़ान की आवाज़ आती है मगर हम अपने काम काज का बहाना बना कर या फिर सुस्ती की वज्ह से नमाज़ क़ज़ा कर डालती हैं जबकि गुनाह करने के लिए हमारी सुस्ती फ़ौरन चुस्ती में बदल जाती है। बाज़ तो ऐसी भी मनचली और मुंह फट होती हैं कि जब उन को दीन का दर्द रखने वाली कोई इस्लामी बहन नेकी की दावत दे और नमाज़ें अदा करने की तरग़ीब दिलाए, तो केहती हैं : ''اِنْ شَآءَ الله अगले जुम्आ़ से दोबारा नमाज़ें पढ़ना शुरूअ़ करेंगी'' या ''रमज़ान से बा क़ाइदा नमाज़ों का एहतिमाम करेंगी।'' यूं किसी क़िस्म की शर्म व झिजक किए बिग़ैर बड़ी दिलेरी के साथ مَعَاذَالله इस बात का गोया इक़रार कर रही होती हैं कि हम नमाज़ें तर्क करने का येह कबीरा गुनाह जुम्आ़ के दिन तक या रमज़ानुल मुबारक तक मुसल्सल जारी रखेंगी। शायद येही वज्ह है कि आज हमारे घरों में इत्तिफ़ाक़ नहीं, आपस में प्यार, महब्बत और नर्मी का बरताव ख़त्म होता जा रहा है, आए दिन लड़ाई, झगड़े मामूल बन गए हैं, एक तादाद है जो बे बरकती का रोना रोती नज़र आती है, कहीं वालिदैन अपनी ना फ़रमान औलाद से बेज़ार हैं, तो कहीं भाई भाई या भाई बहन के दरमियान नाचाक़ियां पैदा हो रही हैं।

www.dawateislami.net

बच्चों की अच्छी तरबियत करें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शायद इस की वज्ह येही है कि हम **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर अ़मल छोड़ कर दिन रात उन की ना फ़रमानी वाले कामों में मश्ग़ूल हो गईं, न सिर्फ़ ख़ुद नमाज़ों से दूर हुईं बल्कि हमारे बच्चे और घरवाले भी नमाज़ों से दूर होते जा रहे हैं, हमारे भी अख़्लाक़ अच्छे नहीं हैं और हम अपने बच्चों की भी अच्छी तरबियत नहीं करतीं, न ख़ुद नमाज़ पढ़ती हैं, न अपने बच्चों को नमाज़ों का ज़ेहन देतीं हैं । याद रखें ! वालिदैन पर लाज़िम है कि बच्चों की अच्छी तरबियत करें वरना कल बरोज़े क़ियामत इस के बारे में पूछा जाएगा । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने एक शख़्स से फ़रमाया : अपने बच्चे की अच्छी तरबियत करो क्यूंकि तुम से तुम्हारी औलाद के बारे में पूछा जाएगा कि तुम ने उस की कैसी तरबियत की ? और तुम ने उसे क्या सिखाया ?[1]

इस रिवायत को सामने रखते हुवे याद रखिए ! अगर हम ने अपने बच्चों की इस्लाह़ की कोशिश न की और उन को नमाज़, रोज़े का पाबन्द न बनाया, उन में ह़राम व ह़लाल की तमीज़ न पैदा की, बुराई से बचने और नेकी करने का ज़ेहन उन्हें न दिया, नेक औसाफ़ को उन में परवान न चढ़ाया, बुरी आ़दतों से उन को न बचाया, तो बरोज़े क़ियामत की रुस्वाई के साथ साथ दुन्यावी नुक़्सान येह होगा कि बच्चे बड़े हो कर हमारी बात नहीं मानेंगे, हमें आंखें दिखाएंगे और आए दिन हमारी परेशानियों में इज़ाफ़े

1...شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد و الاھلین، ۶/۴۰۰، حدیث: ۸۶۶۲

www.dawateislami.net

का सबब बनते रहेंगे लेकिन उस वक़्त सिवाए पछतावे के कुछ हाथ नहीं आएगा । इस लिए अभी वक़्त को ग़नीमत समझते हुवे अपने बच्चों की अच्छी परवरिश भी करें और उन की इस्लामी तरबियत भी करें । **अल्लाह** करीम हमारा ह़ामियो नासिर हो । اٰمِیْن

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

तिलावते क़ुरआन का जज़्बा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को कसरत से नवाफ़िल अदा फ़रमाने का शौक़ था, इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को कसरत से तिलावते क़ुरआन करने का भी शौक़ था । आइए ! आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के कसरत से तिलावते क़ुरआन करने के मुतअ़ल्लिक़ सुनती हैं । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : رَاَیْتُ الْحُسَیْنَ یَتَخَتَّمُ فِیْ شَھْرِ رَمَضَان मैं ने देखा "सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रमज़ानुल मुबारक में मुकम्मल क़ुरआने मजीद ख़त्म फ़रमाया करते थे ।"[1]

क़ुरआन के बा अ़मल आ़लिम

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ क़ुरआन के आ़लिमे बा अ़मल, तक़्वा व परहेज़गारी के पैकर, ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाले और साह़िबे सख़ावत थे ।[2]

1... سیر اعلام النبلاء، الحسین بن علی، ۴/۴۱۰

2...शहादते नवासए सय्यिदुल अबरार, स. 473, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

तिलावते क़ुरआन और नमाज़ से महब्बत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यिदुना इमामे हुसैन की क़ुरआने करीम और नमाज़ों से महब्बत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइए कि 9 मोहर्रमुल हराम को जब यज़ीदियों के साथ मसालेहत की उम्मीद ख़त्म हो गई, तो इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने भाई को फ़रमाया कि किसी त़रह़ येह लड़ाई कल तक मुअख़्ख़र हो जाए और आज की रात हमें इबादते इलाही के लिए मिल जाए, तो बेहतर है। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने भाई को इरशाद फ़रमाया : अगर मौक़अ़ मिल जाए, तो आज की रात नमाज़, दुआ़ और इस्तिग़फ़ार में गुज़ारें क्यूंकि मुझे रब्बे करीम की रिज़ा के लिए नमाज़ और तिलावते क़ुरआन से महब्बत है और कसरत के साथ दुआ़ और इस्तिग़फ़ार मेरा मामूल है।[1]

ज़रा सोचिए ! जब हर त़रफ़ दुश्मनों का हुजूम हो, मुसीबतें और आज़माइशें आ रही हों, पीने के लिए पानी न मिल रहा हो, तो हम में से हर एक की तमन्ना येही होगी कि **काश** ! किसी त़रह़ इन मुसीबतों से छुटकारा मिल जाए मगर सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की तमन्ना देखिए कि क्या फ़रमा रहे हैं ! **काश** कि येह रात भी इबादत करने के लिए मिल जाए, येह रात भी तिलावते क़ुरआन के लिए मिल जाए, येह रात भी दुआ़ व मुनाजात के लिए मिल जाए। वाक़ेई येह उसी इबादत का ज़ौक़ो शौक़ था कि मैदाने करबला में इतनी मुसीबतें आने के बा वुजूद भी येह जज़्बा ठन्डा न हुवा और मैदाने करबला में दस दिन कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं की, इबादत से महब्बत का आ़लम येह था कि आख़िरी वक़्त अपना मुबारक सर बारगाहे ख़ुदावन्दी में झुकाया और सजदे की ह़ालत में शहादत को सीने से लगाया।

1...الکامل فی التاریخ، ۳/۴۱۵

www.dawateislami.net

सदक़ा व ख़ैरात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की इबादात के वाक़िआ़त सुन रही थीं । जिस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़राइज़ो वाजिबात के पाबन्द होने के साथ साथ कसरत से नफ़्ल नमाज़ें अदा किया करते थे, इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ कसरत से नफ़्ली सदक़ा व ख़ैरात करते, ग़रीबों और मिस्कीनों की मदद करते थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अहले बैत के सख़ी घराने के चश्मो चराग़ थे, इस लिए सख़ावत और राहे ख़ुदा में ख़र्च करने में किसी से पीछे न रेहते, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ज़ात में सदक़ा व ख़ैरात का जज़्बा इस क़दर कूट कूट कर भरा हुवा था कि बसा अवक़ात तो अपनी ज़रूरिय्यात को अपने मुसलमान भाई की ज़रूरत पर क़ुरबान कर दिया करते थे । आइए ! आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के सदक़ा व ख़ैरात करने के बारे में एक वाक़िआ़ सुनती हैं । चुनान्चे,

करीम हो तो ऐसा

एक मरतबा एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अपनी तंगदस्ती और फ़क़्रो फ़ाक़े की शिकायत की । आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : थोड़ी देर बैठ जाओ ! हमारा वज़ीफ़ा आने वाला है, जैसे ही वज़ीफ़ा पहुंचेगा, हम आप को रुख़्सत कर देंगे । अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की त़रफ़ से एक एक हज़ार दीनार की पांच थैलियां आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की बारगाह में पेश की गईं । क़ासिद ने अ़र्ज़ की : सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने माज़िरत की है कि येह थोड़ी सी रक़म है, इसे क़बूल फ़रमा कर ग़रीबों में तक़्सीम फ़रमा दीजिए । ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने सारी रक़म उस ग़रीब आदमी के ह़वाले कर दी और उस से माज़िरत फ़रमाई कि आप को इन्तिज़ार करना पड़ा।[1]

भूके रेहते थे ख़ुद, औरों को खिला देते थे
कैसे साबिर थे मुह़म्मद के घराने वाले

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा वाक़िए से दो मदनी फूल ह़ासिल होते हैं : **एक मदनी फूल** तो येह ह़ासिल हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सदक़ा व ख़ैरात करने और ग़रीबों, तंगदस्तों, मोह़ताजों और ह़ाजतमन्दों की मदद करने के आ़दी थे, जैसा कि अभी हम ने सुना, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने सारी रक़म फ़ौरन उस ग़रीब व मोह़ताज को अ़त़ा फ़रमा दी। हमें भी सदक़ा व ख़ैरात करने की आ़दत बनानी चाहिए। अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना हम राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से हिचकिचाती हैं और सदक़ा व ख़ैरात करने में सुस्ती करती हैं, अगर कोई ह़ाजतमन्द इस्लामी बहन आ भी जाए, तो बहाने तराशते हुवे उस की मदद से कतराती हैं और अगर कभी किसी की मदद करने की तौफ़ीक़ मिल भी जाए, तो हुब्बे जाह और रियाकारी की आफ़त में मुब्तला हो जाती हैं।

याद रखिए ! सदक़ा व ख़ैरात करने से ब ज़ाहिर तो माल में कमी वाक़ेअ़ होती है लेकिन ह़क़ीक़त में बरकत ही बरकत होती है। जैसा कि :

सदक़ा देने से माल कम नहीं होता

हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : مَانَقَصَ مَالٌ مِنْ صَدَقَةٍ सदक़ा देने से माल कम नहीं होता।[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

1...کشف المحجوب، باب فی ذکر آئمتہم من اہل البیت، ص۷۷
2...معجم اوسط، من اسمہ احمد، ۱/۶۱۹، حدیث: ۲۲۷۰

www.dawateislami.net

दूसरा मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के वाक़िआ़त से हमें **दूसरा मदनी फूल** येह मिला कि सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ आ़जिज़ी व इन्केसारी के पैकर थे, तभी तो थोड़ी सी ताख़ीर होने पर उस शख़्स से मुआ़फ़ी मांगी, ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के लिए मुआ़फ़ी मांगना ज़रूरी नहीं था मगर फिर भी मुआ़फ़ी मांगी जबकि अगर हम अपनी ह़ालत पर ग़ौर करें, तो आ़जिज़ी व इन्केसारी तो दूर की बात, हम ग़लतियां (Mistakes) करने के बा वुजूद भी टस से मस नहीं होतीं और हटधर्मी करते हुवे यूं केहती सुनाई देती हैं कि जो हम से झगड़ा करेगी, हम देख लेंगी उसे, जो हमें एक बात सुनाएगी, हम उसे दस सुनाएंगी, जो हमें तक्लीफ़ पहुंचाएगी, हम उस का जीना ह़राम कर देंगी वग़ैरा वग़ैरा। जबकि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم तो खुद से बद तमीज़ी करने वालों के साथ भी हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आते, हमारे बुज़ुर्गाने दीन तो ग़लती न होने के बा वुजूद भी मुआ़फ़ी मांग लेते, हमारे बुज़ुर्गाने दीन तो गालियां बकने वालों को भी दुआ़एं देते थे, हमारे बुज़ुर्गाने दीन तो दिल आज़ारियां करने वालों के साथ भी अ़फ़्वो दरगुज़र से काम लेते थे और दूसरी त़रफ़ हम हैं कि दूसरी इस्लामी बहनों की दिल आज़ारियां करती हैं, एक तादाद है जो दूसरी इस्लामी बहनों को तक्लीफ़ें देती है, दूसरी इस्लामी बहनों की ग़ीबतें करना हम में आ़म है, नाह़क़ दूसरों को सताने के वाक़िआ़त हम में बहुत हैं, दूसरों की चीज़ें नाह़क़ दबा लेना, क़ब्ज़ा कर के बैठ जाना येह भी हम में पाया जाता है, दूसरी इस्लामी बहनों का मज़ाक़ उड़ाने के मवाक़ेअ़ तलाश करना हम में से कइयों का मामूल है, ह़ालांकि हमें इन सब बातों से दूर रेहना चाहिए, हमें तो चाहिए कि इन बुरी आ़दात (Bad Habits) को छोड़ कर अपने अस्लाफ़ के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे

www.dawateislami.net

अ़फ़्वो दरगुज़र, हि़ल्म व बुर्दबारी, तह़म्मुल मिज़ाजी, तवाज़ोअ़ और इन्केसारी की आ़दत अपनाएं । आ़जिज़ी व इन्केसारी के बड़े फ़ाएदे हैं जबकि तकब्बुर करने और बात बात पर लड़ने वालियों से दूसरी इस्लामी बहनें दूर हो जाती हैं । चुनान्चे,

आ़जिज़ी इख़्तियार कीजिए

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : जो **अल्लाह** करीम के लिए आ़जिज़ी इख़्तियार करे, **अल्लाह** पाक उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाएगा, पस वोह ख़ुद को कमज़ोर समझेगा मगर लोगों की नज़रों में वोह अ़ज़ीम होगा और जो तकब्बुर करे, **अल्लाह** करीम उसे ज़लील कर देगा, पस वोह लोगों की नज़रों में छोटा होगा मगर ख़ुद को बड़ा समझता होगा, यहां तक कि वोह लोगों के नज़दीक ख़िन्ज़ीर से भी बदतर हो जाता है ।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।[2]

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

1... مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب کلام عمر بن الخطاب، ۱۹/۱۴۴، حدیث: ۳۵۶۰۲ ملتقطا

2... مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵

www.dawateislami.net

सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब

आइए ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**101 मदनी फूल**" से सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब सुनती हैं : ❖ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा "**इस्मिद**" है कि येह निगाह को रौशन करता और पलकें उगाता है ।[1] ❖ पथ्थर का सुरमा इस्तिमाल करने में ह़रज नहीं । ❖ सुरमा सोते वक़्त इस्तिमाल करना सुन्नत है ।[2] ❖ सुरमा इस्तिमाल करने के तीन मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : (1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां । (2) कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और उल्टी में दो । (3) तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंखों में लगाइए ।[3] इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَ الله तीनों पर अ़मल होता रहेगा । ❖ अदबो ताज़ीम के जितने भी काम होते, सब हमारे प्यारे करीम आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पेहले सीधी आंख में सुरमा लगाइए फिर उल्टी आंख में ।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) और 120 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन त़लब कीजिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...ابن ماجہ، کتاب التحفہ، باب الکحل بالاثمد، ۴/ ۱۱۵، حدیث: ۳۴۹۷

2...मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 180

3...شعب الایمان، فصل فی الکحل، ۵/ ۲۱۸، حدیث: ۶۴۲۸

www.dawateislami.net

बयान : 3 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं दुरूद की कसरत करता हूं, मैं आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ने के लिए कितना वक़्त मुक़र्रर करूं ? फ़रमाया : जितना चाहो कर लो । उन्हों ने अ़र्ज़ की : चौथाई ? फ़रमाया : जितना चाहो कर लो लेकिन अगर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ोगे, तो बेहतर है । अ़र्ज़ की : निस्फ़ ? फ़रमाया : जितना चाहो पढ़ो मगर ज़ियादा पढ़ोगे, तो बेहतर है । अ़र्ज़ की : तिहाई ? फ़रमाया : जितना चाहो पढ़ो मगर ज़ियादा पढ़ोगे, तो बेहतर है । अ़र्ज़ की : मैं सारा वक़्त आप पर दुरूदे पाक पढ़ता रहूंगा । फ़रमाया : फिर तो येह अ़मल तुम्हारी परेशानियों को किफ़ायत करेगा और तुम्हारी मग़फ़िरत का सबब बन जाएगा ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।[2]

---

1 ... مستدرک، کتاب التفسیر، باب اکثروا علیّ الصلوٰۃ...الخ، ۳/۱۹۸، حدیث: ۳۶۳۱
2 ... معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत हासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! माहे मोहर्रमुल हराम हमारे दरमियान जारी व सारी है। येह महीना हर साल हमें शुहदाए करबला और बिल ख़ुसूस नवासए मुस्तफ़ा, सय्यिदुश्शुहदा, इमामे आ़ली मक़ाम, हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की याद दिलाता है क्यूंकि आज से सदियों पहले 61 हिजरी को तारीख़े इस्लाम में हक़ व बातिल के दरमियान एक

www.dawateislami.net

अ़ज़ीम मारिका पेश आया जिसे **वाक़िअ़ए करबला** के नाम से याद किया जाता है। इस मारिके में शुहदाए करबला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم के इस्तिक़ामत भरे अन्दाज़ ने तमाम अहले ह़क़ को बातिल के सामने डट जाने और ज़रूरत पड़ने पर दीने इस्लाम की ख़ातिर जान का नज़राना पेश करने का सबक़ दिया। अगर सुल्ताने करबला, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ़ली मक़ाम, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ चाहते, तो यज़ीदियों को तबाहो बरबाद कर सकते थे मगर कुदरत के बा वुजूद ख़ून के प्यासों पर भी करम नवाज़ी फ़रमाई और जंग में पहल न की बल्कि आप आख़िरी वक़्त तक उन को समझाते रहे और **अल्लाह** पाक के अ़ज़ाब से डराते रहे। मैदाने करबला में हुज्जत पूरी करने के लिए ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने घोड़े पर सुवार हो कर यज़ीदी लश्कर का रुख़ किया और जो कुछ फ़रमाया उस का हर लफ़्ज़ करम नवाज़ी पर मबनी था। चुनान्चे,

आप ने इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! मेरी बात सुनो और जल्दबाज़ी का मुज़ाहरा न करो, ह़त्ता कि मैं तुम्हें उस चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त न कर लूं कि जो मुझ पर लाज़िम हो चुकी है और अपने आने का उ़ज़्र बयान न कर लूं। पस अगर तुम मेरा उ़ज़्र क़बूल कर लो, मेरी बात की तस्दीक़ करो और मेरे बारे में इन्साफ़ से काम लो, तो तुम इस मुआ़मले में बा मुराद हो जाओगे और तुम से मेरे मुतअ़ल्लिक़ कोई मुवाख़ज़ा (यानी सुवाल) भी न होगा। हां ! अगर तुम मेरा उ़ज़्र क़बूल नहीं करते, तो सुनो ! फिर येह आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाईं :

فَاَجْمِعُوْۤا اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْۤا اِلَیَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿۷۱﴾

(پ۱۱،یونس:۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो तुम अपना काम और अपने शरीकों को जम्अ़ कर लो फिर तुम्हारा काम तुम पर पोशीदा न रहे फिर मेरे बारे में जो कर सकते हो, कर लो और मुझे कोई मोहलत न दो।

www.dawateislami.net

اِنَّ وَلِیِّیَ اللّٰهُ الَّذِیْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۚ وَهُوَ یَتَوَلَّى الصّٰلِحِیْنَ ﴿۱۹۶﴾ (پ۹،الاعراف:۱۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मेरा वाली **अल्लाह** है जिस ने किताब उतारी और वोह नेकों को दोस्त रखता है।

फिर आप ने **अल्लाह** पाक की ह़म्दो सना करने के बाद (उन यज़ीदियों से) फ़रमाया : तुम लोग मेरी निस्बत के बारे में ग़ौर कर लो कि मैं कौन हूं ? क्या तुम्हारे लिए मेरा क़त्ल जाइज़ व दुरुस्त है ? क्या मैं तुम्हारे नबी का नवासा नहीं ? क्या सय्यिदुश्शुहदा, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मेरे वालिद के चचा नहीं ? क्या ह़ज़रते सय्यिदुना जाफ़रे त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मेरे चचा नहीं ? क्या तुम तक मेरे और मेरे भाई से मुतअ़ल्लिक़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह इरशाद न पहुंचा था कि "तुम दोनों नौजवानाने जन्नत के सरदार हो ?" तो अगर तुम मेरी बात की तस्दीक़ करो (तो सुन लो) कि येही ह़क़ है क्यूंकि मैं ने उस वक़्त से झूट नहीं बोला जब से मुझे मालूम हुवा है कि झूट **अल्लाह** पाक को सख़्त ना पसन्द है और अगर तुम मुझे झूटलाते हो, तो ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, अबू सईद, सह्ल बिन साद, ज़ैद बिन अरक़म या अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمْ اَجْمَعِیْن से पूछ लो क्यूंकि इन सब ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से (मेरे मुतअ़ल्लिक़) येह फ़ज़ाइल सुन रखे हैं। क्या मेरी इस नसीह़त में तुम्हारे लिए कोई ऐसी बात नहीं जो तुम्हें मेरा ख़ून बहाने से रोक सके ? फिर आप ने फ़रमाया : अगर तुम्हें मेरी बात में या मेरे मुतअ़ल्लिक़ नबी का नवासा होने में कोई शक हो, तो ख़ुदा की क़सम ! मश्रिक़ो मग़रिब में मेरे सिवा, तुम में या तुम्हारे सिवा किसी और क़ौम में कोई नबी का नवासा मौजूद नहीं। ज़रा बताओ तो सही ! क्या तुम्हें मुझ से अपने किसी मक़्तूल का बदला त़लब करना है ? या मैं ने तुम्हारा माल ज़ाएअ़ कर दिया है कि उस के बदले माल चाहते हो ? या फिर अपने ज़ख़्मियों का क़िसास दरकार

www.dawateislami.net

है ? (आख़िर किस चीज़ का बदला चाहते हो ?) वोह बदबख़्त ख़ामोश रहे। आप ने फ़रमाया : ऐ शबस बिन रिबई ! ऐ ह़ज्जार बिन अबजर ! ऐ क़ैस बिन अश्अ़स ! ऐ ज़ैद बिन ह़ारिस ! क्या तुम लोगों ने ही मुझे ख़ुतूत़ भेज कर नहीं बुलवाया था ? वोह साफ़ मुकर गए और बोले : हम ने तो ऐसा नहीं किया था। आप ने फ़रमाया : क्यूं नहीं ! ख़ुदा की क़सम ! तुम ही लोगों ने तो ऐसा किया था। फिर फ़रमाया : ऐ लोगो ! अगर तुम मेरी बैअ़त करना पसन्द नहीं करते, तो मुझे छोड़ दो ताकि मैं किसी मह़फ़ूज़ जगह चला जाऊं। बद नसीब क़ैस बिन अश्अ़स बोला : आप इब्ने ज़ियाद के ह़ुक्म के आगे सरे तस्लीम ख़म कर लें (तो आप को छुटकारा मिल सकता है)। आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** की क़सम ! मैं हरगिज़ उस की बैअ़त नहीं करूंगा। **अल्लाह** के बन्दो ! मैं अपने और तुम्हारे रब्बे करीम की पनाह लेता हूं इस बात से कि तुम मुझे संगसार करो। मैं तुम्हारे और अपने रब्बे करीम की पनाह लेता हूं हर उस मुतकब्बिर से जो ह़िसाब के दिन पर यक़ीन नहीं रखता। [1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बदबख़्त यज़ीदियों ने नसीह़त पर मुश्तमिल आप के इस करीमाना अन्दाज़ का जवाब सख़्त अज़िय्यतें और तक्लीफ़ें पहुंचा कर दिया मगर आप को मुसीबतों का हुजूम ह़क़ से न हटा सका और आप के अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल में कोई कमी न आई। ह़क़ व सदाक़त का ह़ामी मुसीबतों की भयानक घटाओं से न डरा और तूफ़ाने बला की मौजों से उस की साबित क़दमी में कोई फ़र्क़ न आया, दीने ह़क़ का शैदाई दुन्या की आफ़तों को ख़याल में न लाया। अगर आप यज़ीद की बैअ़त कर लेते, तो वोह तमाम लश्कर आप के क़दमों में होता, आप का

1 ...الکامل فی التاریخ، سنة احدی وستین، ذکر مقتل الحسین، ۳/۴۱۸-۴۱۹ ملتقطا وملخصا

www.dawateislami.net

एह़तिराम किया जाता, ख़ज़ानों के मुंह खोल दिए जाते और दौलते दुन्या क़दमों पर लुटा दी जाती मगर जिस का दिल ह़ुब्बे दुन्या से ख़ाली हो और दुन्या की ना पाएदारी का राज़ जिस पर वाज़ेह़ हो, वोह दुन्या के नुमाइशी रंगो रूप पर क्या नज़र डाले।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने राह़ते दुन्या के मुंह पर ठोकर मार दी और राहे ह़क़ में पहुंचने वाली मुसीबतों का ख़ुश दिली से इस्तिक़्बाल किया और इस क़दर आफ़तों और बलाओं के बा वुजूद यज़ीद जैसे फ़ासिक़े मोलिन (यानी अ़लानिया गुनाह करने वाले) शख़्स की बैअ़त का ख़याल भी अपने दिल में न आने दिया, अपना घर लुटाना और ख़ुद को क़ुरबान करना मन्ज़ूर कर लिया मगर शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी गवारा न फ़रमाई और इस्लाम की इ़ज़्ज़त पर ह़र्फ़ नहीं आने दिया। ख़ुदा की क़सम ! मैदाने करबला में, करबला वालों का इस्लाम की ख़ातिर अपनी जानों का नज़राना पेश करना रेहती दुन्या के मुसलमानों के लिए बहुत बड़ी करम नवाज़ी थी। इस के इ़लावा भी इन ह़ज़रात के किरदार के बहुत से पहलू मुसलमानों के लिए क़ाबिले तक़्लीद नमूना हैं। आइए ! आज के बयान में अ़फ़्वो दरगुज़र, मेहमान नवाज़ी और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ **करबला वालों के करीमाना अन्दाज़** सुनती हैं :

पेहले 1 ह़िकायत सुनिए। चुनान्चे,

करीम हो तो ऐसा !

मन्क़ूल है कि एक आदमी के पास बीस या तीस ऊंट थे मगर वोह उन के खाने, पीने का कोई इन्तिज़ाम नहीं कर पा रहा था। किसी शख़्स ने उसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की बारगाह में ह़ाज़िर होने का मश्वरा दिया, लिहाज़ा वोह शख़्स अपनी मुराद ले कर चल पड़ा। जिस

www.dawateislami.net

वक़्त वोह ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की बारगाह में पहुंचा, तो आप अपने ख़ादिमीन के साथ खाना खाने में मसरूफ़ थे, उस ने दिल में सोचा कि शायद येह मुझे खाने में शरीक न करें। अभी वोह येह सोच ही रहा था कि आप ने इरशाद फ़रमाया : आइए ! हमारे साथ खाने में शामिल हो जाइए। वोह शख़्स खाने में शामिल हो गया। खाने से फ़राग़त के बाद आप ने हाथ धोए और उस की जानिब मुतवज्जेह हो कर उस की ह़ाजत पूछी। ह़ाजत सुन कर इरशाद फ़रमाया : अपने ऊंटों को ले आओ ! इस जगह से अपने ऊंटों को खिलाओ। उस ने आप की करम नवाज़ी देखी, तो बे साख़्ता केहने लगा : मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान ! **अल्लाह** की क़सम ! येह सख़ावत बे मिसाल है।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की करम नवाज़ी की क्या ही बात है ! कभी आप किसी की मुश्किल दूर फ़रमाते, कभी किसी ग़रीब की ह़ाजत पूरी फ़रमाते, कभी किसी मुसाफ़िर को नवाज़ते, तो कभी किसी की मजबूरी व बेबसी का ज़िक्र सुन कर उस की इमदाद के लिए कमर बस्ता हो जाते क्यूंकि सख़ावत का अ़ज़ीम वस्फ़ आप को अपने प्यारे नानाजान, दो जहां के सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मिला था। जैसा कि :

नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने लाडले नवासे के बारे में ख़ुद इरशाद फ़रमाया : हुसैन मेरी जुरअत और सख़ावत का वारिस है।[2] लिहाज़ा आप जूदो सख़ावत में अपनी मिसाल आप थे। आइए ! आप की करीमाना सख़ावत से मुतअ़ल्लिक़ 2 मज़ीद ह़िकायात सुनती हैं।

---

1 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، مکارم الاخلاق، ۳/۵۱۲ مفھوما

2 ...معجم کبیر، ۲۲/۴۲۳، حدیث: ۱۰۴۱ ملتقطا

www.dawateislami.net

﴾1﴿...एक एक हज़ार दीनार की पांच थैलियां

एक मरतबा ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अपनी तंगदस्ती और फ़क़्रो फ़ाक़ा की शिकायत की। आप ने फ़रमाया : थोड़ी देर बैठ जाओ ! हमारा वज़ीफ़ा आने वाला है, जैसे ही वज़ीफ़ा पहुंचेगा, हम आप को रुख़्सत कर देंगे। अभी कुछ ही देर गुज़री थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की त़रफ़ से एक एक हज़ार दीनार (यानी सोने के सिक्कों) की पांच थैलियां आप की बारगाह में पेश की गईं। क़ासिद ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने माज़िरत की है कि येह थोड़ी सी रक़म है, इसे क़बूल फ़रमा कर ग़रीबों में तक़्सीम फ़रमा दीजिए। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने वोह सारी रक़म उस ग़रीब आदमी के ह़वाले कर दी और इस करम नवाज़ी के बा वुजूद ताख़ीर पर माज़िरत भी फ़रमाई।[1]

या शहीदे करबला फ़रयाद है — नूरे चश्मे फ़ातिमा फ़रयाद है
है मेरी ह़ाजत मैं त़यबा में मरूं — ऐ मेरे ह़ाजत रवा फ़रयाद है
मुफ़्लिसो नाचारो ख़स्ता ह़ाल हूं — मख़्ज़ने जूदो अ़त़ा फ़रयाद है
बख़्त की हैं जिस क़दर भी गुथ्थियां
सारी सुलझा दो शहा ! फ़रयाद है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 586 ता 588)

﴾2﴿...चरवाहे को नवाज़ दिया

एक मरतबा नवासए मुस्त़फ़ा, जिगर गोशए शेरे ख़ुदा, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का गुज़र एक चरवाहे के पास से हुवा जो बकरियां

1 ... کشف المحجوب، باب فی ذکر ائمتہم من اہل البیت، ص۷۷

www.dawateislami.net

चरा रहा था। वोह चरवाहा आप के पास हाज़िर हुवा और तोहफ़े के तौर पर एक बकरी आप की ख़िदमत में पेश कर दी। आप ने उस से पूछा कि तुम आज़ाद हो या गुलाम ? उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मैं गुलाम हूं। आप ने वोह बकरी उसे वापस लौटा दी। उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! येह मेरी अपनी बकरी है, तो आप ने बकरी क़बूल फ़रमा ली फिर आप ने उस गुलाम को भेड़ बकरियों समेत उस के आक़ा से ख़रीद कर आज़ाद फ़रमा दिया और भेड़ बकरियां उसे तोहफ़े में दे दीं।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की सख़ावत के करीमाना अन्दाज़ के बारे में हम ने सुना। हमें भी चाहिए कि हम भी सख़ावत जैसी अ़ज़ीम सिफ़त अपने अन्दर पैदा करने की कोशिश करें और अपनी इस्तिता़अ़त के मुता़बिक़ अपनी परेशान ह़ाल इस्लामी बहनों की मदद किया करें।

ह़दीसे पाक में है : क़ियामत के रोज़ जबकि **अल्लाह** पाक के अ़र्श के सिवा कोई साया न होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** पाक के अ़र्श के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ? इरशाद फ़रमाया : (1) जिस ने मेरे किसी उम्मती की परेशानी दूर की होगी। (2) जिस ने मेरी सुन्नत को ज़िन्दा किया होगा। (3) जिस ने मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।[2] लिहाज़ा हमें चाहिए कि जो माल **अल्लाह** पाक ने हमें अ़ता फ़रमाया है उस के ज़रीए अपने अ़ज़ीज़ रिश्तेदारों और ग़रीब इस्लामी बहनों के साथ ख़ैर ख़्वाही किया करें। आइए ! सख़ावत का जज़्बा दिल में पैदा करने के लिए सख़ावत व सदक़े के बारे में तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनती हैं :

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب البیوع والاقضیۃ، باب فی الرجل یھدی الرجل فی ۔۔۔، ۱۱/ ۲۶۵، حدیث: ۲۳۶۴۲

2 ...الدرر السافرۃ، ص ۱۳۱ حدیث: ۳۶۶

www.dawateislami.net

सख़ावत व सदक़े के बारे में तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा

1. सख़ी, **अल्लाह** पाक से, जन्नत से और लोगों से क़रीब है जबकि दोज़ख़ से दूर है।[1]
2. तीन बातें वोह हैं जिन पर मैं क़सम खा सकता हूं, उन में से एक बात की मैं तुम्हें ख़बर देता हूं, उसे याद रखो कि किसी बन्दे का माल सदक़ा करने से कम नहीं होता।[2]
3. नमाज़ (ईमान की) दलील है और रोज़ा (गुनाहों से) ढाल है और सदक़ा ख़ताओं को इस तरह मिटा देता है जैसे पानी आग को।[3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मैदाने करबला में, करबला वालों को कई मुश्किलात का सामना करना पड़ा मगर इन मुश्किल घड़ियों में भी उन मुबारक हस्तियों ने अपने करीमाना अन्दाज़ में कोई तब्दीली नहीं आने दी बल्कि इन कठिन हालात में ज़ाहिरी बे सरो सामानी के बा वुजूद भी अपनी सख़ावत के दरया बहाते रहे। आइए ! इस सिलसिले में हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब बिन्ते शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की करम नवाज़ी का एक वाक़िआ सुनती हैं।

अनोखी सख़ावत

वाक़िअए करबला के बाद अहले बैत को मदीनए मुनव्वरा तक पहुंचाने के लिए जिस शख़्स को मुक़र्रर किया गया था वोह बहुत नेक दिल

1 ... ترمذی، کتاب البر و الصلۃ، باب ماجاء فی السخاء، ۳/۳۸۷، حدیث: ۱۹۶۸

2 ... مسند احمد، حدیث ابی کبشۃ الانماری رضی اللہ عنہ، ۶/۲۹۸، حدیث: ۱۸۰۵۳، ملتقطا

3 ... ترمذی، کتاب السفر، باب ماذکر فی فضل الصلاۃ، ۳/۱۱۷، حدیث: ۲۶۱۴

www.dawateislami.net

था, उस ने पूरे रास्ते अहले बैत की ज़रूरिय्यात का ख़याल रखा और उन के साथ नर्मी और हुस्ने सुलूक से पेश आया । जब येह क़ाफ़िला मदीना शरीफ़ पहुंच चुका, तो शेरे ख़ुदा की शहज़ादी, बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की छोटी बहन, फ़ातिमा बिन्ते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने उन से अ़र्ज़ की : इस शख़्स ने पूरे सफ़र में हमारा ख़ूब ख़याल रखा है, हमें भी इसे कुछ न कुछ इन्आ़म देना चाहिए । ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने फ़रमाया कि हम इस शख़्स को सिर्फ़ अपने ज़ेवरात ही पेश कर सकते हैं । चुनान्चे, दोनों शहज़ादियों ने अपने कंगन वग़ैरा उतार कर उसे दे दिए और साथ ही माज़िरत भी की (कि इस के इ़लावा हमारे पास देने के लिए कुछ भी नहीं) । उस शख़्स ने वोह तमाम सामान वापस लौटा दिया और अ़र्ज़ की : अगर मैं ने वोह ख़िदमत गुज़ारी दुन्यवी मफ़ाद के लिए की होती, तो यक़ीनन इस इन्आ़म पर मुझे ख़ुशी होती मगर मैं ने तो वोह ख़िदमत सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की ख़ुश्नूदी और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आप लोगों की क़राबत दारी की वज्ह से की थी । [1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि अहले बैते अत़्हार की करम नवाज़ी किस क़दर आला दरजे की थी कि ह़ज़रते बीबी ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अ़क़ीदत का इज़्हार करने और अहले बैत के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आने वाले को न सिर्फ़ अपने ज़ेवरात अ़त़ा फ़रमा दिए बल्कि इस बात पर उस से माज़िरत का इज़्हार भी फ़रमाया कि इस के इ़लावा तुम्हें देने के लिए हमारे पास मज़ीद कोई चीज़ नहीं । इन मुबारक हस्तियों के रौशन किरदार से हमें येह दर्स मिलता है कि अगर कोई हमारे साथ अच्छा बरताव करे, तो बदले में हमें भी उस के शुक्रिया के त़ौर पर उस से अच्छा बरताव करना चाहिए ।

---

1 ... الکامل فی التاریخ، رقم: ۶۱، ذکر مقتل الحسین، ۳/۴۴۰

www.dawateislami.net

ह़दीसे पाक में है : مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ اللّٰهَ जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता, वोह **अल्लाह** पाक का भी शुक्र गुज़ार नहीं होता।[1]

इस ह़िकायत से हमें येह मदनी फूल भी ह़ासिल हुवा कि **अल्लाह** पाक की रिज़ा ह़ासिल करने और प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी सच्ची मह़ब्बत का इज़्हार करने के लिए हमें भी अपने दिल में अहले बैत की अ़क़ीदतो मह़ब्बत का चराग़ रौशन रखना चाहिए क्यूंकि मह़ब्बते अहले बैत दुन्या व आख़िरत की सआ़दतें ह़ासिल होने के इ़लावा शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा ह़ासिल होने का भी ज़रीआ़ है। जैसा कि :

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स वसीला ह़ासिल करना चाहता है और येह चाहता है कि मेरी बारगाह में उस की कोई ख़िदमत हो जिस के सबब मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूं, उसे चाहिए कि मेरे अहले बैत की ख़िदमत करे और उन्हें ख़ुश करे।[2]

سُبْحٰنَ اللّٰه ! किस क़दर ख़ुश क़िस्मत है वोह इस्लामी बहन जो **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आले पाक की ख़ुशी का सबब बने। आइए ! अहले बैते अत़्हार के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल मज़ीद तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनती हैं :

1. इरशाद फ़रमाया : जो मेरे अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा, मैं क़ियामत के दिन उसे इस का सिला अ़त़ा फ़रमाऊंगा।[3]

---

1 ... ترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی الشکر... الخ، ۳/ ۳۸۴، حدیث: ۱۹۶۲

2 ...बरकाते आले रसूल, स. 110

3 ... جامع صغیر، ص ۵۳۳، حدیث: ۸۸۲۱

www.dawateislami.net

2. इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स औलादे अ़ब्दुल मुत्तलिब में से किसी के साथ दुन्या में नेकी (भलाई) करेगा, उस का सिला देना मुझ पर लाज़िम है जब वोह क़ियामत के दिन मुझ से मिलेगा।[1]
3. इरशाद फ़रमाया : सितारे आसमान वालों के लिए बाइ़से अम्न हैं और मेरे अहले बैत मेरी उम्मत के लिए बाइ़से अम्न हैं।[2]

क्या बात **रज़ा** उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 79)

मुख़्तसर वज़ाह़त : आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस शेर में अपने आप को मुख़ातब कर के यूं इरशाद फ़रमाते हैं : ऐ रज़ा ! उस करम व रह़मत वाले बाग़ की क्या बात है, जिस बाग़े रिसालत की कली बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا और इमामे ह़सन व इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا जिस मेहकते बाग़ के फूल हों।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बत दुन्या व आख़िरत में नजात पाने और शफ़ाअ़त नसीब होने का ज़रीआ़ है, ऐसे ही इस पाक घराने से बुग़्ज़ो इ़नाद रखना हलाकत का सबब है। जैसा कि बह़रोबर के बादशाह, दो आ़लम के शहनशाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़रते फ़ातिमा और ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से इरशाद फ़रमाया : जो तुम से जंग करे, मैं उस से जंग करूंगा और जो तुम से सुल्ह़ करे, उस की मुझ से सुल्ह़ है।[3]

---

1 ... تاریخ بغداد، رقم: ۵۲۲۱، عبداللہ بن محمد بن ابی کامل، ۱۰/۱۰۲

2 ... کنز العمال، کتاب الفضائل، باب اہل البیت، جز: ۱۲، ۶/۴۵، حدیث: ۳۴۱۵۰

3 ... ترمذی، کتاب المناقب، باب فضل فاطمۃ، ۵/۴۶۵، حدیث: ۳۸۹۶

www.dawateislami.net

एक और ह़दीसे पाक में है : ख़बरदार ! जो शख़्स अहले बैत की बुग़्ज़ो अ़दावत पर मरा, वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा कि येह **अल्लाह** की रह़मत से ना उम्मीद है और आगाह हो जाओ ! जो शख़्स अहले बैत से बुग़्ज़ो अ़दावत की ह़ालत पर मरा, वोह काफ़िर मरा और कान खोल कर सुन लो ! जो शख़्स अहले बैत की बुग़्ज़ो अ़दावत पर मरा, उसे जन्नत की ख़ुश्बू भी नसीब न होगी ।[1]

बाग़ जन्नत के हैं बहरे मद्ह़ ख़्वाने अहले बैत
तुम को मुज़्दा नार का ऐ दुश्मनाने अहले बैत

(ज़ौक़े नात, स. 100)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि अहले बैत से बुग़्ज़ रखने की कैसी सख़्त वईदें हैं ! लिहाज़ा हमें चाहिए कि हर दम उन का ख़ूब अदबो एह़तिराम करें और अहले बैत से अ़दावत व दुश्मनी रखने वालों की सोह़बत से कोसों दूर रहें क्यूंकि सोह़बत ज़रूर रंग लाती है । अगर अच्छों की सोह़बत मिल जाए, तो इन्सान में अच्छाई पैदा हो ही जाती है और दिल भी गुनाहों से बेज़ार, नेकियों का त़लबगार और बुज़ुर्गाने दीन और अहले बैते अत़्हार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की मह़ब्बत से सरशार हो ही जाता है जबकि अगर ख़ुदा न ख़ास्ता बुरी सोह़बत मुयस्सर आ जाए, तो इन्सान न चाहते हुवे भी बुराइयों में मुब्तला हो ही जाता है । लिहाज़ा औलिया और अहले बैत से अ़क़ीदतो मह़ब्बत रखने वालियों ही की सोह़बत इख़्तियार की जाए ताकि इन की सोह़बत की बरकत से हमें भी इन नेक हस्तियों का अदबो एह़तिराम नसीब हो ।

---

1 ... الشرف المؤبد، ص ۱۰۵

www.dawateislami.net

बद क़िस्मती से आज कल बुरी सोह़बतें इस क़दर आ़म हो चुकी हैं कि अच्छी सोह़बत मिलना मुश्किल हो चुका है। ऐसे ह़ालात में اَلْحَمْدُلِلّٰه दावते इस्लामी का मदनी माह़ोल यक़ीनन **अल्लाह** पाक की बहुत बड़ी नेमत है जो अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ करने के अ़ज़ीम मदनी मक़्सद के पेशे नज़र लोगों को गुनाहों से बचाने, नेकियों की राह पर लाने और उन्हें औलिया व अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बत घोल कर पिलाने में मसरूफ़े अ़मल है। लिहाज़ा हम सब दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहें और गुनाहों से नफ़रत, नेकियों की रग़बत और अहले बैत की सच्ची मह़ब्बत अपने दिल में पैदा करने के लिए हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत करती रहें और इस्लामी बहनों के दीगर मदनी कामों में भी ख़ूब ख़ूब शिर्कत करें।

रिसाला "इमामे हुसैन की करामात" का तआ़रुफ़

करबला वालों की मह़ब्बतो उल्फ़त दिल में पैदा करने के लिए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **"इमामे हुसैन की करामात"** का मुत़ालआ़ निहायत मुफ़ीद है। येह रिसाला इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की विलादत, आप के फ़ज़ाइलो कमालात और करामात के इलावा यज़ीद और यज़ीदियों के दर्दनाक अन्जाम की मालूमात और आ़शूरे के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल है। आज ही येह रिसाला मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के ख़ुद भी इस का मुत़ालआ़ कीजिए और दूसरी इस्लामी बहनों को भी इस की तरग़ीब दीजिए।

اَلْحَمْدُلِلّٰه शोबए तराजिम की कोशिशों से इस रिसाले का इंग्लिश, हिन्दी, गुजराती और सिन्धी समेत कुल 10 ज़बानों में तर्जमा भी हो चुका है। दावते इस्लामी की वेबसाइट www.dawateislami.net से इस रिसाले

www.dawateislami.net

को रीड (यानी पढ़ा) भी जा सकता है, डाउनलोड (Download) और प्रिन्ट आउट (Print Out) भी किया जा सकता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! करबला वालों के मज़ीद करीमाना अन्दाज़ के बारे में सुनती हैं : चुनान्चे, हक़ तलफ़ी करने वाले को मुआ़फ़ करना और दरगुज़र से काम लेना भी अहले बैते अत़हार के बे मिसाल करीमाना अन्दाज़ का हिस्सा है बल्कि मुआ़फ़ करना नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत ही प्यारी सुन्नत होने के साथ साथ दीनी और दुन्यावी एतिबार से बहुत ही उ़म्दा ख़स्लत है। कुरआने करीम में अ़फ़्वो दरगुज़र से काम लेने का हुक्म भी दिया गया है। जैसा कि पारह 9, सूरतुल आराफ़ की आयत नम्बर 199 में **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है :

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾

(پ۹،الاعراف:۱۹۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुआ़फ़ी की बरकत से बाहमी सुल्ह़ की फ़ज़ा पैदा होती है, आपस के मसाइल ह़ल होते हैं, बाहमी नाराज़ियों का ख़ातिमा होता है, आपस में मह़ब्बत बढ़ती है और दिल में बुग़्ज़ो कीना के जज़्बात पैदा नहीं होते। लिहाज़ा हमें भी चाहिए कि करबला वालों के अन्दाज़े करीमाना अपनाते हुवे अ़फ़्वो दरगुज़र से काम लिया करें, किसी इस्लामी बहन का क़ुसूर मुआ़फ़ करने से मुआ़फ़ करने वाली की इ़ज़्ज़त कम नहीं होती बल्कि उस में इज़ाफ़ा होता है। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

ह़दीसे पाक में है : किसी को मुआ़फ़ करने की वज्ह से **अल्लाह** पाक (मुआ़फ़ करने वाले) बन्दे की इ़ज़्ज़त ही में इज़ाफ़ा फ़रमाता है ।[1] आइए ! अ़फ़्वो दरगुज़र से मुतअ़ल्लिक़ करबला वालों के करीमाना अन्दाज़ के बारे में तीन वाक़िआ़त सुनती हैं :

﴾1﴿...गालियां देने वाले को दुआ़एं दीं

एक मरतबा इ़साम बिन मुस्त़लिक़ नामी मुल्के शाम का एक बाशिन्दा जो कि मौलाए काइनात, ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से बुग़्ज़ रखता था, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के सामने उन्हें और उन के वालिदे मोह़तरम, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को बुरा भला केहने लगा । ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने झिड़कने, उलझने या तल्ख़ कलामी से कोई जवाबी कारवाई करने के बजाए اَعُوْذُ بِاللّٰہ और **बिस्मिल्लाह** पढ़ने के बाद येह आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाईं :

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾ وَ اِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۰۰﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ﴿۲۰۱﴾

(پ۹، الاعراف: ۱۹۹-۲۰۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब ! मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो और ऐ सुनने वाले ! अगर शैत़ान तुझे कोई कूंचा दे (किसी बुरे काम पर उक्साए), तो **अल्लाह** की पनाह मांग बेशक वोही सुनता जानता है । बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैत़ानी ख़याल की ठेस लगती है, होश्यार हो जाते हैं, उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं ।

---

1 ... مسلم، کتاب البر... الخ، باب استحباب العفو والتواضع، ص۱۰۷۱، حدیث: ۶۵۹۲ ملتقطا

www.dawateislami.net

फिर फ़रमाया : अपने ऊपर बोझ हल्का रख और मैं **अल्लाह** पाक से तेरे लिए और अपने लिए मग़फ़िरत का सुवाल करता हूं। इस के इलावा आप उस के साथ इस क़दर अफ़्वो दरगुज़र, नर्मी और ख़न्दा पेशानी से पेश आए कि उस का बुग़्ज़ो अदावत एकदम महब्बत में तब्दील हो गया और वोह येह कहने पर मजबूर हो गया : وَمَا عَلَى وَجْهِ الْاَرْضِ اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْهُ وَمِنْ اَبِیْهِ रूए ज़मीन पर हज़रते इमामे हुसैन और उन के वालिद, हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से ज़ियादा मुझे कोई महबूब नहीं।[1]

गालियां सुन कर दुआ देते हो तुम
ऐ शहीदे करबला ! तुम पर सलाम

है फ़लाहो कामरानी, नर्मियो आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

﴾2﴿...गाली देने वाले के साथ ख़ैर ख़्वाही

एक मरतबा इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के शहज़ादे, हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आबिदीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को किसी ने गाली दी, तो आप ने (ग़ुस्सा होने और इन्तिक़ामी कारवाई करने के बजाए) उसे अपना मुबारक कुरता और एक हज़ार दिरहम देने का हुक्म दिया। किसी ने कहा : आप ने पांच ख़स्लतें जम्अ कर ली हैं : (1) बुर्दबारी। (2) तक्लीफ़ न देना। (3) उस शख़्स को ऐसी बात से रिहाई देना जो उसे **अल्लाह** पाक से दूर कर देती। (4) उसे तौबा व नदामत की त़रफ़ राग़िब करना। (5) बुराई के बाद तारीफ़ की त़रफ़ रुजूअ करना। आप ने मामूली दुन्या के साथ येह तमाम अ़ज़ीम चीज़ें ख़रीद लीं।[2]

---

1 ... تفسیر قرطبی پ۹، الاعراف، تحت الآیۃ: ۱۹۹ تا ۲۰۱، ۴/۲۵۰

2 ... احیاء العلوم، کتاب ذم الغضب والحقد ۔۔۔ الخ، ۳/۲۲۱

www.dawateislami.net

﴾3﴿...मैं ने अपना ग़ुस्सा पी लिया

एक बार इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को उन की लौन्डी वुज़ू करवा रही थी, अचानक उस के हाथ से बरतन आप के चेहरे पर गिर गया जिस से चेहरा ज़ख़्मी हो गया। आप ने उस की त़रफ़ सर उठा कर देखा, तो उस ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है : ''وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظ'' और ग़ुस्सा पीने वाले। इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने अपना ग़ुस्सा पी लिया। उस ने फिर अ़र्ज़ की : ''وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ'' और लोगों से दरगुज़र करने वाले। इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक तुझे मुआ़फ़ करे। फिर अ़र्ज़ गुज़ार हुई : ''وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ'' और **अल्लाह** पाक एह़सान करने वालों को पसन्द फ़रमाता है। इरशाद फ़रमाया : जा ! तू **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिए आज़ाद है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने कि येह ह़ज़रात कितने नर्म मिज़ाज और बुर्दबार हुवा करते। लोगों की ग़लतियों पर उन को डांटने, झिड़कने और उन के साथ उलझने के बजाए उन के क़ुसूर को मुआ़फ़ करने वाले होते थे। हम करबला के जा निसारों से मह़ब्बत का दम तो भरती हैं लेकिन हमें इस पर भी ग़ौर कर लेना चाहिए कि क्या हम भी दूसरी इस्लामी बहनों की ग़लतियों को मुआ़फ़ करती हैं या उन से फ़ौरन बदला लेने का, इन्तिक़ामी कारवाई करने का जज़्बा दिल में जोश मारने लगता है और तक्लीफ़ पहुंचाने वाली को ईंट का जवाब पथ्थर से देने की कोशिश करती हैं।

---

1 ...ابن عساکر، ۴۱/۳۸۷، علی بن الحسین بن علی بن ابی طالب

www.dawateislami.net

अभी हम ने कनीज़ को मुआ़फ़ करने और रिज़ाए इलाही के लिए आज़ाद करने से मुतअ़ल्लिक़ जो हि़कायत सुनी, इस में उन इस्लामी बहनों के लिए ख़ूब दर्स है जो अपने घर में काम करने वाली मुलाज़िमा के साथ निहायत ग़ैर मुनासिब सुलूक करती हैं और उन की मामूली ग़लतियों पर उन्हें ख़ूब झाड़ पिलाती और उन की हौसला शिकनी व दिल आज़ारी करती हैं। हमें चाहिए कि हर मुसलमान बहन के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आएं, दूसरी इस्लामी बहनों की ग़लतियों पर उन्हें प्यार और मह़ब्बत से समझाएं और **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिए उन से अ़फ़्वो दरगुज़र करें, اِنْ شَآءَ الله इस की ख़ूब ख़ूब बरकतें और रह़मतें ह़ासिल होंगी। अह़ादीस में अ़फ़्वो दरगुज़र के कसीर फ़ज़ाइल बयान किए गए हैं। आइए ! मुआ़फ़ करने की फ़ज़ीलत के बारे में अह़ादीसे मुबारका सुनती हैं :

1. ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब लोग ह़िसाब के लिए ठेहरे होंगे, तो उस वक़्त एक मुनादी येह एलान करेगा कि जिस का अज्र **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। फिर दूसरी बार एलान करेगा कि जिस का अज्र **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। पूछा जाएगा कि वोह कौन है जिस का अज्र **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है ? मुनादी कहेगा : उन का जो लोगों (की ख़ताओं) को मुआ़फ़ करने वाले हैं। फिर तीसरी बार मुनादी एलान करेगा : जिस का अज्र **अल्लाह** पाक के ज़िम्मए करम पर है, वोह उठे और जन्नत में दाख़िल हो जाए। तो हज़ारों आदमी खड़े होंगे और बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।[1]

---

1 ... معجم اوسط، ۱/۵۴۲، حدیث:۱۹۹۸ ملتقطا

www.dawateislami.net

2. हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन कअ़ब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिए (जन्नत में) महल बनाया जाए और उस के दरजात बुलन्द किए जाएं, तो उसे चाहिए कि जो उस पर जुल्म करे, वोह उसे मुआ़फ़ कर दे और जो उसे महरूम करे, वोह उसे अ़ता करे और जो उस से तअ़ल्लुक़ात तोड़े, वोह उस से तअ़ल्लुक़ात जोड़े।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें भी जब बुरा भला कहा जाए या हमारे साथ बुरा सुलूक किया जाए, किसी की त़रफ़ से तक्लीफ़ पहुंचाई जाए, तो हमें भी अहले बैते अत़्हार के करीमाना अन्दाज़ को पेशे नज़र रखते हुवे दरगुज़र से काम लेना चाहिए। **ऐ काश** ! हमें भी अ़फ़्वो दरगुज़र करने का जज़्बा नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

तिलावते क़ुरआन के आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे तिलावत करने के चन्द आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं। पेहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए : (1) इरशाद फ़रमाया : क़ुरआन पढ़ो क्यूंकि वोह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिए शफ़ाअ़त करने वाला हो कर आएगा।[2] (2) इरशाद फ़रमाया : मेरी उम्मत की अफ़्ज़ल इबादत तिलावते क़ुरआन है।[3]

1... مستدرک، کتاب التفسیر، شرح آیۃ: کنتم خیر امۃ۔۔۔ الخ، ۳/۱۲، حدیث: ۳۲۱۵

2... مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرہا، باب فضل قراءۃ القرآن وسورۃ البقرۃ، ص ۳۱۴، حدیث: ۱۸۷۴

3... شعب الایمان للبیہقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی ارمان تلاوتہ، دون اللفظ "تلاوۃ" ۲/۳۵۴، حدیث: ۲۰۲۲

www.dawateislami.net

❖ कुरआने पाक को अच्छी आवाज़ से और ठेहर ठेहर कर पढ़ना सुन्नत है।[1] ❖ मुस्तहब येह है कि बा वुज़ू, क़िब्ले की जानिब, अच्छे कपड़े पेहन कर तिलावत करे।[2] ❖ तिलावत के शुरूअ में "اَعُوْذُ" पढ़ना मुस्तहब है और सूरत की इब्तिदा में **बिस्मिल्लाह** पढ़ना सुन्नत है, वरना मुस्तहब है।[3] ❖ कुरआने करीम देख कर पढ़ना, ज़बानी पढ़ने से अफ़्ज़ल है।[4] ❖ कुरआने पाक देख कर तिलावत करने पर दो हज़ार और ज़बानी पढ़ने पर एक हज़ार नेकियां लिखी जाती हैं।[5] ❖ कुरआने करीम की तिलावत के वक़्त रोना मुस्तहब है।[6] ❖ जब बुलन्द आवाज़ से कुरआने करीम पढ़ा जाए, तो तमाम हाज़िरीन पर सुनना फ़र्ज़ है, जबकि वोह कुरआने करीम सुनने की ग़रज़ से हाज़िर हों, वरना एक का सुनना काफ़ी है अगर्चे बाक़ी अपने काम में मसरूफ़ हों।[7] ❖ सब बुलन्द आवाज़ से पढ़ें, येह हराम है, अगर चन्द पढ़ने वाले हों, तो हुक्म है कि आहिस्ता पढ़ें।[8] ❖ तीन दिन से कम में कुरआने करीम ख़त्म न करे बल्कि कम अज़ कम तीन दिन या सात दिन या चालीस दिन में कुरआने करीम ख़त्म करे ताकि मआनी को समझ कर तिलावत करे।[9]

1...احیاء العلوم، کتاب آداب تلاوۃ القرآن، الباب الثانی فی ظاھر آداب التلاوۃ، ۱/۳۷۱

2...बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, 1 / 550

3...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, मुक़द्दमा, 1 / 21

4...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, मुक़द्दमा, 1 / 21

5...کنز العمال، کتاب الاذکار، قسم الاقوال، باب فی تلاوۃ القرآن الخ، ۱/۲۶۰، رقم ۲۳۰۱ ملخصاً

6...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पा. 15, बनी इसराईल, तहतुल आयत : 119, 5 / 526

7...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, मुक़द्दमा, 1 / 22

8...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, मुक़द्दमा, 1 / 21

9...अ़जाइबुल कुरआन, स. 238

www.dawateislami.net

❖ तरतील के साथ इत्मीनान से और ठेहर ठेहर कर तिलावत करे ।[1]

❖ तिलावत के लिए सब से अफ़्ज़ल वक़्त साल भर में रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी दस दिन और ज़ुल हिज्जा के इब्तिदाई दस दिन हैं ।[2]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **''बहारे शरीअ़त''** हिस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) और 120 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''सुन्नतें और आदाब''** रिसाला **''163 मदनी फूल''** और **''101 मदनी फूल''** हदिय्यतन त़लब कीजिए और बग़ौर इन का मुत़ालआ़ फ़रमाइए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...अ़जाइबुल कुरआन, स. 238

2...अ़जाइबुल कुरआन, स. 239

www.dawateislami.net

बयान : 04 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ील

सरकारे वाला तबार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : ऐ लोगो ! बेशक बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और हिसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला शख़्स वोह होगा जिस ने तुम में से मुझ पर दुन्या में ब कसरत दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा

1...مسند الفردوس، ج۲/۴۷۱، حدیث ۸۲۱۰

2...معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

कर बयान सुनूंगी । ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी । ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी । ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी । ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी । ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी । ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं । जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सरकार की महब्बत पाने का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि एक मरतबा नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا भी थे, उन में से एक दाएं कन्धे पर और दूसरे बाएं कन्धे पर सुवार थे, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दोनों को बारी बारी चूम रहे थे । एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप इन से महब्बत फ़रमाते हैं ? आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां ! जिस ने इन से महब्बत की, उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने इन से बुग़्ज़ रखा, उस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा ।[1]

1...مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر ابی الحسن والحسین ... الخ، ۴/۱۵۶، حدیث: ۴۸۳۰

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को मह़ब्बते रसूल का येह मेयार बारगाहे रिसालत से अ़त़ा हुवा था, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने तमाम उ़म्र इसे अपनाए रखा। जब मरवान बिन ह़कम, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की बारगाह में ब वक़्ते वफ़ात ह़ाज़िर हुवा तो केहने लगा : जब से आप की सोह़बत इख़्तियार की है, मैं ने आप की ज़ात में ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا की मह़ब्बत बहुत देखी है। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बे क़रार हो कर उठ बैठे और इरशाद फ़रमाया : एक मरतबा हम नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह कहीं जाने के लिए निकले, अभी कुछ ही रास्ता त़ै किया था कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के रोने की आवाज़ सुनी, वोह दोनों उस वक़्त अपनी वालिदा के पास थे, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जल्दी जल्दी चलते हुवे उन के पास तशरीफ़ ले गए। मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से येह फ़रमाते सुना : मेरे बेटों को क्या हुवा ? अ़र्ज़ की : प्यास (यानी प्यास की वज्ह से दोनों रो रहे हैं)। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पानी लेने के लिए मश्कीज़े की त़रफ़ बढ़े मगर उस में पानी मौजूद न था क्यूंकि उन दिनों पानी की इतनी सख़्त क़िल्लत थी कि लोग पानी की तलाश में रहा करते थे। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को पुकार कर फ़रमाया : क्या तुम में से किसी के पास पानी है ? हर एक ने कजावों (सुवारियों के बैठने के लिए ऊंट की कमर पर बनाई गई निशस्तों) से लटकते हुवे मश्कीज़ों में पानी देखा मगर उन्हें एक क़त़रा तक न मिला। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ातूने जन्नत, सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से फ़रमाया : एक बच्चा मुझे दो। ख़ातूने जन्नत, सय्यिदा फ़ात़िमा ने एक बच्चे को पर्दे के नीचे से दे दिया, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें ले कर अपने सीने से लगाया मगर वोह सख़्त प्यास की वज्ह से मुसल्सल रो रहे थे। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के मुंह

www.dawateislami.net

में अपनी ज़बान मुबारक डाली, तो वोह उसे चूसने लगे, ह़त्ता कि सेराब हो गए। (ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं कि) मैं ने दोबारा उन के रोने की आवाज़ न सुनी जबकि दूसरे (शहज़ादे) उसी त़रह़ मुसल्सल रो रहे थे। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दूसरे को भी मुझे दो। ख़ातूने जन्नत, सय्यिदा फ़ातिमा ने दूसरे को भी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़वाले कर दिया, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के साथ भी वोही मुआ़मला फ़रमाया (यानी उन के मुंह में भी अपनी मुबारक ज़बान डाल दी, तो वोह भी सेराब हो कर ख़ामोश हो गए), इस के बाद दोनों शहज़ादे ऐसे ख़ामोश हुवे कि मैं ने दोबारा उन के रोने की आवाज़ न सुनी। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : मैं उन से मह़ब्बत क्यूं न करूं जबकि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन के साथ ऐसा करते हुवे देखा है।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह उसूल अच्छी त़रह़ ज़ेह़न नशीन कर लीजिए कि जिस त़रह़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और अहले बैते अत़्हार की मह़ब्बत दुन्या व आख़िरत में नजात का ज़रीआ़ है, ऐसे ही इन से बुग़्ज़ो अ़दावत रखने में हलाकत ही हलाकत है। जैसा कि :

दुश्मने सह़ाबा का अन्जाम

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना साद बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के सामने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी के अल्फ़ाज़ बकने लगा। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम अपनी इस ख़बीस ह़रकत से बाज़ रहो, वरना मैं तुम्हारे लिए बद दुआ़ कर दूंगा। उस

1...معجم کبیر، بقیۃ اخبار حسن بن علی بن أبی طالب، ۳/۵۰، حدیث: ۲۶۵۶

www.dawateislami.net

गुस्ताख़ व बेबाक ने केह दिया कि मुझे आप की बद दुआ़ की कोई परवा नहीं, आप की बद दुआ़ से मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ सकता। येह सुन कर आप को जलाल आ गया और आप ने उस वक़्त येह दुआ़ मांगी कि ऐ **अल्लाह** ! अगर इस शख़्स ने तेरे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्यारे सह़ाबियों की तौहीन की है, तो आज ही इस को अपने क़ह्रो ग़ज़ब की निशानी दिखा दे ताकि दूसरों को इस से इ़ब्रत ह़ासिल हो। इस दुआ़ के बाद जैसे ही वोह शख़्स मस्जिद से बाहर निकला, तो अचानक एक पागल ऊंट कहीं से दौड़ता हुवा आया और उस को दांतों से पछाड़ दिया और उस के ऊपर बैठ कर उस को इस क़दर ज़ोर से दबाया कि उस की पस्लियों की हड्डियां चूर चूर हो गईं और वोह फ़ौरन ही मर गया। येह मन्ज़र देख कर लोग दौड़ दौड़ कर ह़ज़रते सय्यिदुना साद رَضِیَ اللهُ عَنْه को मुबारक बाद देने लगे कि आप की दुआ़ मक़्बूल हो गई और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم का दुश्मन हलाक हो गया।[1]

अमीं हैं येह क़ुरआनो दीने ख़ुदा के
मदारे हुदा एतिबारे सह़ाबा
रिसालत की मन्ज़िल में हर हर क़दम पर
नबी को रहा इन्तिज़ारे सह़ाबा
इन्हीं में हैं सिद्दीक़ो फ़ारूक़ो उ़स्मान
इन्हीं में अ़ली शहसुवारे सह़ाबा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم की शान में गुस्ताख़ी करने वाले का अन्जाम कैसा इ़ब्रतनाक हुवा। वाक़ेई येह ह़क़ीक़त है कि **अल्लाह** वालों की शान में गुस्ताख़ी करना या उन्हें किसी भी त़रह़ से तक्लीफ़ पहुंचाना, **अल्लाह** पाक के

1...دلائل النبوۃ للبیہقی، ج٦، ص١٩٠

www.dawateislami.net

अ़ज़ाब को दावत देने वाली बात है। इन बुज़ुर्गों की शान में गुस्ताख़ी व बे अदबी करने वाला दुन्या में तो ज़लीलो रुस्वा होता ही है, आख़िरत में भी ज़िल्लत उस का मुक़द्दर होगी।

ऐसे बद नसीबों में से एक यज़ीदे पलीद भी है जो न सिर्फ़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم की तौहीन का मुर्तकिब हुवा बल्कि उस की पेशानी पर अहले बैते किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को बे गुनाह शहीद करने का सियाह दाग़ (भी) है। येह ऐसा बुरा काम है कि हर ज़माने में दुन्याए इस्लाम इस की मज़म्मत करती रही है और क़ियामत तक इस का नाम ह़क़ारत (ज़िल्लत) के साथ लिया जाएगा। येह बद बातिन, सियाह दिल (शख़्स) 25 हिजरी में दमिश्क़ में पैदा हुवा। निहायत मोटा, बदनुमा, बद अख़्लाक़, बद मिज़ाज, फ़ासिक़, फ़ाजिर, शराबी, बदकार, ज़ालिम, बे अदब और परले दरजे का गुस्ताख़ था। इस की शरारतें और बेहूदगियां ऐसी थीं कि जिन से बद मुआ़शों को भी शर्म आए।[1]

यज़ीदे पलीद की ख़ुराफ़ात

सदरुल अफ़ाज़िल, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि शहज़ादए कौनैन, ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का वुजूदे मुबारक यज़ीद की आज़ादियों के लिए एक ज़बरदस्त मोह़तसिब (यानी ह़िसाब लेने वाला) था, वोह जानता था कि आप (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) के ज़मानए मुबारक में उस को खुल कर खेलने का मौक़अ़ न मिलेगा और उस की किसी भी उल्टी ह़रकत और गुमराही पर ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ सब्र न फ़रमाएंगे। उस को

1...सवानेह़े करबला, स. 111, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

नज़र आता था कि इमामे (हुसैन) जैसे दीनदार का कोड़ा हर वक़्त उस के सर पर घूम रहा है, इसी वज्ह से वोह और भी ज़ियादा ह़ज़रते इमाम (हुसैन) رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की जान का दुश्मन था और इसी लिए ह़ज़रते इमाम (हुसैन) رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शहादत उस के लिए बाइसे मसर्रत हुई।

ह़ज़रते इमाम (हुसैन) رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का साया उठना था, यज़ीद खुल कर खेला (यानी बिल्कुल आज़ाद हो गया) और अन्वाओ़ अक़्साम के मआ़सी (यानी गुनाहों) की गर्म बाज़ारी हो गई। ह़रामकारी, भाई बहन का निकाह़, सूद, शराब अ़लानिया राइज हुवे, नमाज़ों की पाबन्दी उठ गई, बग़ावत व सरकशी इन्तिहा को पहुंची, ख़बासत ने यहां तक ज़ोर किया कि मुस्लिम बिन उ़क़्बा को बारह हज़ार या बीस हज़ार का लश्कर ले कर मदीनए त़य्यिबा की चढ़ाई के लिए भेजा। इस ना मुराद लश्कर ने मदीनए त़य्यिबा में वोह त़ूफ़ान बरपा किया कि **अल्लाह** की पनाह ! क़त्लो ग़ारत और त़रह़ त़रह़ के मज़ालिम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमसायों पर किए, वहां के रेहने वालों के घर लूट लिए, सात सौ सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को शहीद किया और दूसरे आ़म बाशिन्दे मिला कर दस हज़ार से ज़ियादा को शहीद किया, लड़कों को क़ैद कर लिया, ऐसी ऐसी बद तमीज़ियां कीं जिन का ज़िक्र करना ना गवार है। मस्जिदे नबवी शरीफ़ के सुतूनों में घोड़े बांधे, तीन दिन तक मस्जिद शरीफ़ में लोग नमाज़ से मुशर्रफ़ न हो सके, सिर्फ़ ह़ज़रते सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ दीवाने बन कर वहां ह़ाज़िर रहे। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि यज़ीदियों की बुरी ह़रकात इस ह़द तक पहुंची कि हमें अन्देशा होने लगा कि इन की बदकारियों की वज्ह से कहीं आसमान से पथ्थर न बरसें।[1]

1 ... الصواعق المحرقه، الباب الحادی عشر، الخاتمه فی بیان اعتقاد اهل السنة، ص ۲۲۱ ملخصاً

www.dawateislami.net

फिर येह शरीर लश्कर मक्कए मुकर्रमा की त़रफ़ रवाना हुवा, रास्ते में अमीरे लश्कर मर गया और दूसरा शख़्स उस का क़ाइम मक़ाम किया गया । मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर उन बे दीनों ने मिन्जनीक़ (पथ्थर फेंकने का आला होता है जिस से पथ्थर फेंक कर मारा जाता है, इस की ज़द् बड़ी ज़बरदस्त और दूर की मार होती है, इस आले) से पथ्थरों की बारिश की । इस संगबारी से ह़रम शरीफ़ का सेह्ने मुबारक पथ्थरों से भर गया और मस्जिदे ह़राम के सुतून टूट पड़े और काबए मुक़द्दसा के ग़िलाफ़ शरीफ़ और छत को उन बे दीनों ने जला दिया । इसी छत में उस दुम्बे के सींग भी तबर्रुक के त़ौर पर मह़फ़ूज़ थे जो ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के फ़िदये में क़ुरबानी किया गया था, वोह (सींग) भी जल गए, काबए मुक़द्दसा कई रोज़ तक बे लिबास रहा और वहां के बाशिन्दे (यज़ीदी लश्कर की त़रफ़ से पहुंचने वाली) सख़्त मुसीबत में मुब्तला रहे ।[1]

ख़ुराफ़ाते यज़ीद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि यज़ीदे पलीद ने अपने दौरे हुकूमत में बद किरदारी का सुबूत देते हुवे कई ख़ुराफ़ात को आ़म किया, मसलन मह़ारिम (वोह रिश्तेदार जिन से निकाह़ ह़राम है उन) से निकाह़ और सूद वग़ैरा को इस बे दीन ने अ़लानिया रवाज दिया, मक्का शरीफ़ और मदीना शरीफ़ की बे हुर्मती कराई, सह़ाबए किराम और अहले बैते अत़्हार को ज़ुल्मन शहीद करवा दिया, गाने बाजे सुनना, ख़ूब शराब पीना, नमाज़ न पढ़ना, अल ग़रज़ ! इस ने हर वोह काम किया जिस से शरीअ़त ने मन्अ़ फ़रमाया । यक़ीनन इन्सान इ़ज़्ज़तो शोहरत, मालो दौलत

1...ख़ुलासा : सवानेह़े करबला, स. 177 ता 179, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

और हुकूमत मिलने से सरकश व बेबाक बन जाता है और फिर धीरे धीरे दीन से दूर और दुन्या से क़रीब तर हो जाता है, अपने तख़्तो ताज की लाज रखने के लिए **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानियों और उस के प्यारों की गुस्ताख़ियों से भी बाज़ नहीं आता। यज़ीदे पलीद भी इक़्तिदार व हुकूमत की महब्बत में मुब्तला हो कर ऐसा सरकश हुवा कि مَعَاذَاللہ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शान में गुस्ताख़ियां कीं, उन को तक्लीफ़ें पहुंचाईं, उन का दिल दुखाया, बाज़ को तो शहीद भी करवा दिया, हालांकि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तो वोह मुक़द्दस हस्तियां हैं जिन की शानो अ़ज़मत के बारे में ख़ुद सुल्ताने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَكْرِمُوا اَصْحَابِي فَاِنَّهُمْ خِيَارُكُمْ मेरे सहाबा की इ़ज़्ज़त करो कि वोह तुम्हारे नेक तरीन लोग हैं।[1] मज़ीद फ़रमाया : خَيْرُ اُمَّتِي اَلْقَرْنُ الَّذِينَ يَلُوْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُوْنَهُمْ ثُمَّ الَّذِينَ يَلُوْنَهُمْ मेरी उम्मत में सब से बेहतर मेरे ज़माने वाले हैं (यानी सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) फिर उन के बाद के लोग (यानी ताबेईन) फिर उन के बाद के लोग हैं (तब्अ़ ताबेईन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن)।[2]

नुमायां है इस्लाम के गुलिस्तां में
हर इक गुल पे रंगे बहारे सहाबा
येह मोहरें हैं फ़रमाने ख़ात्मुर्रुसुल की
है दीने ख़ुदा शाहकारे सहाबा
इन्हीं में हैं बदरो उहुद के मुजाहिद
लक़ब जिन का है जां निसारे सहाबा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب الصحابۃ، ۲/۴۱۳، حدیث: ۶۰۱۲

2...مسلم، کتاب فضائل الصحابہ باب فضل الصحابۃ...الخ، ص ۱۰۵۲، حدیث: ۶۴۶۹

www.dawateislami.net

यज़ीद का बुरा किरदार और उस की वज्ह

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यज़ीदे पलीद, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मुबारक ज़माना पा कर भी उन का क़ुर्ब ह़ासिल न कर सका और न ही उन की ताज़ीम कर के अपने लिए आख़िरत की नजात का सामान कर सका बल्कि उस ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाक घराने पर ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलाई और उन पर मुसीबतों के पहाड़ तोड़े, यज़ीदे पलीद ने येह सब ताजो हुकूमत और दुन्यावी मालो दौलत की मह़ब्बत में किया क्यूंकि इस ज़ालिमे बद अन्जाम को इमामे आ़ली मक़ाम, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه की ज़ाते गिरामी से अपने इक़्तिदार को ख़त़रा मह़सूस होता था, ह़ालांकि ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه को दुन्याए ना पाएदार से क्या सरोकार ! आप رَضِیَ اللهُ عَنْه तो कल भी उम्मते मुस्लिमा के दिलों के ताजदार थे, आज भी हैं और रेहती दुन्या तक रहेंगे मगर उस यज़ीदे बदबख़्त ने मालो दौलत के नशे में बदमस्त हो कर अपनी आख़िरत के साथ साथ दुन्या भी तबाहो बरबाद कर डाली ।

इस से येह मालूम होता है कि दुन्या की मह़ब्बत हर फ़ितना व फ़साद का सबब है, येह सारी तबाही दुन्या की मह़ब्बत ही ने मचाई है, दुन्या की मह़ब्बत इन्सान को ज़ालिम बना देती है, दुन्या की मह़ब्बत इन्सान को बे ह़िस व बेबाक बना देती है, दुन्या की मह़ब्बत इन्सान को पथ्थर दिल बना देती है, दुन्या की मह़ब्बत आमाल को ज़ाएअ़ कर देती है, दुन्या की मह़ब्बत दीन को नुक़्सान पहुंचाने का सबब है, दुन्या की मह़ब्बत गुमराही का सबब है, दुन्या की मह़ब्बत इन्सान को नेकियों से दूर कर देती है, दुन्या की मह़ब्बत आख़िरत की याद से ग़ाफ़िल कर देती है, दुन्या की मह़ब्बत इ़श्क़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा से मह़रूम कर देती है, दुन्या की मह़ब्बत ही गुनाहों पे दिलेर कर देती है, अल ग़रज़ ! दुन्या की मह़ब्बत में किसी भी

www.dawateislami.net

त़रह़ की भलाई नहीं है। आइए ! दुन्या की मज़म्मत पर 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनती हैं :

1. दुन्या की मह़ब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है।[1]
2. छे चीज़ें अ़मल को ज़ाएअ़ कर देती हैं : (1) मख़्लूक़ के उ़यूब की टोह में लगे रेहना। (2) दिल की सख़्ती (3) दुन्या की मह़ब्बत। (4) ह़या की कमी। (5) लम्बी उम्मीद और (6) ह़द से ज़ियादा ज़ुल्म।[2]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना ! दुन्या किस क़दर ह़क़ीर चीज़ है, लिहाज़ा इस को अहम समझना बड़ी बे वुक़ूफ़ी है क्यूंकि **अल्लाह** पाक के नज़दीक तो दुन्या की हैसिय्यत मच्छर के पर के बराबर भी नहीं है। याद रखें ! दुन्या तो आख़िरत की खेती है, अगर हम इस में अच्छे आमाल की सूरत में बीज बोएंगी, तो आख़िरत में अज्रो सवाब की सूरत में फ़सल काट सकेंगी। लिहाज़ा मालो दौलत की ह़िर्स पालने के बजाए, **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से जो नेमतें अ़त़ा की गईं हैं, उन्ही पर क़नाअ़त करते हुवे उस की रिज़ा पर राज़ी रेहते हुवे ह़िर्स की आलूदगियों से ख़ुद को बचाना चाहिए।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दुन्यावी मालो दौलत के ह़ुसूल की ख़्वाहिश व कोशिश करने के बजाए आख़िरत की नेमतों को पाने के लिए ख़ूब नेकियां कीजिए और दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार कीजिए। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : हम सब में बेहतर कौन है ? इरशाद फ़रमाया : اَزْهَدُكُمْ فِي الدُّنْيَا اَرْغَبُكُمْ فِي الْاٰخِرَةِ

1...موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، کتاب ذم الدنیا، ۵/۲۲، حدیث: ۹

2...کنز العمال، کتاب المواعظ والرقائق ـــ الخ، قسم الاقوال، جزء: ۱۶، ۸/۳۶، حدیث: ۴۴۰۱۶

www.dawateislami.net

तुम में सब से बेहतरीन वोह है जो दुन्या से ज़ियादा बे रग़बती और आख़िरत में ज़ियादा रग़बत रखने वाला हो।[1]

दुन्या से बे रग़बती किसे केहते हैं ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : दुन्या के फ़ना और ऐ़बदार होने की वज्ह से बे रग़बती करे और आख़िरत की बुज़ुर्गी और हमेशा रेहने की वज्ह से आख़िरत में रग़बत रखे, अ़क़्लमन्द वोह है जो दुन्या और दुन्या के मैल कुचैल से अपने आप को बचाए और दुन्या को अपना ख़ादिम बनाए, ज़रूरत के मुत़ाबिक़ दुन्या जम्अ़ करे और इस के इ़लावा दुन्या से कनारा कशी इख़्तियार करे क्यूंकि जब कोई दुन्या से मुंह मोड़ता है, तो दुन्या उस के पास ज़लील हो कर आती है, जो दुन्या कमाने की ख़ात़िर जितना दुन्या के पीछे भागता है, दुन्या उस से उतनी ही भागती है, जैसे साया सूरज की त़रफ़ मुंह कर के चलने वाले के पीछे पीछे आता और सूरज से पीठ फेर कर चलने वाले के आगे आगे भागता है, अगर येह शख़्स अपने आगे भागने वाले साए को पकड़ने की कोशिश करे भी, तो नाकाम होगा।[2]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह ह़क़ीक़त है कि जो दुन्या के पीछे भागता है, तो दुन्या उसे अपने पीछे भगाती है और वोह दुन्या की मह़ब्बत में सरकश व ना फ़रमान हो कर धीरे धीरे दीन से दूर होता चला जाता है जबकि जो ख़ुश नसीब दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करता है, तो दुन्या ख़ुद उस के क़दमों में चली आती है। अगर हम दुन्या की मह़ब्बत से पीछा छुड़ा कर फ़िक्रे आख़िरत पैदा करना चाहती हैं, तो दावते इस्लामी के

---

1 ...شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، ۷/۳۴۳، حدیث: ۱۰۵۲۱

2 ...فیض القدیر، ۳/۶۶۶ تحت الحدیث: ۴۱۱۴

www.dawateislami.net

मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाएं, اِنْ شَآءَ الله इस की बरकत से शरीअ़तो सुन्नत के मुत़ाबिक़ अ़मल करने की सआ़दत नसीब होगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه दावते इस्लामी के मदनी माहोल से मुत्तक़ी व परहेज़गार, अच्छी आ़दातो किरदार के ह़ामिल बे शुमार लोग वाबस्ता हैं। **अल्लाह** हमें दावते इस्लामी के मदनी माहोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए और ख़ूब ख़ूब नेकियां करने की सआ़दत नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

यज़ीद की ख़ुराफ़ात और उन का बाईकॉट

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यज़ीदे पलीद ने जिन ख़ुराफ़ात और बुराइयों का सरे आ़म इर्तिकाब किया था, बद क़िस्मती से आज वोही चीज़ें हमारे मुआ़शरे में भी आ़म होती जा रही हैं, ह़ालांकि हमारा प्यारा दीन हमें उन तमाम ख़ुराफ़ात से बचने की तल्क़ीन करता है। आइए ! इसी बारे में मज़ीद सुनती हैं :

यज़ीद की एक बुराई "शराब नोशी"

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यज़ीद की बुरी आ़दतों में से एक शराब नोशी भी थी। इस में कोई शक नहीं कि शराब पीना ह़रामे क़त़ई है और इसे ह़लाल जान कर पीना तो कुफ़्र है। बद क़िस्मती से हमारे मुआ़शरे में येह बुराई भी आ़म होती जा रही है। याद रखिए ! शराब तमाम बुराइयों की जड़ है कि शराब पी कर इन्सान हर गुनाह में ब आसानी मुब्तला हो सकता है क्यूंकि शराबी को होश नहीं होता और वोह अच्छे बुरे की तमीज़ भी खो बैठता है। शराब क्या गुल खिलाती है ? आइए ! इस ज़िम्न में एक ह़दीसे पाक सुनती हैं। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

शराब ने क्या गुल खिलाए

हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : बुराइयों की अस्ल (यानी शराब) से बचो क्यूंकि तुम से पेहले एक शख़्स था जो **अल्लाह** पाक की इबादत किया करता और लोगों से अलग थलग रेहता, एक औरत उस की महब्बत में गिरिफ़्तार हो गई और उस की तरफ़ ख़ादिम को केहला भेजा कि हम तुम्हें गवाही के लिए बुला रहे हैं। चुनान्चे, वोह वहां पहुंच गया, जब भी वोह किसी दरवाज़े से अन्दर दाख़िल होता, तो वोह उस पर बन्द कर दिया जाता, यहां तक कि वोह एक निहायत हसीनो जमील औरत के पास पहुंचा, जिस के क़रीब एक लड़का खड़ा था और वहां शीशे का एक बड़ा बरतन था, जिस में शराब मौजूद थी। उस औरत ने आबिद से कहा : मैं ने तुझे किसी क़िस्म की गवाही देने के लिए नहीं बुलाया बल्कि इस लिए बुलाया है कि तू इस लड़के को क़त्ल कर के मुझ से बदकारी करे या फिर शराब का सिर्फ़ एक जाम पी ले, अगर तू ने इन्कार किया, तो मैं वावेला करूंगी और तुझे ज़लीलो रुस्वा कर दूंगी। जब उस शख़्स ने देखा कि उस के पास इस से छुटकारे की कोई राह नहीं, तो उस ने कहा : मुझे शराब का गिलास पिला दे। औरत ने शराब का एक जाम पिलाया, तो उस ने मज़ीद मांगा, पस वोह इसी तरह शराब पीता रहा, यहां तक कि उस औरत के साथ मुंह भी काला किया और लड़के को भी क़त्ल कर दिया। लिहाज़ा तुम शराब से बचते रहो, बिला शुबा **अल्लाह** की क़सम ! ईमान और शराब नोशी दोनों किसी शख़्स के सीने में कभी जम्अ नहीं हो सकते, हां ! अन क़रीब एक दूसरे को बाहर निकाल देगा।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1 ... ابن حبان، کتاب الاشربة، ذکر مایجب علی المرء ۔۔۔ الخ، ۷/۳۶۷، حدیث: ۵۳۴۴

www.dawateislami.net

यज़ीद की दूसरी बुराई "गाने बाजे"

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यज़ीदे पलीद में एक बुराई येह भी थी कि वोह गाने बाजे सुनने का आ़दी था जबकि गाने बाजे सुनना नाजाइज़, सख़्त ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है मगर अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! येही बुराई आज हमारे मुआ़शरे में भी आ़म होती नज़र आ रही है, छोटी हो या बड़ी, इस्लामी भाई हो या इस्लामी बहनें, एक तादाद है जो इस बुराई में मुब्तला नज़र आती है, ऐसा मालूम होता है कि गोया मूसीक़ी मुसलमानों की नस नस में उतरती जा रही है, आज तो हर जगह ही मूसीक़ी की धुनें सुनी जाती हैं । बच्चों के अक्सर खिलौनों में म्यूज़िक है, उन के झूलों में म्यूज़िक है, यहां तक कि बच्चों के जूतों में भी म्यूज़िक है । ग़ौर करें ! जब बच्चा म्यूज़िक सुनने का आ़दी होगा, तो बड़ा हो कर म्यूज़िक से कैसे बच सकेगा ? फ़ी ज़माना मोबाइल फ़ोन के ज़रीए़ مَعَاذَاللّٰه गाने बाजे सुनना तो बहुत ही आसान हो चुका है, दौरे जदीद की इस ईजाद से जहां दिन रात गाने सुनने का गुनाह हो रहा है, वहीं अपने मोबाइल फ़ोन पर म्यूज़िक भरी कॉलर ट्यून (Caller Tune) और रिंगटोन (Ringtone) सेट कर के दूसरों को सुना कर मज़ीद अपनी आख़िरत ख़राब की जा रही है ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिए ! गाने सुनना नाजाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । अह़ादीसे मुबारका में इस बुरे फ़ेल की मुमानअ़त वारिद हुई है । आइए ! इस बारे में 3 रिवायात सुनती हैं :

1. जो गाना सुनता है, क़ियामत के दिन **अल्लाह** पाक उस के कानों में पिघला हुवा सीसा उन्डेलेगा ।[1]

1... کنزالعمال، کتاب اللھو۔۔۔الخ، قسم الاقوال، جزء:۱۵، ۸/۹۶، حدیث: ۴۰۶۶۲

www.dawateislami.net

2. गाने बाजे से अपने आप को बचाओ क्यूंकि येह शहवत को उभारते और ग़ैरत को बरबाद करते हैं और येह शराब के क़ाइम मक़ाम हैं, इस में नशे की सी तासीर है।[1]
3. गाना और लहव दिल में इस त़रह़ निफ़ाक़ उगाते हैं, जिस त़रह़ पानी सब्ज़ा उगाता है। क़सम है उस ज़ाते मुक़द्दस की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! बेशक क़ुरआन और ज़िक्रुल्लाह ज़रूर दिल में इस त़रह़ ईमान उगाते हैं, जिस त़रह़ पानी सब्ज़ घास उगाता है।[2]

अल्लाह पाक हमें गाने बाजे की नुहूसत से बचने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और हर वक़्त नात व तिलावत, सुन्नतों भरे बयानात, मदनी मुज़ाकरे और मदनी चैनल के ईमान अफ़रोज़ सिलसिले देखने की सआ़दत नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मैं गाने बाजों और फ़िल्मों ड्रामों के गुनह छोड़ूं
पढ़ूं नातें, करूं अक्सर तिलावत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 331)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

यज़ीद की तीसरी बुराई "सूद"

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यज़ीदे पलीद की ख़ुराफ़ात में से एक बुराई येह भी थी कि उस ने सूद जैसे घिनौने गुनाह को आ़म किया, ह़ालांकि सूद क़त़ई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। इस के

1...تفسیر درمنثور، پ۲۱، لقمان، تحت الآیۃ ۶، ۶/۵۰۲، شعب الایمان، باب فی حفظ اللسان، ۴/۲۸۰، حدیث ۵۱۰۸

2...مسند الفردوس، ۲/۱۰۱، حدیث: ۲۲۰۴

www.dawateislami.net

ह़राम होने का इन्कार करने वाला काफ़िर और जो ह़राम समझ कर इस बीमारी में मुब्तला हो, वोह फ़ासिक़ और उस की गवाही ना मक़्बूल है। बद क़िस्मती से येह बुराई भी हमारे मुआ़शरे में बड़ी तेज़ी से फैलती जा रही है, अगर किसी ह़ाजतमन्द को क़र्ज़ (Loan) की ज़रूरत पड़ जाए, तो जगह जगह सूदी इदारे क़ाइम हैं, जिन से ब आसानी सूद पर क़र्ज़ मिल जाता है और क़र्ज़ लेने वाले भी मुकम्मल रिज़ामन्दी से येह ह़राम काम करते नज़र आते हैं। ऐसे मौक़ेअ़ पर अगर कोई समझाने की कोशिश भी करे, तो इस क़िस्म की बातें सुनने को मिलती हैं : "क्या करें मजबूरी है, हम तो बेबस हैं, इस के बिग़ैर चारा ही नहीं, हम अकेली कर भी क्या सकती हैं ?" वग़ैरा वग़ैरा, ह़ालांकि येह बातें दुरुस्त नहीं क्यूंकि न तो हम बेबस व मजबूर हैं और न ऐसा है कि इन ह़रामकारियों के बिग़ैर चारा नहीं और जहां तक इस बात का तअ़ल्लुक़ है कि हम अकेली क्या कर सकती हैं ? कम अज़ कम अपनी ही इस्लाह़ की कोशिश का जज़्बा तो पैदा करें, हिम्मत व ह़ौसले और ख़ुलूसे निय्यत के साथ अ़मली मैदान में आगे तो बढ़ें, क्या ख़ाली नारे लगाने से मुआ़शरे का बिगड़ा हुवा निज़ाम दुरुस्त हो जाएगा ? क्या महज़ कुढ़ती रेहने से मुआ़शरे में तब्दीली आ जाएगी ? जी नहीं ! बल्कि हमें सब से पेहले अपने आप को बदलना होगा, अपना जाइज़ा लेना होगा। आप तारीख़ के अवराक़ उठा कर देख लीजिए, इस्लाम के अ़ज़ीम सिपहसालारों के ह़ैरत में डालने वाले अ़ज़ीम कारनामों को देख लीजिए, जहां भी तब्दीली आई, वोह किसी इन्क़िलाबी क़दम उठाने के सबब आई।

अभी तो माहे मोह़र्रमुल ह़राम अपनी बरकतें लुटा रहा है, इस माहे मुक़द्दस की 10 तारीख़ को जो अ़ज़ीम वाक़िआ़ रूनुमा हुवा उस में हमारे लिए मदनी तरबियत के बे शुमार मदनी फूल हैं। लाखों सलाम ! अहले बैत

www.dawateislami.net

के उन अ़ज़ीम शाह सुवारों पर कि जिन के सरों पर ज़ुल्मो सितम के बादल मन्डला रहे थे, हर त़रफ़ से अज़िय्यत व तक्लीफ़ की आंधियां चलाई जा रही थीं मगर किसी की **नमाज़ क़ज़ा नहीं होती** । लाखों सलाम ! ख़ानदाने अहले बैत की उन पाक दामन बीबियों पर कि अपनी आंखों के सामने ख़ून की नदियां बेहती देख रही हैं मगर **शरीअ़त का दामन हाथ से नहीं छोड़ा** । **अल्लाह** पाक ख़ानदाने अहले बैत के सदक़े हमें भी अ़क़्ले सलीम अ़त़ा फ़रमाए, जज़्बए ईमानी नसीब फ़रमाए, अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए कुछ कर गुज़रने की हिम्मत व तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! एक बात याद रखें कि दवा खाई जाती है तब ही बीमारी से शिफ़ा मिलती है, हम चाहती हैं कि दवा भी न खाएं और मरज़ से शिफ़ा भी मिल जाए । माना कि मुआ़शी ख़ुश ह़ाली के लिए पूरे मुआ़शरे को सूद और दीगर बुराइयों से पाक करने की ज़रूरत है मगर याद रखें ! मुआ़शरा फ़र्द से बनता है, जब तक हम अपनी इस्लाह़ की कोशिश नहीं करेंगी, सारे मुआ़शरे की इस्लाह़ कैसे होगी ? आइए ! अब सूद की मज़म्मत पर चन्द रिवायात सुनती हैं । चुनान्चे,

1. इरशाद फ़रमाया : सूद (का गुनाह) सत्तर ह़िस्सा है, उन में सब से कम दरजा येह है कि कोई शख़्स अपनी मां से ज़िना करे ।[1]
2. इरशाद फ़रमाया : (ज़ाहिरी त़ौर पर) सूद अगर्चे ज़ियादा ही हो, आख़िरे कार उस का अन्जाम कमी पर होता है ।[2]

---

1 ... سنن ابن ماجة، ابواب التجارات، باب التغليظ فی الربا، ۳/۷۲، الحدیث: ۲۲۷۴

2 ... مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن مسعود، ۲/۱۰۹، حدیث: ۴۰۲۶

www.dawateislami.net

3. इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन सूद ख़ोर को इस ह़ाल में उठाया जाएगा कि वोह दीवाना व मख़्बूतुल ह़वास (घबराया हुवा) होगा।[1]

4. इरशाद फ़रमाया : जिस क़ौम में सूद फैलता है, उस क़ौम में पागलपन फैलता है।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

यज़ीद की चौथी बुराई "नमाज़ न पढ़ना"

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यज़ीदे पलीद जिन बुराइयों में मुब्तला था, उन में से एक येह भी थी कि वोह या तो सिरे से नमाज़ ही नहीं पढ़ता था और अगर पढ़ता भी था, तो क़ज़ा कर के पढ़ता था, ह़ालांकि नमाज़ क़ज़ा कर के पढ़ना भी गुनाह है और न पढ़ना तो इस से भी बड़ा गुनाह है। फ़ी ज़माना येह गुनाह भी बिल्कुल आ़म है। अव्वल तो हमारी अक्सरिय्यत नमाज़ों की अदाएगी से ग़ाफ़िल और हुक़ूक़ुल्लाह पामाल करने की त़रफ़ माइल नज़र आती है और जो इस्लामी बहनें पढ़ती भी हैं, उन में से शायद एक बड़ी तादाद को नमाज़ पढ़ना नहीं आती होगी । ह़ालांकि नमाज़ इन्तिहाई अहम्मिय्यत की ह़ामिल है, जिस का अन्दाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि रोज़े क़ियामत हुक़ूक़ुल्लाह में सब से पेहले इसी के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया जाएगा। ह़दीसे पाक में है : اَوَّلُ مَايُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صَلَاتُه कल क़ियामत के दिन बन्दे से सब से पेहले उस की नमाज़ के बारे में सुवाल होगा। इस ह़दीसे

1...معجم کبیر، ۱۸/۶۰، حدیث: ۱۱۰

2...کتاب الکبائر للذہبی، الکبیرۃ الثانیۃ عشرۃ، ص ۷۰

www.dawateislami.net

पाक के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि बेशक नमाज़ ईमान की अ़लामत और अस्ले इ़बादत है।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस्लाम में जो अहम्मिय्यत नमाज़ को ह़ासिल है, वोह किसी और इ़बादत को ह़ासिल नहीं। नमाज़ अरकाने इस्लाम में से एक अहम तरीन रुक्न है, नमाज एक बहुत ही अज़ीम़ इबा़दत है, नमाज़ जन्नत में ले जाने वाला अ़मल है, नमाज़ नूर है, ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ दो रक्अ़तें अदा करने वाले के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है।[2]

दो रक्अ़त नमाज़, दुन्या व माफ़ीहा (यानी दुन्या और जो कुछ इस में है उन सब) से बेहतर है, नमाज़ **अल्लाह** पाक के नज़दीक पसन्दीदा तरीन अ़मल है, नमाज़ में हर सजदे के इ़वज़ एक नेकी लिखी जाती, एक गुनाह मिटाया जाता और एक दरजा बुलन्द किया जाता है, नमाज़ी बरोज़े क़ियामत सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल किया जाएगा, नमाज़ से गुनाह झड़ते हैं, एक नमाज़ पिछली नमाज़ के दौरान होने वाले गुनाहों को धो डालती है, नमाज़ी ख़ैर में रात गुज़ारता है, नमाज़ बुराइयों को मिटा देती है। **अल्लाह** पाक हमें भी रोज़ाना पांचों नमाज़ें पाबन्दी के साथ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और नफ़्ल नमाज़ों की सआ़दत भी नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अभी हम ने बिल ख़ुसूस उन गुनाहों की मज़म्मत और उन के नुक़्सानात सुने जिन को यज़ीदे पलीद ने

1...التیسیر شرح جامع الصغیر، ۱/۳۹۲

2...مسلم، کتاب الطہارۃ، باب الذکر المستحب عقب الوضوء، ص۱۱۸، حدیث: ۲۳۴۴

www.dawateislami.net

आ़म किया। याद रखिए ! गुनाह चाहे छोटा हो या बड़ा, उस में नुक़्सान ही नुक़्सान है और गुनाहों में किस क़दर नुहूसत है, इस की तबाही व बरबादी का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाइए : चुनान्चे अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया कि तुम **अल्लाह** पाक के इस फ़रमान (पारह 8, सूरए अनआ़म, आयत नम्बर : 160) से हरगिज़ धोके में न पड़ना :

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا (پ۸، الانعام: ۱۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो एक नेकी लाए, तो उस के लिए उस जैसी दस हैं और जो बुराई लाए, तो उसे बदला न मिलेगा मगर उस के बराबर।

क्यूंकि गुनाह अगर्चे एक ही हो, अपने साथ दस बुरी ख़स्लतें ले कर आता है : (1) जब बन्दा गुनाह करता है, तो **अल्लाह** पाक को ग़ज़ब दिलाता है और वोह उसे पूरा करने पर क़ुदरत रखता है। (2) वोह (यानी गुनाह करने वाला) इब्लीसे मल्ऊ़न को ख़ुश करता है। (3) जन्नत से दूर हो जाता है। (4) जहन्नम के क़रीब आ जाता है। (5) वोह अपनी सब से प्यारी चीज़ यानी अपनी जान को तक्लीफ़ देता है। (6) वोह अपने बातिन को नापाक कर बैठता है, ह़ालांकि वोह पाक होता है। (7) आमाल लिखने वाले फ़िरिश्तों, यानी किरामन कातिबीन को ईज़ा देता है। (8) वोह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रौज़ए मुबारका में रन्जीदा कर देता है। (9) ज़मीनो आसमान और तमाम मख़्लूक़ को अपनी ना फ़रमानी पर गवाह बना लेता है। (10) वोह तमाम इन्सानों से ख़ियानत और रब्बुल आ़लमीन की ना फ़रमानी करता है।[1]

1...بحر الدموع، الفصل الثانی عواقب المعصیۃ، ص: ۳۰

www.dawateislami.net

आह ! हर लम्हा गुनह की कसरत और भरमार है
ग़ल्बए शैत़ान है और नफ़्से बद अत़्वार है
हाए ! ना फ़रमानियां, बदकारियां, बेबाकियां
आह ! नामे में गुनाहों की बड़ी भरमार है
छुप के लोगों से गुनाहों का रहा है सिलसिला
तेरे आगे या ख़ुदा हर जुर्म का इज़्हार है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 478)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

हुस्ने सुलूक के निकात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे हुस्ने सुलूक से मुतअ़ल्लिक़ चन्द निकात सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं । पेहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए : (1) फ़रमाया : हर हुस्ने सुलूक सदक़ा है, ग़नी के साथ हो या फ़क़ीर के साथ ।[1] (2) फ़रमाया : जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखता है, उसे चाहिए कि सिलए रेह़मी करे ।[2] ❖ क़ुरआनो ह़दीस में रिश्तेदारों और ज़विल क़ुर्बा (यानी क़राबत वालों) के साथ हुस्ने सुलूक करने का हुक्म है ।[3] ❖ हुस्ने सुलूक की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, हदिय्या व तोह़फ़ा देना और अगर उन को किसी काम में मदद दरकार हो, तो उस काम में उन की मदद करना, उन्हें सलाम करना, उन की मुलाक़ात को जाना, उन के पास उठना बैठना, उन से बात चीत करना, उन के साथ लुत़्फ़

1 ... مجمع الزوائد، کتاب الزکوٰۃ، باب کل معروف صدقۃ، ۳/۳۳۱، حدیث: ۴۷۵۴

2 ... بخاری، کتاب الادب، باب اکرام الضیف... الخ، ۴/۱۳۶، حدیث: ۶۱۳۸

3 ... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل البیع، ۹/۶۷۸ ماخوذا

www.dawateislami.net

व मेहरबानी से पेश आना ।[1] ❖ हज़रते इमामे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जब तुम लोगों के साथ अच्छा बरताव करोगे, तो वोह तुम्हारे मां-बाप की त़रह़ हो जाएंगे, अगर्चे तुम्हारे और उन के दरमियान कोई रिश्ता नात़ा न हो ।[2] ❖ औलियाउल्लाह अपनी बुराइयां करने वालों बल्कि जान के दरपै रेहने वालों के साथ भी हुस्ने सुलूक किया करते हैं ।[3] ❖ हुस्ने सुलूक करने से **अल्लाह** पाक की रिज़ा ह़ासिल होती है । ❖ हुस्ने सुलूक लोगों की ख़ुशी का सबब है । ❖ हुस्ने सुलूक करने से फ़िरिश्तों को मसर्रत होती है । ❖ हुस्ने सुलूक करने से मुसलमानों की त़रफ़ से उस शख़्स की तारीफ़ होती है । ❖ हुस्ने सुलूक करने से शैत़ान को रन्ज पहुंचता है । ❖ हुस्ने सुलूक करने से उ़म्र बढ़ती है । ❖ हुस्ने सुलूक करने से रिज़्क़ में बरकत होती है ।[4]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 16** (312 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"**, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले **"101 मदनी फूल"** और **"163 मदनी फूल"** हदिय्यतन त़लब कीजिए और इस का मुत़ालआ़ कीजिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...الدرر الحكام، كتاب الكراهية والاستحسان، فصل من ملك امة...الخ، ۱/۳۲۳ ملخصا

2...इमामे आज़म की वसिय्यतें, स. 26

3...ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 342, माख़ूज़न

4...तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन, स. 73, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

बयान : 05 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** करीम उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** करीम उस पर सौ रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** करीम उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से आज़ाद है और उसे क़ियामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1...معجم اوسط، ۵/۲۵۲، حدیث: ۲۷۳۵

2...معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद खुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत हासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे आज के बयान का मौज़ूअ़ है "**वक़्त की अहम्मिय्यत।**" इस बयान में हम वक़्त की क़द्र करने, वक़्त के क़द्रदानों के वाक़िआ़त, क़ुरआनो ह़दीस में वक़्त की क़द्र पर मुश्तमिल तरग़ीबात, वक़्त ज़ाएअ़ करने वाले उमूर के साथ साथ वक़्त के अ़ज़ीम क़द्रदान, ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत के कुछ गोशों से मुतअ़ल्लिक़ भी सुनेंगी। **ऐ काश** ! हमें सारा बयान अच्छी अच्छी निय्यतों और मुकम्मल तवज्जोह के साथ सुनना नसीब हो जाए। आइए ! सब से पेहले दावते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना की

www.dawateislami.net

किताब "**क़ूतुल क़ुलूब**" जिल्द 1 के सफ़ह़ा नम्बर 474 से एक सबक़ आमोज़ ह़िकायत सुनिए और इस से ह़ासिल होने वाले मदनी फूलों को अपने दिल में सजाने की कोशिश कीजिए। चुनान्चे,

ग़फ़लत की नींद और ज़िन्दगी की बरबादी

किसी (नादान शख़्स) ने एक फ़ल्सफ़ी ह़कीम से कहा कि मेरे सामने किसी ऐसी शै की ख़ूबियां बयान कीजिए कि जिस के इस्तिमाल से मैं दिन के वक़्त भी सोता रहूं। ह़कीम ने कहा : ऐ फुलां ! तू कितना कम अ़क़्ल है ! तेरी उ़म्र का आधा ह़िस्सा तो पेहले ही (रात को ग़फ़्लत में) सोते हुवे गुज़र रहा है, ह़ालांकि नींद मौत का दूसरा नाम है और अब तू अपनी उ़म्र के (4 ह़िस्सों में से) तीन चौथाई (3/4) ह़िस्से को मज़ीद नींद की नज़्र करना चाहता है और सिर्फ़ एक चौथाई (1/4) ह़िस्से की ज़िन्दगी ? तो उस बन्दे ने पूछा : वोह कैसे ? उस ह़कीम ने बताया : मसलन तेरी उ़म्र 40 साल हो, तो आधी उ़म्र 20 साल होगी और तू है कि इसे भी मज़ीद 10 साल बनाना चाहता है (यानी जब दिन को भी मज़ीद सोया रहेगा, तो मज़ीद 10 साल कम हो जाएंगे और तेरे पास आख़िरत के लिए ज़ादे राह इकट्ठा करने के लिए सिर्फ़ 10 साल ही बाक़ी बचेंगे, लिहाज़ा ज़ियादा सोने की ख़्वाहिश को दिल से निकाल दे)।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि उस अ़क़्लमन्द शख़्स ने ज़ियादा सोने की आरज़ू रखने वाले शख़्स की कैसे अच्छे अन्दाज़ में इस्लाह़ की और उसे फ़िक्रे आख़िरत का मदनी ज़ेह्न देने की कैसी प्यारी कोशिश की। बयान कर्दा वाक़िए में बिल ख़ुसूस उन नादान इस्लामी बहनों के लिए इ़ब्रत का सामान है कि जिन का अक्सर वक़्त फ़क़त सोने में

1...क़ूतुल क़ुलूब, 1 / 474

www.dawateislami.net

या बीमारों की त़रह़ बिस्तर पर पड़ी रेहने में ही कट जाता है, और को न तो नमाज़ों का होश होता है और न ही घरवालों और शौहर के ह़ुक़ूक़ की परवा।

याद रखिए ! बिला वज्ह ज़ियादा सोना एक ऐसी बुरी आ़दत है कि जो वक़्त की शदीद बरबादी के साथ साथ दुन्या व आख़िरत में ज़िल्लतो रुस्वाई का बाइ़स भी बन सकती है। चुनान्चे, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ह़ज़रते सुलैमान बिन दावूद عَلَيْهِمَاالسَّلَام से उन की वालिदए माजिदा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! रात को ज़ियादा देर न सोना क्यूंकि रात को ज़ियादा सोना, इन्सान को क़ियामत के दिन फ़क़ीर बना देगा।[1]

शैख़ुल ह़दीस, ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तमाम बुज़ुर्गों ने येह फ़रमाया है कि तीन आ़दतों को लाज़िम पकड़ो। कम बोलना, कम सोना, कम खाना क्यूंकि ज़ियादा बोलना, ज़ियादा सोना, ज़ियादा खाना, येह आ़दतें बहुत ही ख़राब हैं और इन आ़दतों की वज्ह से इन्सान दीनो दुन्या में नुक़्सान उठाता है।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिए ! वक़्त **अल्लाह** पाक की एक ऐसी नेमत है जो हर इन्सान को बराबर मिलती है, ऐसा नहीं कि ग़रीब के लिए दिन, रात में 24 घन्टे हैं, तो अमीर के लिए 27 बल्कि **अल्लाह** करीम ने हर एक को दिन, रात की सूरत में 24 घन्टे ही अ़त़ा फ़रमाए हैं, अब देखना येह है कि कौन इन अवक़ात की क़द्र करता है और कौन बरबाद करता है ? क्यूंकि अ़न क़रीब इस ज़िन्दगी के सफ़र का इख़्तिताम होने ही वाला है। जैसा कि :

1...ابن ماجه، کتاب اقامة الصلوات، باب ماجاء فی قیام الیل، ۲/۱۲۵، حدیث: ۱۳۳۲

2...जन्नती ज़ेवर, स. 125

www.dawateislami.net

इब्ने आदम का ठिकाना

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि ऐ इब्ने आदम ! तू मुख़्तलिफ़ मरह़लों का मजमूआ़ है, जब भी तेरे पास से दिन या रात गुज़रते हैं, तो तेरा एक मरह़ला ख़त्म हो जाता है और जब तेरे तमाम मराह़िल ख़त्म हो जाएंगे, तो तू अपनी मन्ज़िल यानी जन्नत या जहन्नम तक पहुंच जाएगा।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वक़्त की क़द्र से क्या मुराद है ? वक़्त की क़द्र कैसे की जाए ? आइए ! इस को क़ुरआने करीम की आयते मुबारका से समझने की कोशिश करती हैं। चुनान्चे, पारह 30 में इरशादे बारी है :

وَالْعَصْرِ ۝ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۝ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

(پ۳۰، العصر: ۱تا۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस ज़मानए मह़बूब की क़सम ! बेशक आदमी ज़रूर नुक़्सान में है मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किए और एक दूसरे को ह़क़ की ताकीद की और एक दूसरे को सब्र की वसिय्यत की।

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (इन्सान) अपनी अस्ल पून्जी (यानी) उ़म्र को कुफ़्र, गुनाह, ग़फ़्लत, दुन्या त़लबी, खेल कूद में बरबाद कर रहा है, इसे आख़िरत (को बेहतर) बनाने का ज़रीआ़ नहीं बनाता। इन्सान ताजिर है, ज़िन्दगी उस की दुकान और आमाल दुकान के सौदे हैं, अगर (आमाल) अच्छे हैं, तो उन का ख़रीदार रब्बे करीम है और जन्नत उन की क़ीमत, अगर बुरे हैं, तो शैत़ान ख़रीदार है और दोज़ख़ उन की क़ीमत, जैसा सौदा, वैसे ख़रीदार।[2]

1...قوت القلوب، الفصل الثامن والعشرون، ۱/۱۸۷

2...तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, पा. 30, अल अ़स्र, तह़्तुल आयत : 2

www.dawateislami.net

उम्र और बर्फ़ में मुशाबहत

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का येह क़ौल नक़्ल फ़रमाते हैं कि मैं ने सूरए अ़स्र का मफ़्हूम एक बर्फ़ फ़रोश से समझा जो बाज़ार में येह आवाज़ें लगा रहा था : उस शख़्स पर रह़्म करो जिस का सरमाया पिघला जा रहा है, उस शख़्स पर रह़्म करो जिस का सरमाया पिघला जा रहा है। उस की येह बात सुन कर मैं ने कहा : येह है ''اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍۙ'' (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक आदमी ज़रूर नुक़्सान में है) का मत़लब। (मज़ीद फ़रमाते हैं :) लिहाज़ा जिस की उ़म्र बेकार गुज़र रही है, तो ऐसा शख़्स नुक़्सान उठाने वालों में से होगा।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि हमारी ज़िन्दगी बल्कि ज़िन्दगी का हर हर लम्ह़ा कितना क़ीमती है और ज़िन्दगी का येह मुख़्तसर सफ़र किस तेज़ी के साथ कट रहा है, लिहाज़ा अ़क़्लमन्द वोही है कि जो इस फ़ानी दुन्या के धोके में मुब्तला न हो, सोने और जवाहिरात से ज़ियादा क़ीमती लम्ह़ात की ना क़द्री न करे, तक़्वा व परहेज़गारी अपनाए, अपने शबो रोज़ को फ़ुज़ूलिय्यात में न गंवाए, जिन कामों के करने का शरीअ़त ने हुक्म फ़रमाया है, उन्हें बजा लाने में हरगिज़ हरगिज़ सुस्ती का मुज़ाहरा न करे, बिलफ़र्ज़ नफ़्स सुस्ती दिलाए, तो नफ़्स को ख़ूब ख़ूब डांटने की आ़दत बनाए और जिन कामों से रुकने का शरीअ़त ने हुक्म फ़रमाया है, उन से रुकने में ''**अगर मगर, चूंकि चुनान्चे**'' से काम लेने के बजाए एक लम्ह़े की भी ताख़ीर न करे क्यूंकि अगर हम इस फ़ानी दुन्या की रंगीनियों में ही खोई रहीं, सिर्फ़ और सिर्फ़ दुन्यवी मुस्तक़्बिल को संवारने में ही हमारे क़ीमती अय्याम ग़फ़्लत की नज़्र हो गए और मौत का

1 ... تفسیر کبیر، پ۳۰، العصر، تحت الآیۃ ۱، الجزء الثانی والثلاثون، ۱۱/ ۲۷۸

www.dawateislami.net

फ़िरिश्ता आन पहुंचा, तो **अल्लाह** की क़सम ! एक बार سُبْحٰنَ الله केहने की भी मोहलत नहीं दी जाएगी, लिहाज़ा अभी वक़्त है, इस की क़द्र कीजिए। आइए ! एक इ़ब्रतनाक हि़कायत सुनती हैं। चुनान्चे,

माल तक़्सीम करने की भी मोहलत न मिली

दावते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब **"इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा"** के सफ़ह़ा नम्बर 389 पर है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़्नी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बनी इसराईल में से एक शख़्स ने माल जम्अ़ किया। जब उस की मौत का वक़्त आया, तो बेटों से केहने लगा : मुझे मेरे मुख़्तलिफ़ अम्वाल दिखाओ। उस के पास बहुत से घोड़े, ऊंट और ग़ुलाम लाए गए, जब उस ने उन की त़रफ़ देखा, तो ह़सरत से रोने लगा। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे रोते हुवे देखा, तो पूछा : क्यूं रो रहे हो ? उस ज़ात की क़सम जिस ने तुझे येह सब कुछ दिया है ! जब तक मैं तेरी रूह़ और बदन को एक दूसरे से जुदा न कर दूं, यहां से नहीं जाऊंगा। उस ने कहा : मुझे कुछ मोहलत दीजिए कि मैं इस माल को तक़्सीम कर दूं। फ़िरिश्ते ने कहा : अब तुझे मोहलत नहीं, तू ने येह काम अपनी मौत के आने से पेहले क्यूं न किया ? चुनान्चे, (फिर) मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने उस की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा ली।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा हि़कायत बिल ख़ुसूस उन ग़ाफ़िल इस्लामी बहनों के लिए बाइ़से इ़ब्रत है कि जिन के पास माल की कमी नहीं मगर इस के बा वुजूद वोह उस में मज़ीद इज़ाफ़े के लिए दिन रात सोचती रेहती हैं। लाखों, करोड़ों बल्कि अरबों रुपये और कई

1...लुबाबुल इह़या, स. 389

www.dawateislami.net

जाएदादें हासिल करने के बाद भी दिल नहीं भरता, माल जम्अ़ करने की हिर्स है कि कम होने के बजाए मज़ीद बढ़ती ही चली जाती है।

याद रखिए ! माल जम्अ़ करना मुत्लक़न बुरा नहीं, माल वोही बुरा है कि जिस के हुक़ूक़े वाजिबा (मसलन ज़कात, फ़ित्रा वग़ैरा) अदा न किए जाएं, माल वोही बुरा है जो हमें शरई अह़काम की बजा आवरी, मौत, क़ब्रो ह़श्र के मुआ़मलात, अच्छे आमाल व अच्छी सोह़बत से ग़ाफ़िल कर दे। लिहाज़ा वक़्त की अहम्मिय्यत को समझने की कोशिश कीजिए और ब क़दरे ज़रूरत ही माल जम्अ़ कीजिए क्यूंकि ज़िन्दगी बार बार नहीं मिलती। आइए ! बतौ़रे तरग़ीब वक़्त की अहम्मिय्यत पर 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनती हैं। चुनान्चे,

1. इरशाद फ़रमाया : दो नेमतें ऐसी हैं जिन के बारे में बहुत से लोग धोके में हैं। इन में से एक सेह़त और दूसरी फ़राग़त है।[1]
2. इरशाद फ़रमाया : पांच चीज़ों को पांच चीज़ों से पेहले ग़नीमत जानो। (1) जवानी को बुढ़ापे से पेहले। (2) सेह़त को बीमारी से पेहले। (3) मालदारी को तंगदस्ती से पेहले। (4) फ़ुर्सत को मश्ग़ूलिय्यत से पेहले और (5) ज़िन्दगी को मौत से पेहले।[2]
3. इरशाद फ़रमाया : रोज़ाना सुब्ह़ जब सूरज तुलूअ़ होता है, तो दिन येह एलान करता है कि अगर आज कोई अच्छा काम करना है, तो कर लो कि आज के बाद मैं कभी पलट कर नहीं आऊंगा।[3]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा अह़ादीसे मुबारका सुन कर ख़ुसूसन उन इस्लामी बहनों को ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो जाना चाहिए जो घन्टों अख़बारात और नॉवेलों का मुत़ालआ़ करने, बार बार

1...بخاری، کتاب الرقاق، باب ماجاء فی الرقاق...الخ، ۴/۲۲۲، حدیث: ۶۴۱۲

2...مستدرک، کتاب الرقاق، ۵/۴۳۵، حدیث: ۷۹۱۶

3...شعب الایمان، باب فی الصیام، ماجاء فی لیلۃ النصف من الشعبان، ۳/۳۸۶، حدیث: ۳۸۴۰

www.dawateislami.net

आईना देखने, फ़िल्में, ड्रामे या मूसीक़ी से भरपूर प्रोग्राम देखने, सुनने, क्रिकेट या दीगर खेलों की नशरिय्यात देखने या इन की तफ़्सीलात सुनने, मोबाइल या कम्प्यूटर पर गेम्ज़ खेलने, नाइट पेकेजिज़ के ज़रीए ना महरम मर्दों से फ़ोन पर बातें करने और सोश्यल मीडिया (Social Media) का फ़ुज़ूल या गुनाह भरा इस्तिमाल करने में वक़्त की नेमत को बरबाद करती और दुन्या व आख़िरत में ह़सरत व शर्मिन्दगी का सामान इकठ्ठा करती हैं, अगर येही वक़्त नमाज़, रोज़ों, ज़िक्रो दुरूद, तिलावत, ह़म्दो नात, वालिदैन की ख़िदमत, नेकी की दावत, क़ब्रो आख़िरत के मुआ़मलात की तय्यारी, औलाद की तरबियत और ह़ुसूले इ़ल्मे दीन जैसे नेक कामों में गुज़रता, तो यक़ीनन दुन्या व आख़िरत में इस की बरकतें नसीब होतीं मगर **आह** ! हमारी ग़फ़्लतें !

याद रखिए ! वक़्त **अल्लाह** पाक की एक अ़ज़ीमुश्शान नेमत है। बरोज़े क़ियामत जिस त़रह़ बन्दों से मुख़्तलिफ़ नेमतों से मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होगा, इसी त़रह़ वक़्त के मुतअ़ल्लिक़ भी पूछा जाएगा और येह भी पूछा जाएगा कि उ़म्र किन कामों में गुज़ारी ? चुनान्चे, पारह 30, सूरए तकासुर की आयत नम्बर 8 में **अल्लाह** पाक का फ़रमाने आ़लीशान है :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىِٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝٨ (پ۳۰،التکاثر:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से नेमतों से पुर्सिश होगी।

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सय्यिद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : (वोह नेमतें कि) जो **अल्लाह** पाक ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाई थीं (मसलन) सेह़त व फ़राग़ व अम्नो ऐ़श व माल वग़ैरा जिन से दुन्या में लज़्ज़तें उठाते थे, (इन के

www.dawateislami.net

बारे में) में पूछा जाएगा : येह चीज़ें किस काम में ख़र्च कीं, इन का क्या शुक्र अदा किया ? और तर्के शुक्र (ना शुक्री) पर अ़ज़ाब किया जाएगा।[1] चुनान्चे, नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन बन्दा उस वक़्त तक क़दम न उठा सकेगा जब तक कि उस से 5 चीज़ों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल न कर लिया जाए : (1) उ़म्र किन कामों में सर्फ़ की ? (2) जवानी कैसे गुज़ारी ? (3) माल कहां से कमाया ? (4) कहां ख़र्च किया ? (5) और अपने इ़ल्म पर कहां तक अ़मल किया।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज दुन्या में ही इन सुवालात के जवाबात तय्यार कर लीजिए, इन सुवालात के जवाबात तय्यार करने का एक ज़रीआ़ अपने वक़्त को अच्छे कामों में सर्फ़ करना है। याद रखिए ! लफ़्ज़े **"वक़्त"** में सिर्फ़ तीन ह़ुरूफ़ हैं मगर दर ह़क़ीक़त येह बहुत क़ीमती चीज़ है। वक़्त को न कोई ख़रीद सकता है और न ही इसे ज़ख़ीरा किया जा सकता है, येह एक ऐसा मुसाफ़िर है जो कि मुसल्सल अपना सफ़र जारी रखे हुवे है, जो कहीं पड़ाव नहीं डालता और तमाम लोगों से बे परवा हो कर अपनी मन्ज़िले मक़्सूद की जानिब गामज़न रेहता है। क़ौमों के उ़रूज व ज़वाल में वक़्त का किरदार बहुत अहम रहा है, जो क़ौमें वक़्त की क़द्रदान होती हैं और अपने सुब्ह़ो शाम को वक़्त का पाबन्द बना लेती हैं, तो तरक़्क़ी ख़ुद आगे बढ़ कर उन का इस्तिक़्बाल करती है। इस के बर अ़क्स जो क़ौमें वक़्त को बेकार समझ कर यूंही गंवा देती हैं, तो ऐसी क़ौमें ग़ुलामी की ज़िन्दगी बसर करती हैं, वक़्त की बरबादी उन्हें ज़िल्लतो

1...तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा. 30, अत्तकासुर, तह़्तुल आयत : 8, स. 1118

2...ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ والرقائق والورع، باب فی القیامۃ، ۴/ ۱۸۸، حدیث: ۲۴۲۴

www.dawateislami.net

रुस्वाई के गढ़े में इस त़रीक़े से धकेल देती है कि उन का नामो निशान भी बाक़ी नहीं रेहता । वक़्त के मुआ़मले में अगर हम अपनी ज़िन्दगी और **अल्लाह** करीम के नेक बन्दों की ज़िन्दगियों का तक़ाबुल करें, तो हमारे और उन के अन्दाज़े ज़िन्दगी में वाज़ेह फ़र्क़ देख कर शायद हम अफ़्सोस व शर्मिन्दगी के समुन्दर में डूब जाएं क्यूंकि येह ह़ज़रात टाइम पास (*Time Pass*) करने के आ़दी न थे बल्कि इन के ज़ेह्नो दिमाग़ में वक़्त की क़द्रो मन्ज़िलत कूट कूट कर भरी हुई थी । नज़्अ़ के आ़लम में इन्सान पर जो गुज़रती है, उस को मरने वाला ही जानता है मगर **अल्लाह** वाले इस नाज़ुक घड़ी में भी वक़्त की अहम्मिय्यत से ग़ाफ़िल नहीं होते थे बल्कि वोह आख़िरी लम्ह़ात भी नेकियों में गुज़ारना चाहते थे । आइए ! एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत सुनती हैं और वक़्त की क़द्रो क़ीमत को समझने की कोशिश करती हैं । चुनान्चे,

अभी वक़्त है !

ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मुह़म्मद बिन ज़ियाद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मन्क़ूल है, मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अ़त्तार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को येह फ़रमाते हुवे सुना : जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ासिम जुनैद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल हुवा, तो मैं और मेरे कुछ दोस्त वहां मौजूद थे, हम ने देखा कि इन्तिक़ाल से कुछ देर क़ब्ल ज़ौफ़ (यानी कमज़ोरी) की वज्ह से आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे थे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दोनों पाउं सूजे हुवे थे, जब रुकूअ़ व सुजूद करते, तो एक पाउं मोड़ लेते जिस की वज्ह से बहुत तक्लीफ़ और परेशानी होती । दोस्तों ने येह ह़ालत देखी, तो कहा : ऐ अबू क़ासिम ! येह क्या है ? आप के पाउं सूजे हुवे क्यूं हैं ? फ़रमाया :

www.dawateislami.net

अल्लाहु अक्बर ! येह तो नेमत है । फिर जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुवे, तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद ह़रीरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कहा : ऐ अबू क़ासिम ! अगर आप लेट जाएं, तो क्या ह़रज है ? फ़रमाया : अभी वक़्त है जिस में कुछ नेकियां कर ली जाएं, इस के बाद कहां मौक़अ़ मिलेगा । फिर "**अल्लाहु अक्बर**" कहा और इसी ह़ालत में रहे, यहां तक कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की रूह़ इस दारे फ़ानी से आ़लमे बाला की त़रफ़ परवाज़ कर गई । येह भी मन्क़ूल है कि जब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से कहा गया : हुज़ूर ! अपनी जान पर कुछ नर्मी कीजिए । तो फ़रमाया : अब मेरा नामए आमाल बन्द किया जा रहा है, इस वक़्त नेक आमाल का मुझ से ज़ियादा कौन ह़ाजतमन्द होगा ?[1]

कर जवानी में इबादत, काहिली अच्छी नहीं
जब बुढ़ापा आ गया कुछ बात बन पड़ती नहीं
है बुढ़ापा भी ग़नीमत जब जवानी हो चुकी
येह बुढ़ापा भी न होगा मौत जिस दम आ गई

(मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 167)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिए ! अ़क़्लमन्द ख़ातून न तो ख़ुद अपना वक़्त ज़ाएअ़ करती है और न ही दूसरों का वक़्त बरबाद करती है बल्कि वोह तो अपने वक़्त की क़द्र करती, अपने काम से काम रखती, वक़्त को अच्छे अच्छे कामों में सर्फ़ करती और दूसरी इस्लामी बहनों को भी इस की तरग़ीब दिलाती है, टाइम पास करने की सोच रखने वालियों की इस्लाह़ करती और फ़ुज़ूल बात निकल जाने की सूरत में ग़ौरो फ़िक्र करते हुवे अपना एह़तिसाब भी करती है । येही वोह मदनी सोच है कि जिस के वाज़ेह़ आसार हमें बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की सीरत में

1... عیون الحکایات، الحکایۃ السابعۃ و الستون بعد المائتین، ص۲۵۰

www.dawateislami.net

नुमायां तौ़र पर दिखाई देते हैं। आइए ! बतौ़रे तरग़ीब 2 ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनती और उन से इ़ब्रत के मदनी फूल चुनती हैं। चुनान्चे,

टाइम पास करने वाले की इस्लाह़

दावते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब **"इह़याउल उ़लूम"** जिल्द 2, सफ़ह़ा नम्बर 829 पर है : ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मस्जिदे ह़राम में अकेले तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक दोस्त उन के पास आया, तो आप ने उस से आने का सबब दरयाफ़्त किया। उस ने कहा : मैं आप से उन्सिय्यत (Company) पाने आया हूं। आप ने फ़रमाया : **अल्लाह** की क़सम ! येह तो वह़शत वाला काम है ! तुम येही चाहते हो कि तुम मेरे लिए अपना कलाम मुज़य्यन करो, मैं तुम्हारे लिए अपना कलाम मुज़य्यन करूं ? तुम मेरे लिए झूट बोलो और मैं तुम्हारे लिए झूट बोलूं ? (लिहाज़ा बेहतरी इसी में है कि) या तो तुम मेरे पास से चले जाओ या मैं तुम्हारे पास से चला जाता हूं।[1]

एक साल के रोज़े रखे

दावते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब **"मिन्हाजुल आ़बिदीन"** सफ़ह़ा नम्बर 173 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन सिनान ताबेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक बालाख़ाने (बुलन्दो बाला मकान) के पास से गुज़रे, तो उस के मालिक से दरयाफ़्त किया : येह बालाख़ाने बनाए तुम्हें कितना अ़र्सा गुज़रा है ? येह सुवाल करने के बाद आप दिल में सख़्त नादिम हुवे और अपने नफ़्स से मुख़ातब हो कर यूं फ़रमाया : "ऐ मग़रूर नफ़्स ! तू फ़ुज़ूल व बे मक़्सद सुवालात में क़ीमती

1...इह़याउल उ़लूम, 2 / 829

www.dawateislami.net

वक़्त को ज़ाएअ़ करता है" फिर इस फ़ुज़ूल सुवाल के कफ़्फ़ारे में आप ने एक साल के रोज़े रखे।[1]

नफ़्स येह क्या जुल्म है, जब देखो ताज़ा जुर्म है
नातुवां के सर पे इतना बोझ भारी वाह वाह !

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 134)

कलामे रज़ा की वज़ाह़त : आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस शेर में फ़रमाते हैं : ऐ बदकार नफ़्स ! तेरे ज़ुल्मो सितम की भी अब ह़द हो गई ! तू हर लम्ह़ा मेरी ख़त़ाओं में बराबर इज़ाफ़ा करवाता और मुझ कमज़ोर तरीन के सर गुनाहों का भारी बोझ लदवाता चला जा रहा है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

वक़्त ज़ाएअ़ करने वाले उमूर

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन वक़्त के बारे में किस क़दर मोह़तात़ थे अगर उन को कोई दोस्त मह्ज़ इस लिए आता कि थोड़ा दिल बहल जाए और कुछ टाइम पास हो जाए, तो येह ह़ज़रात उसे वक़्त की अहम्मिय्यत पर मदनी फूल अ़त़ा फ़रमाते और वक़्त की बरबादी के नुक़्सानात बता कर उस की इस्लाह़ फ़रमाते मगर अफ़्सोस कि हम अपना वक़्त ज़ाएअ़ कर के उस पर नादिम होने और पछताने के बजाए फ़ख़्र महसूस करती हैं। वोह कौन कौन से फ़ुज़ूल काम हैं जिन में मुब्तला हो कर हम अपने क़ीमती लम्ह़ात को ज़ाएअ़ कर रही हैं और हमें नाकामियों का सामना करना पड़ रहा है। आइए ! कुछ ऐसे उमूर के मुतअ़ल्लिक़ सुनती हैं जिन में मुब्तला हो कर हमारी अक्सरिय्यत अपना क़ीमती वक़्त ज़ाएअ़ कर रही है। चुनान्चे,

1...मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 173

www.dawateislami.net

इन्टरनेट (Internet)

वक़्त ज़ाएअ़ करने वाले ज़राएअ़ में से एक बहुत बड़ा ज़रीआ़ **"इन्टरनेट"** भी है। इन्टरनेट का दुरुस्त इस्तिमाल जहां बे शुमार फ़वाइद के हुसूल का ज़रीआ़ है, वहीं इस के ग़लत़ और ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल की वज्ह से अन गिनत नुक़्सानात का सामना भी करना पड़ रहा है, जिन में से एक बहुत बड़ा नुक़्सान वक़्त का बरबाद होना भी है। बाज़ इस्लामी बहनें इन्टरनेट, फ़ेसबुक (Facebook) और वोट्स ऐप (Whatsapp) की ऐसी आ़दी हो चुकी हैं कि एक लम्हे के लिए भी मोबाइल फ़ोन नहीं छोड़तीं और वक़्फ़े वक़्फ़े से अपने सोने, जागने, शॉपिंग करने, अच्छा खाने, पीने और दीगर मुआ़मलात अपनी सहेलियों से शेयर (Share) करती हैं। बेशर्मी व बे ह़याई की ह़दों को तोड़ती हुई बे पर्दा लड़कियां अपनी तसावीर (Pictures) आ़म करने में फ़ख़्र महसूस करती हैं।

हमारी नौजवान नस्ल (New Generation) इन्टरनेट के ग़लत़ इस्तिमाल में इस क़दर मुब्तला हो चुकी है कि वोह अपने कई घन्टे इस में ज़ाएअ़ कर देती है। अगर किसी दिन इस्तिमाल न कर सकें, तो अ़जीब सी बेचैनी महसूस की जाती है और टाइम पास नहीं होता। ज़रा सोचिए ! किसी दिन क़ुरआने पाक की तिलावत का नाग़ा होने पर इस क़दर बेचैनी और उदासी हुई ? इशराक़ व चाश्त या तहज्जुद के नवाफ़िल अदा न करने पर इस क़दर बेचैनी हुई ? **ऐ काश** ! हमें तिलावते क़ुरआन का ज़ौक़ो शौक़ नसीब हो जाए। **ऐ काश** ! हमें कसरते इबादत की तौफ़ीक़ नसीब हो जाए।

इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी
करम हो करम या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मोबाइल फ़ोन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ इन्टरनेट का सह़ीह़ इस्तिमाल करने से कसीर दीनी और दुन्यवी फ़वाइद ह़ासिल हो सकते हैं, इसी त़रह़ मोबाइल फ़ोन का ज़रूरी इस्तिमाल भी हमारे रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात, सहेलियों से ह़ाल व अह़वाल और दीगर ज़रूरिय्यात के लिए हमारा मददगार है मगर हम ने इसे वक़्त ज़ाएअ़ करने का शायद एक आला समझ रखा है। बिल ख़ुसूस हमारी नौजवान इस्लामी बहनें इस का ग़लत़ और बेजा इस्तिमाल करते हुवे सारा सारा दिन वीडियो गेम्ज़ खेलती या फ़ुज़ूल SMS भेजती (Send करती) हैं जिन में बेहूदा मज़ाक़ इश्क़िया व फ़िस्क़िया अश्आ़र, अख़्लाक़िय्यात को बिगाड़ने और बाज़ अवक़ात तो ऐसे ग़ैर शरई कलिमात होते हैं जिन की वज्ह से हुक्मे कुफ़्र लाज़िम आता हो। मज़ीद येह कि ऐसे SMS पढ़ कर مَعَاذَاللہ ख़ुशी का इज़्हार कर के दूसरों को भी भेजती (Forward) हैं।

याद रखिए ! इस त़रह़ सारा दिन मोबाइल फ़ोन का इस्तिमाल आंखें कमज़ोर होने, तालीमी नुक़्सान होने, ग़ौरो फ़िक्र की सलाह़िय्यत ख़त्म होने, पैसे और ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात ज़ाएअ़ करने का भी सबब है। अगर हमारे पास मोबाइल फ़ोन है, तो हमें अपना पैसा और क़ीमती वक़्त बचाते हुवे इस का सह़ीह़ इस्तिमाल करना चाहिए। मोबाइल फ़ोन पर गाने सुनने के बजाए मक्तबतुल मदीना के बस्ते से नात व तिलावत और अमीरे अहले सुन्नत, निगराने शूरा के सुन्नतों भरे बयानात, फ़र्ज़ उ़लूम कोर्स, इ़ल्मे दीन से मालामाल रंग बिरंगे क़ीमती मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से मेहकते हुवे मदनी मुज़ाकरों वाले मेमोरी कार्ड ह़दिय्यतन ह़ासिल कीजिए और तवज्जोह के साथ सुनिए।

www.dawateislami.net

जी हां ! इल्मे दीन का शौक़ रखने वालों और वालियों के लिए दावते इस्लामी की मजलिस **"आई-टी"** की त़रफ़ से मुख़्तलिफ़ ऐप्लीकेशन्ज़ (*Applications*) भी मुतआ़रिफ़ करवाई जा चुकी हैं। मसलन मौलाना मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी, अल्हाज उ़बैद रज़ा अ़त्तारी, ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी, अवक़ातुस्सलात (*Prayer Times*), अल कुरआनुल करीम, रूह़ानी इ़लाज, मदनी इन्आ़मात, मदनी चेनल, मदनी ख़ाका, दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, ह़ज्जो उ़मरह वग़ैरा, इन ऐप्लीकेशन्ज़ (*Applications*) के ज़रीए़ भी मालूमात का ढेरों ख़ज़ाना हाथ आएगा। اِنْ شَآءَ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यक़ीनन येह ज़िन्दगी चन्द रोज़ा है, अगर हम इस को बे मक़्सद कामों में ज़ाएअ़ करने के बजाए फ़ाएदेमन्द कामों में सर्फ़ करें, गुनाहों से बचते हुवे नेकियों में गुज़ारें, तो हमारी दुन्या भी अच्छी और आख़िरत भी बेहतर होगी। हमारे अस्लाफ़ वक़्त के बड़े क़द्रदान साबित हुवे, तो आज तक उन के चर्चे अ़वाम व ख़वास की ज़बानों पर जारी हैं, मसलन सह़ाबए किराम, अहले बैते अत़्हार, ताबेईन, तबए़ ताबेईन رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن औलियाए कामिलीन, मुह़द्दिसीन, मुफ़स्सिरीन, फ़ुक़हाए किराम और सूफ़ियाए किराम वग़ैरा वोह अ़ज़ीम हस्तियां हैं कि जिन का ज़िक्रे ख़ैर करना हम अपने लिए बाइ़से सआ़दत समझती हैं और इन का नाम आते ही मुंह से बे साख़्ता رَضِیَ اللهُ عَنْه और رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जारी हो जाता है। क्यूं ? इस लिए कि वोह ह़ज़रात वक़्त की क़द्र व अहम्मिय्यत से बख़ूबी वाक़िफ़ थे, इन्हीं वक़्त की क़द्र करने वालों में एक नुमायां नाम अहले बैते अत़्हार के चश्मो चराग़, ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللهُ عَنْه का भी है। आप ने वक़्त की ऐसी क़द्र की ज़ैनुल आ़बिदीन (इ़बादत गुज़ारों की ज़ीनत) और सज्जाद (यानी कसरत से सजदा करने वाले) के

www.dawateislami.net

लक़ब से मश्हूर हो गए। आइए ! इसी मुनासबत से आप की सीरत की चन्द झल्कियां सुनती हैं। चुनान्चे,

सीरते ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन

❖ आप का नाम "**अ़ली बिन हुसैन**" है। ❖ आप की विलादत 38 हिजरी में मदीनतुल मुनव्वरा में हुई। ❖ आप की कुन्यत "**अबू मुह़म्मद, अबुल ह़सन, अबुल क़ासिम**" और "**अबू बक्र**" है जबकि कसरते इबादत के सबब आप का लक़ब "**सज्जाद, ज़ैनुल आ़बिदीन, सय्यिदुल आ़बिदीन**" और "**अमीन**" है। ❖ आप ने 2 साल तक अपने दादा हुज़ूर, ह़ज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा की आग़ोश में परवरिश पाई। ❖ फिर 10 साल अपने तायाजान, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन के ज़ेरे साया रहे और तक़रीबन 11 साल अपने वालिदे माजिद, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन की ज़ेरे निगरानी तरबियत पा कर उ़लूमे मारिफ़त की मनाज़िल तै कीं। ❖ आप अपने अकाबिरीन की पाकीज़ा ज़िन्दगियों की चलती फिरती तस्वीर थे और ख़ौफ़े ख़ुदा के पैकर थे। ❖ इमाम मालिक ने फ़रमाया कि मुझे येह बात पहुंची है कि अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا का मौत तक रोज़ाना एक हज़ार रक्अ़त नफ़्ल पढ़ने का मामूल था और उन को कसरते इबादत की वज्ह से "**ज़ैनुल आ़बिदीन**" कहा जाता था।[1] ❖ इमाम ज़ोहरी ह़ज़रते अ़ली बिन हुसैन का तज़किरा करते हुवे रोते थे और उन्हें ज़ैनुल आ़बिदीन के नाम से याद करते थे।[2] ❖ इमाम अबू नुऐम ने फ़रमाया कि ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इबादत गुज़ारों की ज़ीनत, क़ानितीन की अ़लामत,

1... سیر اعلام النبلاء: ۴/۳۹۲

2... حلیۃ الاولیاء، زین العابدین علی بن الحسین، رقم: ۳۵۴۲، ۳/۱۵۹

www.dawateislami.net

इबादत का हक़ अदा करने वाले और इन्तिहाई सख़ी व मुश्फ़िक़ थे।[1] ❖ आप जब वुज़ू करते, तो ख़ौफ़ के मारे आप के चेहरे का रंग ज़र्द पड़ जाता। घरवाले दरयाफ़्त करते : येह वुज़ू के वक़्त आप को क्या हो जाता है ? तो फ़रमाते : तुम्हें मालूम है कि मैं किस के सामने खड़े होने का इरादा कर रहा हूं ?[2] ❖ मैदाने करबला की तरफ़ जाने वाले हुसैनी क़ाफ़िले के शुरका में आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ भी शामिल थे मगर जब 10 मोहर्रमुल हराम को बज़्मे शहादत सजी, तो आप शदीद बीमार थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हुसैनी क़ाफ़िले के वाहिद मर्द थे जो इस मारिकए हक़ व बातिल के बाद ज़िन्दा बचे थे। ❖ 58 बरस की उम्र में वलीद बिन अब्दुल मलिक ने आप को ज़हर दिया जिस की वज्ह से आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मोहर्रमुल हराम 94 हिजरी में शहादत के मन्सब पर फ़ाइज़ हो कर मदीने शरीफ़ में जन्नतुल बक़ीअ़ में आराम फ़रमा हुवे।

सय्यिदे सज्जाद के सदक़े में साजिद रख मुझे
इल्मे हक़ दे बाक़िरे इल्मे हुदा के वासिते

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत और वक़्त की क़द्र

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन की सीरते तय्यिबा के रौशन पहलूओं से मालूम हुवा कि आप अपने वक़्त के बहुत ज़ियादा पाबन्द थे, तभी तो इतनी ज़ियादा इबादात व रियाज़ात आप की ज़िन्दगी का हिस्सा थीं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ आज के इस पुर फ़ितन दौर में शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ, अस्लाफ़े किराम की याद ताज़ा

1... حلیۃ الاولیاء، زین العابدین علی بن الحسین، ۳/۱۵۷
2... احیاء العلوم، کتاب الخوف والرجاء، ۴/۲۲۶

www.dawateislami.net

करने वाली वोह अ़ज़ीम हस्ती हैं कि जिन का हर अ़मल हमारे लिए लाइ़के़ तक़्लीद है क्यूंकि आप ने अपने वक़्त को एक बेहतरीन अन्दाज़ में तक़्सीम किया हुवा है। चुनान्चे, नमाज़, अवरादो वज़ाइफ़, बयानात, मदनी मुज़ाकरे, मुत़ालआ़, रोज़ों का तसल्सुल, नवाफ़िल की कसरत, मदनी मश्वरे, सह़री व इफ़्त़ार, मुरीदीन व मुतअ़ल्लिक़ीन और उ़लमा व अ़वाम से मुलाक़ात, मक्तूबात के जवाबात, मरीज़ों की इ़यादत, मर्ह़ूमीन के लवाह़िक़ीन से ताज़ियत, मदनी कामों की तरक़्क़ी पर ज़िम्मेदाराने दावते इस्लामी की ह़ौसला अफ़्ज़ाई के मदनी फूल, अहले ख़ाना की ज़रूरत, अपनी औलाद की मदनी तरबियत के साथ साथ नवासों, नवासियों, पोतों और पोतियों की मदनी तरबियत, तह़रीरी काम, आराम और रोज़ मर्रा ज़िन्दगी के बे शुमार मामूलात को मुख़्तलिफ़ अवक़ात में तक़्सीम कर के इस्तिक़ामत से इस पर अ़मल वक़्त की क़द्रदानी का मुंह बोलता सुबूत है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आप ने मुसलमानों के दिलो दिमाग़ में वक़्त की अहम्मिय्यत का एह़सास बेदार करने और उन के सीनों में बुज़ुर्गों की मदनी सोच मुन्तक़िल करने के लिए क़ुरआनी आयात, अह़ादीसे मुबारका, अक़्वाले बुज़ुर्गाने दीन और नसीह़त से भरपूर मदनी फूलों से आरास्ता **''अनमोल हीरे''** नामी एक रिसाला भी तह़रीर फ़रमाया है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मजलिसे तराजिम की त़रफ़ से इस रिसाले का मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जमा भी हो चुका है, उन में अ़रबी, इंग्लिश, हिन्दी, गुजराती और सिन्धी वग़ैरा शामिल हैं। आज ही मक्तबतुल मदीना के बस्ते से हदिय्यतन त़लब फ़रमा कर ख़ुद भी मुत़ालआ़ कीजिए और दूसरी इस्लामी बहनों को भी तोह़फ़तन पेश कीजिए।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरे अहले सुन्नत न सिर्फ़ ख़ुद वक़्त के पाबन्द हैं बल्कि आप की सोह़बत से फ़ैज़याफ़्ता होने वाले आ़शिक़ाने रसूल भी अपने वक़्त की क़द्र करते हैं। आप के मुरीदीन में

www.dawateislami.net

अपने वक़्त की क़द्र करने वालों में एक नुमायां नाम मर्हूम रुक्ने शूरा, मुफ़्तिए दावते इस्लामी, **मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का है। आप वक़्त के बड़े पाबन्द थे, हर काम वक़्त पर करने के आ़दी और आज का काम कल पर न छोड़ने का अ़मली नुमूना थे। आइए ! मुफ़्तिए दावते इस्लामी के चन्द औसाफ़ सुनती हैं। चुनान्चे,

मुख़्तसर तआ़रुफ़

❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का नाम "**मुहम्मद फ़ारूक़**" था। ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत 26 अगस्त 1976 को रमज़ानुल मुबारक के महीने में हुई। ❖ दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की बरकत से मदनी माहोल से वाबस्ता हो गए। ❖ 7 फ़रवरी 2002 ई. में अपने मुर्शिदे करीम, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के साथ हज व ज़ियारते मदीनए मुनव्वरा की सआ़दत से मुशर्रफ़ हुवे।[1] ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मामूल था कि हर माह पाबन्दी से मदनी इन्आ़मात का रिसाला जम्अ़ करवाते।[2] ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़राइज़, वाजिबात, सुन्नतों और मुस्तहब्बात के आ़मिल, वक़्त के क़द्रदान और बेहतरीन इमाम थे। ❖ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी किताब "**ग़ीबत की तबाहकारियां**" के सफ़हा 466 पर फ़रमाते हैं : ❖ दावते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के रुक्न, मुफ़्तिए दावते इस्लामी, मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद फ़ारूक़ अ़त्तारी मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बारे में मेरा हुस्ने ज़न है कि वोह दावते इस्लामी के मुख़्लिस मुबल्लिग़ और **अल्लाह** पाक से डरने वाले बुज़ुर्ग थे। ❖ गोया (वोह) इस ह़दीसे पाक

1...मुफ़्तिए दावते इस्लामी, स. 13 ता 16, मुलख़्ख़सन व मुल्तक़त़न
2...मुफ़्तिए दावते इस्लामी, स. 25

www.dawateislami.net

के मिस्दाक़ थे : كُنْ فِي الدُّنْيَا كَاَنَّكَ غَرِيْبٌ दुन्या में इस त़रह़ रहो कि गोया तुम मुसाफ़िर हो।[1] ❖ 18 मोह़र्रमुल ह़राम 1427 हि., मुत़ाबिक़ 17 फ़रवरी 2006 जुम्अ़तुल मुबारक को बाद नमाज़े जुम्आ़ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस दुन्या से पर्दा फ़रमाया।[2] ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नमाज़े जनाज़ा दावते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़, फ़ैज़ाने मदीना में आप के पीरो मुर्शिद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने पढ़ाई। ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मज़ारे पुर अन्वार सेह़राए मदीना में है।[3]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

वक़्त की क़द्र करने का त़रीक़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! अपने वक़्त की क़द्र करने के जज़्बे को मज़ीद परवान चढ़ाने के लिए चन्द ऐसे त़रीक़े सुनती हैं जिन पर अ़मल की बदौलत हमें साबित क़दमी नसीब हो सकती है। चुनान्चे, ❖ मोबाइल फ़ोन व इन्टरनेट के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से परहेज़ कीजिए और ज़रूरतन सादा और सस्ता मोबाइल इस्तिमाल कीजिए। ❖ ह़त्तल इमकान लिख कर गुफ़्तगू की आ़दत डालिए, वरना कम से कम अल्फ़ाज़ में गुफ़्तगू की तरकीब बनाइए। ❖ वक़्त की क़द्र का जज़्बा बढ़ाने के लिए ख़ुद को ज़ियादा से ज़ियादा नेकी के कामों में मश्ग़ूल रखिए और पूरे दिन का एक जदवल (Schedule) बना लीजिए जिस में फ़ुज़ूल और वक़्त ज़ाएअ़ करने वाले काम शामिल न हों। ❖ सुब्ह़ जल्दी उठ कर हो सके तो नमाज़े तहज्जुद अदा कीजिए। ❖ घरवालों को सदाए मदीना लगा कर

1...بخاری، کتاب الرقاق، باب قول النبی: کن فی الدنیا... الخ، ۴/۲۲۳، حدیث: ۶۴۱۶

2...मुफ़्तिए दावते इस्लामी, स. 57, मुलख़्ख़सन

3...मुफ़्तिए दावते इस्लामी, स. 61 ता 65, मुलख़्ख़सन व मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

नमाज़े फ़ज्र के लिए जगाइए। ❖ नमाज़े फ़ज्र के बाद क़ुरआने करीम की तीन आयात मअ़ तर्जमा व तफ़्सीर पढ़ या सुन कर इस की बरकतें लूटने का मामूल बनाइए। दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत, शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या और इश्राक़ व चाश्त के नवाफ़िल भी अदा कीजिए। रात का खाना और इ़शा की नमाज़ अदा करने के बाद ज़रूरी मुआ़मलात से फ़ारिग़ हो जाने के बाद जल्दी सोने की आ़दत बनाइए, बिला वज्ह ज़ियादा देर तक जागने से सुब्ह़ नमाज़े फ़ज्र के लिए उठने में सुस्ती होगी। इस जदवल के इलावा सारा दिन फ़ुज़ूल बातों से बचने के लिए ज़बान का क़ुफ़्ले मदीना लगाइए, फ़ारिग़ लम्ह़ात में ज़िक्रो दुरूद की कसरत कीजिए, फ़िल्में, ड्रामे और गुनाहों भरे मुख़्तलिफ़ चेनल्ज़ देखने के बजाए ख़ुद भी 100 फ़ीसद इस्लामी चेनल **"मदनी चेनल"** देखिए और घरवालों को भी इस की तरग़ीब दिलाइए। अगर इस त़रह़ हम जदवल बना कर उस पर अ़मल करें, तो اِنْ شَآءَ الله हमारा वक़्त फ़ुज़ूल कामों में बरबाद होने के बजाए नेकियों में बसर होगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत, चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।[1]

1... مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵

www.dawateislami.net

सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब

आइए ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **"101 मदनी फूल"** से सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब सुनती हैं । ❖ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : तमाम सुरमों में बेहतर सुरमा **"इस्मिद"** है, येह निगाह को रौशन करता और पलकें उगाता है ।[1] ❖ पथ्थर का सुरमा इस्तिमाल करने में ह़रज नहीं । ❖ सुरमा सोते वक़्त इस्तिमाल करना सुन्नत है ।[2] ❖ सुरमा इस्तिमाल करने के 3 मन्क़ूल त़रीक़ों का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : (1) कभी दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां । (2) कभी दाईं (सीधी) आंख में तीन और बाईं (उल्टी) में दो । (3) तो कभी दोनों आंखों में दो दो और फिर आख़िर में एक सलाई को सुरमे वाली कर के उसी को बारी बारी दोनों आंखों में लगाइए ।[3] ❖ इस त़रह़ करने से اِنْ شَآءَ الله तीनों पर अ़मल होता रहेगा । ❖ अदब व ताज़ीम के जितने भी काम होते, सब हमारे प्यारे करीम आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीधी जानिब से शुरूअ़ किया करते, लिहाज़ा पेहले सीधी आंख में सुरमा लगाइए फिर उल्टी आंख में ।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) और 120 सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले **"101 मदनी फूल"** और **"163 मदनी फूल"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिए और इस का मुत़ालआ़ कीजिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...ابن ماجہ، کتاب التحفہ، باب الکحل بالاثمد، ۴/ ۱۱۵، حدیث: ۳۴۹۷

2...मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 180

3...شعب الایمان، باب فی الملابس والاوانی، ۵/ ۲۱۸، حدیث: ۶۴۲۸

www.dawateislami.net

बयान : 06 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे ।[1]

काबे के बदरुद्दुजा तुम पे करोड़ों दुरूद
त़यबा के शम्सुद्दुह़ा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 264)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।

1... معجم کبیر، ۱۸/۳۶۲، حدیث: ۹۲۸

2... معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اِنْ شَآءَ الله ! आज के बयान में सह़ाबए किराम और अहले बैते इ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मक़ामो मर्तबे और उन की शान सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगी। पेहले सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शान से मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने पाक की आयत और कुछ अह़ादीसे मुबारका बयान की जाएंगी। इस के बाद अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत की अहम्मिय्यत और इस से मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे मुबारका सुनेंगी। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, नबिय्ये पाक عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की आल से कैसी मह़ब्बत करते थे, इस के चन्द वाक़िआ़त भी बयान किए

www.dawateislami.net

जाएंगे । **अल्लाह** करे ! हम पूरा बयान सुनने में काम्याब हो जाएं । बाज़ इस्लामी बहनें दौराने बयान तस्बीह़ के ज़रीए ज़िक्र व दुरूद शरीफ़ वग़ैरा पढ़ती रेहती हैं । याद रखिए ! येह इस का मौक़अ़ नहीं है, हम चूंकि इल्मे दीन सीखने की निय्यत से यहां जम्अ़ हैं, तो दौराने बयान पूरी तवज्जोह बयान की त़रफ़ ही होनी चाहिए । वैसे इल्मे दीन सीखने पर मुश्तमिल बयान सुनना भी ज़िक्रुल्लाह ही में शामिल है ।

फ़ारूक़े आज़म की अस्ह़ाबे कह्फ़ से मुलाक़ात

किताब **''फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आज़म''** जिल्द 1, सफ़ह़ा नम्बर 304 पर लिखा है : एक दिन **अल्लाह** पाक के रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रब्बे करीम की बारगाह में अस्ह़ाबे कह्फ़ से मुलाक़ात की आरज़ू की, तो उसी वक़्त ह़ज़रते जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर हुवे और बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप उन्हें दुन्या में ज़ाहिरी त़ौर पर नहीं देख पाएंगे, अलबत्ता अपने सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से चार सह़ाबियों को उन के पास भेज दें ताकि वोह आप का पैग़ाम उन तक पहुंचाएं और उन्हें आप पर ईमान लाने की दावत दें । भेजना यूं है कि आप अपनी चादर (Shawl) मुबारक बिछाइए, एक त़रफ़ ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه, दूसरी त़रफ़ ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه, तीसरी त़रफ़ ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه और चौथी त़रफ़ ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ عَنْه को बिठा दीजिए फिर उस हवा को बुलाइए जो ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के ताबेअ़ थी और उसे हुक्म फ़रमाइए कि इन चारों सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم اَجْمَعِیْن को उठाए और उस ग़ार तक ले जाए जहां अस्ह़ाबे कह्फ़ आराम फ़रमा हैं । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ऐसा ही फ़रमाया, हवा ने वोह चादर जिस पर चारों सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आराम व सुकून से बैठे थे, उसे उठाया और अस्ह़ाबे कह्फ़ के ग़ार के पास चादर को ज़मीन पर

www.dawateislami.net

रख दिया । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ग़ार के क़रीब पहुंच कर उस के दहाने से पथ्थर हटाया, जैसे ही रौशनी अन्दर पहुंची, तो अस्ह़ाबे कह्फ़ के कुत्ते ने हल्की सी आवाज़ निकाली और ह़म्ला करने के लिए बाहर आया लेकिन जब उस ने रसूले पाक, सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को देखा, तो उन के क़दमों को चूमने और अपनी दुम हिलाने लगा और फिर सर के इशारे से अन्दर आने को कहा । चारों सह़ाबा ग़ार के अन्दर गए और सोए हुवे अस्ह़ाबे कह्फ़ को यूं सलाम किया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ **अल्लाह** पाक ने अपने करम से अस्ह़ाबे कह्फ़ को बेदार फ़रमाया और उन्हों ने भी जवाब में सलाम किया । चारों सह़ाबा ने अपना तआ़रुफ़ करवाया और सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का सलाम पहुंचाया । उन्हों ने सलाम का जवाब दिया और सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ईमान ले आए, दीने इस्लाम को क़बूल किया और अ़र्ज़ की : हमारी त़रफ़ से प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम पेश कीजिएगा । फिर वोह अपनी अपनी जगहों पर दोबारा लेट गए । वोह चारों सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان दोबारा चादर पर बैठ गए और हवा उन्हें बारगाहे रिसालत में पहुंचाने के लिए चादर को ले कर चल पड़ी ।

उधर ह़ज़रते जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام, सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर हो गए और उन चारों सह़ाबा के साथ जो हुवा सब कुछ बयान कर दिया । जब चारों सह़ाबा बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे, तो उन्हों ने भी पूरा वाक़िआ़ बयान किया और अस्ह़ाबे कह्फ़ का सलाम भी पहुंचाया । येह सुन कर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बहुत ख़ुश हुवे । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ के लिए हाथ उठा दिए और बारगाहे इलाही में यूं दुआ़ फ़रमाई : ऐ रब्बे करीम ! मेरे, मेरे रिश्तेदारों, मेरे दोस्तों और मुझ से मह़ब्बत करने वालों के दरमियान कभी जुदाई न

www.dawateislami.net

डालना और जो मुझ से, मेरे अहले बैत और मेरे अस्ह़ाब (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) से महब्बत करता है, उन सब की मग़्फ़िरत फ़रमा दे।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा ह़िकायत के अन्दर बहुत से निकात मौजूद हैं। आइए ! हम भी चन्द निकात सुनने की कोशिश करती हैं : (1) **अल्लाह** करीम ने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मालिको मुख़्तार बनाया बल्कि ऐसी हुक्मरानी व बादशाही और शहनशाही अ़त़ा फ़रमाई है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم काइनात की हर हर चीज़ पर **अल्लाह** पाक के हुक्म से हुकूमत फ़रमाते हैं। चुनान्चे, जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हवा को हुक्म इरशाद फ़रमाया, तो वोह आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म की बजा आवरी करते हुवे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को अस्ह़ाबे कह्फ़ के ग़ार (Cave) तक ले गई, यक़ीनन येह आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का एक ज़बरदस्त मोजिज़ा है कि हवाओं पर भी आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हुक्मरानी का सिक्का चलता है।

ख़ालिके़ कुल ने आप को मालिके कुल बना दिया
दोनो जहां हैं आप के क़ब्ज़ओ इख़्तियार में

(2) ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शान येह है कि इन्सान तो इन्सान, बे ज़बान जानवर भी उन्हें पेहचानते और उन की ताज़ीमो तौक़ीर बजा लाते थे। चुनान्चे, ग़ार के अन्दर मौजूद अस्ह़ाबे कह्फ़ के कुत्ते ने जब के सह़ाबियों को देखा, तो उन के मुबारक क़दमों को चूमने लगा, अपनी दुम (Tail) हिलाने लगा और फिर सर के इशारे से अन्दर आने को कहा।

किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

1...फ़ैज़ाने सिद्दीके़ अक्बर, स. 612, फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आज़म, 1 / 304

www.dawateislami.net

दामने मुस्त़फ़ा से जो लिपटा, यगाना हो गया
जिस के हुज़ूर हो गए, उस का ज़माना हो गया

(3) सह़ाबए किराम और अहले बैते मुस्त़फ़ा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मह़ब्बत करने वालों के लिए **अल्लाह** पाक के नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मग़्फ़िरत की दुआ इरशाद फ़रमाई, हमें चाहिए कि हम भी अहले बैते किराम और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से अ़क़ीदतो मह़ब्बत रखें, उन की शानो अ़ज़्मत के तराने गुनगुनाती रहें, उन की बे अदबी से बचती रहें और उन की ताज़ीमो तौक़ीर बजा लाती रहें। **ऐ काश** ! दुआए मुस्त़फ़ा में से हमें भी ह़िस्सा नसीब हो जाए और **अल्लाह** पाक उन से मह़ब्बत करने की बरकत से हमें भी मग़्फ़िरत याफ़्ता लोगों में शामिल फ़रमा ले।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बे मिस्ल हैं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ किसी मुसलमान की बड़ी से बड़ी नेकी, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की छोटी सी नेकी के बराबर नहीं हो सकती, इसी त़रह़ कोई कितना ही बड़ा वली, ग़ौस और क़ुत़ुब बन जाए और उस की ज़ात से कसरत से करामात भी ज़ाहिर होती रहें लेकिन फिर भी वोह किसी अदना सह़ाबी के मक़ाम को नहीं पहुंच सकता।

किताब "**करामाते सह़ाबा**" के सफ़ह़ा नम्बर 53 पर लिखा है : तमाम उ़लमाए उम्मत व अकाबिरीने उम्मत का इस मस्अले पर इत्तिफ़ाक़ है कि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم "**अफ़्ज़लुल औलिया**" हैं, यानी क़ियामत तक के तमाम औलिया (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) अगर्चे वोह दरजए विलायत की बुलन्द तरीन मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो जाएं मगर हरगिज़ हरगिज़ कभी भी वोह किसी सह़ाबी के कमालाते विलायत तक नहीं पहुंच सकते। ख़ुदावन्दे

www.dawateislami.net

क़ुद्दूस ने अपने ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शम्ए नुबुव्वत के परवानों को मर्तबए विलायत का वोह बुलन्दो बाला मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया है और इन मुक़द्दस हस्तियों को ऐसी ऐसी अ़ज़ीमुश्शान करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाया है कि दूसरे तमाम औलिया (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) के लिए इस मेराजे कमाल का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता । इस में शक नहीं कि ह़ज़राते सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से इस क़दर ज़ियादा करामतों का सुदूर नहीं हुवा, जिस क़दर कि दूसरे औलियाए किराम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) से करामतें मन्क़ूल हैं लेकिन वाज़ेह़ रहे कि कसरते करामत, अफ़्ज़लिय्यते विलायत की दलील नहीं क्यूंकि विलायत दर ह़क़ीक़त **"क़ुर्बे इलाही"** का नाम है । क़ुर्बे इलाही जिस को जिस क़दर ज़ियादा ह़ासिल होगा, उसी क़दर उस की विलायत का दरजा बुलन्द से बुलन्द तर होगा । सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم चूंकि निगाहे नुबुव्वत के अन्वार और फ़ैज़ाने रिसालत के फ़ुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ (फ़ैज़ याफ़्ता) हैं, इस लिए बारगाहे ख़ुदावन्दी में उन बुज़ुर्गों को जो क़ुर्बो तक़र्रुब ह़ासिल है, वोह दूसरे औलियाउल्लाह (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) को ह़ासिल नहीं ।[1]

शाने सह़ाबा और क़ुरआनो ह़दीस

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वाक़ेई सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शान ऐसी बे मिसाल है कि कोई भी उन के मक़ामो मर्तबे को नहीं पहुंच सकता । येह वोह मुबारक हस्तियां हैं जिन्हों ने सब से पेहले इस्लाम क़बूल किया, येह वोह ख़ुश नसीब अफ़राद हैं जिन्हें **अल्लाह** पाक ने अपने मह़बूबे पाक عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की दोस्ती व वफ़ादारी के लिए मुन्तख़ब

1...करामाते सह़ाबा, स. 52

www.dawateislami.net

फ़रमाया, येही वोह मुक़द्दस जमाअ़त है जिसे सब से पेहले तब्लीगे़ इस्लाम की सआ़दतें मिलीं, येही वोह पाकीज़ा लोग हैं जिन्हों ने दीने इस्लाम की तरवीजो इशाअ़त के लिए ज़ालिमों के ज़ुल्मो सितम को बरदाश्त किया, येही वोह लोग हैं जिन्हों ने इब्तिदाए इस्लाम के मुश्किल माहो़ल में भूक प्यास बरदाश्त कर के, पेट पर पथ्थर बांध कर, क़रीबी रिश्तेदारों की दुश्मनियां मोल ले कर भी परचमे इस्लाम को बुलन्द रखा, यक़ीनन इन की दिन रात की मुसल्सल मेह़नतों और क़ुरबानियों का नतीजा है कि आज हम **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की नाम लेवा हैं। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का मक़ामो मर्तबा इस क़दर बुलन्द है कि ख़ुद **अल्लाह** पाक ने क़ुरआने पाक की मुख़्तलिफ़ आयात में इन्तिहाई शानदार त़रीक़े से इन की तारीफ़ फ़रमाई है। आइए ! इन पाक हस्तियों की शानो अ़ज़मत के बारे में क़ुरआने पाक की एक आयते मुबारका सुनती हैं ताकि हमारे दिलों में भी इन की अ़ज़मत व अ़क़ीदत मज़ीद उजागर हो जाए। चुनान्चे, पारह 11, सूरतुत्तौबा की आयत नम्बर 100 में इरशाद होता है :

رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۝ (پ۱۱، التوبة: ۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी और उन के लिए तय्यार कर रखे हैं बाग़ जिन के नीचे नहरें बहें, हमेशा हमेशा उन में रहें, येही बड़ी काम्याबी है।

سُبْحٰنَ اللّٰه ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शान किस क़दर बुलन्दो बाला है कि **अल्लाह** पाक ने उन के आमाल क़बूल फ़रमा कर उन्हें अपनी रिज़ा और जन्नती नेमतों की ख़ुश ख़बरी सुनाई। और भी कई आयात हैं जिन में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शान, और दीगर ख़ूबियां व कमालात

www.dawateislami.net

बयान हुवे हैं। **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर अपने प्यारे सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم की शानो अ़ज़्मत और उन के मक़ामो मर्तबे को अ़ज़ीमुश्शान अन्दाज़ में बयान फ़रमाया है। आइए ! बरकत ह़ासिल करने के लिए सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अ़ज़्मत पर 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनती हैं। चुनान्चे,

1. इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** पाक ने मुझे चुन लिया और मेरे लिए मेरे अस्ह़ाब को पसन्द फ़रमाया फिर उन में से मेरे वज़ीर, मददगार और रिश्तेदार बनाए, فَمَنْ سَبَّهُمْ पस जो उन्हें गाली देगा, فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ उस पर **अल्लाह** पाक, उस के फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की लानत है, لَا يُقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صَرْفًا وَّلَا عَدْلًا रोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक न उस का कोई फ़र्ज़ क़बूल फ़रमाएगा, न नफ़्ल।[1]
2. इरशाद फ़रमाया : मेरे सह़ाबा के बारे में **अल्लाह** पाक से डरते रहो, मेरे बाद उन्हें (इल्ज़ामों और बुरी बातों का) निशाना मत बनाना, पस जिस ने उन से मह़ब्बत की, तो उस ने मुझ से मह़ब्बत की वज्ह से ऐसा किया और जिस ने उन से दुश्मनी रखी, तो उस ने मुझ से दुश्मनी की वज्ह से ऐसा किया, जिस ने उन्हें अज़िय्यत दी, उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी, उस ने **अल्लाह** पाक को अज़िय्यत दी और जो **अल्लाह** पाक को ईज़ा दे, अ़न क़रीब **अल्लाह** पाक उस की पकड़ फ़रमाएगा।[2]

1... الصواعق المحرقہ، ص۴

2... مشکاۃ، کتاب المناقب، باب مناقب الصحابہ، ۲/۴۱۴، حدیث: ۶۰۱۴

www.dawateislami.net

3. इरशाद फ़रमाया : जिस ने मेरे अस्ह़ाब के मुतअ़ल्लिक़ बुरी बात कही, तो वोह मेरे त़रीक़े से हट गया, उस का ठिकाना आग है।[1]

अहले बैत की महब्बत की अहम्मिय्यत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से दुश्मनी रखने वाले, ह़दीसे पाक के मुत़ाबिक़ **अल्लाह** पाक, उस के फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की लानत के ह़क़दार हैं, इस लिए हमें सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ हमेशा प्यार और अदब का तअ़ल्लुक़ रखना चाहिए। **अल्लाह** पाक हमें सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की महब्बत में हमेशा गुम रखे, उन की महब्बत का चराग़ हमारे दिलों में सदा रौशन रहे और हम येही चराग़ ले कर क़ब्र में जाएं और इस की बरकत से हमारी क़ब्र का अन्धेरा दूर हो जाए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिए ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ साथ अहले बैते इ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से महब्बतो अ़क़ीदत रखना भी ज़रूरी है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से महब्बत हो और दिल مَعَاذَ الله अहले बैते इ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की दुश्मनी से भरा हो या अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की महब्बत तो दिल में हो, साथ ही सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से مَعَاذَ الله दुश्मनी के बीज भी दिल में हों, ऐसा हरगिज़ नहीं होना चाहिए। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सच्चे, वफ़ादार साथी हैं, तो अहले बैते इ़ज़्ज़ाम

1 ... الریاض النضرة، الباب الاول، ذکر ماجاء فی الحث علی حبهم والاحسان الیهم ... الخ، ۱/۲۲

www.dawateislami.net

عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की औलाद हैं, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की लाडली शहज़ादी, ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की औलाद हैं। ह़बीबे ख़ुदा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अपनी सच्ची मह़ब्बत का इज़्हार करने के लिए हमें भी अपने दिल में अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत रखनी चाहिए।

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो वसीला ह़ासिल करना चाहता है और येह चाहता है कि मेरी बारगाह में उस की कोई ख़िदमत हो, जिस के सबब मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूं, उसे चाहिए कि मेरे अहले बैत (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की ख़िदमत करे और उन्हें ख़ुश करे।[1]

سُبْحٰنَ اللّٰہ ! किस क़दर ख़ुश क़िस्मत है वोह इस्लामी बहन जो **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आले पाक को ख़ुश करने वाले काम करे और इसी वज्ह से उन के नानाजान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त की उम्मीदवार बन जाए जबकि कितनी बद नसीब है वोह जो अहले बैते पाक عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से दुश्मनी रखे और इसी दुश्मनी में ज़िन्दगी गुज़ार दे।

याद रखिए ! जिस त़रह़ अहले बैते पाक عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मह़ब्बत करना, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करना है, ऐसे ही अहले बैते पाक عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से दुश्मनी रखना, गोया सरकार عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से दुश्मनी है। वोह लोग जो अहले बैते पाक عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से दुश्मनी रखते हैं और उन की शान में ना मुनासिब अल्फ़ाज़ केहते हैं, ऐसों को सोचना

1...बरकाते आले रसूल, स. 110

www.dawateislami.net

चाहिए कि कल बरोज़े क़ियामत जब शफ़ीए उम्मत, नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन से मुंह मोड़ लेंगे, तो फिर येह किधर जाएंगे । आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने ख़ुद अपने अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से दुश्मनी रखने पर वईदें इरशाद फ़रमाई हैं । आइए ! इ़ब्रत के लिए 3 वईदें सुनती हैं :

1. जो अहले बैत (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) से जंग करे, मैं उस से जंग करने वाला हूं और जो इन से सुल्ह़ करे, उस की मुझ से सुल्ह़ है ।[1]
2. ख़बरदार ! जो अहले बैत (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की दुश्मनी पर मरा, वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा : येह **अल्लाह** पाक की रह़मत से ना उम्मीद है ।[2]
3. जो अहले बैत (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) से दुश्मनी या ह़सद करेगा, उसे क़ियामत के दिन ह़ौज़े कौसर से आग के कोड़ों से दूर किया जाएगा ।[3]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर कीजिए ! अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से दुश्मनी कितनी हलाकत वाली है कि उन से जंग करना, गोया आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से जंग करना है और उन से जंग करना, क़ियामत के दिन **अल्लाह** पाक की रह़मत से दूरी का सबब है, इसी त़रह़ उन से जंग करना कल बरोज़े क़ियामत ह़ौज़े कौसर से मह़रूमी का सबब है । वोह ह़ौज़े कौसर कि जिस से नेक लोग सेराब हो रहे होंगे और शाहे कौसर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथों से भर भर कर जाम पी रहे होंगे । **अल्लाह** पाक, अहले बैत عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत से हमारे दिलों को आबाद

1... ترمذی، کتاب المناقب، باب فضل فاطمة، ۵/۴۶۵، حدیث: ۳۸۹۶

2... الشرف المؤبد، ص۸۱

3... کنز العمال، کتاب الفضائل، فضل أہل البیت، جزء ۱۲، ۶/ ۴۸، حدیث: ۳۴۲۹۸

www.dawateislami.net

फ़रमाए, मरते दम तक हम इसी मह़ब्बत पर क़ाइमो दाइम रहें, कल बरोज़े क़ियामत अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के नानाजान, सरवरे आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त भी नसीब हो और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथों से कौसर के जाम भी नसीब हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

ह़ौज़े कौसर क्या है ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ौज़े कौसर क्या है ? इस बारे में मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : येह ह़ौज़ नबिय्ये (करीम) صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मर्ह़मत हुवा (मिला), ह़क़ है। इस ह़ौज़ की मसाफ़त एक महीने की राह है, इस के किनारों पर मोती के क़ुब्बे हैं, चारों गोशे बराबर हैं, इस की मिट्टी निहायत ख़ुश्बूदार मुश्क की है, इस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद, शह्द से ज़ियादा मीठा और मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है और इस पर (जो) बरतन (रखे हुवे हैं वोह) सितारों से भी गिनती में ज़ियादा हैं, जो इस का पानी पिएगा, कभी प्यासा न होगा, इस में जन्नत से दो परनाले (Drains) हर वक़्त गिरते हैं: एक सोने का, दूसरा चांदी का है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबए किराम और इश्के़ रसूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस बात में कोई शक्को शुबा नहीं कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 1, 1 / 145

www.dawateislami.net

के सच्चे और सब से बड़े आ़शिक़ थे। आज हम भी येह दावा करती हैं कि हमें नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इ़श्क़ है मगर इ़श्क़ के तक़ाज़े पूरे नहीं करतीं जबकि सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم वोह अ़ज़ीम हस्तियां हैं कि जिन्हों ने अपने किरदार से येह साबित कर के बता दिया कि इ़श्क़े रसूल ही दीने ह़क़ की पेहली शर्त़ है, गोया इन्हों ने इ़श्क़े ह़बीब में ख़ुद को गुम कर दिया, येही वज्ह है कि आज कई सदियां गुज़र जाने के बा वुजूद भी येह ह़ज़रात, आ़शिक़ाने रसूल के दिलों की धड़कन हैं। उ़मूमन बाज़ मरीज़ों को डॉक्टर मख़्सूस (*Specified*) दवाएं खाने का केहते हैं, मरीज़ अगर वोह दवाएं खाएं, तो ठीक रेहते हैं और न खाएं, तो उन की ह़ालत बिगड़ती चली जाती है। इसी त़रह़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم का ह़ाल था कि येह इ़श्क़े रसूल के मुक़द्दस मरीज़ थे, इन के लिए दीदारे मुस्त़फ़ा, सोह़बते मुस्त़फ़ा, इत़ाअ़ते मुस्त़फ़ा और इत्तिबाए़ मुस्त़फ़ा, दवा की सी ह़ैसिय्यत रखते थे और येह ऐसी दवा थी कि जिस से इन की मौत व ज़िन्दगी वाबस्ता थी, इस के बिग़ैर इन का जीना दुश्वार था। **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के येह सच्चे जा निसार अपने आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक एक अदा को नोट करते और फिर उस पर अ़मल करते।

रसूले अकरम, नबिय्ये मोह़तरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अपने अहले बैत رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से प्यार और उल्फ़त का बरताव येह ऐसा मुआ़मला था जो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से छुपा हुवा न था, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अच्छी त़रह़ जानते थे कि आक़ा करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने अहले बैत رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से कैसी मह़ब्बत रखते हैं, येही वज्ह है कि सह़ाबए किराम भी

www.dawateislami.net

अहले बैते किराम से सच्ची मह़ब्बत करते थे और हमेशा उन से अदब और प्यार का तअ़ल्लुक़ रखते थे, यहां तक कि वोह अपने रिश्तेदारों से ज़ियादा सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहले बैत رَضِیَ اللهُ عَنْهُم को अ़ज़ीज़ रखते थे। चुनान्चे,

सह़ाबए किराम और अहले बैत की मह़ब्बत

मन्क़ूल है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه जब मोमिनों के अमीर और मुसलमानों के ख़लीफ़ा चुन लिए गए, तो रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तअ़ल्लुक़ की वज्ह से आप, अहले बैते अत़्हार رَضِیَ اللهُ عَنْهُم का बहुत ख़याल रखा करते और अहले बैते अत़्हार رَضِیَ اللهُ عَنْهُم के बारे में फ़रमाया करते थे : नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रिश्तेदार मुझे अपने रिश्तेदारों से ज़ियादा प्यारे हैं।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर कीजिए ! अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर को अहले बैते किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से कैसी मह़ब्बत थी कि उन्हें अपने घरवालों पर तरजीह़ देते। आइए ! सह़ाबए किराम की अहले बैते पाक رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से मह़ब्बत के मज़ीद कुछ वाक़िआ़त सुनती हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ عَنْه की बारगाह में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه का तज़्किरा हुवा, तो आप ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! जब ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ عَنْه कलाम फ़रमाते, तो आप की आवाज़ में शेर की सी गरज (Thunder) होती, जब ज़ाहिर होते, तो चांद की त़रह़

1... بخاری، کتاب المغازی، باب حدیث بنی نضیر، ۳/۲۹، حدیث: ۴۰۳۶

www.dawateislami.net

रौशन होते और जब नवाज़ते, तो बारिश की त़रह़ बे इन्तिहा अ़त़ा फ़रमाते। बाज़ ह़ाज़िरीन ने पूछा : आप अफ़्ज़ल हैं या ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ? फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली के चन्द नुक़ूश भी आले अबू सुफ़्यान से बेहतर हैं। फिर फ़रमाया : जो शख़्स ह़ज़रते अ़ली की तारीफ़ में उन की शायाने शान शेर सुनाए, मैं उस को हर शेर के बदले हज़ार दीनार इन्आ़म दूंगा। चुनान्चे, ह़ाज़िरीन ने शेर सुनाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते थे : इन अश्आ़र में जो आप ने अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शानो अ़ज़मत बयान की, आप इस से भी ज़ियादा अफ़्ज़ल हैं। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स ने भी ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की शानो अ़ज़मत पर कई अश्आ़र पढ़े।[1]

मन्क़ूल है : किसी जनाज़े में नवासए रसूल, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन और मश्हूर सह़ाबिए रसूल, सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا जम्अ़ थे, वहां से वापसी पर ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को थकावट महसूस हुई, तो एक जगह आप आराम के लिए कुछ देर बैठ गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपनी चादर से ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पाउं से गर्दो ग़ुबार साफ़ करने लगे, तो, ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन ने उन्हें मन्अ़ फ़रमाया। इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा ने अ़र्ज़ की : فَوَاللّٰہِ لَوْ یَعْلَمُ النَّاسُ مِنْکَ مَا اَعْلَمُ لَحَمَلُوْکَ عَلٰی رِقَابِھِمْ **अल्लाह** पाक की क़सम ! आप की जो अ़ज़मत मैं जानता हूं, अगर लोगों को पता चल जाए, तो वोह आप को अपने कन्धों पर उठा लें।[2]

1... النّاھیۃ، ص۱۳۲ مختصرًا

2... تاریخ ابن عساکر، رقم ۱۵۶۶، الحسین بن علی۔۔۔الخ، ۱۴/۱۷۹ مختصرا

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अबू याक़ूब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ عَنْه की ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه से मुलाक़ात हुई, तो ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ عَنْه ने مَرْحَبًا وَّ اَهْلاً بِابْنِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّم "ऐ रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बेटे ! ख़ुश आमदीद" केहते हुवे उन का इस्तिक़्बाल फ़रमाया और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه की बारगाह में तीन लाख दिरहम पेश करने का ह़ुक्म इरशाद फ़रमाया।[1]

ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : एक बार अमीरुल मोमिनीन, सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه ने मुझ से फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! मेरी तमन्ना (Wish) है कि आप हमारे पास आया करें। चुनान्चे, मैं एक दिन आप رَضِیَ اللهُ عَنْه के घर गया मगर आप ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ عَنْه के साथ अ़लाह़दगी में मसरूफ़े गुफ़्तगू थे और आप के बेटे, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُم दरवाज़े पर खड़े इन्तिज़ार कर रहे थे, कुछ देर इन्तिज़ार के बाद जब वोह वापस जाने लगे, तो मैं भी लौट आया। बाद में सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه से मेरी मुलाक़ात हुई, तो आप ने फ़रमाया : لَمْ اَرَكَ आप हमारे पास दोबारा आए ही नहीं ? मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरल मोमिनीन ! मैं तो आया था मगर आप, ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ عَنْه के साथ मसरूफ़े गुफ़्तगू थे, आप के बेटे, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर भी बाहर खड़े इन्तिज़ार कर रहे थे, (मैं ने सोचा जब बेटे को अन्दर जाने की इजाज़त नहीं है, मुझे कैसे हो सकती है !) लिहाज़ा मैं वापस चला गया। आप ने फ़रमाया :

1... الطبقات الكبير لابن سعد، حسين بن علي، ٦/ ٤٠٩

www.dawateislami.net

اَنْتَ اَحَقُّ بِالْاِذْنِ مِنْ عَبْدِ اللهِ ابْنِ عُمَرَ اِنَّمَا اَنْبَتَ فِیْ رُؤُوْسِنَا اللهُ ثُمَّ اَنْتُمْ आप मेरी औलाद से ज़ियादा इस बात के ह़क़दार हैं कि अन्दर आ जाएं। हमारे सरों पर येह जो बाल हैं, **अल्लाह** पाक के बाद तुम ने ही तो उगाए हैं।[1]

क्या बात **रज़ा** उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में ह़ुसैन और ह़सन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 79)

मुख़्तसर वज़ाह़त : आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस शेर में अपने आप को मुख़ात़ब कर के यूं इरशाद फ़रमाते हैं : ऐ रज़ा ! उस करम व रह़मत वाले बाग़ की क्या बात है ! जिस बागे़ रिसालत की कली फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا हों और इमामे ह़सन व इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا जिस में मेहकते हुवे फूल हों।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ताज़ीमे सादात के आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे ताज़ीमे सादात के बारे में चन्द आदाब सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं। पेहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए : (1) फ़रमाया : जो मेरे अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा, मैं रोज़े क़ियामत इस का सिला (बदला) उसे अ़त़ा फ़रमाऊंगा।[2] (2) फ़रमाया : जो शख़्स औलादे अ़ब्दुल मुत्त़लिब में से किसी के साथ

1 ... تاریخ ابن عساکر، رقم ۱۵۶۶، الحسین بن علی ـــ الخ، ۱۴/ ۱۷۹، ریاض النضرہ، الباب الثانی: ذکر صلۃ اقارب رسول اللہ، ۱/ ۳۴۱

2 ... جامع صغیر، ص ۵۳۳، حدیث: ۸۸۲۱

www.dawateislami.net

दुन्या में नेकी (भलाई) करे, उस का सिला (बदला) देना मुझ पर लाज़िम है जब वोह रोज़े क़ियामत मुझ से मिलेगा ।[1] ❖ सादाते किराम की ताज़ीम फ़र्ज़ है और उन की तौहीन ह़राम ।[2] ❖ सादाते किराम की ताज़ीमो तकरीम की अस्ल वज्ह येही है कि येह ह़ज़रात, रसूले काइनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्मे अत़्हर का टुक्ड़ा हैं ।[3] ❖ **अल्लाह** पाक के नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीमो तौक़ीर में से येह भी है कि वोह तमाम चीज़ें जो हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखती हैं, उन की ताज़ीम की जाए ।[4] ताज़ीम के लिए न यक़ीन दरकार है और न ही किसी ख़ास सनद की ह़ाजत, लिहाज़ा जो लोग सादात केहलाते हैं, उन की ताज़ीम करनी चाहिए ।[5] ❖ जो वाक़ेई में सय्यिद न हो और दीदा व दानिस्ता (जानबूझ कर) सय्यिद बनता हो, वोह मल्ऊ़न (लानत किया गया) है, न उस का फ़र्ज़ क़बूल हो, न नफ़्ल ।[6] ❖ अगर कोई बद मज़हब, सय्यिद होने का दावा करे और उस की बद मज़हबी ह़द्दे कुफ़्र तक पहुंच चुकी हो, तो हरगिज़ उस की ताज़ीम न की जाएगी ।[7] ❖ सादात की ताज़ीम, प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीम है ।[8] ❖ उस्ताद भी सय्यिद को मारने से परहेज़ करे ।[9] ❖ सादाते किराम को ऐसे काम पर मुलाज़िम

1... تاریخ بغداد، رقم ۵۲۲۱، عبداللہ بن محمد بن أبی کامل، ۱۰/ ۱۰۲

2...कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 277

3...सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 7

4... الشفاء، الباب الثالث فی تعظیم امرہ، فصل ومن اعظامہ...الخ، جزء: ۲، ص ۵۲

5...सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 14

6...सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 16

7...सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 17

8...फ़तावा रज़विय्या, 22 / 423, माख़ूज़न, सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 8

9...कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 284

www.dawateislami.net

रखा जा सकता है जिस में ज़िल्लत न पाई जाती हो, अलबत्ता ज़िल्लत वाले कामों में उन्हें मुलाज़िम रखना जाइज़ नहीं।[1] ❖ सय्यिद की बतौ़रे सय्यिद, यानी वोह सय्यिद है इस लिए तौहीन करना "**कुफ़्र**" है।[2]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब "**बहारे शरीअ़त**" हिस्सा 16 (312 सफ़ह़ात), 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**", अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिए और इस का मुत़ालआ़ कीजिए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...सादाते किराम की अ़ज़मत, स. 12

2...कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 276

www.dawateislami.net

बयान : 07 हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले।[1]

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़्लिस क्या मोल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 186)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1...الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعاء، الترغیب فی اکثار الصلاۃ علی النبی، ۲/ ۳۲۶، حدیث: ۲۵۹۰

2...معجم کبیر، ۶/ ۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है । ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी । ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी । ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी । ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी । ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी । ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी । ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं । जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज हमारे बयान का मौज़ूअ़ है **''इस्लाम मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है''** इस बयान में हम सुनेंगी कि इस्लाम ने औ़रतों पर क्या क्या एह़सानात फ़रमाए हैं, इस तअ़ल्लुक़ से ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दौर का एक दिलचस्प वाक़िआ़ भी बयान होगा, इस्लाम ने वालिदैन के ह़वाले से हमें क्या तालीमात इरशाद फ़रमाई हैं, इस बारे में कुछ अहम बातें भी सुनेंगी । पड़ोसियों के हुक़ूक़ बयान करने के साथ इस तअ़ल्लुक़ से कुछ अह़ादीसे त़य्यिबा भी बयान की जाएंगी, इस बारे में कुछ वाक़िआ़त भी सुनेंगी । **अल्लाह** करे कि

www.dawateislami.net

दिलजमई के साथ हम अव्वल ता आख़िर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल कर लें।

बाज़ इस्लामी बहनें दौराने बयान तस्बीह़ के ज़रीए ज़िक्र व दुरूद शरीफ़ वग़ैरा पढ़ती रेहती हैं। याद रखिए ! येह इस का मौक़अ़ नहीं है, हम चूंकि इ़ल्मे दीन सीखने की निय्यत से यहां जम्अ़ हुई हैं, तो दौराने बयान पूरी तवज्जोह बयान की त़रफ़ ही होनी चाहिए क्यूंकि इ़ल्मे दीन सीखने पर मुश्तमिल बयान सुनना भी ज़िक्रुल्लाह ही में शामिल हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस में कोई शक नहीं कि इस्लाम एक अम्न पसन्द, सच्चा, प्यारा, कामिलो अक्मल, इन्तिहाई तेज़ी के साथ फैलता हुवा, आ़लमगीर और आफ़ाक़ी मज़हब है। इस्लाम में दीनी, दुन्यावी, उख़रवी, अख़्लाक़ी, ज़ाहिरी, बात़िनी, घरेलू, ख़ानदानी, मुआ़शरती और मआ़शी अल ग़रज़ ! ज़िन्दगी के तमाम शोबाजात से वाबस्ता अफ़राद के लिए बेहतरीन उसूलो ज़वाबित़ और शानदार हिदायात मौजूद हैं। इस्लाम की येह तालीमात और हिदायात इस बात की दलील हैं कि **''इस्लाम मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है।''**

इस्लाम की शान येह है कि ख़ुद ख़ालिक़े काइनात ने इसे पसन्दीदा क़रार दिया है। चुनान्चे, पारह 6, सूरतुल माइदा की आयत नम्बर 3 में रब्बे करीम का फ़रमाने ह़क़ीक़त बुन्याद है :

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (پ۶، المائدة: ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया।

www.dawateislami.net

इस आयत से कई अह़काम मालूम हुवे : (1) सिर्फ़ इस्लाम **अल्लाह** करीम को पसन्द है, यानी जो अब दीने मुह़म्मदी की सूरत में है, बाक़ी सब दीन अब ना क़ाबिले क़बूल हैं । (2) इस आयत के नाज़िल होने के बाद क़ियामत तक इस्लाम का कोई हुक्म मन्सूख़ नहीं हो सकता । (3) उसूले दीन में ज़ियादती, कमी नहीं हो सकती । इजतिहादी फ़ुरूई मस्अले हमेशा निकलते रहेंगे । (4) नबियों के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद कोई नबी नहीं बन सकता क्यूंकि दीन कामिल हो चुका । सूरज निकल आने पर चराग़ की ज़रूरत नहीं, लिहाज़ा क़ादियानी झूटे, बे दीन और **अल्लाह** पाक के कलाम और दीन को नाक़िस समझने वाले हैं । (5) इस्लाम को छोड़ कर कोई लाखों नेकियां करे, **अल्लाह** पाक को प्यारा नहीं क्यूंकि इस्लाम जड़ है और आमाल शाख़ें और पत्ते और जड़ कट जाने के बाद शाख़ों और पत्तों को पानी देना बेकार है ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने इस्लाम ने औ़रतों के ह़वाले से बहुत से हुक़ूक़ बयान फ़रमाए हैं और इन्हें मुआ़शरे में वोह मक़ामो मर्तबा बख़्शा है जिस ने इन्सानिय्यत का सर फ़ख़्र से बुलन्द कर दिया । आइए ! औ़रतों के बारे में इस्लाम की अ़त़ा कर्दा ह़सीन तालीमात की एक रौशन मिसाल मुलाह़ज़ा करती हैं ताकि हमें भी इस बात का यक़ीने कामिल ह़ासिल हो जाए कि बिला शुबा "**इस्लाम मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है**" । चुनान्चे,

फ़ारूक़े आज़म का बेहतरीन जवाब

तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन में है : एक शख़्स अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه की बारगाह में अपनी बीवी की

1...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पा. 6, अल माइदा, तह़तुल आयत : 3, 2 / 383

www.dawateislami.net

शिकायत ले कर हाज़िर होता है। जब आप के दरवाज़े पर पहुंचा, तो उन की ज़ौजा उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को नाराज़ी के आ़लम में गुफ़्तगू करते सुना। वोह शख़्स येह केहते हुवे वापस लौट गया कि मैं तो अपनी बीवी की शिकायत करने के इरादे से इन के पास आया था (मगर) येही मुआ़मला तो ख़ुद इन के साथ भी है, (लिहाज़ा येह कैसे मेरा मस्अला ह़ल कर पाएंगे ?) अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने उसे बुलवाया और आने का मक़्सद दरयाफ़्त फ़रमाया। उस ने अ़र्ज़ की, कि मैं तो आप की बारगाह में अपनी बीवी की शिकायत करने के इरादे से आया था, तो जब मैं ने (आप के बारे में) आप की ज़ौजए मोह़तरमा की गुफ़्तगू सुनी तो (मायूस हो कर) वापस लौट गया। ह़ज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने उस से इरशाद फ़रमाया : मेरी बीवी के मुझ पर चन्द ह़ुक़ूक़ (Rights) हैं, (यानी मुझे उस से चन्द फ़वाइद ह़ासिल होते हैं) जिन की बिना पर मैं उस से दर गुज़र करता हूं : (1) वोह मेरे लिए जहन्नम से आड़ है, उस की वज्ह से मेरा दिल ह़राम से बचा रेहता है (यानी मैं उस के ज़रीए ख़्वाहिशे नफ़्स की तस्कीन कर लेता हूं और यूं ह़राम काम से बच जाता हूं)। (2) जब मैं अपने घर से निकल जाता हूं, तो वोह मेरी ख़ज़ान्ची और मेरे माल की ह़िफ़ाज़त करने वाली बन जाती है। (3) मेरी धोबन है, मेरे कपड़े धोती है। (4) मेरे बच्चे की परवरिश करती है और (5) मेरे लिए रोटियां और खाना पकाती है। येह सुन कर वोह शख़्स बोला कि मुझे भी अपनी बीवी से वोही फ़ाएदे ह़ासिल होते हैं जो आप को ह़ासिल हैं मगर मैं ने उस के साथ कभी दर गुज़र से काम न लिया, अब मैं भी दर गुज़र से काम लूंगा।[1]

سُبۡحٰنَ اللّٰہ सुना आप ने ! इस्लाम औ़रतों के ह़ुक़ूक़ का कितना बड़ा मुह़ाफ़िज़, प्यारा और मुहज़्ज़ब तरीन मज़ह़ब है कि न सिर्फ़ हर क़िस्म की

1 ... تنبیہ الغافلین، باب حق المرأۃ علی الزوج، ص ۲۸۰

www.dawateislami.net

ज़ुल्मो ज़ियादती से रोकता है बल्कि अपने मानने वालों को कुव्वते बरदाश्त का भी दर्स देता है। चुनान्चे, जब एक शख़्स बारगाहे फ़ारूक़ी में अपनी बीवी की शिकायत ले कर हाज़िरे ख़िदमत हुवा, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने दियानत दारी का सुबूत देते हुवे इस मुआ़मले में इस्लामी तालीमात को उस के सामने निहायत हसीन अन्दाज़ में उजागर फ़रमाया। जो इस बात का वाज़ेह़ सुबूत है कि इस्लाम ही औ़रत की इ़ज़्ज़तो नामूस का ह़क़ीक़ी पास्बान है। इस में कोई शक नहीं कि इस्लाम से पेहले औ़रतों का ह़ाल बहुत ख़राब था, औ़रतें दिन रात मेह़नत मज़दूरी कर के जो कुछ कमातीं, वोह भी मर्दों को दे दिया करती थीं मगर मर्द फिर भी उन औ़रतों की कोई क़द्र नहीं करते थे बल्कि जानवरों की त़रह़ उन को मारते, पीटते, ज़रा ज़रा सी बात पर औ़रतों के कान, नाक व दीगर आज़ा काट लिया करते। कभी तो औ़रत को क़त्ल भी कर डालते। ख़ुसूसन अ़रब के लोग लड़कियों को ज़िन्दा दफ़्न कर दिया करते, औ़रतों को उन के मां-बाप, भाई, बहन या शौहर की मीरास में से कोई ह़िस्सा नहीं मिलता था, न औ़रतें किसी चीज़ की मालिक हुवा करती थीं।

जब रसूले मक़्बूल, बीबी आमिना के महकते फूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **"दीने इस्लाम"** ले कर तशरीफ़ लाए, तो दुन्या भर की सताई हुई औ़रतों की क़िस्मत का सितारा चमक उठा। इस्लाम की बदौलत ज़ालिम मर्दों के ज़ुल्मो सितम से कुचली और रोंदी हुई औ़रतों का दरजा इस क़दर बुलन्दो बाला हो गया कि बेटी की सूरत में इस को रह़मत क़रार दिया, मां के रूप में इस के क़दमों को जन्नत की चौखट से तश्बीह दी और मुआ़शरे में इसे वोह इ़ज़्ज़त और मक़ाम दिया जिस का इस से पेहले तसव्वुर भी न किया जा सकता था। इ़बादात व मुआ़मलात बल्कि ज़िन्दगी और मौत के हर मर्ह़ले और हर मोड़ पर मर्दों की त़रह़ औ़रतों के भी ह़ुक़ूक़ मुक़र्रर हो गए। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

औ़रतों को मालिकाना हुक़ूक़ हासिल हो गए, औ़रतें अपने महर की रक़मों, अपनी तिजारतों, अपनी जाइदादों की मालिक, बना दी गईं, अपने मां-बाप, भाई, बहन, औलाद और शौहर की मीरासों की वारिस क़रार दी गईं।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मां-बाप से मुतअ़ल्लिक़ इस्लामी तालीमात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मां-बाप वोह अ़ज़ीम हस्तियां हैं जिन का सब कुछ उन की औलाद हुवा करती है, औलाद चाहे नाकारा हो, ना फ़रमान हो, अगर्चे माज़ूर ही क्यूं न हो मगर वोह वालिदैन के जिगर का टुक्ड़ा होती है। अफ़्सोस ! वालिदैन मुआ़शरे के वोह मजबूर व लाचार अफ़राद हैं कि जो हर दौर में ज़ुल्मो सितम की चक्की में बुरी त़रह़ से पिसे हुवे नज़र आते हैं। वालिदैन के सारे एह़सानात को भुला कर उन्हें अब अपने लिए कबाब में हड्डी की त़रह़ ख़याल किया जाता है, वालिदैन के साथ नौकरों से भी बुरा सुलूक किया जाता है, वालिदैन औलाद की बेहतरी के लिए कोई नसीह़त कर दें, तो उन्हें घूर घूर कर देखा जाता है, उन्हें झाड़ा जाता, त़ाने दिए जाते और घर से बे दख़ल कर देने की धमकियां दी जाती हैं, ह़त्ता कि मुआ़मलात अब इस ह़द तक पहुंच चुके हैं कि बाज़ मुल्कों में तो घर से बे दख़ल किए और औलाद के सताए वालिदैन की देखभाल के लिए बा क़ाइ़दा अब ओल्ड हाऊसिज़ (*Old Houses*) क़ाइम हैं, जहां पर इन बेचारों की सारी ज़िन्दगी अपनी औलाद की जुदाई के ग़म, उन की याद में रोते बिलकते और ऐड़ियां रगड़ते रगड़ते गुज़र जाती है।

1...जन्नती ज़ेवर, स. 39 ता 42, मुलख़्ख़सन व मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

इस्लाम इन तमाम चीज़ों की सख़्ती के साथ बुराई बयान फ़रमाता है, मां-बाप की इ़ज़्ज़तो नामूस और उन के हुक़ूक़ की बजा आवरी के ह़वाले से इस्लाम में बड़ी वाज़ेह़ हिदायात ब कसरत मौजूद हैं, वालिदैन के हुक़ूक़ बजा आवरी और उन की इ़ज़्ज़तो नामूस के तह़फ़्फ़ुज़ की इस्लाम ने जिस क़दर तरग़ीब व ताकीद इरशाद फ़रमाई है वोह ग़ाफ़िलों को बेदार करने के लिए काफ़ी है। वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म देते हुवे रब्बे करीम इरशाद फ़रमाता है :

وَ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّ لَا تَنْهَرْهُمَا وَ قُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِیْمًا ۝۲۳ وَ اخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَ قُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًا ۝۲۴

(پ۱۵، اسراء: ۲۳-۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो, अगर तेरे सामने उन में से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन से हूं (उफ़ तक) न केहना और उन्हें न झिड़कना और उन से ताज़ीम की बात केहना और उन के लिए आजिज़ी का बाज़ू बिछा नर्म दिली से और अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब ! तू इन दोनों पर रह़्म कर, जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (बचपन) में पाला।

बयान कर्दा आयाते मुबारका के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब वालिदैन पर ज़ोफ़ (कमज़ोरी) का ग़लबा हो, आज़ा में क़ुव्वत न रहे और जैसा तू बचपन में उन के पास बे त़ाक़त था ऐसे ही वोह आख़िरे उ़म्र में तेरे पास नातुवां रेह जाएं, तो कोई ऐसी बात ज़बान से न निकालना जिस से येह समझा जाए कि उन की त़रफ़ से त़बीअ़त पर कुछ गिरानी है। न उन्हें झिड़कना, न तेज़ आवाज़ से बात करना बल्कि कमाले हुस्ने अदब

www.dawateislami.net

के साथ मां-बाप से इस त़रह़ कलाम कर जैसे ग़ुलाम व ख़ादिम आक़ा से करता है। इन से नर्मी व तवाज़ोअ़ से पेश आ ! और इन के साथ थके वक़्त में शफ़्क़तो मह़ब्बत का बरताव कर कि इन्हों ने तेरी मजबूरी के वक़्त तुझे मह़ब्बत से परवरिश किया था और जो चीज़ इन्हें दरकार हो वोह इन पर ख़र्च करने में दरेग़ (बुख़्ल) न कर। मुद्दआ़ येह है कि दुन्या में बेहतर सुलूक और ख़िदमत में कितना भी मुबालग़ा किया जाए लेकिन वालिदैन के एह़सान का ह़क़ अदा नहीं हो सकता। इस लिए बन्दे को चाहिए कि बारगाहे इलाही में उन पर फ़ज़्लो रह़मत फ़रमाने की दुआ़ करे और अ़र्ज़ करे कि या रब ! मेरी ख़िदमतें इन के एह़सान की जज़ा नहीं हो सकतीं, तू इन पर करम कर कि इन के एह़सान का बदला हो।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा आयाते मुबारका में वालिदैन के साथ ह़ुस्ने सुलूक करने का ह़ुक्म दिया गया है। आइए ! इसी मुनासबत से वालिदैन के साथ ह़ुस्ने सुलूक करने और इन के ह़ुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ तीन अह़ादीस सुनती हैं। चुनान्चे,

1. ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से ज़ियादा ह़ुस्ने सोह़बत (यानी एह़सान) का मुस्तह़िक़ कौन है ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी मां (यानी मां का ह़क़ सब से ज़ियादा है)। उन्हों ने पूछा : फिर कौन ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी मां। उन्हों ने पूछा : फिर कौन ? ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम्हारी मां। उन्हों ने फिर पूछा कि फिर कौन ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा वालिद।[2]

1...तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा. 15, बनी इसराईल, तह़्तुल आयत : 23

2...بخاری، کتاب الادب، باب من احقّ الناس بحسن الصحبۃ، ۴/۹۳، حدیث: ۵۹۷۱

www.dawateislami.net

2. हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं जन्नत में गया उस में क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनी, मैं ने पूछा : येह कौन पढ़ता है ? फ़िरिश्तों ने कहा : हारिसा बिन नोमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ हैं । प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येही ह़ाल है एह़सान का, येही ह़ाल है एह़सान का ।[1] और शोबुल ईमान की रिवायत में मज़ीद येह भी है कि ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपनी मां के साथ बहुत भलाई करते थे ।[2]

3. ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़त वालिद की इत़ाअ़त करने में है और **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी वालिद की ना फ़रमानी करने में है ।[3]

शैख़ुल ह़दीस, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ मां-बाप के ह़ुक़ूक़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : (1) ख़बरदार ! ख़बरदार ! हरगिज़ हरगिज़ अपने किसी क़ौलो फ़ेल से मां-बाप को किसी क़िस्म की कोई तक्लीफ़ न दें अगर्चे मां-बाप औलाद पर कुछ ज़ियादती भी करें मगर फिर भी औलाद पर फ़र्ज़ है कि वोह हरगिज़ हरगिज़ कभी भी और किसी ह़ाल में भी मां-बाप का दिल न दुखाएं । (2) अपनी हर बात और अपने हर अ़मल से मां-बाप की ताज़ीमो तकरीम करे और हमेशा उन की इ़ज़्ज़त व ह़ुर्मत का ख़याल रखे । (3) हर जाइज़ काम में मां-बाप के ह़ुक्मों की फ़रमां बरदारी करे । (4) अगर मां-बाप को कोई

1...شرح السنّة، کتاب البرّ والصلة، باب برّ الوالدین، ۶/۴۲۶، حدیث: ۳۳۱۲

2...شعب الایمان، الخامس والخمسون من شعب الایمان۔۔۔الخ، ۶/۱۸۴، حدیث: ۷۸۵۱

3...معجم اوسط، باب الالف، من اسمہ: احمد، ۱/۶۴۱، حدیث: ۲۲۵۵

www.dawateislami.net

भी ह़ाजत हो, तो जानो माल से उन की ख़िदमत करे। (5) अगर मां-बाप अपनी ज़रूरत से औलाद के माल व सामान में से कोई चीज़ ले लें, तो ख़बरदार ! ख़बरदार ! हरगिज़ हरगिज़ बुरा न मानें, न इज़्हारे नाराज़ी करें बल्कि येह समझें कि मैं और मेरा माल सब मां-बाप ही का है। ह़दीस शरीफ़ में है कि हुज़ूरे अन्वर, बीबी आमिना के दिलबर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स से येह फ़रमाया कि اَنْتَ وَمَالُكَ لِاَبِيْكَ तू और तेरा माल सब तेरे बाप का है।[1] (6) मां-बाप का इन्तिक़ाल हो जाए, तो औलाद पर मां-बाप का येह ह़क़ है कि उन के लिए मग़्फ़िरत की दुआ़एं करते रहें और अपनी नफ़्ली इ़बादतों और ख़ैरात का सवाब उन की रूह़ों को पहुंचाते रहें, ख़ानों और शीरीनी वग़ैरा पर फ़ातिह़ा दिला कर उन की अरवाह़ को ईसाले सवाब करते रहें। (7) मां-बाप के ज़िम्मे जो क़र्ज़ हो, उस को अदा करें या जिन कामों की वोह वसिय्यत कर गए हों, उन की वसिय्यतों पर अ़मल करें। (8) जिन कामों से ज़िन्दगी में मां-बाप को तक्लीफ़ हुवा करती थी, उन की वफ़ात के बाद भी उन कामों को न करें कि इस से उन की रूह़ों को तक्लीफ़ पहुंचेगी। (9) मां-बाप के लिए दुआ़ए मग़्फ़िरत करें, इस से मां-बाप की अरवाह़ को ख़ुशी होगी और फ़ातिह़ा का सवाब फ़िरिश्ते नूर की थालियों में रख कर उन के सामने पेश करेंगे और मां-बाप ख़ुश हो कर अपने बेटे, बेटियों को दुआ़एं देंगे।[2]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! इस्लाम कितना प्यारा दीन है कि जिस ने ह़क़ीक़ी माना में मां-बाप के हुक़ूक़ के ह़वाले से लोगों में अ़क़्लो शुऊ़र बेदार किया, अगर इस्लाम की जल्वागरी न होती, तो इस अ़ज़ीमुश्शान त़रीक़े से उन के हुक़ूक़ के तह़फ़्फ़ुज़ की पासदारी का

1...ابن ماجہ، کتاب التجارات، باب ما للرجل من مال ولدہ، ۳/۸۱، حدیث: ۲۲۹۲

2...जन्नती ज़ेवर, स. 92 ता 94, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

सबक़ कौन सिखाता ? लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम भी इस्लामी तालीमात को अ़मली तौ़र पर अपनाते हुवे मां-बाप की क़द्र करें, उन के हुक़ूक़ बजा लाएं, उन की नाराज़ी वाले कामों से बचें और उन की ख़िदमत को अपना मामूल बना लें । **अल्लाह** करीम हमें वालिदैन का अदबो एह़तिराम और उन की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करते रेहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बड़े भाई के ह़वाले से इस्लामी तालीमात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वालिदैन के बाद बहन भाई का रिश्ता बहुत क़रीबी शुमार किया जाता है, वालिदैन के मरने के बाद उ़मूमन इन के दरमियान तअ़ल्लुक़ात ख़राब होने का अन्देशा रेहता है, लिहाज़ा भाई, बहनों के दरमियान नाराज़ियों का दरवाज़ा बन्द करने के लिए वालिदैन के बाद घर के अफ़राद में से जिस शख़्सिय्यत के मक़ामो मर्तबे को इस्लाम ने शानो शौकत से नवाज़ा और जिस के अदबो एह़तिराम का दर्स दिया है, वोह है **"बड़ा भाई"** ।

बड़े भाई के मक़ाम की अहम्मिय्यत को उजागर करते हुवे नबिय्ये रह़मत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : حَقُّ کَبِیْرِ الْاِخْوَۃِ عَلٰی صَغِیْرِھِمْ حَقُّ الْوَالِدِ عَلٰی وَلَدِہٖ बड़े भाइयों का ह़क़ अपने छोटे बहन भाइयों पर ऐसा है जैसा कि बाप का ह़क़ अपने बेटे पर ।[1]

बड़े भाई का मक़ाम इस बात का तक़ाज़ा करता है कि हम उन का अदब करें, वालिदैन की ग़ैर मौजूदगी में उन्हें अपने वालिदैन का मर्तबा दें, उन्हें अपना सरपरस्त समझें, उन की ग़ीबत, चुग़ली और उन के

1 ... شعب الایمان، باب فی برالوالدین، ۶/۲۱۰، حدیث: ۷۹۲۹

www.dawateislami.net

मुतअ़ल्लिक़ बद गुमानियों से बचें, ह़त्तल इमकान उन के अह़कामात की तक्मील करें, हमेशा उन से अच्छे तअ़ल्लुक़ात क़ाइम रखें और अगर कभी नाराज़ी हो जाए, तो ख़ुद बढ़ कर बड़े भाई से मुआ़फ़ी मांगें और उन्हें मनाने के लिए जिस क़दर मुमकिन हो कोशिश करें।

बड़े भाई से अच्छा सुलूक कीजिए

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन ह़ाज़िम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने एक मरतबा ख़्वाब देखा कि मेरा सर, मेरे हाथों में है। इस की ताबीर जानने के लिए मैं ने अपना येह ख़्वाब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को सुनाया (जो ख़्वाबों की ताबीर बताने में ज़बरदस्त महारत रखते थे)। उन्हों ने मुझ से पूछा कि तुम्हारे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है? मैं ने कहा : जी नहीं ! इरशाद फ़रमाया : क्या तुम्हारा कोई बड़ा भाई है? मैं ने कहा : जी हां ! आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक से डरते रहो, उस के साथ अच्छा सुलूक किया करो और उस से तअ़ल्लुक़ तोड़ने से बाज़ रहो।[1]

बड़े भाई बहन का मैं कहा माना करूं हर दम
करूं मां-बाप की दिन रात ख़िदमत या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 331)

छोटों पर शफ़्क़त

याद रखिए ! इस्लाम ने जहां छोटों को बड़े भाई का अदब करने का दर्स दिया है, वहीं बड़ों को भी हुक्म दिया है कि वोह भी अपने बहन, भाइयों के साथ शफ़्क़तो महब्बत का बरताव करें। आइए ! बत़ौरे तरग़ीब 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनती हैं। चुनान्चे,

---

1... شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، فصل فی صلة الرحم، ۶/ ۲۱۰، رقم: ۷۹۲۸

www.dawateislami.net

1. इरशाद फ़रमाया : जिस की तीन बेटियां या तीन बहनें हों या दो बेटियां या दो बहनें हों और वोह उन के साथ अच्छा सुलूक करे और उन के मुआ़मले में **अल्लाह** पाक से डरे, तो उस के लिए जन्नत है।[1]
2. इरशाद फ़रमाया : जो हमारे छोटों पर रह़्म न करे, हमारे बड़ों की इ़ज़्ज़त न करे और हमारा ह़क़ न पेहचाने, वोह हम से नहीं।[2]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बड़े बहन, भाइयों पर छोटों के क्या हुक़ूक़ हैं और छोटों पर अपने बड़े भाइयों के क्या हुक़ूक़ हैं ? आइए ! येह भी सुनती हैं।

बड़े बहन भाइयों पर छोटों के हुक़ूक़ व आदाब

बड़े भाई और बड़ी बहन पर, छोटे भाई बहनों के हुक़ूक़ में से है कि : (1) वालिदैन की वफ़ात पर छोटे बहन भाइयों की परवरिश करना और उन की अच्छी तरबियत करना। (2) उन की ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी को पूरा करना और हर मुश्किल घड़ी में उन का साथ देना और जितना हो सके उन की ह़ाजत रवाई व दिलदारी करना। (3) वालिदैन की ह़यात में भी उन से शफ़्क़तो मह़ब्बत से पेश आना। (4) ग़ीबत, चुग़ली, बद गुमानी और ह़सद आ़म मुसलमान से ह़राम है, तो इन से बदरजए औला नाजाइ़ज़ है। (5) ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत उन से सरज़द होने वाली ख़ताओं को मुआ़फ़ करना और हमेशा उन से नर्मी का बरताव करना।

1...ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی النفقۃ علی...الخ، ۳/۳۶۷، حدیث: ۱۹۲۳

2...معجم کبیر، ۱۱/ ۳۵۵، حدیث: ۱۲۲۷۶

www.dawateislami.net

छोटे बहन, भाइयों पर बड़ों के हुक़ूक़ व आदाब

इसी त़रह़ छोटे बहन, भाइयों पर बड़ों के येह हुक़ूक़ व आदाब हैं कि : (1) उन की इ़ज़्ज़त व एह़तिराम करते हुवे उन के शायाने शान मर्तबा व मक़ाम देना। (2) वालिदैन की ग़ैर मौजूदगी में उन्हें वालिदैन का मर्तबा देना, वरना उन्हें अपना सरपरस्त व रेहनुमा समझना। (3) ह़त्तल इमकान उन के जाइज़ अह़कामात पर अ़मल की कोशिश करना। (4) अपनी त़रफ़ से होने वाली ग़लतियों पर ख़ुद बढ़ कर मुआ़फ़ी मांगना। (5) उन की दिल आज़ारियों से बचने की कोशिश करना।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह दीने इस्लाम की ख़ूब सूरती है कि उस ने हमारी हर मुआ़मले में रेहनुमाई फ़रमाई है। अभी हम ने बड़ों और छोटों के साथ हुस्ने सुलूक के ह़वाले से सुना और बड़ों, छोटों के हुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक़ भी समाअ़त किया। यक़ीनन अगर हम इन बातों पर अ़मल की कोशिश करेंगी, तो इन की बरकत से बहन, भाइयों के दरमियान होने वाली नाराज़ियों और इस की वज्ह से पैदा होने वाली दूरियों से काफ़ी ह़द तक छुटकारा मिल जाएगा और बहन, भाइयों के दरमियान मह़ब्बत वाली फ़ज़ा क़ाइम होगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

रिश्तेदारों के ह़वाले से इस्लामी ज़ाबितए ह़यात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ घरेलू रिश्तों के ह़वाले से दीने इस्लाम हमारी तरबियत व रेहनुमाई फ़रमाता और एक दूसरे के हुक़ूक़ की रिआ़यत करने का दर्स देता है, इसी त़रह़ रिश्तेदारों के ह़वाले से भी इस मज़ह़ब में हमारे लिए रेहनुमा उसूलो क़वानीन मौजूद हैं। रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक के ह़वाले से इस्लाम हमें क्या हुक्म फ़रमाता है ? और हमें उन के साथ किस त़रह़ का रवय्या (Behaviour) रखना चाहिए ?

www.dawateislami.net

आइए ! सुनिए और रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने की भरपूर कोशिश कीजिए । चुनान्चे, पारह 4, सूरतुन्निसा की पेहली आयते मुबारका में इरशादे रह़मान है :

وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَیْكُمْ رَقِیْبًا ۝ (پارہ:۴، النساء:۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरो जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिहाज़ रखो, बेशक **अल्लाह** हर वक़्त तुम्हें देख रहा है ।

तफ़्सीरे नईमी में इस आयते करीमा के तह़्त लिखा है : मुसलमानों पर जैसे नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात वग़ैरा ज़रूरी है, ऐसे ही अपने क़राबत दारों के ह़क़ अदा करना भी निहायत ज़रूरी है । मज़ीद इरशाद फ़रमाते हैं : अपने अ़ज़ीज़ों, क़रीबों पर अच्छा सुलूक बहुत ही मुफ़ीद है, दुन्या में भी, आख़िरत में भी, इस से ज़िन्दगी, मौत, आख़िरत सब संभल जाती है ।[1]

शैख़ुल ह़दीस, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दादा, दादी, नाना, नानी, चचा, फूफी, मामूं, ख़ाला वग़ैरा के हुक़ूक़ भी मां-बाप ही की त़रह़ हैं ।[2] एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : रिश्तों को काटना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, लिहाज़ा हर मुसलमान को हमेशा इस का ख़याल रखना चाहिए कि किसी रिश्तेदार से तअ़ल्लुक़ न काटे बल्कि हमेशा इस कोशिश में लगा रहे कि रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ क़ाइम रहे और कभी भी रिश्ता कटने न पाए । बाज़ लोग येह कहा करते हैं कि जो रिश्तेदार हम से तअ़ल्लुक़ रखेगा, हम भी उस से तअ़ल्लुक़ रखेंगे और जो हम से कट जाएगा, हम भी उस से

1...तफ़्सीरे नईमी, पा. 4, अन्निसा, तह़्तुल आयत : 1 4 / 455-456, मुल्तक़त़न

2...जन्नती ज़ेवर, स. 94

www.dawateislami.net

कट जाएंगे । येह केहना और येह त़रीक़ा भी इस्लाम के ख़िलाफ़ है । (मज़ीद फ़रमाते हैं :) रिश्तेदारों के साथ तअ़ल्लुक़ काट देने की एक ही सूरत जाइज़ है और वोह येह कि शरीअ़त के मुआ़मले में तअ़ल्लुक़ काट दिया जाए, मसलन कोई रिश्तेदार अगर्चे कितना ही क़रीबी रिश्तेदार क्यूं न हो, अगर वोह मुर्तद (यानी इस्लाम से फिर जाए) या गुमराह व बद दीन हो जाए, तो फिर उस से तअ़ल्लुक़ काट लेना वाजिब है या कोई रिश्तेदार किसी गुनाहे कबीरा में गिरिफ़्तार है और मन्अ़ करने पर भी बाज़ नहीं आता बल्कि अपने गुनाहे कबीरा पर ज़िद कर के अड़ा हुवा है, तो उस से भी क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ कर लेना ज़रूरी है क्यूंकि उस के साथ तअ़ल्लुक़ रखना और तआ़वुन करना गोया उस के गुनाहे कबीरा में शिर्कत करना है और येह हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं ।[1]

लेकिन अगर येह उस के गुनाह में किसी त़रह़ की मुआ़वनत (मदद) नहीं करती और उस के गुनाह की वज्ह से इस के अन्दर गुनाहों की नुहूसत पैदा होने का अन्देशा न हो, तो फिर क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ी करना वाजिब नहीं है और अगर मुमकिन हो, तो नेकी की दावत ज़रूर देती रहे ताकि वोह गुनाहों से बाज़ रहे ।

याद रहे ! शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने सब के हुक़ूक़ बयान किए हैं मगर शरीअ़त के दाइरे के मुत़ाबिक़ वालिदैन हों या रिश्तेदार, बहन भाई हों या पड़ोसी । बहर सूरत हुक़ूक़ की पासदारी उसी सूरत में है जब वोह शरीअ़त के ऐन मुत़ाबिक़ हो, अगर वालिदैन या रिश्तेदार या दोस्त, अह़बाब ख़िलाफ़े शरीअ़त काम का हुक्म दें, तो फिर किसी की इत़ाअ़त नहीं की जाएगी और न रिश्ता निभाया जाएगा बल्कि **अल्लाह** पाक और रसूले

1...बिहिश्त की कुन्जियां, स. 197, मुल्तक़त़न व मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त की जाएगी क्यूंकि **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी वाले कामों में मख़्लूक़ में से किसी की इताअ़त नहीं की जाएगी। येह नुक्ता हमें हर जगह पेशे नज़र रखना चाहिए और हर जगह इस पर अ़मल पैरा रेहना ज़रूरी है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मुआ़शरती एतिबार से इस्लामी रेहनुमाई के रौशन पेहलू

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुआ़शरे में इन्सान का सब से ज़ियादा जिन लोगों से वासिता़ पड़ता है, वोह उस के पड़ोसी (Neighbours) हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه इस्लाम का इन्सानिय्यत पर येह बहुत बड़ा फ़ज़्लो एह़सान है कि उस ने पड़ोसियों के साथ भी अच्छा सुलूक बजा लाने का हुक्म फ़रमा कर अपने मानने वालों को एक दूसरे की इ़ज़्ज़तो नामूस का मुह़ाफ़िज़ बना दिया।

आइए ! फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रौशनी में हम सुनती हैं कि इस्लाम ने पड़ोसियों के मुतअ़ल्लिक़ हमें क्या रेहनुमाई अ़त़ा फ़रमाई है और हम पर उन के हुक़ूक़ की बजा आवरी किस क़दर लाज़िम व ज़रूरी है। चुनान्चे,

1. इरशाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि पड़ोसी का क्या ह़क़ है ? येह कि जब वोह तुम से मदद मांगे उस की मदद करो, जब क़र्ज़ मांगे उसे क़र्ज़ दो, जब मोह़ताज हो उसे दो, जब बीमार हो उस की इयादत करो, जब उसे ख़ैर पहुंचे, तो उसे मुबारक बाद दो, जब मुसीबत पहुंचे, तो उस से ताज़ियत करो, बिग़ैर उस की इजाज़त के अपनी इमारत बुलन्द न करो कि उस की हवा रोक दो, अपनी हांडी से उस को तक्लीफ़ न दो मगर येह कि उस में से कुछ उसे भी दे दो, अगर फल ख़रीदो, तो

www.dawateislami.net

उस के लिए भी भेजो, अगर भेजना (मुमकिन) न हो, तो छुपा कर मकान में लाओ और तुम्हारे बच्चे उसे ले कर बाहर न निकलें कि पड़ोसी के बच्चे को तक्लीफ़ होगी।[1]

2. इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की क़सम ! वोह (कामिल) मोमिन नहीं होगा, **अल्लाह** पाक की क़सम ! वोह (कामिल) मोमिन नहीं होगा, **अल्लाह** पाक की क़सम ! वोह (कामिल) मोमिन नहीं होगा। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! कौन ? इरशाद फ़रमाया : वोह शख़्स जिस का पड़ोसी उस की शरारतों से बे ख़ौफ़ न हो।[2]

3. एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मुझे ऐसा अ़मल बताइए कि जिस से मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं ? तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : नेक बन जाओ। उस ने अ़र्ज़ की : मुझे अपने नेक बन जाने का इ़ल्म कैसे होगा ? आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपने पड़ोसियों से पूछो अगर वोह तुम्हें नेक कहें, तो तुम नेक हो और अगर वोह बुरा कहें, तो तुम बुरे ही हो।[3]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की मुबारक ज़िन्दगियां इस्लामी सांचे में ढली हुई होती हैं, येही वज्ह है कि येह ह़ज़रात अपने पड़ोसियों की ख़बरगीरी करने में हमेशा पेश पेश रहा करते हैं। आइए ! तरग़ीब के लिए दो ईमान अफ़रोज़ ह़िकायात मुलाहज़ा कीजिए। चुनान्चे,

---

1...شعب الایمان، باب فی اکرام الجار، ۷/۸۳، حدیث: ۹۵۶۰، ملتقطا

2... بخاری، کتاب الادب، باب اثم من لا یامن جارہ بوائقہ، ۴/۱۰۴، حدیث: ۶۰۱۶

3...شعب الایمان، باب فی اکرام الجار، ۷/۸۵، حدیث: ۹۵۶۷

www.dawateislami.net

ग़रीब नवाज़ और पड़ोसियों के हुक़ूक़

दावते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब "**बेहतर कौन ?**" के सफ़ह़ा नम्बर 62 पर है कि ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने पड़ोसियों का बहुत ख़याल रखा करते, उन की ख़बरगीरी फ़रमाते, अगर किसी पड़ोसी का इन्तिक़ाल हो जाता, तो उस के जनाज़े के साथ ज़रूर तशरीफ़ ले जाते, उस की तदफ़ीन के बाद जब लोग वापस हो जाते, तो आप तन्हा उस की क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा हो कर उस के ह़क़ में मग़फ़िरत व नजात की दुआ फ़रमाते नीज़ उस के अहले ख़ाना को सब्र की तल्क़ीन करते और उन्हें तसल्ली दिया करते ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

पड़ोसियों के लिए भी गोश्त ख़रीदते थे

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : हम ने हमेशा सूफ़ी बुज़ुर्ग, ह़ज़रते शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह, मुह़म्मद अ़रबी फ़िश्तताली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पड़ोसियों से उन की तारीफ़ें ही सुनी हैं, आप के पड़ोसी बहुत अच्छे अल्फ़ाज़ से आप को याद करते थे । पड़ोसियों ने येह भी बताया था कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब भी घरवालों के लिए गोश्त ख़रीदते, तो पड़ोसियों के लिए भी ख़रीदते और फ़रमाते थे : मैं अकेला गोश्त पका कर अपने पड़ोसियों को मह़रूम नहीं छोड़ सकता ।[2]

1...बेहतर कौन ?, स. 62

2...बेहतर कौन ?, स. 55

www.dawateislami.net

अह़काम के ह़वाले से इस्लामी ज़ाबित़ए ह़यात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुआ़शरे को फ़ितना व फ़साद और ख़ून रेज़ी से बचाने के लिए इस्लामी निज़ाम की एक ख़ूबी येह भी है कि इस्लामी अह़काम बरादरियों के एतिबार से नहीं बदलते और न ही किसी के रुतबे और मक़ाम की वज्ह से इन में तब्दीली होती है बल्कि अमीरो ग़रीब, गोरे काले, अ़रबी अ़जमी सब के लिए इस्लाम के अह़काम बराबर (Equal) हैं, जिस का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाइए कि ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं : क़ुरैश एक मख़्ज़ूमी औ़रत के बारे में बहुत ही परेशान थे जिस ने चोरी की थी, लोग केहने लगे कि इस बारे में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू कौन करे ? बाज़ आदमियों ने कहा कि ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के इ़लावा ऐसी जुरअत और कौन कर सकता है क्यूंकि वोह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم के चहीते हैं। जब ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ ने इस बारे में हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم से गुफ़्तगू की, तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम **अल्लाह** पाक की ह़ुदूद के बारे में सिफ़ारिश कर रहे हो ? फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ واٰلِہٖ وَسَلَّم ने खड़े हो कर ख़ुत़्बा दिया और इरशाद फ़रमाया : बेशक तुम से पेहले लोग इसी लिए हलाक हुवे थे कि जब कोई मालदार चोरी करता, तो उसे छोड़ देते और जब कोई ग़रीब आदमी चोरी करता, तो उस पर ह़द क़ाइम कर देते। **अल्लाह** पाक की क़सम ! अगर मुह़म्मद की बेटी फ़ाति़मा भी चोरी करती, तो मैं उस के हाथ भी काट देता।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह दीने इस्लाम की बहुत बड़ी ख़ूबी है कि इस में शरई सज़ाएं देने में किसी भी साह़िबे मर्तबा या मालदार

1...بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ۵۶، ۲/۴۶۸، حدیث: ۳۴۷۵

www.dawateislami.net

आदमी की रिआ़यत नहीं की जाती, जब शरई हुदूद का मुआ़मला आ जाता है, तो अमीरो ग़रीब का फ़र्क़ किए बिग़ैर सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म देखा जाता है और इसी पर अ़मल किया जाता है। **अल्लाह** पाक हमें दीने इस्लाम से सच्ची पक्की महब्बत अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सिलए रेह्मी के निकात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सिलए रेह़मी के बारे में चन्द निकात सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं। पेहले दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए : (1) हर हुस्ने सुलूक सदक़ा है, ग़नी के साथ हो या फ़क़ीर के साथ।[1] (2) जिस ने वालिदैन से हुस्ने सुलूक किया उसे मुबारक हो कि **अल्लाह** पाक ने उस की उ़म्र बढ़ा दी।[2] ❖ सिलए रेह़म वाजिब है और क़त़्ए रेह़म ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।[3] ❖ रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक इसी का नाम नहीं कि वोह सुलूक करे, तो तुम भी करो, येह चीज़ तो ह़क़ीक़त में मुकाफ़ात यानी अदला-बदला करना है कि उस ने तुम्हारे पास चीज़ भेज दी, तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आई, तुम उस के पास चली गईं। ह़क़ीक़तन सिलए रेह़मी येह है कि वोह काटे और तुम जोड़ो, वोह तुम से जुदा होना चाहती है और तुम उस

1...مجمع الزوائد، کتاب الزکوٰۃ، باب کل معروف صدقۃ، ۳/۳۳۱، حدیث: ۴۷۵۴

2...مستدرک، کتاب البر والصلۃ، باب من بر والدیہ۔۔۔الخ، ۵/۲۱۳، حدیث: ۷۳۳۹

3...बहारे शरीअ़त, 3 / 558, ह़िस्सा : 16

www.dawateislami.net

के साथ रिश्ते के हुक़ूक़ की रिआ़यत व लिहा़ज़ करो।[1] ❖ सिलए रेह़मी की मुख़ालिफ़ सूरतें हैं, उन को हदिय्या व तोह़फ़ा देना, उन्हें किसी बात में तुम्हारी इमदाद दरकार हो, तो उस काम में उन की मदद करना, उन्हें सलाम करना, उन की मुलाक़ात को जाना, उन के पास उठना-बैठना, उन से बात चीत करना, उन के साथ लुत़्फ़ व मेहरबानी से पेश आना। मह़ारिम रिश्तेदारों से नाग़ा दे कर मिलती रहे यानी एक दिन मिलने को जाए दूसरे दिन न जाए कि इस त़रह़ करने से मह़ब्बतो उल्फ़त ज़ियादा होती है, बाक़ी क़राबत दारों से जुम्आ़ जुम्आ़ मिलती रहे या महीने में एक बार। ❖ ह़क़ और जाइज़ बातों में क़बीले और ख़ानदान वालों को मुत्तह़िद होना चाहिए यानी अगर रिश्तेदार ह़क़ पर हों, तो दूसरों से मुक़ाबला और इज़्हारे ह़क़ में सब मुत्तह़िद हो कर काम करें। ❖ रिश्तेदार ह़ाजत पेश करे, तो रद कर देना गुनाह है, जब कोई रिश्तेदार ह़ाजत पेश करे, तो उस की ह़ाजत रवाई करे, उस को रद कर देना रिश्ता तोड़ना है।[2]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) और 120 सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले **"101 मदनी फूल"** और **"163 मदनी फूल"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिए और मुत़ालआ़ फ़रमाइए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، ۹/۶۷۸

2... کتاب الدرر الحکام، ۱/۳۲۳

www.dawateislami.net

बयान : 08 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मेरा जो उम्मती अपने दिल के इख़्लास के साथ मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा, **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा, उस के दस दरजे बुलन्द फ़रमाएगा, उस के लिए दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा।[1]

मेरी ज़बान तर रहे ज़िक्रो दुरूद से
बेजा हंसूं कभी, न करूं गुफ़्तगू फ़ुज़ूल

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 243)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1...سنن کبریٰ، کتاب عمل الیوم...الخ، باب ثواب الصلاۃ...الخ، ۲۱/۶، حدیث: ۹۸۹۳

2...معجم کبیر، ۱۸۵/۶، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत हासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اِنْ شَآءَ الله आज के बयान में हम **"मुआ़शरे की रुसूमात"** में से चन्द बुरी रस्मों के बारे में सुनेंगी। मिस्र में एक इन्सानिय्यत सोज़ रस्म जो काफ़ी अ़र्से से जारी थी, वोह रस्म क्या थी ? और किस अ़ज़ीम हस्ती की करामत से उस का ख़ातिमा हुवा ? इस बारे में सुनेंगी। माहे सफ़र से मुतअ़ल्लिक़ बहुत सी ग़लत़ बातें और रस्में जो हमारे मुआ़शरे में पाई जाती हैं, उन के बारे में उ़लमाए दीन के बयान कर्दा इरशादात भी सुनेंगी और येह भी सुनेंगी कि आज कल मुआ़शरे में शादी ब्याह के मौक़ेअ़ पर कौन कौन सी ग़ैर शरई रुसूमात राइज हैं। **अल्लाह**

www.dawateislami.net

करे कि हम पूरा बयान सुनने में काम्याब हो जाएं । बाज़ इस्लामी बहनें दौराने बयान तस्बीह़ के ज़रीए़ ज़िक्रो दुरूद वग़ैरा में मश्ग़ूल रेहती हैं । याद रखिए ! येह इस का मौक़अ़ नहीं, हम चूंकि इल्मे दीन सीखने की निय्यत से यहां जम्अ़ हुई हैं, लिहाज़ा दौराने बयान पूरी तवज्जोह बयान की त़रफ़ ही होनी चाहिए । वैसे इल्मे दीन सीखने पर मुश्तमिल बयान सुनना भी ज़िक्रुल्लाह ही में शामिल है ।

रुके दरया को जारी कर दिया फ़ारूक़े आज़म ने

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **"करामाते फ़ारूक़े आज़म"** में एक ह़िकायत नक़्ल फ़रमाते हैं : जब मिस्र फ़त्ह़ हुवा, तो एक रोज़ अहले मिस्र ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से अ़र्ज़ की : ऐ अमीर ! हमारे दरयाए नील की एक रस्म है, जब तक उस को अदा न किया जाए, दरया जारी नहीं रेहता । उन्हों ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया (यानी सुवाल किया) : क्या ? कहा : हम एक कुंवारी लड़की को उस के वालिदैन से ले कर उ़म्दा लिबास और नफ़ीस ज़ेवर (Fine Jewellery) से सजा कर दरयाए नील में डालते हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : इस्लाम में हरगिज़ ऐसा नहीं हो सकता और इस्लाम पुरानी वाहियात रस्मों को मिटाता है । पस वोह रस्म मौक़ूफ़ रखी (यानी रोक दी) गई और दरया की रवानी कम होती गई, यहां तक कि लोगों ने वहां से चले जाने का क़स्द (यानी इरादा) किया । येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़ए सानी, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ख़िदमत में तमाम वाक़िआ़ लिख भेजा । आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने जवाब में तह़रीर फ़रमाया : तुम ने ठीक किया, बेशक इस्लाम ऐसी रस्मों को मिटाता है, मेरे इस ख़त़

www.dawateislami.net

में एक रुक़्आ़ है, इस को दरयाए नील में डाल देना । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास जब अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का ख़त़ पहुंचा और उन्हों ने वोह रुक़्आ़ उस ख़त़ में से निकाला, तो उस में लिखा था : (ऐ दरयाए नील !) अगर तू ख़ुद जारी है, तो न जारी हो और **अल्लाह** पाक ने जारी फ़रमाया, तो मैं **अल्लाह** पाक से अ़र्ज़ गुज़ार हूं कि तुझे जारी फ़रमा दे । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने येह रुक़्आ़ दरयाए नील में डाला, एक रात में 16 गज़ पानी बढ़ गया और येह रस्म मिस्र से बिल्कुल ख़त़्म हो गई ।[1]

चाहें तो इशारों से अपने, काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमतगारों की, सरदार का आ़लम क्या होगा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! काइनात में इस्लामी तालीमात का नूर फैलने से पेहले कैसी कैसी अ़जीबो ग़रीब, दर्दनाक और ग़ैर शरई रुसूमात व ख़ुराफ़ात ने मुआ़शरे को अपनी लपेट में लिया हुवा था, मसलन जब दरयाए नील ख़ुश्क होने लगता, तो मिस्र के लोग हर साल एक बे गुनाह नौजवान लड़की को ज़ेवरात से आरास्ता कर के उसे दरया की भेंट चढ़ाते, यानी दरया में डाल दिया करते और येह बात़िल नज़रिय्या क़ाइम कर लिया था कि अगर ऐसा न किया गया, तो दरयाए नील ख़ुश्क (Dry) हो जाएगा मगर क़ुरबान जाइए ! निगाहे नुबुव्वत से फ़ैज़ याफ़्ता, बारगाहे रिसालत के तरबियत याफ़्ता, अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ पर ! जिन की बदौलत बरसा बरस से जारी इस जाहिलाना और शर्मनाक रस्म का हमेशा के लिए ख़ातिमा हो गया ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

1...करामाते फ़ारूक़े आज़म, स. 12

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ अहले मिस्र में दरयाए नील को जारी रखने के लिए ग़लत़ एतिक़ाद पर मबनी रस्मे बद जारी थी, इसी त़रह़ दौरे ह़ाज़िर में भी बहुत से ग़लत़ एतिक़ादात, तवह्हुमात, नाजाइज़ रुसूमात और ग़ैर शरई तेहवारों की तबाहकारियों ने मुआ़शरे को शरीअ़तो सुन्नत से दूर कर के तबाही के क़रीब ला खड़ा किया है। आइए ! चन्द नाजाइज़ रुसूमात और तेहवारों के बारे में सुनती हैं। चुनान्चे,

माहे सफ़र से मुतअ़ल्लिक़ फैले बे बुन्याद ख़यालात

दावते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब "**बद शुगूनी**" में है कि नुहूसत के वह्मी तसव्वुरात के शिकार लोग माहे सफ़र को मुसीबतों और आफ़तों के उतरने का महीना समझते हैं, ख़ुसूसन इस की इब्तिदाई तेरह तारीख़ें जिन्हें "**तेरह तेज़ी**" कहा जाता है, बहुत मन्हूस तसव्वुर की जाती हैं। वह्मी लोगों का येह ज़ेहन बना होता है कि सफ़र के महीने में नया कारोबार शुरअ़ नहीं करना चाहिए, नुक़्सान का ख़त़रा है, सफ़र करने से बचना चाहिए, ऐक्सीडन्ट (Accident) का अन्देशा है, शादियां न करें, बच्चियों की रुख़्सती न करें, घर बरबाद होने का इमकान है, ऐसे लोग बड़ा कारोबारी लेन देन नहीं करते, घर से बाहर आमदो रफ़्त में कमी कर देते हैं, इस गुमान के साथ कि आफ़ात नाज़िल हो रही हैं, अपने घर के एक एक बरतन को और सामान को ख़ूब झाड़ते हैं, इसी त़रह़ अगर किसी के घर में इस माह में मय्यित हो जाए, तो उसे मन्हूस समझते हैं और अगर उस घराने में अपने लड़के या लड़की की निस्बत त़ै हुई हो, तो उस को तोड़ देते हैं। तेरह तेज़ी के उ़न्वान से सफ़ेद चने (काबुली चने) की नियाज़ भी दी जाती है। नियाज़ फ़ातिह़ा करना मुस्तह़ब व बाइसे

www.dawateislami.net

सवाब है और हर त़रह़ के रिज़्क़े ह़लाल पर हर माह की हर तारीख़ को दी जा सकती है लेकिन येह समझना कि अगर तेरह तेज़ी की फ़ातिह़ा न दी और सफ़ेद चने पका कर तक़्सीम न किए, तो घर के कमाने वाले अफ़राद का रोज़गार मुतास्सिर होगा, येह बे बुन्याद ख़यालात हैं।

अ़रबों में माहे सफ़र को मन्हूस समझा जाता था

दौरे जाहिलिय्यत में (यानी इस्लाम से पेहले) भी माहे सफ़र के बारे में लोग इसी क़िस्म के वह्मी ख़यालात रखा करते थे कि इस महीने में मुसीबतें और आफ़तें बहुत होती हैं। चुनान्चे, वोह लोग माहे सफ़र के आने को मन्हूस ख़याल किया करते थे।[1]

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से सुवाल हुवा : क्या मोह़र्रम व सफ़र में निकाह़ करना मन्अ़ है ? इरशाद फ़रमाया : निकाह़ किसी महीने में मन्अ़ नहीं, येह ग़लत़ मश्हूर है।[2]

सदरुश्शरीआ़, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : माहे सफ़र को लोग मन्हूस जानते हैं, इस में शादी ब्याह नहीं करते, लड़कियों को रुख़्सत नहीं करते और भी इस क़िस्म के काम करने से परहेज़ करते हैं और सफ़र करने से गुरेज़ करते हैं, ख़ुसूसन माहे सफ़र की इब्तिदाई तेरह तारीख़ें बहुत ज़ियादा नह्स (यानी नुह़ूसत वाली) मानी जाती हैं और इन को तेरह तेज़ी केहते हैं, येह सब जहालत की बातें हैं। ह़दीस में फ़रमाया कि **सफ़र कोई चीज़ नहीं**।[3] यानी लोगों

1...عمدۃ القاری، ۷/ ۱۱۰ مفہوماً

2...मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 95

3...بخاری، کتاب الطب، باب الجذام ۴/ ۲۴، حدیث: ۵۷۰۷

www.dawateislami.net

का इसे मन्हूस समझना ग़लत़ है। इसी त़रह़ ज़ी क़ादा के महीने को भी बहुत लोग बुरा जानते हैं और इस को ख़ाली का महीना केहते हैं, येह भी ग़लत़ है और हर माह में 3, 13, 23, 8, 18, 28 (तारीख़) को मन्हूस जानते हैं, येह भी लग़्व (यानी बेकार) बात है।[1]

अस्ल नुहूसत तो गुनाहों में है

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस्लाम में कोई दिन या कोई साअ़त (वक़्त) मन्हूस नहीं, हां ! बाज़ दिन बा बरकत हैं।[2] **"तफ़्सीरे रूहुल बयान"** में है : सफ़र वग़ैरा किसी महीने या मख़्सूस वक़्त को मन्हूस समझना दुरुस्त नहीं, तमाम अवक़ात **अल्लाह** करीम के बनाए हुवे हैं और उन में इन्सानों के आमाल वाक़ेअ़ होते हैं। जिस वक़्त में बन्दए मोमिन **अल्लाह** पाक की इत़ाअ़त व बन्दगी में मश्ग़ूल हो, वोह वक़्त मुबारक है और जिस वक़्त में **अल्लाह** करीम की ना फ़रमानी करे, वोह वक़्त उस के लिए मन्हूस है। दर ह़क़ीक़त अस्ल नुहूसत तो गुनाहों में है।[3]

दिन रात मुसल्सल है गुनाहों का तसल्सुल
कुछ तुम ही करो ना येह नुहूसत नहीं जाती

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 382)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, 3 / 659

2...मिरआतुल मनाजीह़, 5 / 484

3...تفسیر روح البیان، پ ۱۱، التوبة، تحت الآیة ۳۷، ۳/ ۴۲۸

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुआ़शरे की नाजाइज़ रुसूमात और तेहवारों में से एक **"बसन्त मेला"** भी है। येह तेहवार अगर्चे ग़ैर मुस्लिमों का ईजाद कर्दा है मगर इल्मे दीन से दूरी के बाइ़स मुसलमानों में भी अब इस तेहवार को मनाने का रवाज ज़ोर पकड़ता जा रहा है। याद रखिए ! बसन्त मेला कसीर बुराइयों और बे ह़याई का मजमूआ़, पैसे बरबाद करने का ज़रीआ़ और क़ीमती जानों के ज़ाएअ़ होने का सबब है।

बसन्त मेले और पतंगबाज़ी की आफ़ात

शैख़े त़रीक़त, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ फ़रमाते हैं : बसन्त मेला येह एक गुस्ताख़े रसूल की यादगार है, इसे जारी करने वाले मर खप कर अपने कैफ़रे किरदार को पहुंच गए मगर अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! अपनी यक़ीनी और अटल मौत से ग़ाफ़िल मुसलमानों ने इसे जारी रखने में अपना किरदार अदा किया और कर रहे हैं, जिस की वज्ह से अब भी येह गुनाहों भरा सिलसिला तमाम तर हलाकत ख़ेज़ियों के साथ अपनी नुहूसतें लुटा रहा है। आज मुसलमान केहलाने वाले **"बसन्त"** के नाम से ग़ैर मुस्लिमों के इस तेहवार को फ़ख़्रिय्या त़ौर पर बड़ी धूमधाम से मनाते हैं जिस में पतंगबाज़ी के ख़ूब मुक़ाबले होते हैं, एक दूसरे की डोरें काटी और लूटी जाती हैं, मकानों की छतों पर डेक लगा कर फ़ोह़ूश गाने चलाए जाते हैं, पतंग कट जाने पर इतनी ख़ुशी मनाई जाती है कि लड़के और लड़कियां इकट्ठे मिल कर रक़्स करते हैं, मर्द तो मर्द, ख़वातीन भी इस कारे गुनाह में मर्दों से पीछे रेह जाने को गोया ख़िलाफ़े शान ख़याल करती हैं, बड़े बड़े शह़रों में पेहले ही से होटल और ऊंची ऊंची इ़मारतों की छतें बुक हो जाती

www.dawateislami.net

हैं, जिस में मुल्क के तूलो अ़र्ज़ से बे शुमार लोग शरीके मआ़सी (गुनाह) होते हैं, अल ग़रज़ ! बे ह़याई व फ़ह्शाहाशी और दीगर गुनाहों का बाज़ार ख़ूब गर्म होता है कि اَلْاَمَانَ وَالْحَفِیْظ

हर साल इस मन्हूस तेहवार के बाइ़स बे शुमार अफ़राद छतों से गिर कर, पतंग की डोर फंसने, बिजली की तारों के गिरने या मुक़ाबला बाज़ी के दौरान आपस में लड़ झगड़ कर मौत की भेंट चढ़ जाते हैं, न जाने कितने ही बच्चों की शह रगें तेज़ डोर से कट जाती हैं, बीसियों अफ़राद टांगें या बाज़ू तुड़वा कर उ़म्र भर के लिए अपाहिज और वालिदैन और दीगर अहले ख़ाना के लिए वबाले जान बन जाते हैं और कई मां-बाप अपने बच्चे को इस मन्हूस तेहवार की नज़्र कर के पूरी ज़िन्दगी के लिए दिल पर औलाद की जुदाई का दाग़ लिए फिरते हैं। अहम शख़्सिय्यतों के इलावा ग़ैर मुल्की सफ़ीरों को भी मदऊ़ कर के पतंगबाज़ी के नज़्ज़ारे की ज़ह़मत दी जाती है और वोह लोग इस क़ौम की इन कारस्तानियों (शरारतों) को देख कर मुस्कुराते हैं कि इस क़ौम का बच्चा बच्चा हज़ारों का मक़्रूज़ है लेकिन येह क़ौम अपने मुल्क (Country) को बचाने के बजाए करोड़ों रुपये पतंगबाज़ी की नज़्र कर रही है, अल ग़रज़ ! नफ़्सो शैत़ान की चाल में आ कर बे शुमार मुसलमान अपना वक़्त और पैसा ज़ाएअ़ करने के साथ साथ बसा अवक़ात अपनी जान से भी हाथ धो बैठते हैं। **अल्लाह** पाक सभी मुसलमानों को अ़क़्ले सलीम अ़त़ा फ़रमाए और इन फ़ुज़ूल व बेहूदा कामों से ख़ुद भी बचने और दूसरों को बचाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

1...यक़ीने कामिल की बरकतें, स. 25, 26

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे मुआ़शरे में मंगनी और शादी के मौक़ेअ़ पर मुख़्तलिफ़ रुसूमात अदा करने का बहुत ज़ियादा रवाज है फिर हर अ़लाक़े, हर क़ौम और हर ख़ानदान की अपनी मख़्सूस रुसूम होती हैं। चूंकि येह रुसूम महज़ उ़र्फ़ की बुन्याद पर अदा की जाती हैं और कोई भी इन्हें फ़र्ज़ो वाजिब तसव्वुर नहीं करता, लिहाज़ा जब तक किसी रस्म में कोई शरई क़बाह़त (ख़राबी) न पाई जाए, उसे ह़राम व नाजाइज़ नहीं केह सकते। जैसा कि सदरुश्शरीआ़, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रुसूम की पाबन्दी उसी ह़द तक की जा सकती है कि किसी फ़ेले ह़राम में मुब्तला न होना पड़े मगर बाज़ लोग इस क़दर पाबन्दी करते हैं कि नाजाइज़ फ़ेल करना पड़े तो पड़े मगर रस्म का छोड़ना गवारा नहीं। मसलन लड़की जवान है और रुसूम अदा करने को रुपय्या नहीं, तो येह न होगा कि रुसूम छोड़ दें और निकाह़ कर दें कि सुबुकदोश (आज़ाद) हो जाएं और फ़ितने का दरवाज़ा बन्द हो बल्कि सूद जैसी लानत को गले लगाने के लिए तय्यार हो जाते हैं।[1]

येह शादी हुई या एलाने जंग ?

मज़ीद फ़रमाते हैं : शादी में नाच बाजे का होना बाज़ के नज़दीक इतना ज़रूरी अम्र (मुआ़मला) है कि निस्बत (यानी मंगनी) के वक़्त तै़ कर लेते हैं कि नाच गाना होगा, वरना हम शादी न करेंगे। लड़की वाला येह नहीं ख़याल करता कि बेजा सर्फ़ (ज़रूरत से ज़ाइद ख़र्च) न हो, तो उसी की औलाद के काम आएगा। एक वक़्ती ख़ुशी में येह सब कुछ कर लिया

1...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 7, 3 / 104, माख़ूज़न

www.dawateislami.net

मगर येह न समझा कि लड़की जहां ब्याह कर गई, वहां तो अब उस के बैठने का भी ठिकाना न रहा, एक मकान था वोह भी सूद में गया, अब तक्लीफ़ हुई, तो मियां बीबी में लड़ाई ठनी और इस का सिलसिला दराज़ हुवा, तो अच्छी ख़ासी जंग क़ाइम हो गई, येह शादी हुई या एलाने जंग ? हम ने माना कि येह ख़ुशी का मौक़अ़ है और मुद्दत की आरज़ू के बाद येह दिन देखने नसीब हुवे, बेशक ख़ुशी करो मगर ह़द से गुज़रना और ह़ुदूदे शरअ़ से बाहर हो जाना किसी आ़क़िल का काम नहीं ।[1]

गाने बाजे

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! एक तादाद है जहां रवाज है कि शादी के अय्याम में रिश्तेदार और मह़ल्ले की औ़रतें जम्अ़ हो कर ढोलक बजाती और गीत गाती हैं, येह ह़राम है कि अव्वलन ढोल बजाना ही ह़राम फिर औ़रतों का गाना, मज़ीद येह कि औ़रत की आवाज़ ना मह़रमों को पहुंचाना और वोह भी गाने की ! जो औ़रतें अपने घरों में बात करते वक़्त घर से बाहर आवाज़ जाने को मायूब (बुरा) जानती हैं, ऐसे मौक़ओं पर वोह भी शरीक हो जाती हैं, गोया उन के नज़दीक गाना कोई ऐ़ब ही नहीं, कितनी ही दूर तक आवाज़ जाए, कोई ह़रज नहीं नीज़ ऐसे गाने में जवान कुंवारी लड़कियां भी शरीक होती हैं, ऐसे अश्आ़र पढ़ना या सुनना किस ह़द तक उन के दबे हुवे जोश को उभारेगा और अख़्लाक़ो आ़दात पर इस का कहां तक असर पड़ेगा, येह बातें ऐसी नहीं जिन के समझाने की ज़रूरत हो या सुबूत पेश करने की ह़ाजत हो ।[2]

1…बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 7, 2 / 106

2…बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 7, 2 / 105, माख़ूज़न

www.dawateislami.net

मेहंदी की रस्म

इसी त़रह़ मेहंदी की रस्म भी है जिस में नौजवान लड़कियां ग़ैर शरई़ लिबास पेहने ख़ूब बन संवर कर बे पर्दा ह़ालत में बाज़ारों और गलियों में से मेहंदी के थाल लिए हुवे गुज़रती हैं और फिर दुल्हन या दुल्हा के घर जा कर नाच गाने की प्राईवेट मेह़फ़िल सजाती हैं और त़रह़ त़रह़ के फ़ितनों की पैदाइश का ज़रीआ़ बनती हैं।[1]

म्यूज़ीक्ल फ़ंक्शन

इसी पर बस नहीं बल्कि अब तो बा क़ाइदा म्यूज़ीकल फ़ंक्शन (DJ) का एहतिमाम किया जाता है जिस में साज़ो आलात के साथ गुलूकारों और गुलूकाराओं से स्पीकर (*Speaker*) पर गाने सुने जाते हैं और त़वाइफ़ों का नाच देखा जाता है और हाथ पीट पीट कर तालियों की सूरत में उन्हें दाद भी दी जाती है। इस क़िस्म की मह़ाफ़िल में जिन फ़वाह़िश व बदकारियों और अख़्लाक़ ख़राब करने वाली बातों का इजतिमाअ़ होता है, उन के बयान की ह़ाजत नहीं। مَعَاذَاللہ ! मां-बाप, बेटा बेटी, भाई बहन एक साथ इन ख़ुशियों में मगन होते हैं और ह़या दूर खड़ी शर्म से पानी पानी हो रही होती है, ऐसी ही मेह़फ़िलों की वज्ह से अक्सर नौजवान आवारा हो जाते हैं और अपना धन दौलत बरबाद कर बैठते हैं।[2]

मंगनी की रस्म

मंगनी शादी के वादे का नाम है लेकिन इस मौक़ेअ़ पर भी बेहूदा रस्मों का इन्एक़ाद ज़रूरी समझा जाता है, जिन में से एक येह भी है कि

1...तरबियते औलाद, स. 36

2...तरबियते औलाद, स. 37

www.dawateislami.net

लड़का ख़ुद अपने हाथों से अपनी मंगेतर के हाथ में अंगूठी पेहनाता है।[1] मर्द को सर और दाढ़ी के बालों के सिवा मेहंदी लगाना नाजाइज़ है मगर कुछ दुल्हे अपने हाथ बल्कि पाउं को भी मेहंदी से रंगे हुवे होते हैं।[2] बेन्ड बाजे वाले बुलवाए जाते हैं जो बारात की आमद के मौक़ेअ़ पर अपने फ़न का मुज़ाहरा करते हैं और साज़ो आलात बजाने के गुनाह कमाने के साथ साथ सोए हुवे मुसलमानों और मरीज़ों को अज़िय्यत भी पहुंचाते हैं।[3]

दूध पिलाई की रस्म

रुख़्सती के मौक़ेअ़ पर दूध पिलाई की रस्म अदा की जाती है, जिस में दुल्हे को ना महरम ख़वातीन के मजमअ़ (Crowd) में बुलाया जाता है, उस के दोस्त ऐसे मौक़ेअ़ पर उसे तन्हा नहीं छोड़ते और उस के साथ ही तशरीफ़ लाते हैं फिर कोई ना महरम नौजवान लड़की अपनी हम उ़म्र लड़कियों के झुरमट में दुल्हे को दूध का ग्लास पेश करती है और फिर हल्ला गुल्ला होता है और दुल्हा के दोस्त, ना महरम औ़रतों के साथ हंसी मज़ाक़ करते हैं फिर आख़िर में दुल्हे से दूध पिलाई का मुत़ालबा किया जाता है जो उ़मूमन उस की हैसिय्यत से कई गुना ज़ाइद होती है।[4]

आतशबाज़ी

नाच बाजे, आतशबाज़ी ह़राम हैं। कौन इन की हुर्मत से वाक़िफ़ नहीं ? मगर बाज़ लोग (इन कामों में) ऐसे मुन्हमिक (मश्ग़ूल) होते हैं कि

1...तरबियते औलाद, स. 37
2...तरबियते औलाद, स. 37
3...तरबियते औलाद, स. 38
4...तरबियते औलाद, स. 38

www.dawateislami.net

येह न हों, तो गोया शादी ही न हुई बल्कि बाज़ तो इतने बेबाक होते हैं कि अगर शादी में येह मोह़र्रमात (शरअ़न ममनूअ़ काम) न हों, तो उसे ग़मी और जनाज़े से ताबीर करते हैं, येह ख़याल नहीं करते कि एक तो गुनाह और शरीअ़त की मुख़ालफ़त है, दूसरे माल ज़ाएअ़ करना, तीसरे तमाम तमाशाइयों के गुनाह का येही सबब है और सब के मजमूए़ के बराबर इस पर गुनाह का बोझ । आतशबाज़ी में कभी कपड़े जलते, कभी किसी के मकान में आग लग जाती है, कोई जल जाता है, मुसलमान पर लाज़िम है कि अपने हर काम को शरीअ़त के मुवाफ़िक़ करे, **अल्लाह** (पाक) व रसूले (करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मुख़ालफ़त से बचे, इसी में दीनो दुन्या की भलाई है ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

वेलन्टाइन डे की ख़ुराफ़त

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मुआ़शरे में फैली हुई नाजाइज़ रुसूमात व तेहवारों में से एक "**वेलन्टाइन डे**" भी है । बसन्त की त़रह़ येह भी ग़ैर मुस्लिमों के तेहवारों में से एक तेहवार है जो कसीर बुराइयों का मजमूआ़ है । अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! बसन्त की त़रह़ "**वेलन्टाइन डे**" के मौक़ेअ़ पर भी बाज़ नादान लोग तमाम शरई ह़ुदूद को पामाल करते हुवे गुनाहों का बाज़ार ख़ूब गर्म करते हैं, नौजवान लड़कों और लड़कियों के बे पर्दगी व बे ह़याई के साथ मेल मिलाप, तोह़फ़े तह़ाइफ़ के लेन देन से ले कर फ़ह़्ह़ाशी व उ़रयानी की हर क़िस्म का मुज़ाहरा खुले आ़म या चोरी छुपे जिस का जितना बस चलता है आ़म देखा सुना जाता है, गिफ़्ट शॉप्स (*Gift Shops*) और फूलों की दुकान पर रश में

1...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 7, 2 / 106, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

इज़ाफ़ा हो जाता है और इन अश्या को ख़रीदने वाले भी नौजवान लड़के और लड़कियां होती हैं, वेलन्टाइन डे पर होटल्ज़ की बुकिंग आ़म दिनों के मुक़ाबले में बढ़ जाती है, مَعَاذَاللہ ! शराब का बहुत ज़ियादा कारोबार होता है जबकि साहिले समुन्दर पर बे पर्दगी और बे ह़याई का एक नया समुन्दर होता है । वोह ममालिक जहां ग़ैर मुस्लिम, मज़हबी और अख़्लाक़ी पाबन्दियों से आज़ाद रेहते हैं और बे ह़याई के कामों को वहां हर त़रह़ की क़ानूनी छूट ह़ासिल है, इस दिन के हंगामे से बाज़ अवक़ात वोह भी परेशान हो जाते हैं और इस के ख़िलाफ़ बाज़ अवक़ात कहीं कहीं से दबी दबी सदाए एह़तिजाज भी बुलन्द होती रेहती है लेकिन इन्तिहाई दुख और अफ़्सोस की बात येह है कि इस दिन को ग़ैर मुस्लिमों की त़रह़ बे ह़याई के साथ मनाने वाले बहुत से मुसलमान भी **अल्लाह** पाक और उस के रसूले करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़त़ाकर्दा पाकीज़ा अह़कामात को पसे पुश्त डालते हुवे खुल्लम खुल्ला गुनाहों का इर्तिकाब कर के न सिर्फ़ अपने नामए आमाल की सियाही में इज़ाफ़ा करते हैं बल्कि मुस्लिम मुआ़शरे की पाकीज़गी को भी नापाक व आलूदा करते हैं । बद निगाही, बे पर्दगी, फ़ह़्ह़ाशी व उ़रयानी, अजनबी लड़के और लड़कियों का मेल मिलाप, हंसी मज़ाक़, इस नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ को मज़बूत़ रखने के लिए तह़ाइफ़ का तबादला और आगे बदकारी तक की नौबतें, येह सब वोह बातें हैं जो इस दिन ज़ोरो शोर से जारी रेहती हैं । इन शैत़ानी कामों के नाजाइज़ व ह़राम होने में किसी मुसलमान को बिल्कुल भी शुबा नहीं हो सकता क्यूंकि क़ुरआने करीम की रौशन आयात और नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वाज़ेह़ इरशादात से इन कामों की हुर्मत व मज़म्मत साबित है । इस लिए हमें चाहिए कि हम इस त़रह़ की तमाम ख़ुराफ़ात से बचें और **अल्लाह** करीम को राज़ी करने वाले कामों में लग जाएं । रब्बे करीम हमें अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

सदक़ा मुझे सरकार नवासों का अ़ता हो
अग़्यार के टुकड़ों से शहनशाह बचा लो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 307)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम मुआ़शरे की बुरी रस्मो रवाज और उन की तबाहकारियों के बारे में सुन रही हैं । उ़मूमन बाज़ नादान ख़ुशी व ग़मी के मौक़ेअ़ पर ग़ैर शरई रुसूमात करने और ग़ैर मुस्लिमों के तेहवार मनाने के ह़द से ज़ियादा शैदाई होते हैं, दुन्या इधर से उधर हो जाए, आंधियां, तूफ़ान, सैलाब या ज़लज़ले आ जाएं, क़ानून ह़रकत में आ जाए मगर फिर भी वोह इन नाजाइज़ रुसूमात को अदा करने और ग़ैर मुस्लिमों के तेहवारों को मनाने के बुरे इरादे से एक इंच भी पीछे हटने के लिए तय्यार नहीं होते, बिलफ़र्ज़ कोई उन की इस्लाह़ करने की कोशिश करे और उन्हें इन ख़ुराफ़ात के दीनी व दुन्यावी नुक़्सानात बतलाए, तो जवाब मिलता है कि **''येह हमारी ख़ानदानी रस्में हैं और हमारे बाप दादा के ज़माने से चलती आ रही हैं, लिहाज़ा हम इन रस्मों को हरगिज़ नहीं छोड़ेंगे ।''** याद रखिए ! नाजाइज़ रस्मों के लिए ख़ानदान (Family) वग़ैरा के अ़मल को दलील बना लेना हरगिज़ अ़क़्लमन्दी नहीं बल्कि शरीअ़त की खुल्लम खुल्ला ख़िलाफ़ वर्ज़ी है । مَعَاذَاللّٰه

ग़मी, ख़ुशी की नाजाइज़ रस्मों में मुब्तला लोगों को नसीह़त

तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान में है : उन लोगों को अपने त़र्ज़े अ़मल पर ग़ौर करना चाहिए जो ग़मी, ख़ुशी के मौक़ेअ़ पर शरीअ़त के ख़िलाफ़ रस्में बजा लाने और दीगर अफ़्आ़ल करने पर कोई शरई दलील पेश करने की बजाए येह केहने लगते हैं कि ''हमारे बड़े बूढ़े अ़र्सए दराज़ से येह

www.dawateislami.net

रस्म व काम करते चले आ रहे हैं और हमारे ख़ानदान में शायद ही कोई घर ऐसा हो जो ग़मी, ख़ुशी के मौक़ेअ़ पर इन रस्मों और कामों को न करता हो फिर हम किसी के केहने पर इन चीज़ों को कैसे छोड़ सकते हैं ?" अगर येह लोग **अल्लाह** पाक और उस के रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दिए हुवे अह़काम को सामने रख कर अपने त़र्ज़े अ़मल पर सह़ीह़ त़रीक़े से ग़ौर करें, तो इन्हें भी मालूम हो जाएगा कि इन की कुछ रस्में और अफ़्आ़ल शरीअ़त के सरासर ख़िलाफ़ हैं और येह इन के कन्धों पर अपने और दूसरों के गुनाहों का बहुत भारी बोझ हैं।[1]

शरीअ़त के मुक़ाबले में बाप दादा की पैरवी करना कैसा ?

(**याद रखिए** !) गुनाह के कामों में बाप दादा की पैरवी नाजाइज़ है कि ब हुक्मे ह़दीस **अल्लाह** करीम की ना फ़रमानी के काम में किसी की इत़ाअ़त नहीं की जा सकती।[2]

हमारे हां शादी, मर्ग (मौत) और दीगर कई मवाक़ेअ़ पर शरीअ़त पर चलने का कहा जाए, तो लोग आगे से येही बाप दादा, ख़ानदान और बिरादरी के रस्मो रवाज का उ़ज़्र पेश करते हैं, येह भी सरासर ग़लत़ व बात़िल है। ख़ुलासए कलाम येह है कि बुरों की पैरवी बुरी है और अच्छों की पैरवी अच्छी, जैसे हम सह़ाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان), ताबेईन, अइम्मए मुज्तहिदीन, औलिया व सालिह़ीन (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) की पैरवी करती हैं, तो येह बहुत अच्छी है कि इस का हुक्म ख़ुद क़ुरआन ने दिया है। चुनान्चे, फ़रमाया :

1...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पा. 19, अश्शुअ़रा, तह़्तुल आयत : 76, 7 / 104

2...مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب طاعۃ الامراء۔۔۔الخ، ص۷۸۹، حدیث ۴۷۶۵

www.dawateislami.net

وَ كُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ (پ۱۱، التوبہ: ۱۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सच्चों के साथ हो।

हर नमाज़ में बुज़ुर्गों की पैरवी की दुआ़ मांगने का हुक्म दिया गया। चुनान्चे, फ़रमाया :

صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ (پ۱، الفاتحہ: ۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रास्ता उन का जिन पर तू ने एह़सान किया।

अल्लाह करीम हमें अच्छों की पैरवी करने और बुरों की पैरवी से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अभी हम ने मुआ़शरे में पाई जाने वाली मुख़्तलिफ़ रुसूम और तेहवारों के बारे में सुना। याद रखिए ! हर वोह रस्म और रवाज जो शरीअ़त से टकराए, हमें उस से ख़ुद भी बचना चाहिए और अपने घरवालों को भी बचाना चाहिए। इस में शक नहीं कि अगर हम येह अ़ह्द कर लें कि हम अपने घर में अपने ख़ानदान में कोई भी ग़ैर शरई रस्मो रवाज नहीं होने देंगे और शरीअ़त के तक़ाज़ों के मुताबिक़ इस की पूरी कोशिश भी करेंगे, तो तमाम ग़ैर शरई रसूम व रवाज ख़ुद बख़ुद दम तोड़ जाएंगे। लिहाज़ा आज से पुख़्ता ज़ेह्न बनाइए कि आइन्दा ग़ैर शरई रस्मो रवाज से बचने की पूरी कोशिश किया करेंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत, चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की

1...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पा. 2, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 170, 1 / 271, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

सआ़दत ह़ासिल करती हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।[1]

बैठने की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब सुनती हैं : ❖ चार ज़ानू (यानी पालती मार कर) बैठना हम गुनाहगारों की शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है । ❖ जहां कुछ धूप और कुछ छांव हो, वहां न बैठें । **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से ग़ैब की ख़बरें देने वाले नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में से कोई साए में हो और उस पर से साया रुख़्सत हो जाए और वोह कुछ धूप, कुछ छांव में रेह जाए, तो उसे चाहिए कि वहां से उठ जाए ।[2] क़िब्ला रुख़ हो कर बैठें ।[3] ❖ आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : पीर व उस्ताज़ की निशस्त पर उन की ग़ैबत (यानी ग़ैर मौजूदगी) में भी न बैठे ।[4] ❖ जब कभी इजतिमाअ़ या मजलिस में आएं, तो दूसरों को फलांग कर आगे न जाएं, जहां जगह मिले, वहीं बैठ जाएं । ❖ जब बैठें, तो जूते उतार लें, आप के क़दम आराम पाएंगे ।[5] ❖ मजलिस से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ़ तीन बार

1...مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵

2...ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی الجلوس بین الظل والشمس، ۴/۳۳۸، حدیث: ۴۸۲۱

3...रसाइले अ़त्तारिय्या, ह़िस्सा : 2, स. 229

4...फ़तावा रज़विय्या, 24 / 369, 424

5...جامع صغیر، ص ۴۰، حدیث: ۵۵۴

www.dawateislami.net

पढ़ लें, तो गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे और जो इस्लामी बहन मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े, तो उस के लिए उस ख़ैर पर मोहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ़ येह है : سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ **तर्जमा :** तेरी ज़ात पाक है और ऐ **अल्लाह** ! तेरे ही लिए तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं।[1] ❖ जब वालिदैन आएं, तो ताज़ीमन खड़े हो जाना सवाब है।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) और 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**", अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिए और इस का मुत़ालआ़ कीजिए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، ۴/۳۴۷، حدیث: ۴۸۵۷

www.dawateislami.net

बयान : 09 हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब जुमेरात का दिन आता है, **अल्लाह** करीम फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं, वोह लिखते हैं कौन यौमे जुमेरात और शबे जुम्आ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है।[1]

हम ने ख़ता में न की तुम ने अ़ता में न की
कोई कमी सरवरा तुम पे करोरों दुरूद

(हदाइक़े बख़्शिश स. 271)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1...کنزالعمال، کتاب الاذکار، ۱/۲۵۰، حدیث: ۲۱۷۴

2...معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत हासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज के बयान में हम हुज़ूरे पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत की ख़ुसूसिय्यात के बारे में सुनने की सआ़दत हासिल करेंगी। सब से पेहले हम सुनेंगी कि तौरात शरीफ़ में उम्मते मुस्तफ़ा की किन किन ख़ुसूसिय्यात (Characteristics) और फ़ज़ाइल व कमालात को उजागर किया गया है, जब हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को उम्मते महबूब की ख़ुसूसिय्यात का इल्म हुवा तो उन्हों ने किस चीज़ की ख़्वाहिश का इज़हार किया, उस ख़्वाहिश के बारे में भी हम सुनेंगी, इस के बाद उम्मते महबूब की अफ़्ज़लिय्यत की वज्ह और उम्मते सरकार के 6

www.dawateislami.net

अज़ीमुश्शान फ़ज़ाइल भी बयान होंगे, उम्मते महबूब के अफ़राद के हाफ़िज़े किस क़दर मज़बूत होते हैं इस तअ़ल्लुक़ से बुज़ुर्गों के अक़्वाल और हाफ़िज़ुल हदीस हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बे मिसाल याद दाश्त का एक वाक़िआ़ भी हम सुनेंगी । **अल्लाह** करे कि दिल जम्ई के साथ हम अव्वल ता आख़िर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बयान सुनने की सआ़दत हासिल करें । बाज़ इस्लामी बहनें दौराने बयान तस्बीह़ के ज़रीए ज़िक्रो दुरूद शरीफ़ वग़ैरा पढ़ती रेहती हैं । याद रखिए ! येह इस का मौक़अ़ नहीं है, हम चूंकि इ़ल्मे दीन सीखने की निय्यत से यहां जम्अ़ हुई हैं तो दौराने बयान पूरी तवज्जोह बयान की त़रफ़ ही होनी चाहिए, क्यूंकि इ़ल्मे दीन सीखने पर मुश्तमिल बयान सुनना भी ज़िक्रुल्लाह ही में शामिल है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तौरात में उम्मते मुह़म्मदिय्या के फ़ज़ाइल

दावते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना की बहुत ही प्यारी किताब **"अल्लाह वालों की बातें"** जिल्द 5, सफ़ह़ा नम्बर 516 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे मौला ! मैं ने तौरात में एक ऐसी उम्मत का ज़िक्र पाया है जो सब उम्मतों से बेहतर (Better) होगी, लोगों को भलाई का हुक्म देगी और बुराई से मन्अ़ करेगी, वोह पेहले और बाद वाली तमाम किताबों पर ईमान लाएगी, गुमराहों से क़िताल करेगी ह़त्ता कि काने दज्जाल को भी क़त्ल करेगी । ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे पाक परवर दगार ! उसे मेरी उम्मत बना दे । **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! वोह अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत है । ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की :

www.dawateislami.net

ऐ मेरे परवर दगार ! मैं ने एक ऐसी उम्मत का ज़िक्र पाया जिस के लोग **अल्लाह** पाक की बहुत ह़म्द करेंगे, सूरज का ख़याल रखेंगे। (यानी नमाज़ और रोज़ों की वज्ह से हमेशा सूरज के तुलूअ़ व ग़ुरूब का ह़िसाब रखेंगे और उस की जंत्रियां छापा करेंगे। इस्लामी नमाज़ें, इफ़्तार, सह़री तो सूरज से हैं मगर ख़ुद रोज़े, ईदें, ह़ज वग़ैरा चांद से, इस लिए मुसलमान दोनों का ह़िसाब रखते हैं और कोई क़ौम येह दोनों काम नहीं करती।[1] और जब किसी काम का इरादा करेंगे, तो कहेंगे : اِنْ شَآءَاللّٰه हम इस काम को करेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे परवर दगार ! उसे मेरी उम्मत बना दे। **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! वोह अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत है। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे करीम ! मैं ने तौरात में ऐसी उम्मत का ज़िक्र पाया जिन की दुआ़एं क़बूल होंगी और उन के ह़क़ में दुआ़एं क़बूल की जाएंगी, उन की सिफ़ारिश क़बूल होगी और उन के ह़क़ में सिफ़ारिश क़बूल की जाएगी। येह केह कर ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : इलाही ! तू उन्हें मेरी उम्मत बना दे। **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! वोह अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत है।

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे करीम ! मैं ने तौरात में ऐसी उम्मत का ज़िक्र पाया है जो बुलन्दी पर चढ़ेंगे, तो **अल्लाह** पाक की किब्रियाई बयान करेंगे और जब किसी वादी में उतरें, तो **अल्लाह** पाक की ह़म्दो सना बयान करेंगे, उन के लिए पूरी ज़मीन पाक होगी और वोह जहां भी हों, सारी ज़मीन उन के लिए क़ाबिले नमाज़ होगी, वोह नापाकी से पाकी ह़ासिल करेंगे, जहां पानी (Water) न पाएंगे वहां मिट्टी

1 ...मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 35, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

से पाकी हासिल करना उन के लिए ऐसा होगा जैसे पानी से और बरोज़े क़ियामत वुज़ू के असर से उन के आज़ाए वुज़ू चमकते होंगे । येह केह कर हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे परवर दगार ! तू उन्हें मेरी उम्मत बना दे । **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! वोह अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत है । हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ रब्बे करीम ! मैं ने (तौरात में) ऐसी उम्मत का ज़िक्र पाया है कि जब वोह कोई नेक काम करने का इरादा करेंगे, तो उन के लिए एक नेकी लिख दी जाएगी और जब वोह नेकी कर लेंगे, तो उन की नेकी को 10 से 700 गुना तक बढ़ा दिया जाएगा और अगर किसी गुनाह का इरादा करेंगे, तो उन के लिए कुछ नहीं लिखा जाएगा और अगर गुनाह का इर्तिकाब कर बैठेंगे, तो उन के लिए सिर्फ़ वोही गुनाह लिखा जाएगा । येह केह कर हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे परवर दगार ! तू उन्हें मेरी उम्मत बना दे । **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! वोह अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत है । हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने तौरात में देखा, तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं ने एक उम्मते मर्ह़ूमा का ज़िक्र पाया जो कमज़ोर होने के बा वुजूद किताबुल्लाह के वारिस होंगे और तू ने उन्हें चुन लिया है, उन में से कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाला होगा, कोई दरमियानी राह चलने वाला होगा और कोई नेकियों में सबक़त करने वाला होगा, मैं ने उन में से कोई एक भी ऐसा नहीं पाया जिस पर रह़्म न किया गया हो । येह केह कर हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ पाक परवर दगार ! तू उन्हें मेरी उम्मत बना दे । **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! वोह अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत है ।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने तौरात में देखा, तो अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** पाक ! उन के मसाहिफ़ उन के सीनों में (महफ़ूज़) होंगे, वोह अहले जन्नत का सा मुख़्तलिफ़ (*Different*) रंगों का लिबास पेहनेंगे और जहन्नम में उन में से वोही शख़्स दाख़िल होगा जो नेकियों से इस त़रह़ ख़ाली हो जैसे पथ्थर दरख़्त के पत्तों से ख़ाली होता है । येह केह कर ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे परवर दगार ! तू उन्हें मेरी उम्मत बना दे । **अल्लाह** पाक ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! वोह अह़मदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत है । जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को इस फ़ज़ीलत से तअ़ज्जुब होने लगा जो **अल्लाह** पाक ने सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन की उम्मत को अ़त़ा फ़रमाई, तो केहने लगे : "काश ! मैं ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब में से होता ।" तो **अल्लाह** पाक ने उन की रिज़ा के लिए 3 आयात नाज़िल फ़रमाईं :

يٰمُوْسٰۤى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَاۤ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ؕ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۱۴۵﴾

(پ۹، الاعراف: ۱۴۴، ۱۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मूसा ! मैं ने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों और अपने कलाम से तू ले जो मैं ने तुझे अ़त़ा फ़रमाया और शुक्र वालों में हो और हम ने इस के लिए तख़्तियों में लिख दी हर चीज़ की नसीह़त और हर चीज़ की तफ़्सील और फ़रमाया ऐ मूसा इसे मज़बूती से ले और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि इस की अच्छी बातें इख़्तियार करें अ़न क़रीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा बे हुक्मों का घर ।

www.dawateislami.net

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰۤى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

(پ۹، الاعراف:۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मूसा की क़ौम से एक गिरोह है कि हक़ की राह बताता और उसी से इन्साफ़ करता।

येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पूरी त़रह़ राज़ी हो गए।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ الله ! सुना आप ने ! उम्मते सरकार को रब्बे करीम ने दो, चार या पांच नहीं बल्कि बे शुमार फ़ज़ाइलो बरकात और कई ख़ुसूसिय्यात से नवाज़ा है। वोह तौरात शरीफ़ जिसे **अल्लाह** पाक ने मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाया, उस मुक़द्दस आसमानी किताब के अन्दर भी इस अ़ज़ीम उम्मत के फ़ज़ाइलो कमालात और शानदार ख़ुसूसिय्यात को बयान किया गया है, ह़त्ता कि जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को इ़ल्म हुवा कि येह तमाम फ़ज़ाइलो कमालात उम्मते सरकार के हैं, तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने **अल्लाह** पाक की बारगाह में इस उम्मत को अपनी उम्मत बनाने की दरख़्वास्त की मगर जब इस की इजाज़त न मिली, तो फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उम्मते मह़बूब में शामिल होने की ख़्वाहिश का इज़्हार इन अल्फ़ाज़ में किया कि "**काश ! मैं ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के अस्ह़ाब में से होता।" अल्लाह** पाक का करोड़हा करोड़ एह़सान है कि उस ने रसूले करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में हमें मुसलमान बनाया और हमें रह़मते कौनेन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में शामिल फ़रमा कर हम पर इतना बड़ा एह़सान फ़रमाया है कि अगर हम उस के इस एह़सान पर सारी ज़िन्दगी भी उस का शुक्र बजा लाती रहें, तब भी उस का ह़क़ अदा न कर पाएं।

1...**अल्लाह** वालों की बातें, 5/516 ता 519, मुलख़्ख़सन व मुलतक़त़न

www.dawateislami.net

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने मश्हूरे ज़माना नातिया दीवान **वसाइले बख़्शिश** में लिखते हैं कि

शुक्र तेरा कि उन की उम्मत में
मुझ को ऐ जुल जलाल रखा है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम स. 443)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

उम्मते सरकार के अफ़्ज़ल होने की वज्ह

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस तरह हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तमाम रसूलों के सरदार और सब से अफ़्ज़ल हैं, बिला तश्बीह हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के सदक़े में हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल ।[1] اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हम कितनी ख़ुश नसीब हैं कि **अल्लाह** करीम के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दामने करम हमारे हाथों में आया । यक़ीनन हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में सब से अफ़्ज़ल हैं । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत भी पिछली तमाम उम्मतों से अफ़्ज़ल है ।

पारह 4, सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 110 में है :

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

(پ۴، اٰل عمران: ۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई, भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ करते हो और **अल्लाह** पर ईमान रखते हो ।

1...बहारे शरीअत, 1 / 54, हिस्सा : 1

www.dawateislami.net

तफ़्सीरे ख़ाज़िन में इस आयते मुबारका के तह़्त लिखा है : इस उम्मत को नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने की बदौलत दीगर तमाम उम्मतों पर फ़ज़ीलत दी गई है और इसी सबब से येह उम्मत तमाम उम्मतों में सब से बेहतरीन उम्मत है । पस साबित हुवा ! इस उम्मत के बेहतरीन होने की वज्ह इस के अफ़राद का नेकी की दावत देना और बुराई से मन्अ़ करना है ।[1] अब हमें अपने बारे में ग़ौर करना चाहिए कि क्या हम नेकी की दावत देने वालियां और बुराई से रोकने वालियां हैं ? याद रहे ! अगर हमारा गुमाने ग़ालिब हो कि बुराई करने वाली को बुराई से रोकेंगी, तो वोह बुराई से रुक जाएगी, तो हमें रोकना वाजिब है, न रोकेंगी, तो गुनाहगार होंगी ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** पाक का एह़सान है कि आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी का मदनी माह़ोल हमें नसीब है । क़ुरबान जाइए ! अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुबारक सोच पर, जिन्हों ने एक अ़ज़ीमुश्शान मदनी मक़्सद हमें अ़ता फ़रमाया है । आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी नमाज़ी बढ़ाओ तह़रीक है, **काश** ! हम भी इस तह़रीक का ह़िस्सा बन कर अ़मली तौ़र पर नेकी की दावत देने वालियों में शामिल हो जाएं । येह बहुत अच्छा है कि हम ज़ियादा से ज़ियादा नेकी की दावत के लिए अपने आप को पेश करें, नेकी की दावत आ़म करने की तो बहुत ज़ियादा ज़रूरत है, इस के लिए हमें वक़्त की क़ुरबानी देनी होगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ... تفسیر خازن، پ۴، آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۱۰، ۱/۲۸۹

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! उम्मते मुस्तफ़ा के मज़ीद फ़ज़ाइलो कमालात के बारे में सुनती हैं : चुनान्चे,

उम्मते महबूब के 6 फ़ज़ाइल

मश्हूर मुफ़स्सिर, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान कर्दा आयते मुबारका की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के बे शुमार फ़ज़ाइल हैं, यहां उन में से कुछ अ़र्ज़ किए जाते हैं : (1) येह उम्मत आख़िरे उमम है, गुज़श्ता उम्मतों के उ़यूब कुरआने करीम में बयान हुवे जिस से वोह सारी दुन्या में बदनाम हो गईं मगर इस उम्मत के बाद न कोई नया नबी आएगा, न कोई आसमानी किताब जिस में इस के उ़यूब बयान हों, ग़रज़ येह कि इस उम्मत की पर्दापोशी की गई । (2) पिछली कुतुब में इस उम्मत के औसाफ़ का ज़िक्र तो था, इन के उ़यूब का तज़किरा न था, जिस के बाइ़स वोह लोग इस उम्मत में होने की तमन्ना (Wish) करते थे । (3) जैसे रब्बे करीम ने दीगर अम्बियाए किराम (عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) को नाम ले कर पुकारा, हमारे हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्क़ाब से । इसी त़रह़ उन की उम्मतों को नसबी नामों से पुकारा गया : (یٰبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ، یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ هَادُوْا) वग़ैरा मगर इस उम्मत को (یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا) के दिलकश व प्यारे ख़िता़ब से नवाज़ा गया । (4) पिछली उम्मतें अपने नबियों के बाद सारी ही गुमराह हो जाती थीं मगर इस उम्मत में ता क़ियामत एक फ़िरक़ा (सवादे आज़म यानी अहले सुन्नत व जमाअ़त) ह़क़ पर रहेगा । (5) इस उम्मत में हमेशा औलियाउल्लाह व उ़लमाए रब्बानी होते रहेंगे, जिस दरख़्त की जड़ हरी रहे उस में फल फूल आते ही रेहते हैं । (6) येही उम्मत कल क़ियामत के दिन बारगाहे इलाही में गुज़श्ता नबियों की गवाही देगी कि ख़ुदाया ! इन्हों ने अपनी क़ौमों को तब्लीग़ की थी ।[1]

1...तफ़्सीरे नई़मी, पा. 4, आले इ़मरान, तह़तुल आयत : 110, 4 / 91

www.dawateislami.net

ऐ ख़ुदाए दो जहां एह़सान तेरा है बड़ा
तू ने पैदा उन की उम्मत में हमें फ़रमाया है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम स. 462)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मते सरकार को रब्बे करीम ने जिन ख़ुसूसिय्यात से नवाज़ा है उन में से एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि **अल्लाह** पाक ने इस उम्मत को ह़ाफ़िज़े की मज़बूती की अ़ज़ीमुश्शान नेमत अ़ता फ़रमाई है। चुनान्चे,

कम उ़म्री में इ़ल्म का ह़ुसूल

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुसैन बिन अ़ब्दुर्रहीम इ़राक़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस उम्मत की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि लोगों ने अपनी कम उ़म्री में जिन उ़लूम पर उबूर ह़ासिल किया, गुज़श्ता उम्मतें लम्बी उ़म्र मिलने के बा वुजूद ह़ासिल न कर सकीं, येही वज्ह है कि इतनी कम उ़म्री में इस उम्मत के मुज्तहिदीन पर उ़लूम व मआ़रिफ़ के ख़ज़ाने खुल गए।[1]

ह़िफ़्ज़ व याद दाश्त की सलाह़िय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** करीम ने इस उम्मत को ह़िफ़्ज़ व याद दाश्त की वोह सलाह़िय्यत अ़ता फ़रमाई है जो पिछली उम्मतों में से किसी को भी अ़ता नहीं की गई (ह़ैरत अंगेज़ ह़ाफ़िज़े की) **अल्लाह** पाक ने इस नेमत को सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के साथ ख़ास फ़रमाया और इस की बदौलत इस उम्मत की इ़ज़्ज़त अफ़्ज़ाई फ़रमाई।[2]

---

1 ...(شرح زرقانی علی المواهب، خصائص امته ... الخ، ۷/۴۷۸)
2 ...شرح زرقانی علی المواهب، خصائص امته ... الخ، ۷/۴۷۸

www.dawateislami.net

आइए ! हुसूले बरकत के लिए कुव्वते हाफ़िज़ा के अ़ज़ीम जौहर से मालामाल और उम्मते महबूब को फ़ैज़ाने हदीस से फ़ैज़याब फ़रमाने वाले एक आ़शिक़े रसूल बुज़ुर्ग के कुव्वते हाफ़िज़ा के बारे में सुनिए और झूमिए, चुनान्चे,

तीन लाख अहादीसे मुबारका

नासिरुल हदीस, अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीस हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की कुव्वते हाफ़िज़ा बयान करने के लिए येह बात ही काफ़ी है कि जिस किताब को वोह एक नज़र देख लेते थे, वोह उन्हें हिफ़्ज़ हो जाती थी । तहसीले इल्म के इब्तिदाई दौर में उन्हें सत्तर हज़ार अहादीस हिफ़्ज़ थीं और बाद में जा कर येह अ़दद तीन लाख तक पहुंच गया जिन में से एक लाख अहादीस सहीह और दो लाख ग़ैर सहीह थीं । एक मरतबा **"बल्ख़"** नामी शहर गए, तो वहां के लोगों ने फ़रमाइश की आप अपने शुयूख़ से एक एक रिवायत बयान करें, तो आप ने एक हज़ार शुयूख़ से एक हज़ार अहादीस ज़बानी बयान कर दीं ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उम्मते महबूब की ख़ुसूसिय्यात में से एक बेहतरीन ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि बरोज़े क़ियामत जब पिछली उम्मतें अपने नबियों को झुटलाएंगी, तो **अल्लाह** करीम उम्मते सरकार को येह शरफ़ अ़ता फ़रमाएगा कि उस दिन येह अम्बियाए किराम के हक़ में गवाही देगी । जैसा कि :

---

1 ... ارشاد الساری، ترجمۃ الامام بخاری، ۱/ ۵۹ ملتقطاً

www.dawateislami.net

नबियों के ह़क़ में उम्मते महबूब की गवाही

नबिय्ये करीम, महबूबे रब्बे अ़ज़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** करीम क़ियामत के दिन सब से पेहले ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام और उन की उम्मत को बुलाएगा और फ़रमाएगा : तुम ने नूह़ को क्या जवाब दिया था ? वोह कहेंगे : इन्हों ने न हमें कभी दावत दी, न तेरा कोई हुक्म पहुंचाया, न कभी नसीह़त की और न हमें किसी चीज़ का हुक्म दिया और न मन्अ़ किया । ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام अ़र्ज़ करेंगे : ऐ मेरे रब्बे करीम ! मैं ने इन्हें ऐसी दावत दी जो अव्वलीनो आख़िरीन सब को शामिल थी । **अल्लाह** करीम फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा : अह़मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم) और उन की उम्मत को बुलाओ, तो सुल्त़ाने मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم और आप (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत इस शान से ह़ाज़िर होंगे कि उन का नूर उन के आगे आगे होगा । ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत से कहेंगे : क्या आप जानते हैं कि मैं ने अपनी क़ौम को **अल्लाह** पाक का पैग़ाम पहुंचा दिया था और इन्हें समझाने की बहुत कोशिशें की थीं, इन्हें पोशीदा और अलानिया त़ौर पर दोज़ख़ से बचाने की कोशिशें कीं लेकिन फिर भी येह मेरी दावत से दूर भागते रहे । तो मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की उम्मत कहेंगे : हम गवाही देते हैं कि आप ने जो कुछ कहा है, वोह सब सच है । इस पर ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम कहेगी : ऐ अह़मद ! आप को और आप की उम्मत को इस का क्या इ़ल्म ? हम सब से पेहली उम्मत हैं जब कि आप और आप की उम्मत सब से आख़िर में तशरीफ़ लाए हैं । तो मक्की मदनी सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم सूरए नूह़ तिलावत

www.dawateislami.net

फ़रमाएंगे । जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم सूरत ख़त्म फ़रमाएंगे, तो आप की उम्मत कहेगी कि हम गवाही देते हैं कि येह सच्चा वाक़िआ़ है और **अल्लाह** पाक के सिवा कोई माबूद नहीं और बेशक **अल्लाह** पाक ही ग़ालिब हिक्मत वाला है ।[1]

येह सब अल्लाह की इ़नायत है
मिल गई मुस्त़फ़ा की उम्मत है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 684)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

त़ाऊ़न (प्लेग) इस उम्मत के लिए रह़मत है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! त़ाऊ़न एक जान लेवा वबाई बीमारी है जिस को डॉक्टर प्लेग (*Plague*) केहते हैं । इस बीमारी में आम की गुठली के बराबर गिल्टियां निकल आती हैं जिन में बे पनाह दर्द और ना क़ाबिले बरदाश्त सोज़िश होती है, शदीद बुख़ार चढ़ जाता है, आंखें सुर्ख़ हो कर दर्दनाक जलन से शोले की त़रह़ जलने लगती हैं, (बिल आख़िर) मरीज़ शिद्दते दर्द और शदीद बेचैनी व बे क़रारी में तड़प तड़प कर बहुत जल्द मर जाता है ।[2]

याद रहे ! त़ाऊ़न का येह तबाह कुन मरज़ पिछली उम्मतों के लिए अ़ज़ाब मुक़र्रर किया गया था मगर येह उम्मते महबूब की ख़ुसूसिय्यात में से है कि **अल्लाह** पाक ने अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में इसी मरज़ को मुसलमानों के लिए बाइ़से रह़मत बना दिया । चुनान्चे,

---

1... مستدرک، کتاب: تواریخ المتقدمین من الانبیاء والمرسلین، شہادۃ نبینا وامتہ...الخ، ۳/ ۴۱۴، حدیث: ۴۰۲۶

2...अ़जाइबुल क़ुरआन, स. 261

www.dawateislami.net

उम्मते मुहम्मदिय्या पर अल्लाह करीम का ख़ास फ़ज़्ल

बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे पाक में है : तमाम नबियों के सरदार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : त़ाऊ़न एक अ़ज़ाब था कि **अल्लाह** पाक जिस पर चाहता, उसे भेजता फिर **अल्लाह** करीम ने मोमिनीन के लिए इसे रह़मत बना दिया, तो जो शख़्स त़ाऊ़न फैलने के ज़माने में अपने शह़र में सब्र के साथ त़लबे सवाब के लिए इस एतिक़ाद के साथ ठेहरा रहे कि उसे वोही पहुंचेगा जो **अल्लाह** करीम ने उस के लिए लिख दिया है, तो उस के लिए शहीद की मिस्ल सवाब है।[1]

ह़ज़रते अ़ल्लामा गुलाम रसूल रज़वी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से वाज़ेह़ होता है कि इस उम्मते मुह़म्मदिय्या पर **अल्लाह** करीम की बहुत मेहरबानी है क्यूंकि जो बीमारी दूसरी उम्मतों के लिए अ़ज़ाब मुक़र्रर की गई है, वोह इस उम्मत के लिए **अल्लाह** पाक की रह़मत है। त़ाऊ़न बनी इसराईल के लिए अ़ज़ाब और इस उम्मत के लिए रह़मत है।[2] दूसरे मक़ाम पर फ़रमाया : इस उम्मत के मोमिनों के लिए त़ाऊ़न को रह़मत किया है, इस का रह़मत होना इस एतिबार से है कि येह शहीद के सवाब को शामिल है अगर्चे सूरत के एतिबार से सख़्त तक्लीफ़ देह है।[3]

سُبْحٰنَ الله ! **अल्लाह** करीम की रह़मत पर क़ुरबान कि उस ने मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के लिए त़ाऊ़न को पिछली उम्मतों के लिए बत़ौरे अ़ज़ाब मुक़र्रर था, उसे इस उम्मत के लिए रह़मत बना दिया, जिस से येह अन्दाज़ा लगाना ज़रा भी मुश्किल नहीं कि **अल्लाह** पाक अपने प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल

1...بخاری، کتاب الطب، باب اجر الصابر فی الطاعون، ۴/۳۰حدیث: ۵۷۳۴

2...تفہیم البخاری، ۵/۳۵۵

3...تفہیم البخاری، ۸/۸۰۰

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की उम्मत से कितनी महब्बत फ़रमाता है। ज़रा सोचिए ! गुनाहों के इर्तिकाब के सबब अगर इस उम्मत के लिए भी ताऊन को अज़ाब बना दिया जाता, तो किस क़दर ज़िल्लतो रुस्वाई होती। लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानियों से बचें और ख़ूब ख़ूब नेकियां बजा लाएं और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शबे क़द्र वोह अज़ीमुश्शान रात है जिस की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत को मुसलमान का बच्चा बच्चा जानता है क्यूंकि इस रात में क़ुरआने करीम उतारा गया, येह रात हज़ार महीनों से अफ़्ज़ल है, इस रात की फ़ज़ीलत में क़ुरआने करीम के तीसवें पारे में एक मुकम्मल (Complete) सूरत भी मौजूद है, इस के इलावा इस रात के और भी बहुत से फ़ज़ाइलो बरकात किताबों में मौजूद हैं। याद रहे ! इस उम्मत से पेहले भी कई उम्मतें आईं मगर किसी को भी येह अज़ीमुश्शान नेमत नहीं मिली मगर रब्बे करीम ने तमाम नबियों के सरदार, मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत को येह शरफ़ बख़्शा कि इसे शबे क़द्र जैसी अज़ीमुश्शान और मुबारक रात का तोहफ़ा अता फ़रमाया। चुनान्चे,

शबे क़द्र अता की गई

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास बनी इसराईल के एक शख़्स का तज़किरा हुवा जिस ने एक हज़ार माह **अल्लाह** करीम की राह में लड़ाई की। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को इस से बहुत तअज्जुब हुवा और तमन्ना करने लगे : काश ! उन के लिए भी ऐसा मुमकिन होता। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** करीम की बारगाह में अर्ज़ की : ऐ मेरे रब्बे

www.dawateislami.net

करीम ! तू ने मेरी उम्मत को कम उ़म्र अ़ता फ़रमाई, अब इन के आमाल भी कम होंगे । तो **अल्लाह** करीम ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शबे क़द्र अ़ता फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है जो मैं ने तुझे और तेरी उम्मत को हर साल अ़ता फ़रमाई है । येह रात माहे रमज़ान में तुम्हारे लिए और क़ियामत तक आने वाले तुम्हारे उम्मतियों के लिए है जो हज़ार महीनों से बेहतर है ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ الله ! सुना आप ने ! हमारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत पर किस क़दर मेहरबान हैं कि जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने बनी इसराईल के एक शख़्स का क़िस्सा बयान हुवा, तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़मे उम्मत में बे क़रार हो गए और इसी बे क़रारी के आ़लम में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बारगाहे इलाही में ग़मे उम्मत का इज़्हार किया, तो **अल्लाह** पाक ने रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी उम्मत को शबे क़द्र जैसी मुबारक नेमत से सरफ़राज़ फ़रमाया । याद रहे ! ग़मे उम्मत का येह पेहला वाक़िआ़ नहीं, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी उम्मत से इतनी मह़ब्बत है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कई मवाक़ेअ़ पर गुनाहगार उम्मत को याद फ़रमाया । चुनान्चे,

दुन्या में जल्वा अफ़रोज़ होते ही आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सजदा फ़रमाया और होंटों पर येह दुआ़ जारी थी : ''رَبِّ هَبْ لِيْ اُمَّتِيْ'' यानी परवर दगार ! मेरी उम्मत मेरे ह़वाले फ़रमा ।[2]

1...الروض الفائق، ص۴۹

2...फ़तावा रज़विय्या, 30 / 712

www.dawateislami.net

इमाम ज़ुरक़ानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : उस वक़्त आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم उंगलियों को इस त़रह़ उठाए हुवे थे जैसे कोई गिर्या व ज़ारी करने वाला उठाता है ।[1]

रब्बे हबली उम्मती केहते हुवे पैदा हुवे
ह़क़ ने फ़रमाया कि बख़्शा الصَّلٰوةُ والسَّلام

(क़बाइले बख़्शिश, स. 94)

इसी त़रह़ रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़रे मेराज पर रवानगी के वक़्त गुनाहगार उम्मत को याद फ़रमा कर आबदीदा हो गए, दीदारे जमाले ख़ुदा वन्दी और ख़ुसूसी नवाज़िशात के वक़्त भी गुनहगार उम्मत को याद फ़रमाया ।[2] उ़म्र भर (वक़्तन फ़ वक़्तन) गुनहगार उम्मत के लिए ग़मगीन रहे ।[3] जब क़ब्र शरीफ़ में उतारा, लबे जां बख़्शा को जुम्बिश थी । बाज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने कान लगा कर सुना, आहिस्ता आहिस्ता **उम्मती** (मेरी उम्मत) फ़रमाते थे । क़ियामत में भी इन्ही के दामन में पनाह मिलेगी, तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ''نَفْسِی نَفْسِی اِذْهَبُوْا اِلٰی غَيْرِی'' (यानी आज मुझे अपनी फ़िक्र है, किसी और के पास चले जाओ) कहेंगे । और इस ग़मख़्वारे उम्मत के लब पर ''يَارَبِّ اُمَّتِی اُمَّتِیْ'' (ऐ रब ! मेरी उम्मत को बख़्श दे) का शोर होगा ।[4]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने रह़मते कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم गुनाहगार उम्मत से कितनी मह़ब्बतो उल्फ़त

1...زرقانی علی المواہب، ولادتہ و عجائب وما رات ۔۔۔ الخ، ۱/ ۲۱۱

2...بخاری، کتاب التوحید، باب قولہ تعالی (وکلم اللہ موسی تکلیما)، ۴/ ۵۸۱، حدیث: ۷۵۱۷ مفہوماً

3...مسلم، باب دعاء النبی لامتہ، ۔۔۔ الخ، ص ۱۰۹، حدیث: ۲۰۲ مفہوماً

4...مسلم، باب أدنی أهل الجنّة منزلة فیها، ص ۱۰۵، ۱۰۶، حدیث: ۱۹۴ مفهوما

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं और आप को अपनी उम्मत का कितना ख़याल रहा। जब कि दूसरी जानिब अगर हम इस उम्मत के ह़ाले ज़ार का जाइज़ा लें, तो येह दिल ख़राश ह़क़ीक़त (Reality) सामने आएगी कि उम्मते मुस्लिमा की अक्सरिय्यत अब अपने उस मोह़सीन व मेहरबान आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एह़सानात और फ़रामीन को भुला कर फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी से ग़ाफ़िल हो कर नफ़्सो शैत़ान की पैरवी में मश्ग़ूल है, क़ुरआने करीम के इरशादात को भुला बैठी है, इल्म की अहम्मिय्यत समझने से मह़रूम दिखाई देती है, अपने बुज़ुर्गों की तालीमात को बिल्कुल फ़रामोश कर चुकी है, सुन्नतों से मुंह मोड़ कर फ़ैशन परस्ती की दलदल में धंसती जा रही है, ह़ुक़ूक़ुल्लाह व ह़ुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी की अहम्मिय्यत से ग़ाफ़िल हो चुकी है, क़त़्ए रेह़्मी की आफ़त में मुब्तला है जब कि झूट, ग़ीबत, ह़सद, तकब्बुर, वादा ख़िलाफ़ी, ज़ुल्म, ऐ़बजूई, वालिदैन की ना फ़रमानी, बे ह़याई और बे पर्दगी जैसी कई तबाह कुन बुराइयों का शिकार है। ह़ालांकि हमें तो ज़ियादा से ज़ियादा अपने करीम आक़ा के फ़रामीन पर अ़मल करना चाहिए। उन की पैरवी करनी चाहिए। ऐ काश कि हमें अ़मल की तौफ़ीक़ मिल जाए। आमीन

वोही उम्मत ख़ताओं में पड़ी है रात में जिन के
लिए रोया किए मानिन्दे शबनम या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 339)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सफ़रुल मुज़फ़्फ़र का मुबारक महीना हमारे दरमियान अपनी बरकतें लुटा रहा है। 17 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1398 हि. उम्मे अ़त्तार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا का यौम है, तो आइए ! इसी मुनासबत से उम्मे अ़त्तार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا का मुख़्तसर तआ़रूफ़ सुनती हैं।

www.dawateislami.net

उम्मे अत्ता२ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا का ज़िक्रे ख़ैर

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की वालिदए माजिदा एक नेक, सालिह़ा और परेहज़गार ख़ातून थीं। शौहर की वफ़ात के बा वुजूद सख़्त तरीन मआ़शी आज़माइशों में भी अपने बच्चों की इस्लामी ख़ुतूत पर मदनी तरबियत की, जिस का मुंह बोलता सुबूत ख़ुद अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते बा बरकत है। अमीरे अहले सुन्नत ने एक बार बताया के اَلْحَمْدُ لِلّٰه वालिदए मोह़तरमा का शुरूअ़ ही से फ़राइज़ो वाजिबात पर अ़मल करने और करवाने का इस क़दर ज़ेहन था के छोटी उ़म्र ही से हम बहन भाइयों को नमाज़ों की तल्क़ीन फ़रमाने के साथ सख़्ती से अ़मल भी करवातीं, बिल ख़ुसूस नमाज़े फ़ज्र के लिए हम सब को लाज़िमी उठातीं। वालिदए माजिदा की इस त़रह़ तल्क़ीन व मदनी तरबियत की बरकत से मुझे याद नहीं पड़ता कि मेरी बचपन में भी कभी नमाज़े फ़ज्र छूटी हो।

शैख़े त़रीकत, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फरमाते हैं : वालिदए मोह़तरमा का शबे जुम्आ़ (जुमेरात और जुम्आ़ की दरमियानी रात) को मीठादर (कराची) के अलाके में इन्तिक़ाल हुवा। मौत के वक़्त मुझे बहुत याद कर रही थीं, हमशीरा ने बताया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه कलिमए त़य्यिबा और इस्तिग़फ़ार पढ़ने के बाद ज़बान बन्द हुई। बिल ख़ुसूस ग़ुस्ल देने के बाद चेहरा निहायत ही रौशन हो गया था। जिस ह़िस्सए ज़मीन पर रूह़ क़ब्ज़ हुई, उस से कई रोज़ तक ख़ुश्बू आती रही और ख़ुसूसन रात के जिस ह़िस्से में इन्तिक़ाल हुवा था, उस में त़रह़ त़रह़ की ख़ुश्बूएं आती रहीं। सोइम वाले दिन सुब्ह़ के वक़्त चन्द गुलाब के फूल ला कर रखे थे जो शाम तक तक़रीबन तरोताज़ा रहे जो मैं ने अपने हाथ से वालिदा की क़ब्र

www.dawateislami.net

पर चढ़ाए । यक़ीन जानें उन में ऐसी अ़जीब भीनी भीनी ख़ुश्बू थी की मैं हैरान रेह गया, कभी गुलाब के फूलों में मैं ने ऐसी ख़ुश्बू नहीं सूंघी थी न अभी तक सूंघी है बल्कि घन्टों तक वोह ख़ुश्बू मेरे हाथों से भी आती रही ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत, चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं । सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।[2]

लिबास पेहनने की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले 163 मदनी फूल से लिबास पेहनने की सुन्नतें और आदाब सुनती हैं : पेहले दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए :

(1) जिन्न की आंखों और लोगों के सत्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे तो बिस्मिल्लाह केह ले ।[3] ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की

1... तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत (क़िस्त 2) स. 41

2... مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵

3... مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵

www.dawateislami.net

निगाह के लिए आड़ बनते हैं ऐसे ही येह (**अल्लाह** पाक का ज़िक्र जिन्नात) की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात इस (यानी शर्मगाह) को देख न सकेंगे[1] ❖ जो कपड़ा पेहने और येह पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ

तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे[2] ❖ जो बा वुजूदे क़ुदरत ज़ेबो ज़ीनत का लिबास पेहनना तवाज़ोअ़ (यानी आ़जिज़ी) के त़ौर पर छोड़ दे, **अल्लाह** पाक उस को करामत का हुल्ला पेहनाएगा ।[3] ❖ लिबास ह़लाल कमाई से हो और जो लिबास ह़राम कमाई से ह़ासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज़ व नफ़्ल कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती । ❖ पेहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिए (कि सुन्नत है) मसलन जब कुर्ता पेहनें तो पेहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल कीजिए फिर उल्टा हाथ उल्टी आस्तीन में ❖ इसी त़रह़ पाजामा पेहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाख़िल कीजिए और जब (कुर्ता या पाजामा) उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स (उलट) कीजिये यानी उल्टी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिए । ❖ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना ही लिबास पेहने । छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिह़ाज़ रखिए । ❖ तकब्बुर के त़ौर पर जो लिबास हो वोह मम्नूअ़ है । तकब्बुर है या नहीं इस की शनाख़्त यूं करे कि इन कपड़ों के पेहनने से पेहले अपनी जो ह़ालत थी अगर पेहनने के बाद भी वोही ह़ालत है, तो मालूम हुवा कि इन कपड़ों से तकब्बुर पैदा नहीं हुवा । अगर वोह ह़ालत अब बाक़ी नहीं रही तो तकब्बुर आ गया । लिहाज़ा ऐसे कपड़े से बचे कि तकब्बुर बहुत बुरी सिफ़त है ।[4]

1...मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 268

2...شعب الایمان، باب الملابس والاوانی، ۵/۱۸۱، حدیث: ۶۲۸۵

3...ابوداؤد، کتاب الادب، باب من کظم غیظا، ۴/۳۲۶، حدیث: ۴۷۷۸

4...ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، مطلب فی اللبس، ۹/۵۷۹، बहारे शरीअ़त, 3 / 409, ह़िस्सा : 16

www.dawateislami.net

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **"बहारे शरीअ़त"** हिस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) और 120 सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले **"101 मदनी फूल"** और **"163 मदनी फूल"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिए और पढ़िए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान : 10 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** करीम के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** पाक के अ़र्श के साए में होंगे। (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे। (2) मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) और मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला।[1]

शाफ़ेए रोज़े जज़ा तुम पे करोड़ों दुरूद
दाफ़ेए जुम्ला बला तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 264)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1... الدر السافرة للسيوطي، ص ۱۳۱، حديث: ۳۶۶

2... معجم كبير، ۶/۱۸۵، حديث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज का हमारा बयान आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तसव्वुफ़ के वाक़िआ़त पर मुश्तमिल होगा। सब से पेहले आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बैअ़त व ख़िलाफ़त का एक दिलचस्प वाक़िआ़, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुख़्तसर तआ़रुफ़ (Introduction) और आप की सीरत की चन्द झल्कियां बयान होंगी। आला ह़ज़रत को नमाज़ से कैसी महब्बत थी, आप तवक्कुल व क़नाअ़त में किस क़दर बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ थे, इस तअ़ल्लुक़ से आप की सीरत के कुछ

www.dawateislami.net

वाक़िआ़त भी हम सुनेंगी। **अल्लाह** करे कि हम दिलजमई के साथ अव्वल ता आख़िर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल करें।

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बैअ़त व ख़िलाफ़त

दावते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना के रिसाले **"पीर पर एतिराज़ मन्अ़ है"** के सफ़ह़ा नम्बर 47 पर है : आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इक्कीस साल की उ़म्र में अपने वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ ह़ज़रते सय्यिद शाह आले रसूल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और सिलसिलए आ़लिया क़ादिरिय्या में उन से बैअ़त की। इन के मुर्शिद ने (आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को मुरीद बनाने के साथ साथ) तमाम सिलसिलों की इजाज़तो ख़िलाफ़त के साथ सनदे ह़दीस भी अ़ता फ़रमाई, ह़ालांकि ह़ज़रते शाह आले रसूल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़िलाफ़तो इजाज़त के मुआ़मले में बड़े मोह़तात़ थे मगर जब आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को मुरीद होते ही तमाम सिलसिलों की इजाज़त मिली, तो ख़ानक़ाह के एक ख़ादिम से रहा न गया। अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप के ख़ानदान में तो ख़िलाफ़त बड़ी रियाज़त और मुजाहदे के बाद दी जाती है, इन को आप ने फ़ौरन ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमा दी। ह़ज़रते शाह आले रसूल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस शख़्स से इरशाद फ़रमाया : लोग गन्दे दिल और नफ़्स ले कर आते हैं, उन की सफ़ाई पर ख़ासा वक़्त लगता है मगर येह पाकीज़ा नफ़्स के साथ आए थे, सिर्फ़ निस्बत की ज़रूरत थी, वोह हम ने अ़ता कर दी। फिर ह़ाज़िरीन (Audience) से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया : मुझे मुद्दत से एक फ़िक्र परेशान किए हुवे थी, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! वोह आज दूर हो गई। क़ियामत में जब **अल्लाह** पाक पूछेगा कि आले रसूल ! हमारे लिए क्या लाया है ? तो मैं अपने मुरीद **अह़मद रज़ा** ख़ान को पेश

www.dawateislami.net

कर दूंगा । फिर आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ ने आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ को वोह तमाम आमाल व अश्ग़ाल अ़ता फ़रमा दिए जो ख़ानवादए बरकातिया में सीना दर सीना चले आ रहे हैं ।

जो है **अल्लाह** का वली बेशक आ़शिक़े सादिक़े नबी बेशक
ग़ौसे आज़म का जो है मतवाला वाह क्या बात आला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 576)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! हमारे आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ तसव्वुफ़ के कैसे बुलन्द मराबित पर पहुंचे हुवे थे, ह़ालांकि 21 साल की भरी जवानी में तो उम्मीदें जवान होती हैं, ख़्वाहिशात का हुजूम होता है, दुन्यवी ऐ़श व लज़्ज़त से लुत़्फ़ अन्दोज़ होने की तमन्ना होती है, नफ़्सो शैत़ान पूरी त़ाक़त से इन्सान को फ़िक्रे आख़िरत और नेक आमाल से ग़ाफ़िल कर के उस की क़ब्रो आख़िरत को तबाह करने की कोशिश में होते हैं, इन्सान पर मालो दौलत जम्अ़ करने और बैंक बैलेन्स बढ़ाने का जुनून सुवार रेहता है, अल ग़रज़ ! इस उ़म्र में इन्सान उ़मूमन **अल्लाह** पाक की याद से ग़ाफ़िल हो ही जाता है लेकिन क़ुरबान जाइए आला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ पर ! जिन्हों ने जवानी की नेमत की क़द्र करते हुवे इन तमाम बुराइयों से अपने दामन को पाको साफ़ रखा, बचपन से ही ज़ोह्दो तक़्वा को इख़्तियार किया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी । इसी लिए जब आप अपना रौशन सीना ले कर ह़ज़रते शाह आले रसूल رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ की बारगाहे मुक़द्दसा में ह़ाज़िर हुवे, तो उन्हों ने अपने नूरे फ़िरासत से आप के बात़िन को मुलाह़ज़ा फ़रमा लिया और हाथों हाथ आप को इजाज़तो ख़िलाफ़त और सनदे ह़दीस अ़ता फ़रमा दी । इन तमाम इन्आ़मो इकराम से नवाज़ने के बाद आप के पीरो मुर्शिद ने अपने इस मुरीदे कामिल की शानो

www.dawateislami.net

अ़ज़मत को यूं उजागर फ़रमाया कि क़ियामत में जब **अल्लाह** पाक पूछेगा कि आले रसूल ! हमारे लिए क्या लाया है ? तो मैं अपने मुरीद **''अह़मद रज़ा ख़ान''** को पेश कर दूंगा ।

बयान कर्दा ह़िकायत से येह मदनी फूल भी मिला कि अगर पीर अपने किसी मुरीद को नवाज़े, तो इस अ़त़ा पर उस से हरगिज़ कोई ह़सद न करे, वरना इस का नुक़्सान ख़ुद ह़सद करने वाले को उठाना पड़ेगा । जैसा कि ह़ज़रते इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शारानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं कि मुरीद पर लाज़िम है कि जब उस का मुर्शिद उस के पीर भाइयों में से किसी एक को उस से आगे बढ़ा दे (या कोई मन्सब अ़त़ा करे), तो वोह अपने मुर्शिद के अदब की वज्ह से अपने उस पीर भाई की ख़िदमत (और इत़ाअ़त) करे और ह़सद हरगिज़ न करे, वरना उस के जमे हुवे पाउं (भी) फिसल जाएंगे और उसे बड़ा नुक़्सान पेश आएगा लेकिन अगर कोई मुरीद अपने पीर भाइयों से आगे बढ़ना चाहे, तो उसे चाहिए कि वोह अपने मुर्शिद की ख़ूब इत़ाअ़त करे और अपने आप को ऐसी सिफ़ात से आरास्ता कर ले जिन के ज़रीए वोह आगे बढ़ जाने का मुस्तह़िक़ हो जाए और उस वक़्त मुर्शिद भी उसे उसी पीर भाई की त़रह़ दूसरे पीर भाइयों से आगे बढ़ा देगा क्यूंकि मुर्शिद तो मुरीदों का ह़ाकिम और उन के दरमियान अ़द्ल करने वाला होता है और बहुत कम है कि कोई मुरीद इस मरज़ से बच जाए ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! अब आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुख़्तसर तआ़रुफ़ और आप की सीरत की चन्द झल्कियां मुलाह़ज़ा कीजिए । चुनान्चे,

---

1...الانوار القدسیہ، الجزء الثانی، ص ۲۹

www.dawateislami.net

तआ़रुफ़े आला ह़ज़रत और सीरते रज़ा की चन्द झलकियां

❖ आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत बरेली शरीफ़ में 10 शव्वालुल मुकर्रम सिने 1272 हि., बरोज़ ह़फ़्ता, ब वक़्ते ज़ोह़र, मुत़ाबिक़ 14 जून सिने 1856 ई. को हुई।[1] ❖ आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ानदानी लिह़ाज़ से **"पठान"**, मस्लक के लिह़ाज़ से **"ह़नफ़ी"** और त़रीक़त के लिह़ाज़ से **"क़ादिरी"** थे। ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे माजिद, मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और दादा, मुफ़्ती रज़ा अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हैं।[2] ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का पैदाइशी नाम **"मुह़म्मद"** है। ❖ वालिदए माजिदा **"अम्मन मियां"** पुकारती थीं। ❖ वालिदे माजिद व दीगर रिश्तेदारों ने **"अह़मद मियां"** और दादा ने **"अह़मद रज़ा"** नाम रखा। ❖ तारीख़ी नाम **"अल मुख़्तार"** था। ❖ आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने नाम से पेहले **"अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा"** लिखा करते थे।[3] ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बचपन ही से निहायत ज़हीन और सन्जीदा त़बीअ़त के मालिक थे। ❖ छे साल की नन्ही सी उ़म्र में आप ने मीलादुन्नबी के एक मजमअ़ में फ़सीह़ अ़रबी ज़बान में ख़ित़ाब फ़रमा कर लोगों को ह़ैरान कर दिया।[4] ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه क़हक़हा नहीं लगाते थे। ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जमाही आने पर उंगली दांतों में दबा लेते और कोई आवाज़ पैदा न होती। ❖ सम्ते क़िब्ला के अदब की वज्ह से कुल्ली करते वक़्त बायां हाथ दाढ़ी शरीफ़ पर रख कर सर झुका कर पानी मुंह से गिराते। ❖ क़िब्ले की त़रफ़ रुख़ कर के कभी न थूकते। ❖ न ही क़िब्ले की त़रफ़ पाए मुबारक दराज़

1...ह़याते आला ह़ज़रत, 1 / 71, तस्हीलन

2...फ़ाज़िले बरेलवी उ़लमाए ह़िजाज़ की नज़र में, स. 67, बि तग़य्युरिन क़लील

3...तजल्लियाते इमाम अह़मद रज़ा, स. 21, बि तग़य्युरिन क़लील

4...फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 85

www.dawateislami.net

करते । ❖ नमाज़े पंजगाना मस्जिद में बा जमाअ़त अदा करते । ❖ फ़र्ज़ नमाज़ बा इ़मामा पढ़ा करते । ❖ मिस्वाक किया करते और सर मुबारक में तेल भी डलवाते । ❖ आप का ज़ाहिरो बातिन एक था, जो कुछ आप के दिल में होता वोही ज़बान से अदा फ़रमाते और जो कुछ ज़बान से फ़रमाते, उस पर आप का अ़मल होता । ❖ जब किसी सुन्नी आ़लिम से मुलाक़ात होती, देख कर बाग़ बाग़ हो जाते और उस की ऐसी इ़ज़्ज़त व क़द्र करते जिस के लाइक़ वोह अपने को न समझता । ❖ आप के दरवाज़े से कोई साइल ख़ाली वापस न जाता । ❖ कुतुबे अह़ादीस पर दूसरी किताब न रखते । ❖ मजलिसे मीलाद शरीफ़ में ज़िक्रे विलादत शरीफ़ के वक़्त सलातो सलाम पढ़ने के लिए खड़े होते, बाक़ी शुरूअ़ से आख़िर तक अदबन दो ज़ानू बैठे रेहते ।[1] ❖ किसी भी चीज़ के लेने देने में सीधा हाथ ही इस्तिमाल फ़रमाते, अगर कभी लेने वाले ने अपना उल्टा हाथ आगे बढ़ा दिया, तो आप अपना हाथ रोक लेते और फ़रमाते कि सीधे हाथ में लीजिए कि उल्टे हाथ में शैत़ान लेता है ।[2] ❖ आप का विसाल 25 सफ़र 1340 हि., 18 अक्तूबर 1921 में हुवा ।[3] ❖ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मसाजिद का बहुत अदब करते । ❖ मस्जिद में दाख़िल होते हुवे हमेशा दायां क़दम पेहले दाख़िल फ़रमाते । ❖ जबकि बाहर आते हुवे पेहले बायां क़दम जूते के बालाई हिस्से पर रखते फिर सीधे पाउं में जूता पेहन कर उल्टे पाउं में जूता पेहनते (ताकि सुन्नत के मुत़ाबिक़ अ़मल हो जाए) । ❖ एक रोज़ नमाज़े फ़ज्र अदा करने के लिए ख़िलाफ़े मामूल आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को थोड़ी देर हो गई, नमाज़ियों की निगाहें बार बार घर की त़रफ़ जा रही थीं कि ऐन इन्तिज़ार में जल्दी जल्दी तशरीफ़ लाए, इस जल्दी की कैफ़िय्यत में इत्तिबाए़ सुन्नत का आ़लम येह था कि दरवाज़ए़ मस्जिद के ज़ीने पर जिस

1...फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 112, 113, मुल्तक़त़न

2...फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 109

3...फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 631

www.dawateislami.net

वक़्त उन का क़दम पहुंचा, तो सीधा। मस्जिद के नए फ़र्श और पुराने फ़र्श पर क़दम पहुंचा, तो सीधा। आगे सेह़ने मस्जिद में एक सफ़ बिछी थी, उस पर क़दम पहुंचा, तो सीधा और इसी पर बस नहीं, हर सफ़ पर पेहले सीधा ही क़दम रखा, यहां तक कि मेह़राब में मुसल्ले पर भी सीधा क़दम ही पहुंचाया।[1] अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **"वसाइले बख़्शिश"** में तह़रीर फ़रमाते हैं :

उस की हस्ती में था अ़मले जौहर — सुन्नते मुस्त़फ़ा का वोह पैकर
आ़लिमे दीन, साह़िबे तक़्वा — वाह क्या बात आला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 575)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तसव्वुफ़ किस चीज़ का नाम है ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه शरीअ़त के बहुत बड़े मुफ़्ती और तसव्वुफ़ व त़रीक़त के वलिय्ये कामिल थे। यहां येह बात याद रखिए ! तसव्वुफ़ इत्तिबाए़ शरीअ़त का नाम है, तसव्वुफ़ गुनाहों से बचने का नाम है, तसव्वुफ़ सुन्नतों पर अ़मल पैरा होने का नाम है, तसव्वुफ़ रिज़ाए इलाही वाले काम करने का नाम है, तसव्वुफ़ ह़ुक़ूक़ुल्लाह की पासदारी का नाम है, तसव्वुफ़ ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद की पाबन्दी का नाम है, तसव्वुफ़ दीन पर अ़मल का नाम है, तसव्वुफ़ नमाज़ों के साथ साथ इश्राक़ व चाश्त और तहज्जुद की भी पाबन्दी का नाम है, तसव्वुफ़ फ़र्ज़ों वाजिब और मुस्तह़ब को अपनाने का नाम है, तसव्वुफ़ मुसलमानों की परेशानियों को ह़ल करने का नाम है, तसव्वुफ़ ह़ुस्ने अख़्लाक़ का नाम है, तसव्वुफ़ मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का नाम है, तसव्वुफ़ दूसरों की

1...फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 120, बि तग़य्युरिन

www.dawateislami.net

ख़िदमत करने का नाम है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हमारे आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नाम के नहीं बल्कि ह़क़ीक़ी सूफ़ी थे और तसव्वुफ़ की अ़लामात आप की ज़ाते पाक में पूरे तौ़र पर पाई जाती थीं और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा आप के सीने में कूट कूट कर भरा हुवा था। आइए ! इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनिए और उस से दर्स ह़ासिल कीजिए। चुनान्चे,

इ़यादत के लिए शह्र से बाहर गए

एक मरतबा शेरपुर, ज़िल्अ़ पीलीभीत के दो साह़िबान जो आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बड़े अ़क़ीदतमन्द थे, उन के रिश्तेदारों में कोई औ़रत बीमार हुई, तो शेरपुर से कुछ लोग आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को लेने के लिए आए और साथ चलने के लिए बेह़द इसरार किया, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उन के साथ चलने का वादा फ़रमा लिया। स्टेशन पर बहुत से लोग इस्तिक़्बाल के लिए मौजूद थे, आप को बड़ी शानो शौकत के साथ ले गए। जैसे ही आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वहां पहुंचे, एक साह़िब तशरीफ़ लाए और अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर ! आप शायद रेल (Train) पर सुवार हुवे हों(गे) कि मरीज़ा को शिफ़ा होनी शुरूअ़ हो गई, अब हुज़ूर के क़दमे मुबारक आ गए हैं, तो बिल्कुल सेह़तयाब हो जाएगी, اِنْ شَآءَ الله। आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दो दिन क़ियाम फ़रमाया, **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से मरीज़ा अच्छी हो गई, उन लोगों ने बड़ी ताज़ीम के साथ आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को रुख़्सत किया।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा वाक़िए से मालूम हुवा ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक बा करामत वली थे और येह भी मालूम होता है कि आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दिन रात ख़िदमते दीन में

1...फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 183, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

मश्ग़ूल रेहने के बा वुजूद लोगों की दिलजूई में भी पेश पेश रहा करते । आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब भी किसी से वादा करते, तो उसे ज़रूर पूरा फ़रमाते थे, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मरीज़ों की इयादत कर के सुन्नत पर अ़मल किया करते थे । अब हम अपना एह़तिसाब करें कि क्या ख़िदमते दीन का ऐसा जज़्बा हमारे अन्दर भी मौजूद है ? क्या हमारे सीने भी दूसरी इस्लामी बहनों की दिलजूई के जज़्बे से सरशार हैं ? क्या हम भी वादे की पाबन्दी करती हैं ? क्या हमें भी दूसरी इस्लामी बहनों की इयादत करने की सआ़दत मिलती है ? अगर नहीं ! तो आइए ! निय्यत कीजिए कि आला ह़ज़रत के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे दीने इस्लाम की ख़ूब ख़ूब ख़िदमत करेंगी, दूसरी इस्लामी बहनों की दिलजूई में पेश पेश रहेंगी, बिला वज्हे शरई कभी भी किसी का दिल नहीं दुखाएंगी, जाइज़ वादा करेंगी, तो उसे ज़रूर निभाएंगी, मरीज़ों (*Patients*) की इयादत वाली सुन्नत पर अ़मल की भरपूर कोशिश करेंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बनावटी सूफ़ी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! फ़ी ज़माना तसव्वुफ़ को एक अ़जीब रंग दे दिया गया है, शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ियों और फ़िस्क़ो फ़ुजूर में मुब्तला लोग तसव्वुफ़ और त़रीक़त की आड़ ले कर अ़वाम को बे वुक़ूफ़ बना रहे हैं । याद रखिए ! तसव्वुफ़ शरीअ़त की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करने, नमाज़ें छोड़ने का नाम नहीं, तसव्वुफ़ मुनश्शियात के नशे में डूब कर **त़रीक़त** ! **त़रीक़त** ! की रट लगाने, बालों के बढ़ाने और रंग बिरंगे कपड़े पेहनने का नाम नहीं ।

शरीअ़त और त़रीक़त का बाहमी तअ़ल्लुक़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से येह सुवाल हुवा कि बाज़ लोग अपने आप को मजज़ूब या फ़क़ीर का नाम दे कर

www.dawateislami.net

ख़िलाफ़े शरीअ़त कामों को مَعَاذَاللہ अपने लिए जाइज़ क़रार देते हुवे केहते हैं कि "येह त़रीक़त का मुआ़मला है, येह तो फ़क़ीरी लाइन है, हर एक को समझ में नहीं आ सकती।" फिर अगर उन से नमाज़ पढ़ने को कहा जाए, तो مَعَاذَاللہ केहते हैं कि "येह ज़ाहिरी शरीअ़त, ज़ाहिरी लोगों के लिए है, हम बात़िनी अजसाम के साथ ख़ानए काबा या मदीने में नमाज़ पढ़ते हैं" वग़ैरा वग़ैरा। ऐसों के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं ? इस सुवाल के जवाब में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया : शरीअ़त छोड़ कर ख़िलाफ़े शरअ़ कामों को त़रीक़त या फ़क़ीरी लाइन क़रार देना या त़रीक़त को शरीअ़त से जुदा ख़याल करना गुमराही है। मेरे आक़ा आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه शरीअ़त और त़रीक़त के बाहमी तअ़ल्लुक़ को यूं बयान फ़रमाते हैं : शरीअ़त मम्बअ़ है और त़रीक़त उस में से निकला हुवा एक दरया है। उ़मूमन किसी मम्बअ़ यानी पानी निकलने की जगह से अगर दरया बेहता हो, तो उसे ज़मीनों को सेराब करने में मम्बअ़ की ह़ाजत नहीं होती लेकिन शरीअ़त वोह मम्बअ़ है कि इस से निकले हुवे दरया यानी त़रीक़त को हर आन इस की ह़ाजत है कि अगर शरीअ़त के मम्बअ़ से त़रीक़त के दरया का तअ़ल्लुक़ टूट जाए, तो सिर्फ़ येही नहीं कि आइन्दा के लिए उस में पानी नहीं आएगा बल्कि येह तअ़ल्लुक़ टूटते ही दरयाए त़रीक़त फ़ौरन फ़ना हो जाएगा।[1]

ज़ाहिरी और बात़िनी शरीअ़त की ह़क़ीक़त

सदरुश्शरीआ़, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : त़रीक़त मुनाफ़िए शरीअ़त (यानी शरीअ़त के ख़िलाफ़) नहीं, वोह शरीअ़त ही का बात़िनी ह़िस्सा है, बाज़ जाहिल मुतसव्विफ़ जो येह केह दिया करते हैं कि त़रीक़त और है, शरीअ़त

1...फ़तावा रज़विय्या, 21 / 525, तस्ह़ीलन, फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा, क़िस्त़ : 10, वलिय्युल्लाह की पेहचान, स. 21

www.dawateislami.net

और, महूज़ गुमराही है और इस ज़ोमे बात़िल (ग़लत़ ख़याल) के बाइस अपने आप को शरीअ़त से आज़ाद समझना सरीह़ कुफ़्र व इल्ह़ाद (कुफ़्र व बे दीनी है), अह़कामे शरइ़य्या की पाबन्दी से कोई वली कैसा ही अ़ज़ीम हो, सुबुकदोश नहीं हो सकता। बाज़ जोह्हाल जो येह बक देते हैं कि शरीअ़त रास्ता है, रास्ते की ह़ाजत उन को जो मक़्सूद तक न पहुंचे हों, हम तो पहुंच गए। सय्यिदुत्ताइफ़ा, ह़ज़रते जुनैद बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उन्हें फ़रमाया : صَدَقُوْا لَقَدْ وَصَلُوْا، وَلٰكِنْ اِلٰى اَيْنَ؟ اِلَى النَّارِ वोह सच केहते हैं ! बेशक पहुंचे मगर कहां ? जहन्नम को।[1] अलबत्ता अगर मजज़ूबिय्यत से अ़क़्ले तक्लीफ़ी ज़ाइल हो गई हो, जैसे ग़शी वाला, तो उस से क़लमे शरीअ़त उठ जाएगा मगर येह भी समझ लो ! जो इस क़िस्म का होगा, उस की ऐसी बातें कभी न होंगी, शरीअ़त का मुक़ाबला कभी न करेगा।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! तसव्वुफ़ का बाब निहायत कुशादा है, सूफ़ियाए किराम ने तसव्वुफ़ की मुख़्तलिफ़ तारीफ़ें बयान की हैं। एक तारीफ़ येह भी है कि इज्ज़ो इन्केसारी अपनाने और तवक्कुल व क़नाअ़त इख़्तियार करने का नाम **"तसव्वुफ़"** है।[3]

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हमारे आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه आजिज़ी व इन्केसारी के पैकर होने के साथ साथ तवक्कुल व क़नाअ़त की दौलत से मालामाल थे और आप इन्तिहाई कम ग़िज़ा इस्तिमाल फ़रमाया करते थे। आप की आ़म ग़िज़ा चक्की के पिसे हुवे आटे की रोटी और बकरी का क़ोरमा था, बुढ़ापे में येह ग़िज़ा मज़ीद कम हो कर फ़क़त़ एक प्याली बकरी के गोश्त का शोरबा बिग़ैर मिर्च का और एक डेढ़ बिस्किट (Biscuit) सूजी का तनावुल फ़रमाते थे, अल ग़रज़ ! खाने पीने के मुआ़मले में आप निहायत सादा

1...الیواقیت والجواہر، الفصل الرابع، المبحث السادس والعشرون، ص۲۰۶، ماخوذا

2...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 1, 1 / 265

3...अल्लाह वालों की बातें, 5 / 39

www.dawateislami.net

थे ।[1] इसी त़रह़ रोज़ा रखना आप को बहुत पसन्द था, कैसी ही अ़लालत (बीमारी) होती, कितनी ही नक़ाहत (कमज़ोरी) होती, (माहे रमज़ान का) रोज़ा कभी न छोड़ते । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के भतीजे और ख़लीफ़ा, मौलाना ह़सनैन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रोज़े की क़ज़ा के बारे में न उन के किसी बड़े की ज़बानी सुना, न किसी बराबर वाले ने बताया, न हम छोटों ने कभी माहे मुबारक का कोई रोज़ा क़ज़ा करते देखा । बाज़ मरतबा माहे (रमज़ान) मुबारक में भी अ़लालत हुई मगर आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने रोज़ा न छोड़ा, अगर किसी ने ब इसरार अ़र्ज़ भी किया कि ऐसी ह़ालत में रोज़े से कमज़ोरी और बढ़ेगी । तो इरशाद फ़रमाया : मरीज़ हूं, तो इ़लाज न करूं ? लोग तअ़ज्जुब से केहते थे कि रोज़ा भी कोई इ़लाज है ? इरशाद फ़रमाया : इक्सीर इ़लाज है। मेरे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बताया हुवा है । इरशाद फ़रमाते हैं : صُوْمُوا تَصِحُّوا रोज़ा रखो, तन्दुरुस्त हो जाओगे ।[2] जब 1339 हिजरी का माहे रमज़ान मई, जून 1921 में पड़ा और मुसल्सल अ़लालत और शदीद कमज़ोरी के बाइ़स आला ह़ज़रत (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) ने अपने अन्दर मौसिमे गर्मा में रोज़ा रखने की त़ाक़त न पाई, तो अपने ह़क़ में येह फ़तवा दिया कि पहाड़ पर सर्दी होती है, वहां रोज़ा रखना मुमकिन है, लिहाज़ा रोज़ा रखने के लिए वहां जाना इस्तित़ाअ़त की वज्ह से फ़र्ज़ हो गया । फिर आप रोज़ा रखने के इरादे से कोहे भोवाली, ज़िल्अ़ नैनीताल तशरीफ़ ले गए ।[3] और ऐसा भी न था कि रोज़ों में पेट भर कर खाना खाना आप के मामूलात में हो, आ़म अय्याम में जितनी ग़िज़ा आप खाते, रमज़ान में वोह और कम हो जाती थी ।

1...फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 113

2... معجم اوسط، ۶/۱۴۶، حدیث: ۸۳۱۴

3...तजल्लियाते इमाम अह़मद रज़ा, स. 133, माख़ूज़न

www.dawateislami.net

रोज़े में एक वक़्त खाना

ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद हुसैन मेरठी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान है कि मैं ने रमज़ानुल मुबारक की 20 तारीख़ से एतिकाफ़ किया । आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मस्जिद में तशरीफ़ लाए, तो फ़रमाया : जी तो चाहता है कि मैं भी एतिकाफ़ करूं मगर फ़ुर्सत नहीं मिलती । आख़िर 26 रमज़ानुल मुबारक को फ़रमाया : आज से मैं भी मोतकिफ़ ही हो जाऊं । ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद हुसैन मेरठी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : आप इफ़्तार के बाद सिर्फ़ पान खा लेते और सह़र के वक़्त सिर्फ़ एक छोटे से प्याले में फ़ीरीनी और एक प्याली में चटनी आया करती थी, वोह नोश फ़रमाया करते । एक दिन मैं ने दरयाफ़्त किया : हुज़ूर ! फ़ीरीनी और चटनी का क्या जोड़ ? फ़रमाया : नमक से खाना शुरूअ़ करना और नमक ही पर ख़त्म करना सुन्नत है ।[1]

मुस्त़फ़ा का वोह लाडला प्यारा वाह क्या बात आला ह़ज़रत की
ग़ौसे आज़म की आंख का तारा वाह क्या बात आला ह़ज़रत की

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 575)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

سُبْحٰنَ الله ! पैकरे सुन्नत, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मीठी फ़ीरीनी से क़ब्ल और बाद इस लिए नमकीन चटनी इस्तिमाल फ़रमाते थे कि खाने के अव्वल आख़िर नमक इस्तिमाल करने की सुन्नत अदा हो जाए । खाने के अव्वल आख़िर नमक (या नमकीन) खाने से اَلْحَمْدُ لِلّٰه सत्तर बीमारियां दूर होती हैं ।[2] हमें भी ग़ौर करना चाहिए कि हम क्यूं प्यारे प्यारे आक़ा,

1...फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 113
2...फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 659

www.dawateislami.net

मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों से मुंह मोड़े बैठी हैं ? एक दौर था कि जब खड़े हो कर खाना या खिलाना बहुत ही बुरा समझा जाता था मगर अब ऐसा करना गोया एक फ़ैशन बनता जा रहा है, एक दौर था कि जब उल्टे हाथ से खाने, पीने को ऐब शुमार किया जाता था और फ़ौरन इस्लाह़ की जाती थी जबकि आज उल्टे हाथ से खाना खाने को बचपन की आ़दत केह कर टाल दिया जाता है, एक दौर था कि जब एक एक लुक़्मे की क़द्र की जाती और बरतन को साफ़ कर के खाने को ज़ाएअ़ होने से बचाया जाता था मगर अब बहुत सा खाना जानबूझ कर या अ़दम तवज्जोही से ज़ाएअ़ कर दिया जाता है, एक दौर था कि जब मुसलमान का बच्चा बच्चा सुन्नतों का शैदाई हुवा करता था मगर अब सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा ख़त्म होता जा रहा है, एक दौर था कि जब नाजाइज़ फ़ैशन करने को हर कोई बुरा समझता था मगर अब इस को बाइ़से फ़ख़्र समझा जाता है, एक दौर था कि जब सुन्नतें अपनाने वालों को हर जगह इ़ज़्ज़त दी जाती थी मगर अब पाबन्दे सुन्नत इस्लामी बहनों और इस्लामी भाइयों को त़रह़ त़रह़ से सताया जाता, जी भर कर उन का मज़ाक़ उड़ाया जाता, उन का दिल दुखाया जाता और उन्हें अ़जीबो ग़रीब अल्क़ाबात से नवाज़ा जाता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सूफ़ियाए किराम शरीअ़त की पैरवी करने वाले, ख़्वाहिशाते नफ़्स को मिटाने वाले, फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी करने वाले और इ़श्क़े रसूल को अपने सीने में बसाने वाले होते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ऐसे सूफ़ी थे जिन में येह तमाम ख़ूबियां पाई जाती थीं और आप फ़राइज़ो वाजिबात की पाबन्दी का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाते थे। आइए ! इस ज़िम्न में दो ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनती हैं। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

सफ़रो ह़ज़र में नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सफ़रो ह़ज़र, सेह़तो अ़लालत हर ह़ाल में जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करना ज़रूरी ख़याल फ़रमाते थे, आप के मामूलात में था कि कहीं सफ़र करना होता तो पेहले से तफ़्तीश करवाते कि नमाज़ का वक़्त कहां दरपेश होगा ? अगर स्टेशन पर वक़्त बनता, तो ठीक, वरना गाड़ी बदल दिया करते थे या नमाज़े बा जमाअ़त के लिए किसी स्टेशन (Station) पर उतर जाते और उस गाड़ी को छोड़ देते फिर नमाज़े बा जमाअ़त अदा करने के बाद जो गाड़ी मिलती, बक़िय्या सफ़र उस से पूरा फ़रमाते ।[1]

नमाज़ से महब्बत का आ़लम

एक दफ़्आ़ आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पाउं का अंगूठा पक गया, उन के ख़ास त़बीब ने उस अंगूठे का ऑप्रेशन किया । पट्टी बांधने के बाद उन्हों ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अगर ह़रकत न करेंगे, तो येह ज़ख़्म दस बारह रोज़ में ठीक हो जाएगा, वरना ज़ियादा वक़्त लगेगा । वोह येह केह कर चले गए । येह कैसे मुमकिन हो सकता है कि मस्जिद की ह़ाज़िरी और जमाअ़त की पाबन्दी तर्क कर दी जाए । जब ज़ोह्र का वक़्त आया, तो आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने वुज़ू किया, खड़े न हो सकते थे, तो बैठ कर बाहर दरवाज़े तक आ गए, लोगों ने कुर्सी पर बिठा कर मस्जिद में पहुंचा दिया और उसी वक़्त अहले महल्ला और ख़ानदान वालों ने येह त़ै किया कि हर अज़ान के बाद हम सब में से चार मज़बूत़ आदमी कुर्सी ले कर ह़ाज़िर हो जाया करेंगे और पलंग से ही कुर्सी पर बिठा कर मस्जिद की

1...फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 136

www.dawateislami.net

मेह़राब के क़रीब बिठा दिया करेंगे । येह सिलसिला तक़रीबन एक माह तक बड़ी पाबन्दी से चलता रहा, जब ज़ख़्म अच्छा हो गया और आप ख़ुद चलने के क़ाबिल हो गए, तो येह सिलसिला ख़त्म हुवा । आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नमाज़ तो नमाज़ है, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की जमाअ़त का तर्क भी बिला उ़ज़्रे शरई शायद किसी साह़िब को याद न होगा ।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को नमाज़े बा जमाअ़त से कैसी मह़ब्बत थी कि किसी ह़ाल में जमाअ़त छोड़ना गवारा न था, नमाज़े बा जमाअ़त से आप की मह़ब्बत का आ़लम तो देखिए कि पाउं में शदीद ज़ख़्म के सबब चलने में दुश्वारी है लेकिन फिर भी मस्जिद में जा कर नमाज़े बा जमाअ़त अदा फ़रमा रहे हैं । बयान कर्दा वाक़िआ़त में उन इस्लामी बहनों के लिए इ़ब्रत के मदनी फूल मौजूद हैं जो नमाज़ के अवक़ात में फ़ुज़ूल बातों या फ़ुज़ूल कामों में मश्ग़ूल रेहती हैं और नमाज़ छोड़ देती हैं ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तक़्सीमे रसाइल की धूमें मचाइए

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुसलमानों को नेक नमाज़ी बनाने के लिए मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से नेकी की दावत देने का जज़्बा दिलाते रेहते हैं, उन में से एक त़रीक़ा **"तक़्सीमे रसाइल"** भी है । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अक्सरो बेश्तर रसाइल तक़्सीम करने की तरग़ीब दिलाते रेहते हैं । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ **"नेकी की दावत"** में फ़रमाते हैं : जिन जिन इस्लामी बहनों से बन पड़े, एक **"मदनी बेग"** ख़रीद लें और उस में ह़स्बे

1...फ़ैज़ाने आला ह़ज़रत, स. 136, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

तौफ़ीक़ मक्तबतुल मदीना के रसाइल रखें, बेशक सारा दिन न सही, सिर्फ़ ह़स्बे मौक़ेअ़ वोह मदनी बेग अपने साथ हो और रसाइल दूसरों को तोह़फ़तन पेश किए जाएं। मौक़ेअ़ की मुनासबत से येह भी हो सकता है कि बाज़ को सिर्फ़ पढ़ने के लिए दें, जब वोह पढ़ कर लौटा दें, तो दूसरा रिसाला पेश करें, यूं करने से आप बे अन्दाज़ा सवाब कमा सकती हैं मगर येह सब कुछ अपनी जेबे ख़ास से हो, इस के लिए चन्दा न किया जाए नीज़ जश्ने विलादत के मौक़ेअ़ पर या अपने मर्ह़ूम अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिए मुख़्तलिफ़ अवक़ात में तक़्सीमे रसाइल की तरकीब भी फ़रमाइए, दर्स व इजतिमाआ़त और मदनी मश्वरों में और ईसाले सवाब की मजालिस में मक्तबतुल मदीना के मदनी रसाइल तक़्सीम फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब नेकी की दावत आ़म करने का सवाब कमाइए।[1] रसाइल तक़्सीम करने वालियों के लिए अमीरे अहले सुन्नत कितनी प्यारी दुआ़ फ़रमाते हैं कि :

हर महीने जो कोई बारह रिसाले बांट दे
اِنْ شَآءَ الله दो जहां में उस का बेड़ा पार है

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 272)

हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत की तरग़ीब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه दावते इस्लामी के तह़्त इस्लामी बहनों के लिए होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की ख़ूब ख़ूब बहारें हैं। इजतिमाअ़ में शिर्कत की बरकत से जहां कसीर इस्लामी बहनों को तौबा की तौफ़ीक़ मिली और वोह गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर नेक बन गईं, वहीं बाज़ अवक़ात रब्बे काइनात की इनायात से ईमान

1...नेकी की दावत, स. 462, बित्तसर्रुफ़ क़लील

www.dawateislami.net

अफ़रोज़ करिश्मात का भी ज़ुहूर होता है, मसलन मरीज़ों को शिफ़ा मिली, बे औलादों को औलाद नसीब हुई, आसेबज़दा को ख़लासी मिली वग़ैरहा। दुन्या भर में मुतअ़द्दद मक़ामात पर इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इजतिमाआ़त होते हैं।

दावते इस्लामी के हफ़्तावार इजतिमाअ़ में क्या होता है ?

येह सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त तिलावते क़ुरआन, नाते रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सुन्नतों भरे बयान, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं, ज़िक्रो दुरूद, सलातो सलाम के मदनी फूलों और इल्मे दीन के गुलदस्तों से सजे हुवे होते हैं और यक़ीनन इस त़रह़ के इजतिमाआ़त में शिर्कत कसीर अज्रो सवाब और बरकात के हुसूल का ज़रीआ़ है। चुनान्चे,

पाकीज़ा बातें चुनने वाले

रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : क़ियामत के दिन कुछ ऐसे लोग होंगे जो न अम्बिया होंगे, न शुहदा (मगर) उन के चेहरों का नूर, देखने वालों की निगाहों को ख़ीरा (यानी चकाचौंद) करता होगा, अम्बिया व शुहदा उन के मक़ाम और क़ुर्बे इलाही को देख कर इज़्हारे मसर्रत फ़रमाएंगे। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से किसी सह़ाबी ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह कौन (ख़ुश नसीब) होंगे ? इरशाद फ़रमाया : येह मुख़्तलिफ़ क़बाइल और बस्तियों के लोग होंगे जो (दुन्या में) **अल्लाह** करीम की याद करने के लिए इकट्ठे होते थे और पाकीज़ा बातें इस त़रह़ चुनते थे जिस त़रह़ खजूर खाने वाला बेहतरीन खजूरें चुनता है।[1]

---

1 ... الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، الترغیب فی حضور مجالس الذکر ۔۔۔ الخ، ۲/۲۵۲، حدیث: ۱۱

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि नेक इजतिमाआ़त में शिर्कत करने की कितनी बड़ी फ़ज़ीलत है, लिहाज़ा निय्यत कीजिए कि न सिर्फ़ ख़ुद इजतिमाअ़ में शिर्कत करेंगी बल्कि दूसरी इस्लामी बहनों को भी शिर्कत करवाएंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! 20 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र को ह़ज़रते सय्यिदुना दाता अ़ली हजवेरी का उ़र्स शरीफ़ मनाया जाता है । आइए ! इसी मुनासबत से दाता हुज़ूर, सय्यिद अ़ली हजवेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुख़्तसर तआ़रुफ़ सुनती हैं ।

विलादत व सिलसिलए नसब

हुज़ूर सय्यिद दाता गंज बख़्श अ़ली हजवेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत कमो बेश सिने 400 हिजरी में ग़ज़नी शह़र (City) में हुई, कुछ अ़र्से बाद आप का ख़ानदान मह़ल्ला हजवेर आ गया, इसी निस्बत से आप "**हजवेरी**" केहलाते हैं । आप का नाम "**अ़ली**", वालिद का नाम "**उ़स्मान**" है । आप का सिलसिलए नसब छे वासितों से सय्यिदुश्शुहदा, राकिबे दोशे मुस्त़फ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللهُ عَنْه से जा मिलता है । आप की कुन्यत "**अबुल ह़सन**" है ।[1] मश्हूरो मारूफ़ लक़ब "**गंज बख़्श**" और "**दाता साह़िब**" है । आप बहुत बड़े आ़लिमे दीन, शैख़े त़रीक़त, इबादत गुज़ार और मुत्तक़ी बुज़ुर्ग थे, आप की किताब "**कश्फ़ुल मह़जूब**" दुन्या भर में मश्हूर है । आप का विसाले पुर मलाल 20 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सिने 425 हि. को लाहौर

1...फ़ैज़ाने दाता अ़ली हजवेरी, स. 4, बि तग़य्युरिन क़लील

www.dawateislami.net

(पाकिस्तान) की सरज़मीन पर हुवा और यहीं पर आप का मज़ार शरीफ़ वाक़ेअ़ है जो दुआ़ओं की क़बूलिय्यत का मर्कज़ है । दाता साहिब की सीरते मुबारका के ह़वाले से मज़ीद मालूमात ह़ासिल करने के लिए मक्तबतुल मदीना का रिसाला **''फ़ैज़ाने दाता अ़ली हजवेरी''** का मुत़ालआ़ कीजिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

नाम रखने के आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे नाम रखने के चन्द आदाब सुनने की सआ़दत ह़ासिल करती हैं : पेहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए (1) इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा के नामों से पुकारे जाओगे, लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो ।[1] (2) इरशाद फ़रमाया : अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के नामों पर नाम रखो ।[2] ❖ बच्चे की कुन्यत रखना जाइज़ है और ह़ुसूले बरकत के लिए बुज़ुर्गों की निस्बत से कुन्यत रखना बेहतर है, मसलन अबू तुराब (येह ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه की कुन्यत है) वग़ैरा ।[3] ❖ अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा, अ़ब्दुन्नबी और अ़ब्दुर्रसूल नाम रखना बिल्कुल जाइज़ है कि इस से शरफ़े निस्बत मक़्सूद है । अ़ब्द के दो मआ़नी हैं : बन्दा और ग़ुलाम । इस लिए येह नाम रखने में कोई ह़रज नहीं । ग़ुलाम मुह़म्मद, ग़ुलाम सिद्दीक़, ग़ुलाम फ़ारूक़, ग़ुलाम अ़ली, ग़ुलाम ह़ुसैन वग़ैरा नाम रखना जिन में ग़ुलाम की निस्बत अम्बिया

1...ابوداود، کتاب الادب، باب فی تغییر الاسماء، ۴/۳۷۴، حدیث: ۴۹۴۸

2...ابوداود، کتاب الادب، باب فی تغییر الاسماء، ۴/۳۷۴، حدیث: ۴۹۵۰

3...बहारे शरीअ़त, 3 / 603, ह़िस्सा : 16, मफ़्हूमन

www.dawateislami.net

व सालिह़ीन की त़रफ़ की गई हो, बिल्कुल जाइज़ है ।[1] ❖ मुह़म्मद बख़्श, अह़मद बख़्श, पीर बख़्श और इसी क़िस्म के दूसरे नाम रखना जिस में नबी या वली के नाम के साथ बख़्श का लफ़्ज़ मिलाया गया हो, बिल्कुल जाइज़ है (कि अस्ल देने वाला सिर्फ़ और सिर्फ़ **अल्लाह** पाक ही है, **अल्लाह** पाक जिसे चाहे इख़्तियार दे, तो **अल्लाह** पाक के इख़्तियार देने से ही कोई नबी, वली दे सकता है) ।[2] ❖ त़ाहा, यासीन नाम न रखे जाएं कि येह अल्फ़ाज़ मुक़त्त़आ़ते क़ुरआनिय्या में से हैं, जिन के मआ़नी मालूम नहीं ।[3] ❖ जो नाम बुरे हों, उन्हें बदल कर अच्छे नाम रखने चाहिएं ।[4]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो क़ुतुब **''बहारे शरीअ़त''** ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात), 120 सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''**, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले **''101 मदनी फूल''** और **''163 मदनी फूल''** हदिय्यतन त़लब कीजिए और इन का मुत़ालआ़ कीजिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...बहारे शरीअ़त, 3 / 604, ह़िस्सा : 16, माख़ूज़न
2...बहारे शरीअ़त, 3 / 604, ह़िस्सा : 16
3...बहारे शरीअ़त, 3 / 605, ह़िस्सा : 16
4...बहारे शरीअ़त, 3 / 603, ह़िस्सा : 16

www.dawateislami.net

बयान : 11 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** पाक की ख़ातिर आपस में महब्बत रखने वाले जब आपस में मिलें और मुसाफ़हा करें (यानी हाथ मिलाएं) और नबी (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक भेजें, तो उन के जुदा होने से पेहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिए जाते हैं।[1]

काबे के बदरुद्दुजा तुम पे करोड़ों दुरूद
त़यबा के शम्सुद्दुहा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 264)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1... مُسْنَدُ اَبِيْ يَعْلٰى، ۳/۹۵، حدیث: ۲۹۵۱

2... معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا اللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत हासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اِنْ شَآءَ الله ! आज जो बयान हम सुनेंगी, उस का उ़न्वान है **''तबर्रुकात की बरकतें''** जिस में हम तबर्रुकात और इस के सुबूत में दो क़ुरआनी वाक़िआ़त सुनेंगी, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان, नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस तबर्रुकात की कैसी ताज़ीम किया करते इस तअ़ल्लुक़ से कुछ वाक़िआ़त भी सुनेंगी, तबर्रुकात की ताज़ीम से क्या क्या फ़ाएदे होते हैं और तबर्रुकात की बे अदबी से क्या नुक़्सानात होते हैं, येह भी सुनेंगी। ज़िम्नन

www.dawateislami.net

कई मदनी फूलों की मदनी महक से दिलो दिमाग़ को मुअ़त्तर करेंगी । **अल्लाह** करे कि हम सारा बयान तवज्जोह के साथ सुनने की सआ़दत ह़ासिल कर सकें। आइए ! सब से पेहले एक वाक़िआ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

क़ह्त़साली से नजात मिल गई !

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा सख़्त क़ह्त़साली हुई, लोगों की बहुत दुआ़ओं के बा वुजूद बारिश न हुई । ह़ज़रते सय्यिदुना बाबा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपनी अम्मीजान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا के कपड़े का एक धागा हाथ में ले कर अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** पाक ! येह उस ख़ातून के दामन का धागा है जिस पर कभी किसी ना महरम की नज़र न पड़ी, मेरे मौला ! इसी के सदक़े रह़मत की बरखा (बारिश) बरसा दे । अभी दुआ़ ख़त्म भी न हुई थी कि रह़मत के बादल घिर गए और रिमझिम रिमझिम बारिश शुरूअ़ हो गई ।[1]

तबर्रुकात के फ़वाइद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि बुज़ुर्गों से निस्बत रखने वाले लिबास के एक धागे की भी कैसी शान है कि उसे हाथ में रख कर मांगी गई दुआ़ क़बूल हो गई, **अल्लाह** पाक ने अपने नेक बन्दों को ऐसी बरकतों से नवाज़ा होता है कि जो चीज़ें इन से मन्सूब हो जाएं, वोह भी बा बरकत हो जाती हैं । अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और औलियाए इ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से मन्सूब चीज़ें बड़ी बा बरकत और फ़ैज़ रसां होती हैं ।

1...اخبار الاخیار، ص ۲۹۴

www.dawateislami.net

तबर्रुक किसे कहते हैं ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! तबर्रुक किसे केहते हैं ? तो याद रखें कि इस से मुराद बुज़ुर्गाने दीन की वोह चीज़ें हैं जो बरकत के तौ़र पर रखी जाएं ।[1] प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जिस्म से मस (Touch) होने वाली और निस्बत रखने वाली हर हर चीज़ भी मुतबर्रक है, इसी त़रह़ सह़ाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن के मुबारक अजसाम से छू जाने वाली (और निस्बत रखने वाली) हर चीज़ भी मुतबर्रक है ।[2] हमें हर उस चीज़ का अदबो एह़तिराम करना चाहिए जिसे बुज़ुर्गों से निस्बत हो जाए, उन के मूए मुबारक, क़मीस, जुब्बा, दस्तार, प्याला, अल ग़रज़ ! उन से निस्बत रखने वाला कोई तिन्का हो या लिबास का धागा हो, उस का अदबो एह़तिराम करने से भी اِنْ شَآءَ الله बरकतें नसीब होंगी ।

फ़ैज़ पाने के लिए कामिल एतिमाद शर्त़ है

तबर्रुकात से फ़ैज़ पाने के लिए एतिक़ाद पक्का होना चाहिए, ढिलमिल यक़ीन (यानी कच्चा यक़ीन) न हो, मसलन येह सोचना कि मूए मुबारक से बरकतें मिलती हैं या नहीं मिलती ! ज़मज़म पीने से बीमारियां दूर होती हैं या नहीं ! तावीज़ात से मुश्किलात ह़ल होती हैं या नहीं ! वग़ैरा । इस त़रह़ के कच्चे और मश्कूक ख़यालात से फ़ाएदा नहीं होता । फ़ैज़ पाने के लिए पुख़्ता एतिक़ाद शर्त़ है । येह भी याद रखें कि फ़ैज़ मिलने में वक़्त की कोई क़ैद नहीं होती, अपना अपना मुक़द्दर होता है, किसी को फ़ौरन फ़ैज़ मिल जाता है, किसी का बरसों तक काम नहीं होता । काम हो या न

1...तबर्रुकात का सुबूत, स. 2, बि तग़्य्युरिन
2...तबर्रुकात का सुबूत, स. 3-4, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

हो "**यक दर गीर व मोहकम गीर**" यानी "**एक दरवाज़ा पकड़ और मज़बूती के साथ पकड़**" के मिस्दाक़ बने रेहना चाहिए । اِنْ شَآءَ الله ! कभी न कभी नज़रे करम ज़रूर होगी और सोई हुई क़िस्मत जाग जाएगी और दुन्या व आख़िरत में बिगड़ी संवर जाएगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! तबर्रुकात से बरकतें मिलती, मुश्किलात दूर होती और मुसीबतें टलती हैं, येह अ़क़ीदा रखना कोई नई बात नहीं है, क़ुरआने पाक की कई आयात में तबर्रुकात की अहम्मिय्यत और पिछली उम्मतों के तबर्रुकात से फ़ैज़ पाने के वाक़िआ़त का ज़िक्र किया गया है । "**ताबूते सकीना**" से बनी इसराईल का बरकतें लेना, मेह़राबे मरयम में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام का दुआ़ मांगना और उस का क़बूल होना, तबर्रुकात से बरकतें पाने के येह वोह वाक़िआ़त हैं जो क़ुरआने पाक में बड़ी तफ़्सील से बयान किए गए हैं । आइए ! तबर्रुकात की बरकतें मिलने से मुतअ़ल्लिक़ दो क़ुरआनी वाक़िआ़त सुनती हैं : चुनान्चे,

क़मीसे यूसुफ़ से शिफ़ा मिलना

सूरए यूसुफ़ में **अल्लाह** पाक के नबी, ह़ज़रते सय्यिदुना याक़ूब और ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِمَا السَّلَام का त़वील वाक़िआ़ बयान हुवा है । जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को उन के सौतेले भाइयों ने धोके से कुंवें में डाल दिया और कुछ ताजिर उन्हें कुंवें से निकाल कर मिस्र ले गए और वहां बेच दिया, तो ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام अपने बेटे ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की जुदाई से बड़े ग़मगीन हुवे और इस ग़म में आंसू बहा बहा कर आंखों की रौशनी ख़त्म कर बैठे, कई साल बाद जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को अपने भाइयों के ज़रीए वालिदे मोह़तरम की बसारत के ख़त्म होने का

www.dawateislami.net

मालूम हुवा, तो उन्हों ने अपनी क़मीस बत़ौरे तबर्रुक अपने वालिद के लिए भेजी और जो कुछ फ़रमाया, कुरआने पाक में वोह यूं बयान किया गया है :

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ۚ (پ۱۳، یوسف: ۹۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मेरा येह कुर्ता ले जाओ, इसे मेरे बाप के मुंह पर डालो, उन की आंखें खुल जाएंगी।

जब ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाइयों ने वोह कुर्ता ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام के चेहरे पर डाला, तो क्या हुवा ? उसे कुछ आयात के बाद यूं बयान किया गया है :

فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ۚ (پ۱۳، یوسف: ۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब ख़ुशी सुनाने वाला आया, उस ने वोह कुर्ता याक़ूब के मुंह पर डाला, उसी वक़्त उस की आंखें फिर आईं (रौशन हो गईं)।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर कीजिए ! ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुद नबी हैं, वोह एक और नबी, यानी अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की आंखों के मरज़ के लिए बत़ौरे तबर्रुक अपना कुर्ता भेज रहे हैं और जब उस कुर्ते को उन के चेहरे पर डाला गया, तो **अल्लाह** पाक ने उन्हें आंखों की बीमारी से शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दी। इस से मालूम हुवा कि बुज़ुर्गों से निस्बत रखने वाली अश्या को तबर्रुक समझना और उन से बरकतें लेना अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का त़रीक़ा है और इस वाक़िए़ को कुरआने पाक में ज़िक्र फ़रमाना इस बात का एलान है कि तबर्रुकात से फ़ाएदा होता है।

मक़ामे इब्राहीम से तबर्रुक

काबए मुअ़ज़्ज़मा में एक पथ्थर है जिसे "**मक़ामे इब्राहीम**" केहते हैं। येह वोह पथ्थर है जिस पर **अल्लाह** पाक के नबी, जनाबे ह़ज़रते

www.dawateislami.net

इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना क़दम मुबारक रखा, तो जितना टुकड़ा उन के ज़ेरे क़दम आया, तर मिट्टी की त़रह़ नर्म हो गया, यहां तक कि इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का क़दम मुबारक उस में जम गया फिर जब इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने क़दम उठाया, **अल्लाह** पाक ने दोबारा उस टुकड़े में पथ्थर की सख़्ती पैदा कर दी कि वोह निशाने क़दम मह़फ़ूज़ रेह गया।[1] तो रब्बे करीम ने रेहती दुन्या के तमाम मुसलमानों को मक़ामे इब्राहीम की ताज़ीम करने और उस का क़ुर्ब पाने और यहां नमाज़ पढ़ने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। चुनान्चे, **अल्लाह** पाक पारह 1, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 125 में इरशाद फ़रमाता है :

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ؕ (پ۱، البقرة:۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ।

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मक़ामे इब्राहीम वोह पथ्थर है जिस पर खड़े हो कर इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने काबए मुअ़ज़्ज़मा की तामीर की, वोह भी ह़ज़रते ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की बरकत से शआ़इरुल्लाह बन गया और उस की ताज़ीम ऐसी लाज़िम हो गई कि त़वाफ़ के नफ़्ल उस के सामने खड़े हो कर पढ़ना सुन्नत हो गए। बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के क़दम पड़ जाने से सफ़ा, मरवह और मक़ामे इब्राहीम **शआ़इरुल्लाह** बन गए और क़ाबिले ताज़ीम हो गए।[2]

तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान में है : इस (आयत) से मालूम हुवा ! जिस पथ्थर को नबी عَلَيْهِ السَّلَام की क़दम बोसी ह़ासिल हो जाए,

---

1...फ़तावा रज़विय्या, 21 / 399, मुल्तक़त़न

2...इल्मुल क़ुरआन, स. 48, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

वोह अ़ज़मत वाला हो जाता है । येह भी मालूम हुवा ! जब पथ्थर, नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के क़दम लगने से अ़ज़मत वाला हो गया, तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात, अहले बैत और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ की अ़ज़मत का क्या केहना ! (लिहाज़ा) इस से तबर्रुकात की ताज़ीम का भी सुबूत (Proof) मिलता है ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बद ग़ुमानी से बचिए

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! औलियाए किराम और **अल्लाह** पाक के नेक बन्दों से तबर्रुक के ह़ुसूल में दिल में कोई शको शुबा नहीं होना चाहिए, दिल में मुख़्तलिफ़ वसाविस को जगह दे कर, इम्तिह़ान लेने और आज़माने की आरज़ू ले कर तबर्रुकात लेने वाले को हाथों हाथ सज़ा भी मिल जाती है । इस बात को इस ह़िकायत से समझिए :

अल्लाह पाक के एक वली की ख़िदमत में बादशाहे वक़्त क़दम बोसी के लिए ह़ाज़िर हुवा, उन के पास कुछ सेब नज़्र में आए थे । उन्हों ने एक सेब बादशाह को दिया और कहा : खाओ ! उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर भी नोश फ़रमाएं । चुनान्चे, आप ने भी खाए और बादशाह ने भी । उस वक़्त बादशाह को दिल में ख़याल गुज़रा कि येह जो सब से बड़ा ख़ुश रंग सेब है, अगर अपने हाथ से उठा कर मुझे दे दें, तो मैं जान लूंगा कि येह वली हैं । आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने वोही सेब उठा कर फ़रमाया : हम मिस्र गए थे, वहां बहुत लोग जम्अ़ थे, देखा कि एक शख़्स है, उस के पास एक गधा है और उस गधे की आंखों पर पट्टी बंधी है, एक शख़्स की एक चीज़ दूसरे के पास रख दी जाती है, उस गधे से पूछा जाता है, गधा सारी मजलिस का

1...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पा. 1, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 125, 1 / 205

www.dawateislami.net

दौरा करता है, जिस के पास होती है, जा कर सर टेक देता है। फिर वोह **अल्लाह** पाक के वली फ़रमाने लगे : येह हिकायत हम ने इस लिए बयान की, कि अगर येह सेब न दें, तो हम वली ही नहीं और अगर देंगे, तो उस गधे से बढ़ कर क्या कमाल दिखाया। येह फ़रमा कर सेब बादशाह की त़रफ़ फेंक दिया।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिए ! हुस्ने ज़न में फ़ाएदे ही फ़ाएदे हैं जबकि बद गुमानी में नुक़्सानात ही नुक़्सानात हैं। **अफ़्सोस** ! आज के दौर में हमारी एक तादाद है जो हुस्ने ज़न के बजाए बद गुमानी की त़रफ़ ज़ियादा माइल होती है, बात बात पे बद गुमानी के नज़्ज़ारे आम हैं। किसी को फ़ोन करें और वोह रिसीव (Receive) न करे तो बद गुमानी, बेटे की तवज्जोह मां से कम हो जाए, तो फ़ौरन बहू से बद गुमानी, तन्ज़ीमी त़ौर पर ख़िलाफ़े तवक़्क़ोअ़ बात हो गई, तो ज़िम्मेदारान से बद गुमानी, मेह़फ़िले नात के इन्तिज़ामात में कमज़ोरी हुई, तो फ़ौरन मुन्तज़िमीन से बद गुमानी, मेह़फ़िले नात में कोई इस्लामी बहन झूम रही है या रो रही है तो बद गुमानी, किसी ज़िम्मेदारा ने अपनी मातहूत इस्लामी बहनों की तरग़ीब के लिए कोई अपना वाक़िआ़ बयान कर दिया, तो फ़ौरन उन से बद गुमानी, किसी ने वक़्त दिया और आने में ताख़ीर हो गई तो बद गुमानी, किसी के पास थोड़े ही अ़र्से में अच्छा मकान और दीगर सहूलिय्यात आ गईं तो बद गुमानी, अल ग़रज़ ! हमारा मुआ़शरा इस वक़्त बद गुमानी की ख़ौफ़नाक आफ़त की लपेट में है।

याद रखिए ! बद गुमानी दीगर कई गुनाहों में मुब्तला करा देती है : ❖ बद गुमानी दूसरों के ऐ़बों की टोह में लगाती है। ❖ बद गुमानी

1...बद गुमानी, स. 30

www.dawateislami.net

ह़सद पर उभारती है। ❖ बद गुमानी ग़ीबत करवाती है। ❖ बद गुमानी दिल में नफ़रतों के बीज उगाती है। ❖ बद गुमानी आपस में मज़ीद दूरियां बढ़ाती है। ❖ बद गुमानी हुस्ने सुलूक से महरूम करवाती है। ❖ बद गुमानी इन्सान को बद ख़ुल्क़ बनाती है। ❖ बद गुमानी इल्ज़ाम तराशी पर उभारती है। ❖ बद गुमानी दुन्या और आख़िरत में रुस्वा करवाती है। लिहाज़ा अ़क़्लमन्द वोही है जो बद गुमानी के बजाए हुस्ने ज़न की आ़दत अपनाए क्यूंकि ❖ हुस्ने ज़न एक उ़म्दा इ़बादत है। ❖ हुस्ने ज़न गुनाहों से बचाने वाला अ़मल है। ❖ हुस्ने ज़न रखना ईमान के तक़ाज़ों में से है। ❖ हुस्ने ज़न ईमान का हि़स्सा है। ❖ हुस्ने ज़न **अल्लाह** वालों की आ़दात में से है। ❖ हुस्ने ज़न सवाब का बाइ़स है। ❖ हुस्ने ज़न दूसरों की इ़ज़्ज़तों का मुहाफ़िज़ है। ❖ हुस्ने ज़न से सुकून और क़रार मिलता है। ❖ हुस्ने ज़न इन्सान को शैत़ान के चुंगल से बचाता है। ❖ हुस्ने ज़न ईमान को तक़्वियत देता है। ❖ हुस्ने ज़न क़ल्ब व रूह़ को पाकीज़ा करता है। ❖ हुस्ने ज़न इन्सान को नेक बनाता है। ❖ हुस्ने ज़न से **अल्लाह** पाक और उस के मदनी ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा मिलती है।

एक बार नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने काबे को मुख़ात़ब कर के इरशाद फ़रमाया : तू ख़ुद और तेरी फ़ज़ा कितनी अच्छी है ! तू कितनी अ़ज़मत वाला है और तेरी ह़ुर्मत कितनी अ़ज़ीम है ! उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की जान है ! **अल्लाह** पाक के नज़दीक मोमिन की जानो माल और उस से अच्छा गुमान रखने की ह़ुर्मत, तेरी ह़ुर्मत से भी ज़ियादा है।[1]

---

1 ... ابن ماجه، کتاب ابواب الفتن، باب حرمة دم المؤمن وماله، ۴/۳۱۹، حدیث: ۳۹۳۲

www.dawateislami.net

ख़ुदाया अ़ता कर दे रह़मत का पानी
रहे क़ल्ब उजला, धुले बद गुमानी

(शैत़ान के बाज़ ह़थियार, स. 33)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तबर्रुकात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस बात से बख़ूबी वाक़िफ़ थे कि नबिय्ये बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सरापा रह़मत व बरकत हैं, जो चीज़ भी आक़ा करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत का शरफ़ पाती, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उसे बाइ़से बरकत समझते, इसी लिए सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कई त़रीक़ों से प्यारे आक़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से बरकतें पाने की कोशिश करते। आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वुज़ू के बचे हुवे पानी को तबर्रुक समझते और उस से बरकतें उठाते, जिस पानी से आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपना मुबारक हाथ धोते, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उसे अपने चेहरों और बदन के ह़िस्सों पर बत़ौरे तबर्रुक मलते, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बचे हुवे खाने से तबर्रुक ह़ासिल करते, आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के पसीनए मुबारक, लुआ़बे दहन, मूए मुबारक, अंगूठी मुबारक, बिस्तर मुबारक, लिबास मुबारक, चारपाई मुबारक और आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की इस्तिमाल फ़रमाई हुई चटाई मुबारक से भी बरकतें ह़ासिल करते, अल ग़रज़ ! हर वोह शै जिसे ताजदारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से थोड़ी या ज़ियादा निस्बत ह़ासिल हो जाती, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उसे अपने लिए तबर्रुक बना लेते। अह़ादीसे मुबारका में इस त़रह़ के दरजनों वाक़िआ़त मिलते हैं। आइए ! उन में से 3 वाक़िआ़त सुनती हैं :

www.dawateislami.net

(1) मन्क़ूल है कि मश्हूर सह़ाबिए रसूल, ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के पास नबिय्ये अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक क़मीस और मुक़द्दस नाख़ुनों के कुछ तराशे थे । जब आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का वक़्ते विसाल आया, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने वसिय्यत फ़रमाई कि मुझे उस क़मीस में कफ़न दिया जाए जो प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें अ़त़ा फ़रमाई थी और वोह मुबारक क़मीस मेरे जिस्म से बिल्कुल मिला कर रखी जाए जबकि आक़ा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मुबारक नाख़ुनों के बारे में वसिय्यत फ़रमाई कि बारीक कर के इन की आंखों और मुंह पर रख दिए जाएं । आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने मज़ीद फ़रमाया : येह काम ज़रूर अन्जाम देना और मुझे सब से ज़ियादा रह़मो करम फ़रमाने वाले रब्बे करीम के सिपुर्द कर देना ।[1]

(2) अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की साह़िबज़ादी, ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के पास हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक जुब्बा था । (एक मरतबा) आप ने वोह जुब्बा निकाला और फ़रमाया : येह जुब्बा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का है, आप इसे पेहना करते थे, अब हम इसे बीमारों के लिए धोते हैं और इस से शिफ़ा ह़ासिल करते हैं ।[2]

मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब लोग इस की ज़ियारत करने आते थे, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا येह फ़रमा कर ज़ियारत कराती थीं कि येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़यात शरीफ़ में पेहना करते थे, जिस से मालूम होता है कि हुज़ूर

1... اسد الغابۃ، رقم: ۴۹۷۷، معاویہ بن صخر بن أبی سفیان، ۵/ ۲۲۳

2... مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، باب تحریم لبس الحریر۔۔۔الخ، ص ۸۸۳، حدیث: ۵۴۰۹، ملخصاً

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिबास की ज़ियारत कराना सुन्नते सहाबा है, जैसा कि फ़ी ज़माना मूए मुबारक की ज़ियारत कराई जाती है। मालूम हुवा ! बुज़ुर्गों के तबर्रुकात की ज़ियारत कराना, उन का लिबास धो कर बीमारों को पिलाना सुन्नते सहाबा है, इन में शिफ़ा है। आबे ज़मज़म हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام की ऐड़ी से पैदा हुवा, तमाम बीमारियों के लिए शिफ़ा है।[1]

बाज़ हज़रात, उम्मुल मोमिनीन, बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की ख़िदमत में हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के तबर्रुकात की ज़ियारत करने आया करते, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا उन्हें ज़ियारत कराती थीं।[2]

(3) हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपने इस प्याले से हर क़िस्म के शरबत, शहद, नबीज़, पानी और दूध पिलाए हैं।[3]

हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के हाथ में एक लकड़ी का प्याला था। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने लोगों को दिखा कर फ़रमाया : इस प्याले से मैं ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत क़िस्म के शरबत और दूध पिलाया है, यानी येह प्याला बड़ा ही मुतबर्रक है कि इसे हुज़ूरे अन्वर के हाथ और लब बारहा लगे हैं। मालूम हुवा ! हज़राते सहाबा, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्तिमाली बरतनों को बरकत के लिए अपने पास रखते थे और लोगों को उस की ज़ियारत कराते थे।

1...मिरआतुल मनाजीह, 6 / 98, मुल्तक़त़न

2...मिरआतुल मनाजीह, 6 / 91

3...مسلم، کتاب الاشربۃ، باب اباحۃ النبیذ۔۔۔الخ، ص۸۵۷، حدیث: ۵۲۳۷

www.dawateislami.net

मस्नवी शरीफ़ में है : ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के घर वोह कपड़े का दस्तरख़ान था जिस से हुज़ूर ने हाथ व मुंह पोंछ लिए थे, जब वोह मैला हो जाता था, तो उसे आग में डाल देते, मैल जल जाता, कपड़ा महफ़ूज़ रेहता था।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मालूम हुवा कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का येह अ़क़ीदा था कि आक़ा करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तबर्रुकात में बरकतें ही बरकतें हैं। हमें भी येही अ़क़ीदा रखना चाहिए और बुज़ुर्गों से मन्सूब तबर्रुकात मसलन उन के लिबास, इस्तिमाल की चीज़ें, रेहने की जगहें, अल ग़रज़ ! उन से निस्बत रखने वाली कोई भी चीज़ हो, हमें उस का अदब और एह़तिराम करना चाहिए।

इस में कुछ शक नहीं कि नेक लोगों के तबर्रुकात की बरकतों से शिफ़ाएं मिलती हैं, नेक लोगों के तबर्रुकात की बरकतों से फ़ैज़ पाना अम्बियाए किराम का त़रीक़ा है, नेक लोगों के तबर्रुकात की बरकतों से रिज़्क़ में कुशादगी होती है, नेक लोगों के तबर्रुकात की बरकतों से सुकून मिलता है, नेक लोगों के तबर्रुकात की बरकतों से फ़ैज़ पाना सह़ाबए किराम का त़रीक़ा रहा है, नेक लोगों के तबर्रुकात की बरकतों से दुन्या व आख़िरत की परेशानियां दूर होती हैं, नेक लोगों के तबर्रुकात की बरकतों से दुआएं क़बूल होती हैं, नेक लोगों के तबर्रुकात की बरकतों से बीमारियां टलती हैं, नेक लोगों के तबर्रुकात की बरकतों से गुनाहों की बख़्शिश हो जाती है और नेक लोगों के तबर्रुकात के अदबो एह़तिराम की वज्ह से सीधी राह से भटके हुवे लोग हिदायत पा जाते हैं और येह भी ह़क़ीक़त है

1...मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 81, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

कि बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात की ज़ियारत से दिलों को चैन मिलता है, बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात की ज़ियारत से आंखों को ठन्डक नसीब होती है, बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात की ज़ियारत के वक़्त क़बूलिय्यते दुआ का इमकान बढ़ जाता है, बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात की ज़ियारत से **अल्लाह** पाक की रह़मतें नसीब होती हैं, बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात की ज़ियारत से उन जैसा बनने का जज़्बा मिलता है, बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात की ज़ियारत से गुनाहों से दूरी का ज़ेह्न बनता है, बुज़ुर्गाने दीन के तबर्रुकात की ज़ियारत से नेकियां करने का जज़्बा मिलता है। आइए ! इसी तअ़ल्लुक़ से एक ह़िकायत सुनती हैं : चुनान्चे,

तबर्रुक के अदब की बरकतें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली रूज़बारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बहन, फ़ातिमा बिन्ते अह़मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا फ़रमाती हैं : शह्रे बग़्दाद में कुछ नौजवानों ने अपने में से एक को किसी ज़रूरत से भेजा, उस ने लौटने में ताख़ीर कर दी, येह लोग ग़ज़बनाक होने लगे, इतने में वोह एक ख़रबूज़ा लिए हंसता हुवा पहुंचा। नौजवानों ने दरयाफ़्त किया : एक तो तू देर से आ रहा है, इस पर हंसता भी है ? लड़के ने कहा : मैं आप लोगों के लिए एक अ़जीब चीज़ लाया हूं। सब ने पूछा : वोह क्या ? लड़के ने अपने हाथ का ख़रबूज़ा उन्हें पेश किया और कहा : इस ख़रबूज़े पर ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने हाथ रख दिया था, इस लिए मैं ने इसे बीस दिरहम में ख़रीद लिया। उस की बात सुन कर सब ने ख़रबूज़े को चूमा और अपनी अपनी आंखों से लगाया। उन में से एक ने कहा : ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को किस चीज़ ने इस मक़ाम पर पहुंचाया ? किसी ने कहा : तक़्वा ने। एक ने कहा : मैं तुम्हें गवाह बना कर **अल्लाह**

www.dawateislami.net

पाक से तौबा करता हूं। इस के बाद सब ने उसी की त़रह़ तौबा की फिर वोह सब त़रत़ूस नामी शह्र तशरीफ़ ले गए और वहीं शहादत का रुत्बा पा लिया।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर कीजिए ! ह़ज़रते सय्यिदुना बिशरे ह़ाफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के हाथ लगाए हुवे ख़रबूज़े का अदब करने की वज्ह से उन नौजवानों के दिलों की काया पलट गई, उन्हों ने गुनाहों से तौबा की और शहादत के अ़ज़ीम मर्तबे पर फ़ाइज़ हुवे। इस ह़िकायत से हमें येह मदनी फूल मिला कि अगर बुज़ुर्गों से निस्बत रखने वाली किसी शै का ख़ुलूस से एह़तिराम किया जाए, तो बन्दे दीनो दुन्या की सआ़दतों से सरफ़राज़ हो सकते हैं।

येह बात भी ज़ेह्न नशीन रहे कि जिस त़रह़ तबर्रुकात और आसार की ताज़ीम और एह़तिराम करने से कई फ़ाएदे मिलते हैं और बरकतें नसीब होती हैं, इसी त़रह़ अगर उन की ताज़ीम न की जाए और उन की बे अदबी और तौहीन की जाए, तो बसा अवक़ात दुन्या में ही इस की सज़ा भी मिल जाती है। इस की सब से वाज़ेह़ मिसाल "**ताबूते सकीना**" है। चुनान्चे,

मक्तबतुल मदीना की किताब "**अ़जाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन**" के सफ़ह़ा नम्बर 52 और 53 पर है : (ताबूते सकीना) शमशाद की लकड़ी का एक सन्दूक़ था जो ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल हुवा, आप عَلَيْهِ السَّلَام की आख़िरे ज़िन्दगी तक आप के पास ही रहा फिर बत़ौरे मीरास यके बाद दीगरे आप عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद को मिलता रहा। येह बड़ा ही मुक़द्दस और बा बरकत सन्दूक़ (Box) था, बनी

---

1 ... الروض الرياحين، الحكاية السادسة والثلاثون بعد المئتين، ص٢١٨

www.dawateislami.net

इसराईल में जब कोई इख़्तिलाफ़ पैदा होता था, तो लोग इसी सन्दूक़ से फ़ैसला कराते थे, सन्दूक़ से फ़ैसले की आवाज़ और फ़त्ह की बिशारत सुनी जाती थी, बनी इसराईल इस सन्दूक़ को वसीला बना कर दुआएं मांगते थे, तो इन की दुआएं मक़्बूल होती थीं, बलाओं की मुसीबतें और वबाओं की आफ़तें टल जाया करती थीं, अल ग़रज़ ! येह सन्दूक़ बनी इसराईल के लिए ताबूते सकीना, बरकत व रह़मत का ख़ज़ीना और नुसरते ख़ुदावन्दी के नुज़ूल का मुक़द्दस और बेहतरीन ज़रीआ़ था मगर जब बनी इसराईल त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मुलव्वस हो गए और इन लोगों में मआ़सी व त़ुग़्यान और सरकशी व इ़स्यान का दौर दौरा हो गया, तो उन की बद आमालियों की नुहूसत से इन पर ख़ुदा का येह ग़ज़ब नाज़िल हो गया कि क़ौमे अ़मालिक़ा के कुफ़्फ़ार ने एक लश्करे जर्रार के साथ इन लोगों पर ह़म्ला कर दिया, उन काफ़िरों ने बनी इसराईल का क़त्ले आ़म कर के इन की बस्तियों को ताख़्तो ताराज कर डाला, इ़मारतों को तोड़ फोड़ कर सारे शह्र को तहस नहस कर डाला और इस मुतबर्रिक सन्दूक़ को भी उठा कर ले गए, इस मुक़द्दस तबर्रुक को नजासतों के कूड़ेख़ाने में फेंक दिया लेकिन इस बे अदबी का क़ौमे अ़मालिक़ा पर येह वबाल पड़ा कि येह लोग त़रह़ त़रह़ की बीमारियों और बलाओं के हुजूम में झिन्झोड़ दिए गए । चुनान्चे, क़ौमे अ़मालिक़ा के पांच शह्र बिल्कुल बरबाद और वीरान हो गए, यहां तक कि उन काफ़िरों को यक़ीन हो गया कि सन्दूक़ की बे अदबी का अ़ज़ाब हम पर पड़ गया है, तो उन काफ़िरों की आंखें ख़ुल गईं । चुनान्चे, उन लोगों ने इस मुक़द्दस सन्दूक़ को एक बैलगाड़ी पर लाद कर बैलों को बनी इसराईल की बस्तियों की त़रफ़ हांक दिया ।[1]

1…अ़जाइबुल क़ुरआन, स. 52-53

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा वाक़िए़ से मालूम हुवा ! बुज़ुर्गों के तबर्रुकात की इहानत व बे अदबी करना क़हरे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार को दावत देना है क्यूंकि क़ौमे अ़मालिक़ा ने जब इस बा बरकत सन्दूक़ की बे अदबी की, तो उन पर ऐसा क़हरे इलाही का पहाड़ टूटा कि वोह बलाओं के हुजूम से बिलबिला उठे और उन्हें इस बात का यक़ीन हो गया कि हम पर बलाओं और वबाओं का ह़म्ला इसी बा बरकत सन्दूक़ की बे अदबी की वज्ह से हुवा है । चुनान्चे, इसी लिए उन लोगों ने इस मुक़द्दस सन्दूक़ को बैलगाड़ी पर लाद कर बनी इसराईल की बस्ती में भेज दिया ताकि वोह लोग बलाओं से नजात पा लें ।

इस वाक़िए़ से येह मदनी फूल भी मिला कि कोई भी क़ौम तब तक **अल्लाह** पाक की रह़मतों और नेमतों से ह़िस्सा पाती रेहती है जब तक वोह उस की इत़ाअत़ और फ़रमां बरदारी करती रहे, जब वोह **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी और गुनाहों में मुब्तला हो जाए, तो दुन्या और आख़िरत की कई परेशानियां उन का मुक़द्दर बन जाती हैं, जैसा कि बनी इसराईल के साथ हुवा कि जब तक वोह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के ताबेदार रहे, उन की बयान कर्दा बातों पर अ़मल करते रहे और उन के अह़कामात की पैरवी करते रहे, तो निहायत सुकून और इत़मीनान से रहे लेकिन जैसे ही उन्हों ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के बताए हुवे अह़कामाते इलाहिय्या से मुंह मोड़ा, ज़िल्लतें और रुस्वाइयां उन का मुक़द्दर बन गईं । अगर ग़ौर किया जाए, तो आज मुसलमानों की भी येही ह़ालत है, सदियों तक मुसलमान दुन्या पर ग़ालिब रहे और हर मैदान में तरक़्क़ी करते रहे लेकिन जब से क़ुरआने करीम के अह़कामात और उस की तालीमात पर अ़मल से दूर होने लगे और सरवरे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी से रूगर्दानी शुरूअ़ कर दी और इस्लामी अह़कामात से मुंह मोड़ा, तो त़रह़ त़रह़ की मुसीबतों में मुब्तला होते गए और आज जो ह़ालत है, वोह सब के सामने है ।

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अब भी वक़्त है, आज भी अगर हम शरीअ़त पर अ़मल करने वाली बन जाएं, तो तमाम मुसीबतें ख़त्म हो सकती हैं। जब हमारी पैदाइश का अस्ल मक़्सद **अल्लाह** पाक की इ़बादत है और हम शरीअ़त के अह़काम से आज़ाद भी नहीं हैं और हमें क़ियामत के दिन अपने हर अ़मल का हिसाब भी बहर सूरत देना है, तो उस की इ़बादत से ग़ाफ़िल हो जाना, उस के अह़कामात को पसे पुश्त डाल देना और दुन्या के कामों में ही मसरूफ़ रेहना कहां की दानिशमन्दी है ?

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! माहे रबीउ़ल अव्वल की आमद आमद है, आइए ! इसी मुनासबत से "**जश्ने विलादत के बारे में मक्तूबे अ़त्तार**" सुनती हैं :

जश्ने विलादत के बारे में मक्तूबे अ़त्तार

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنْهُ की जानिब से तमाम इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में जश्ने विलादत की ख़ुशी में लेहराते हुवे सब्ज़ सब्ज़ परचमों, जगमगाते बल्बों और नन्हे नन्हे कुमकुमों को चूमता हुवा, झूमता हुवा शह्द से भी मीठा मक्की मदनी सलाम :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُه اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَال۔

तुम भी कर के उन का चर्चा अपने दिल चमकाओ
ऊंचे में ऊंचा नबी का झन्डा घर घर में लहराओ

रबीउ़ल अव्वल उम्मीदों की दुन्या साथ ले आया
दुआ़ओं की क़बूलिय्यत को हाथों हाथ ले आया

www.dawateislami.net

(1) इस्लामी बहन का बे पर्दगी करना ह़राम है । बराहे करम ! रबीउ़ल अव्वल की बरकत से इस्लामी बहनें मुस्तक़िल शरई़ पर्दा और ज़ेहे क़िस्मत ! मदनी बुर्क़अ़ पेहनने की निय्यत करें (औ़रत का बे पर्दगी करना ह़राम और फ़ौरन तौबा कर के उस गुनाह से बाज़ आना वाजिब है) ।

झुक गया काबा सभी बुत मुंह के बल औंधे गिरे
दबदबा आमद का था, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 147)

सुन्नतों और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने का अ़ज़ीम मदनी नुस्ख़ा येह है कि तमाम इस्लामी बहनें रोज़ाना **"मुह़ासबा"** करते हुवे **"मदनी इन्आ़मात"** के रिसाले पुर कर के हर माह जम्अ़ करवाने की निय्यत करें । और दिल में कहें : اِنْ شَآءَاللّٰه ।

बदलियां रह़मत की छाईं, बून्दियां रह़मत की आईं
अब मुरादें दिल की पाईं, आमदे शाहे अ़रब है

(क़बालए बख़्शिश, स. 337)

(2) तमाम इस्लामी बहनें 30 दिन तक रोज़ाना घर के अन्दर (सिर्फ़ घर की इस्लामी बहनों और मह़रमों में) दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत जारी करें और फिर आइन्दा भी रोज़ाना जारी रखने की निय्यत फ़रमाएं ।

(3) अपने घर पर 12 अ़दद वरना कम अज़ कम एक अ़दद सब्ज़ सब्ज़ परचम रबीउ़ल अव्वल की चांद रात से ले कर सारा महीना लेहराइए, اِنْ شَآءَاللّٰه हर घर में सब्ज़ सब्ज़ परचमों की बहारें मुस्कुराती नज़र आएंगी ।

ज़रूरी एह़तियात

अगर झन्डे पर नक़्शे नाले पाक या कोई लिखाई हो, तो इस बात का ख़याल रखिए कि न वोह लीरे लीरे हो, न ही ज़मीन पर तशरीफ़ लाए

www.dawateislami.net

नीज़ जूंही रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का महीना तशरीफ़ ले जाए, फ़ौरन उतार लीजिए। अगर एह़तियात़ करना मुश्किल है और बे अदबी हो जाती है, तो बिग़ैर नक़्शो तह़रीर के सादा सब्ज़ परचम लेहराइए।

(4) अपने घर पर 12 झालरों (यानी लड़ियों) या कम अज़ कम 12 बल्बों से 12 दिन तक ख़ूब चराग़ां कीजिए (मगर इन कामों के लिए बिजली चोरी करना ह़राम है, लिहाज़ा इस सिलसिले में जाइज़ ज़राएअ़ की तरकीब बनाइए)।

मश्रिक़ो मग़रिब में इक इक, बामे काबा पर भी एक
नस्ब परचम हो गया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 146)

(5) हर इस्लामी बहन ह़स्बे तौफ़ीक़ मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रसाइल और मदनी फूलों के मुख़्तलिफ़ पेम्फ़्लेट जुलूसे मीलाद में तक़्सीम करवाए।

बांट कर मदनी रसाइल दीन को फैलाइए
कर के राज़ी ह़क़ को ह़क़दारे जिनां बन जाइए

(6) सगे मदीना का तह़रीर कर्दा पेम्फ़्लेट **"जश्ने विलादत के 12 मदनी फूल"** मुमकिन हो तो 112 वरना कम अज़ कम 12 अ़दद नीज़ हो सके तो रिसाला **"सुब्हे बहारां"** 12 अ़दद मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कर के तक़्सीम करवाइए।

(7) ग्यारह की शाम को वरना 12वीं शब को ग़ुस्ल कीजिए, हो सके तो इस ईदों की ईद की ताज़ीम की निय्यत से हो सके तो नया लिबास पेहनिए और मुमकिना सूरत में अपने इस्तिमाल की हर चीज़ नई लीजिए।

आई नई ह़ुकूमत सिक्का नया चलेगा
आ़लम ने रंग बदला सुब्हे शबे विलादत

(ज़ौक़े नात, स. 95)

www.dawateislami.net

(8) 12वीं शब गुज़ार कर ब वक़्ते सुब्हे सादिक़ अपने हाथों में सब्ज़ सब्ज़ परचम उठाए, दुरूदो सलाम के हार लिए, अश्कबार आंखों से "**सुब्हे बहारां**" का इस्तिक़्बाल कीजिए।

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है
बिलयक़ीं है ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 380)

(9) हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाते रहे, आप भी यादे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को रोज़ा रखिए, इस दिन जहां तक मुमकिन हो, बा वुज़ू रहिए, लब पर दुरूदो सलाम और नातों के नग़मे सजाए रखिए।

रबीए़ पाक तुझ पर अहले सुन्नत क्यूं न हों क़ुरबां
कि तेरी बारहवीं तारीख़ वोह जाने क़मर आया

(क़बालए बख़्शिश, स. 65)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तक़्सीमे रसाइल की धूमें मचाइए

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मुसलमानों को नेक नमाज़ी बनाने के लिए मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से नेकी की दावत देने का जज़्बा दिलाते रेहते हैं, इन में से एक त़रीक़ा "**तक़्सीमे रसाइल**" भी है। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अक्सरो बेश्तर रसाइल तक़्सीम करने की तरग़ीब दिलाते रेहते हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ तस्नीफ़ "**नेकी की दावत**" में फ़रमाते हैं : जिन जिन इस्लामी बहनों से बन पड़े, एक "**मदनी बेग**" ख़रीद लें और उस में ह़स्बे

www.dawateislami.net

तौफ़ीक़ मक्तबतुल मदीना के रसाइल रखें, बेशक सारा दिन न सही, सिर्फ़ ह़स्बे मौक़ेअ़ वोह मदनी बेग अपने साथ हो और रसाइल दूसरों को तोह्फ़तन पेश किए जाएं। मौक़ेअ़ की मुनासबत से येह भी हो सकता है कि बाज़ को सिर्फ़ पढ़ने के लिए दें, जब वोह पढ़ कर लौटा दें, तो दूसरा रिसाला पेश करें, यूं करने से आप बे अन्दाज़ा सवाब कमा सकती हैं मगर येह सब कुछ अपनी जेबे ख़ास से हो, इस के लिए चन्दा न किया जाए नीज़ जश्ने विलादत के मौक़अ़ पर या अपने मर्हूम अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिए मुख़्तलिफ़ अवक़ात में तक़्सीमे रसाइल की तरकीब भी फ़रमाइए, दर्स व इजतिमाआ़त और मदनी मश्वरों में और ईसाले सवाब की मजालिस में मक्तबतुल मदीना के मदनी रसाइल तक़्सीम फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब नेकी की दावत आ़म करने का सवाब कमाइए।[1]

रसाइल तक़्सीम करने वालियों के लिए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه कितनी प्यारी दुआ़ फ़रमाते हैं कि :

हर महीने जो कोई बारह रिसाले बांट दे
اِنْ شَآءَ الله दो जहां में उस का बेड़ा पार है

(आदाबे त़आ़म, स. 272)

हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत की तरग़ीब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दावते इस्लामी के तह़्त इस्लामी बहनों के लिए होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की ख़ूब ख़ूब बहारें हैं। इजतिमाअ़ में शिर्कत की बरकत से जहां कसीर

1...नेकी की दावत, स. 462, बित्तसर्रुफ़

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनों को तौबा की तौफ़ीक़ मिली और वोह गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर नेक बन गईं, वहीं बाज़ अवक़ात रब्बे काइनात की इनायात से ईमान अफ़रोज़ करिश्मात का भी ज़ुहूर होता है, मसलन मरीज़ों को शिफ़ा मिली, बे औलादों को औलाद नसीब हुई, आसेबज़दा को ख़लासी मिली वग़ैरहा । दुन्या भर में मुतअ़द्दद मक़ामात पर इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इजतिमाआ़त होते हैं ।

दावते इस्लामी के हफ़्तावार इजतिमाअ़ में क्या होता है ?

येह सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त तिलावते क़ुरआन, नाते रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, सुन्नतों भरे बयान, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं, ज़िक्रो दुरूद, सलातो सलाम के मदनी फूलों और इ़ल्मे दीन के गुलदस्तों से सजे हुवे होते हैं । लिहाज़ा आप तमाम इस्लामी बहनें निय्यत कीजिए कि आने वाले 12 हफ़्तों तक मुकम्मल पाबन्दी के साथ न सिर्फ़ ख़ुद इजतिमाअ़ में शिर्कत करेंगी बल्कि दूसरी इस्लामी बहनों को भी शिर्कत करवाएंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत, चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।[1]

1... مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵

www.dawateislami.net

छींकने की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **"101 मदनी फूल"** से छींकने की सुन्नतें और आदाब सुनिए : पेहले दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए : (1) **अल्लाह** पाक को छींक पसन्द है और जमाही ना पसन्द ।[1] (2) जब किसी को छींक आए और वोह اَلْحَمْدُلِلّٰه कहे, तो फ़िरिश्ते केहते हैं : رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ और अगर वोह رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ केहता है, तो फ़िरिश्ते केहते हैं : **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़्म फ़रमाए ।[2] ❖ छींक के वक़्त सर झुकाइए, मुंह छुपाइए और आवाज़ आहिस्ता निकालिए, छींक की आवाज़ बुलन्द करना ह़माक़त है ।[3] ❖ छींक आने पर اَلْحَمْدُلِلّٰه केहना चाहिए (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, सफ़ह़ा 3 पर त़ह़ूत़ावी के ह़वाले से छींक आने पर ह़म्दे इलाही को सुन्नते मोअक्कदा लिखा है) । ❖ बेहतर येह है कि اَلْحَمْدُلِلّٰه कहे या اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن । जो सुने उस पर वाजिब है कि फ़ौरन يَرْحَمُكَ الله (यानी **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़्म फ़रमाए) कहे और इतनी आवाज़ से कहे कि जिसे छींक आई, वोह ख़ुद सुन ले ।[4] ❖ जवाब सुन कर छींकने वाली कहे : يَغْفِرُاللهُ لَنَاوَلَكُمْ (यानी **अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे : يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ (यानी **अल्लाह** पाक तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे) ।[5]

1...بخاری، کتاب الادب، باب اذا تثاوب فلیضع ـــ الخ، ۴/۱۶۳، حدیث: ۶۲۲۶

2...معجم کبیر، ۱۱/۳۵۸، حدیث: ۱۲۲۸۴

3...رَدُّالْمُحتار، کتاب الحظر والاباحة، مطلب فی البیع، ۹/۶۸۴

4...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, 5 / 477

5...فتاوی ھندیة، کتاب الکرھیة، باب السلام و تشمیت العاطس، ۵/۳۲۶

www.dawateislami.net

❖ **मिरआतुल मनाजीह़** में है कि जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फेर लिया करे, तो اِنْ شَآءَ الله दांतों की बीमारियों से महफ़ूज़ रहेगा ।[1] ❖ ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे, तो वोह दाढ़ और कान के दर्द में कभी मुब्तला नहीं होगा ।[2] ❖ छींक का जवाब एक मरतबा वाजिब है, दूसरी बार छींक आए और वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे, तो दोबारा जवाब वाजिब नहीं बल्कि मुस्तह़ब है ।[3]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **''बहारे शरीअ़त''** ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) और 120 सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले **''101 मदनी फूल''** और **''163 मदनी फूल''** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिए और पढ़िए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...मिरआतुल मनाजीह़, 6 / 396

2...مرقاة المفاتيح، كتاب الادب، باب العطاس والتثاوب، ٨/ ٤٩٩، تحت الحديث: ٤٧٣٩

3...فتاوىٰ هندية، كتاب الكراهية، باب السلام وتشميت العاطس، ٥/ ٣٢٦

www.dawateislami.net

बयान : 12 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सरकारे अबद क़रार, हम बेकसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام) ने मुझ से अ़र्ज़ की, कि रब्बे करीम फ़रमाता है : ऐ मुहम्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा उम्मती तुम पर एक बार दुरूद भेजे, मैं उस पर दस रहमतें नाज़िल करूं और आप की उम्मत में से जो कोई एक सलाम भेजे, मैं उस पर दस सलाम भेजूं।[1]

हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : रब्बे (करीम) के सलाम भेजने से मुराद या तो ब ज़रीअ़ए मलाइका (फ़िरिश्तों के ज़रीए) उसे सलाम केहलवाना है या आफ़तों और मुसीबतों से सलामत रखना (मुराद है)।[2]

दुन्या व आख़िरत में जब मैं रहूं सलामत
प्यारे पढ़ूं न क्यूंकर तुम पर सलाम हर दम

(ज़ौक़े नात, स. 167)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...مشکاۃ، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ علی النبی وفضلھا، ۱/۱۸۹، حدیث: ۹۲۸ ملتقطا

2...मिरआतुल मनाजीह, 2 / 102

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[1]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اَذْكُرُوااللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ...معجم کبیر، ۱۸۵/۶، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اِنْ شَآءَ الله आज के बयान में हम **''आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत से महब्बत''** के तअ़ल्लुक़ से सुनेंगी, यानी आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत से कितनी महब्बत फ़रमाते हैं, इस बारे में सुनने की सआ़दत हासिल करेंगी। लिहाज़ा आज के बयान में हम सुनेंगी कि बरोज़े क़ियामत आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़िक्रे उम्मत में किस क़दर ग़मगीन होंगे, गुनहगार उम्मतियों की बिगड़ियां बनाएंगे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में उम्मते मुस्तफ़ा पर दुन्या में जो इनायतें हुईं और जो आख़िरत में होंगी, उन की चन्द झल्कियां भी बयान होंगी, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या में अपनी कमज़ोर उम्मत को कितना याद फ़रमाया और उम्मत की याद में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस क़दर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते रहे, येह भी सुनेंगी। **अल्लाह** करे कि हम सारा बयान तवज्जोह के साथ सुनने की सआ़दत हासिल कर सकें। आइए ! सब से पेहले एक वाक़िआ़ सुनती हैं। चुनान्चे,

लो वोह आया मेरा ह़ामी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि उम्मत पर मेहरबान, महबूबे रह़मान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अ़र्श के क़रीब वसीअ़ मैदान में ठेहरे हुवे होंगे, आप पर दो सब्ज़ कपड़े होंगे, अपनी औलाद में से हर उस शख़्स को देख रहे होंगे जो जन्नत में जा रहा होगा और अपनी औलाद में से उसे भी देख रहे होंगे जो दोज़ख़ में जा रहा होगा, इसी दौरान जनाबे आदम عَلَيْهِ السَّلَام मेरे एक उम्मती को दोज़ख़ में जाता हुवा देखेंगे। सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पुकारेंगे : या अह़मद ! या अह़मद ! मैं कहूंगा : लब्बैक ऐ अबुल बशर ! ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام कहेंगे : आप का येह उम्मती दोज़ख़ में जा रहा है। येह सुन कर मैं बड़ी

www.dawateislami.net

चुस्ती के साथ तेज़ तेज़ (क़दमों से) फ़िरिश्तों के पीछे चलूंगा और कहूंगा : ऐ मेरे रब के फ़िरिश्तो ! ठेहरो । वोह अ़र्ज़ करेंगे : हम मुक़र्रर कर्दा फ़िरिश्ते हैं, जिस काम का हमें **अल्लाह** पाक ने हुक्म दिया है, उस की ना फ़रमानी नहीं करते, हम वोही करते हैं जिस का हमें हुक्म मिला है । जब मैं अफ़्सुर्दा हो जाऊंगा और अपनी दाढ़ी को बाएं हाथ से पकड़ कर अ़र्श की त़रफ़ हाथ से इशारा करते हुवे अ़र्ज़ करूंगा : ऐ मेरे परवर दगार ! क्या तू ने मुझ से वादा नहीं फ़रमाया है कि तू मुझे मेरी उम्मत के बारे में रुस्वा न फ़रमाएगा । अ़र्श से निदा (पुकार) आएगी : ऐ फ़िरिश्तो ! मुह़म्मद की इत़ाअ़त करो और इसे लौटा दो । फिर मैं अपनी झोली से सफ़ेद काग़ज़ निकालूंगा और उसे मीज़ान के दाएं पलड़े में डाल कर कहूंगा : **बिस्मिल्लाह** । तो वोह नेकियों वाला पलड़ा, बुराइयों वाले पलड़े से भारी हो जाएगा । आवाज़ आएगी : ख़ुश बख़्त है ! सआ़दत याफ़्ता हो गया है और इस का मीज़ान भारी हो गया है, इसे जन्नत में ले जाओ । वोह बन्दा कहेगा : ऐ मेरे पाक परवर दगार के फ़िरिश्तो ! ठेहरो ! मैं इस बन्दे से बात तो कर लूं जो अपने रब के हुज़ूर बड़ी इ़ज़्ज़त रखता है । फिर वोह कहेगा : मेरे मां-बाप आप पर फ़िदा हों ! आप का चेहरए अन्वर कितना ह़सीन है और आप की सूरत कितनी ख़ूबसूरत है, आप ने मेरी लग़ज़िशों को मुआ़फ़ फ़रमाया और मेरे आंसूओं पर रह़म फ़रमाया (आप कौन हैं ?) तो मैं उस से कहूंगा : मैं तेरा नबी **मुह़म्मद** (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं और येह तेरा वोह दुरूद है जो तू मुझ पर भेजता था, इस ने तुझ को पूरा नफ़्अ़ पहुंचाया जितनी तुझे इस की ज़रूरत थी ।[1] इस ह़िकायत की अ़क्कासी करते हुवे आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं :

1 ... موسوعة ابن ابی الدنیا کتاب حسن الظن باللہ، ۱/۹۱، حدیث: ۷۹

www.dawateislami.net

उन की आवाज़ पे कर उठूं मैं बे साख़्ता शोर
और तड़प कर येह कहूं अब मुझे परवा क्या है
लो वोह आया मेरा ह़ामी मेरा ग़म ख़्वारे उमम
आ गई जां तने बे जां में येह आना क्या है
फिर मुझे दामने अक़्दस में छुपा लें सरवर
और फ़रमाएं "हटो ! इस पे तक़ाज़ा क्या है"
छोड़ कर मुझ को फ़िरिश्ते कहें "मह़कूम हैं हम"
हुक्मे वाला की न तामील हो, ज़हरा क्या है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 173)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा वाक़िआ अपने अन्दर कई अहम निकात समोए हुवे है । मसलन ग़ैबदान आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, **अल्लाह** करीम की अ़त़ा से ग़ैब का इ़ल्म रखते हैं, जो कुछ हो रहा है और जो कुछ आइन्दा होने वाला है बल्कि क़ियामत में जो कुछ होगा तमाम बातों का इ़ल्म **अल्लाह** करीम ने आप को अ़त़ा फ़रमा दिया । इसी लिए आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर देते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में बता दिया कि बरोज़े क़ियामत वोह अ़र्श के क़रीब कुशादा मैदान में तशरीफ़ फ़रमा होंगे, दो सब्ज़ कपड़े ज़ेबे तन किए होंगे, अपनी औलाद को भी देखेंगे, ह़त्ता कि नबिय्ये अनवर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के एक उम्मती को दोज़ख़ में जाते हुवे मुलाह़ज़ा कर के नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उस की जानिब मुतवज्जेह कर के उस की मदद करेंगे ।

येह भी मालूम हुवा कि दुरूदे पाक पढ़ने की बहुत बरकतें हैं, दुरूदे पाक पढ़ने वालियां जिस त़रह़ दुन्या में इस की बरकतों से फ़ैज़याब होती हैं, اِنْ شَآءَ الله बरोज़े क़ियामत भी इन के वारे नियारे हो जाएंगे । लिहाज़ा

www.dawateislami.net

हमें चाहिए कि हम भी अपने मोहसिन आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पाक बारगाह में उठते, बैठते, चलते, फिरते, अल ग़रज़ ! हर वक़्त (Every Time) दुरूदे पाक के नज़राने पेश करती रहें, اِنْ شَآءَ الله दुरूदे पाक की बरकत से दुन्या भी संवर जाएगी और आख़िरत भी संवर जाएगी।

इस हिकायत से एक मदनी फूल येह भी मिला कि नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने उम्मतियों से बड़ी महब्बत फ़रमाते हैं, बरोज़े क़ियामत जब हर तरफ़ नफ़्सी नफ़्सी का आलम होगा, वोह दिन जिस के बारे में **अल्लाह** पाक अपने पाकीज़ा कलाम, क़ुरआने करीम, पारह 30, सूरए عَبَسَ की आयत 34 ता 37 में इरशाद फ़रमाता है :

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ﴿۳۴﴾ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ﴿۳۵﴾ وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ﴿۳۶﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ﴿۳۷﴾

(پ۳۰، عبس: ۳۴تا۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस दिन आदमी भागेगा अपने भाई और मां और बाप और जोरू और बेटों से, उन में से हर एक को उस दिन एक फ़िक्र है कि वोही उसे बस है।

क़ुरबान जाइए ! ऐसे मुश्किल तरीन वक़्त में भी आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने गुनाहगार उम्मतियों की ख़ातिर बेचैन व बे क़रार होंगे, उन्हें अपने दामने रहमत में छुपाएंगे, रब्बे करीम से उन की बख़्शिश करवाएंगे और बारगाहे इलाही में सिफ़ारिश करवा कर उन्हें जन्नत में दाख़िल करवाएंगे। आइए ! एक और ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ सुनती हैं चुनान्चे,

बरोज़े क़ियामत फ़िक्रे उम्मत का अन्दाज़

शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अहमदे मुख़्तार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन तमाम अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) सोने के मिम्बरों पर जल्वागर होंगे, मेरा मिम्बर ख़ाली होगा क्यूंकि मैं

www.dawateislami.net

अपने रब के हुज़ूर ख़ामोश खड़ा होऊंगा कि कहीं ऐसा न हो कि मुझे जन्नत में जाने का हुक्म फ़रमा दे और मेरी उम्मत मेरे बाद परेशान फिरती रहे। **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : ऐ महबूब ! तेरी उम्मत के बारे में वोही फ़ैसला करूंगा जो तेरी चाहत है। मैं अर्ज़ करूंगा : اَللّٰهُمَّ عَجِّلْ حِسَابَهُمْ "**ऐ अल्लाह** ! इन का हिसाब जल्दी ले ले।" येह मुसल्सल अर्ज़ करता रहूंगा, यहां तक कि मुझे दोज़ख़ में जाने वाले मेरे उम्मतियों की फ़ेहरिस्त दे दी जाएगी (जो जहन्नम में दाख़िल हो चुके होंगे, उन की शफ़ाअ़त कर के मैं उन्हें निकालता जाऊंगा), यूं अ़ज़ाबे इलाही के लिए मेरी उम्मत का कोई फ़र्द न बचेगा।[1]

डर था कि इस्यां की सज़ा, अब होगी या रोज़े जज़ा
दी उन की रह़मत ने सदा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 110)

سُبْحٰنَ اللہ ! ज़रा सोचिए ! हुज़ूरे अन्वर, शाफ़िए महशर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम पर कितने शफ़ीक़ व मेहरबान हैं। अब ज़रा हम अपने बारे में भी ग़ौर करें कि हमें अपने आक़ा व मौला صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से कैसी महब्बत है ? हम ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एह़सानात के बदले में आप को कितना ख़ुश किया है ? और आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर हम कितना अ़मल करती हैं ? ज़रा सोचिए ! जो अपने वालिदैन से महब्बत करती हैं, वोह उन का दिल नहीं दुखातीं, जिन्हें अपने बच्चे से महब्बत होती है, वोह उन्हें नाराज़ नहीं होने देतीं, कोई भी अपनी सहेली को ग़मज़दा देखना गवारा नहीं करती क्यूंकि जिस से महब्बत होती है, उसे रन्जीदा नहीं किया जाता मगर **आह** ! आज हम इ़श्क़े रसूल का दावा तो करती हैं मगर हमारे काम नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश करने वाले नहीं, हम कैसे इ़श्क़े रसूल का दावा करती हैं कि

1 ... کَنْزُالْعُمَّال، کتاب القیامۃ، قسم الاقوال، جزء: ۱۴، ۷/۱۷۸، حدیث: ۳۹۱۱۱

www.dawateislami.net

फ़र्ज़ नमाज़ से जी चुरा कर, नमाज़ जानबूझ कर क़ज़ा कर के सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे पुर अन्वार के लिए तक्लीफ़ का सबब बनती हैं, येह कौन सी महब्बत और कैसा इश्क़ है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم माहे रमज़ान के रोज़ों की ताकीद फ़रमाएं मगर उन की महब्बत का दम भरने वालियां इस हुक्मे वाला से मुंह मोड़ कर नाराज़िए मुस्तफ़ा का सबब बनें, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर्दे का हुक्म इरशाद फ़रमाएं और हम बे पर्दगी करें, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गाने बाजों और फ़िल्मों ड्रामों से मन्अ़ फ़रमाएं और हमारे घरों में फ़िल्में, ड्रामे और बाजे चलें, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वालिदैन की फ़रमां बरदारी का हुक्म इरशाद फ़रमाएं और हम वालिदैन की ना फ़रमानी करती रहें। सोचें ! क्या येही इश्क़े रसूल है ? क्या येही महब्बते रसूल है ? क्या इसी को उल्फ़ते रसूल में जीना मरना केहते हैं ? क्या हम येही आमाल ले कर अपने आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश होंगी ?

याद रखें ! आज वक़्त है, हमें चाहिए कि इस वक़्त से फ़ाएदा उठाएं और नेक काम करने वाली बन जाएं। आइए ! मिल कर निय्यत करती हैं कि आज से हमारी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी, माहे रमज़ान का कोई रोज़ा क़ज़ा नहीं होने देंगी, ज़कात फ़र्ज़ हुई, तो पूरी अदा करेंगी, ह़ज (Hajj) फ़र्ज़ हुवा, तो अदाएगी में ताख़ीर नहीं करेंगी, नाजाइज़ फ़ैशन के क़रीब भी नहीं जाएंगी, शरई पर्दे का ख़याल करेंगी, फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों से ख़ुद भी बचेंगी और अपने घरवालों को भी बचाएंगी, वालिदैन का दिल नहीं दुखाएंगी, **अल्लाह** पाक और बन्दों के हुक़ूक़ के मुआ़मले में ग़फ़्लत नहीं करेंगी। **अल्लाह** करीम हमें अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! काइनात बहुत बड़ी है, येह सभी को पता है मगर उस की एक ह़द तो ज़रूर है, ज़मीन बहुत कुशादा है, येह सभी को पता है मगर उस की एक ह़द तो ज़रूर है, समुन्दर बहुत बड़ा है, येह सभी को पता है मगर उस के किनारे और गेहराई (Depth) की एक ह़द तो ज़रूर है, सितारों की तादाद बहुत ज़ियादा हैं, येह सभी को पता है मगर उन की एक ह़द तो ज़रूर है, मख़्लूक़े ख़ुदा की तादाद बहुत ज़ियादा है, येह सभी को पता है मगर उस की एक ह़द ज़रूर है मगर याद रखिए ! ग़म ख़्वारे उम्मत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अपनी उम्मत पर शफ़्क़त व महब्बत एक ऐसे समुन्दर की त़रह़ है जिस की गेहराई और किनारे का निशान मिलना मुश्किल है । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अपनी उम्मत से महब्बत व शफ़्क़त का बयान क़ुरआने करीम में भी मौजूद है । चुनान्चे, पारह 11, सूरए तौबह की आयत नम्बर 128 में **अल्लाह** पाक इरशाद फ़रमाता है :

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ (پ۱۱، التوبة:۱۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारे पास तशरीफ़ लाए तुम में से वोह रसूल जिन पर तुम्हारा मशक़्क़त में पड़ना गिरां है, तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले, मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान ।

यानी क़ुरआने पाक भी गवाही दे रहा है कि प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत पर बड़े रह़ीमो करीम हैं । आइए ! अब **''तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान''** से मुसलमानों पर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रह़मत व शफ़्क़त की चन्द मिसालें भी मुलाह़ज़ा हों :

उम्मत पर शफ़्क़त व रह़मत की चन्द मिसालें

(1) उम्मत के कमज़ोर, बीमार और काम काज करने वाले लोगों की मशक़्क़त के पेशे नज़र इशा की नमाज़ को तिहाई रात तक मुअख़्ख़र न

www.dawateislami.net

फ़रमाया। (2) कमज़ोर, बीमारों और बच्चों का लिहाज़ करते हुवे नमाज़ की क़िराअत को ज़ियादा लम्बा न करने का हुक्म दिया। (3) रात के नवाफ़िल पर हमेशगी न फ़रमाई ताकि येह उम्मत पर फ़र्ज़ न हो जाएं। (4) उम्मत के मशक़्क़त में पड़ जाने की वज्ह से उन्हें सौमे विसाल के रोज़े रखने से मन्अ़ कर दिया। (5) उम्मत की मशक़्क़त की वज्ह से हर साल ह़ज को फ़र्ज़ न फ़रमाया। (6) मुसलमानों पर शफ़्क़त करते हुवे त़वाफ़ के तीन चक्करों में रमल का हुक्म दिया, तमाम चक्करों में नहीं दिया। (7) ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पूरी पूरी रात जाग कर इबादत में मसरूफ़ रेहते और उम्मत की मग़्फ़िरत के लिए **अल्लाह** पाक के दरबार में इन्तिहाई बे क़रारी के साथ गिर्या व ज़ारी फ़रमाते रेहते, यहां तक कि खड़े खड़े अक्सर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पाउं मुबारक पर वरम आ जाता था।[1]

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा
रो रो के मुस्त़फ़ा ने दरया बहा दिए हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 102)

मुख़्तसर वज़ाह़त : इस शेर में आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रब्बे करीम के पाक दरबार में अ़र्ज़ गुज़ार हैं : ऐ परवर दगार ! क्या जहन्नम की आग गुलामाने मुस्त़फ़ा के ह़क़ में अब भी ठन्डी न होगी ! जबकि तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत की बख़्शिश के लिए दुआएं करते हुवे इतना रोए हैं, इतना रोए हैं, गोया रो रो कर दरया बहा दिए हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अभी हम ने जो आयते मुबारका सुनी, उस के तह़्त **"तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान"** में येह भी लिखा है कि

1...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पा. 14, अल ह़िज्र, तह़्तुल आयत : 88, 5 / 267, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

लोग तो अपनी और अपनी औलाद की भलाई के ह़रीस (भलाई के चाहने वाले) होते हैं मगर येह रसूले रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत की भलाई और उन की ख़ैर ख़्वाही पर ह़रीस हैं। आइए ! उम्मत पर उन की ह़िर्स और शफ़्क़त की झलक सुनती हैं : चुनान्चे,

उम्मत के लिए दुआएं

ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने मुझे तीन सुवाल अ़त़ा फ़रमाए, मैं ने दो बार (तो दुन्या में) अ़र्ज़ कर ली : اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاُمَّتِیْ اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاُمَّتِیْ ऐ **अल्लाह** ! मेरी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। ऐ **अल्लाह** ! मेरी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा। وَاَخَّرْتُ الثَّالِثَةَ لِيَوْمٍ يَرْغَبُ اِلَيَّ الْخَلْقُ كُلُّهُمْ حَتّٰى اِبْرَاهِيْمُ और तीसरी अ़र्ज़ उस दिन के लिए उठा रखी, जिस में मख़्लूक़े इलाही मेरी त़रफ़ नियाज़मन्द होगी, यहां तक कि (**अल्लाह** पाक के ख़लील) ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام भी मेरे नियाज़मन्द होंगे।[1]

ऐ ख़ुदाए दो जहां ! एह़सान तेरा है बड़ा
तू ने पैदा उन की उम्मत में हमें फ़रमाया है

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 462)

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ऐ गुनहगाराने उम्मत ! क्या तुम ने अपने मालिको मौला صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की येह कमाले राफ़्तो रह़मत (नर्मी व रह़मत की इन्तिहा) अपने ह़ाल पर न देखी कि बारगाहे इलाही से तीन सुवाल ह़ुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को मिले कि जो चाहो, मांग लो, अ़त़ा होगा। ह़ुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने इन में से कोई सुवाल अपनी ज़ाते पाक

1...مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب بیان ان القرآن علی سبعۃ۔۔۔الخ، ص۳۱۸، حدیث: ۱۹۰۴ ملتقطا

www.dawateislami.net

के लिए न रखा, सब तुम्हारे ही काम में सर्फ़ फ़रमा दिए, दो सुवाल दुन्या में किए, वोह भी तुम्हारे ही वासिते, तीसरा आख़िरत को उठा रखा (यानी आख़िरत के लिए बाक़ी रख लिया) वोह तुम्हारी उस अ़ज़ीम ह़ाजत के वासिते जब उस मेहरबान मौला, रऊफ़ुर्रह़ीम आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सिवा कोई काम आने वाला, बिगड़ी बनाने वाला न होगा। क़सम उस की जिस ने उन्हें आप पर मेहरबान किया ! हरगिज़ हरगिज़ कोई अपने मां अपने अज़ीज़ प्यारे इक्लौते बेटे (The Only Son) पर भी इतनी मेहरबान नहीं जिस क़दर वोह अपने एक उम्मती पर मेहरबान हैं।[1]

रोता है जो रातों को उम्मत की महब्बत में
वोह शाफ़ेए़ महशर है सरदार मदीने का

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 180)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उ़मूमन कोई भी बच्चा जब इस दुन्या में आता है, तो न उसे बोलना आता है, न वोह चल सकता है, न अपनी कोशिश से इधर उधर ह़रकत कर सकता है, न कोई बात समझ सकता है और न ही किसी को जानता पेहचानता है, अल ग़रज़ ! उसे किसी भी चीज़ की कुछ भी समझ बूझ नहीं होती मगर मीठे मीठे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तो शान ही निराली है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! **अल्लाह** पाक ने सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह मोजिज़ा अ़त़ा फ़रमाया था कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या में जल्वागर होते ही कलाम फ़रमाया और उस कलाम में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को याद फ़रमाया। चुनान्चे,

1...फ़तावा रज़विय्या, 29 / 583, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुन्या में जल्वा अफ़रोज़ होते ही आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सजदा फ़रमाया और होंटों पर येह दुआ जारी थी : رَبِّ هَبْ لِیْ اُمَّتِیْ यानी परवर दगार ! मेरी उम्मत मेरे ह़वाले फ़रमा ।[1] इमाम ज़ुरक़ानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : उस वक़्त आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उंगलियों (Fingers) को इस त़रह़ उठाए हुवे थे जैसे कोई गिर्या व ज़ारी करने वाला उठाता है ।[2]

होते ही पैदा करते हैं उम्मत को याद आप
उम्मत की मग़फ़िरत के त़लबगार आ गए

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 511)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आक़ाए मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सारी ज़िन्दगी अपनी उम्मत को याद फ़रमाया, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मत की बख़्शिश व नजात के लिए रातों को इ़बादत करते थे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ारों की तन्हाइयों में जा कर अश्कबारी फ़रमाते थे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुरआन की तिलावत करते हुवे अश्कबार होते थे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मत के गुनाहगारों और क़ियामत की सख़्तियों का ख़याल कर के बारगाहे इलाही में गिर्या व ज़ारी फ़रमाते थे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ुरआन की उस आयत की तिलावत सुन कर अश्कबारी फ़रमाते थे कि जिस आयत में हर उम्मत से गवाह लाने और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम लोगों पर गवाह बनाने का ज़िक्र मौजूद है, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कभी एक ही आयत की तिलावत करते सारी रात गुज़ार देते, कभी लम्बे लम्बे क़ियाम व रुकूअ़ फ़रमाते, कभी पेशानी सजदे में

1...फ़तावा रज़विय्या, 30 / 712, मुलख़्ख़सन

2...شرح زرقانی علی المواہب، ولادتہ وعجائب ومأثرات۔۔۔الخ، ۱/ ۲۱۱

www.dawateislami.net

रख कर उम्मत की भलाई त़लब फ़रमाते, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गिर्या व ज़ारी व शब बेदारी फ़रमाते, रो रो कर गुनहगार उम्मतियों की नजात और क़ब्रो ह़श्र की तक्लीफ़ों से बचाने के लिए दुआ़एं किया करते । चुनान्चे,

रोने का सबब क्या है ?

बख़्शे बख़्शाए आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दोनों दस्ते मुबारक उठा कर उम्मत के ह़क़ में रो कर दुआ़ फ़रमाई और अ़र्ज़ किया : اَللّٰهُمَّ اُمَّتِیْ اُمَّتِیْ **ऐ अल्लाह** ! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत । **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि तुम मेरे ह़बीब के पास जाओ, तुम्हारा रब ख़ूब जानता है मगर उन से पूछो कि उन के रोने का सबब क्या है ? ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने हुक्म के मुत़ाबिक़ ह़ाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया, तो सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें तमाम ह़ाल बताया और ग़मे उम्मत का इज़्हार किया । ह़ज़रते जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की, कि **ऐ अल्लाह** ! तेरे ह़बीब येह फ़रमाते हैं और **अल्लाह** पाक ख़ूब जानने वाला है । **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि जाओ और मेरे ह़बीब (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से कहो कि हम आप को आप की उम्मत के बारे में अ़न क़रीब राज़ी करेंगे और आप के क़ल्बे मुबारक को रन्जीदा न होने देंगे ।[1]

सद शुक्र ख़ुदाया तू ने दिया है रह़मत वाला वोह आक़ा
जो उम्मत के रन्जो ग़म में रातों को अश्क बहाता रहे

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 475)

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : तू ने कभी सुना है कि जिस को तुझ से

1 ... مسلم، کتاب الایمان، باب دعاء النبی لامتہ... الخ، ص ۱۰۹، حدیث: ۴۹۹

www.dawateislami.net

उल्फ़ते सादिक़ा (सच्ची महब्बत) है और फिर महबूब भी कैसा ! जाने ईमान व काने एहसान (ईमान की जान और मेहरबानी की कान), जिस के जमाले जहां आरा (जहां को सजाने वाली ख़ूबसूरती) का नज़ीर (मिस्ल) कहीं न मिलेगा और ख़ामए क़ुदरत ने उस की तस्वीर बना कर हाथ खींच लिया कि फिर कभी ऐसा न लिखेगा। कैसा महबूब, जिसे उस के मालिक ने तमाम जहां के लिए रहमत भेजा, कैसा महबूब, जिस ने अपने तन पर एक आलम का बार उठा लिया, कैसा महबूब, जिस ने तुम्हारे ग़म में दिन का खाना, रात का सोना तर्क कर दिया, तुम रात दिन उस की ना फ़रमानियों में मुन्हमिक (बहुत मसरूफ़) और लहवो लइब (खेल कूद) में मश्ग़ूल हो और वोह तुम्हारी बख़्शिश के लिए शबो रोज़ गिर्यां व मलूल (यानी दिन रात रोते और ग़मगीन रेहते)। शब, कि **अल्लाह** करीम ने आसाइश (आराम) के लिए बनाई, सुब्ह क़रीब है, ठन्डी नसीमों (हवाओं) का पंखा हो रहा है, हर एक का जी इस वक़्त आराम की तरफ़ झुकता है, बादशाह अपने गर्म बिस्तरों, नर्म तक्यों में मस्त ख़्वाबे नाज़ (आराम में मश्ग़ूल) है और जो मोहताज बे नवा (बे सहारा) है, उस के भी पाउं दो गज़ की कमली (चादर) में दराज़, ऐसे सुहाने वक़्त, ठन्डे ज़माने में वोह मासूम, बे गुनाह, पाक दामां (पाक दामन), इस्मत पनाह (जिस की पनाह में पाक दामनी हो) अपनी राहतो आसाइश को छोड़, ख़्वाब व आराम से मुंह मोड़, जबीने नियाज़ (पेशानिए अक़्दस को) आस्तानए इज़्ज़त पर (बारगाहे इलाही में) रखे (हुवे) है कि इलाही ! मेरी उम्मत सियाहकार है, दरगुज़र फ़रमा और उन के तमाम जिस्मों को आतिशे दोज़ख़ (दोज़ख़ की आग) से बचा।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...फ़तावा रज़विय्या, 30 / 716-717, मुल्तक़तन

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम आक़ा करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अपनी उम्मत से महब्बत के बारे में सुन रही हैं। आइए ! ग़ौर करें कि दुन्या में बे शुमार ऐसे लोग बसते हैं जिन का आपस में प्यार व महब्बत का रिश्ता क़ाइम होता है, मसलन वालिदैन अपनी औलाद से महब्बत करते हैं, औलाद अपने वालिदैन से महब्बत करती है, बहनें अपने भाइयों से महब्बत करती हैं, दोस्त अपने दोस्तों से महब्बत करते हैं, रिश्तेदार आपस में एक दूसरे से महब्बत करते हैं वग़ैरा मगर याद रहे ! येह सब महब्बतें आ़रज़ी होती हैं, येह महब्बतें फ़ानी होती हैं, येह महब्बतें दुन्या की ह़द तक महदूद होती हैं, इधर ज़िन्दगी की डोर कटी, उधर महब्बतों के इन तमाम सिलसिलों को गोया ब्रेक (Brake) लग जाता है और सब एक दूसरे को भूल कर अपने अपने मामूलात में मश्ग़ूल हो जाते हैं मगर याद रहे ! महब्बत का एक ऐसा रिश्ता अब भी क़ाइम है जिस को ज़वाल नहीं, जो किसी वक़्त के साथ ख़ास नहीं, गुज़रते ज़माने के साथ जिस में कमी नहीं आई और वोह है करीम व मेहरबान आक़ा, मक्के मदीने के शहनशाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अपनी उम्मत से महब्बत का रिश्ता। जी हां ! आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को अपनी ह़याते ज़ाहिरी में भी याद रखा, क़ब्रे अत़्हर में जिस्मे अन्वर को उतारा जा रहा था, तो उस वक़्त भी उम्मत को याद किया, क़ब्रे अन्वर में दाख़िल होने के बाद भी याद फ़रमा रहे हैं, ह़त्ता कि क़ियामत में भी आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत को याद फ़रमा रहे होंगे। आइए ! इस ज़िम्न में दो वाक़िआ़त सुनिए और अपना ईमान ताज़ा कीजिए। चुनान्चे,

﴾1﴿...ता क़ियामत "उम्मती उम्मती" फ़रमाएंगे

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुसम رَضِیَ اللهُ عَنْه वोह शख़्स थे जो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़ब्रे अन्वर में उतारने के बाद सब से आख़िर में बाहर

www.dawateislami.net

आए थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का बयान है कि मैं ही आख़िरी शख़्स हूं जिस ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का रूए मुनव्वर क़ब्रे अत्हर में देखा था । मैं ने देखा कि सुल्ताने मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ब्रे अन्वर में अपने लब्हाए मुबारका को जुम्बिश फ़रमा रहे थे (यानी मुबारक होंट हिल रहे थे), मैं ने अपने कानों को प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दहन (यानी मुंह) मुबारक के क़रीब किया । मैं ने सुना कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे : رَبِّ اُمَّتِی اُمَّتِی यानी परवर दगार ! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत) ।[1] और फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जब मेरी वफ़ात हो जाएगी, तो अपनी क़ब्र में हमेशा पुकारता रहूंगा : یَا رَبِّ اُمَّتِی اُمَّتِی यानी ऐ परवर दगार ! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत । यहां तक कि दूसरा सूर फूंका जाए ।[2] मेरे आक़ा आला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं :

जिन्हें मरक़द में ता ह़श्र उम्मती केह कर पुकारोगे
हमें भी याद कर लो उन में, सदक़ा अपनी रह़मत का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 39)

﴾2﴿...मुह़द्दिसे आज़म पाकिस्तान ने फ़रमाया

मुह़द्दिसे आज़म पाकिस्तान, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सरदार अह़मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाया करते थे कि हुज़ूरे पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो सारी उ़म्र हमें "**उम्मती उम्मती**" केह कर याद फ़रमाते रहे, क़ब्रे अन्वर में भी "**उम्मती उम्मती**" फ़रमा रहे हैं और ह़श्र तक फ़रमाते रहेंगे, यहां तक कि मह़शर के रोज़ भी "**उम्मती उम्मती**" फ़रमाएंगे । ह़क़ येह है कि अगर सिर्फ़ एक बार भी उम्मती फ़रमा देते और हम सारी ज़िन्दगी या नबी ! या नबी ! या रसूलल्लाह ! या ह़बीबल्लाह ! केहते, तब भी उस एक बार

1...मदारिजुन्नुबुव्वत, 2 / 442

2...کنزالعمال، کتاب القیامۃ، قسم الاقوال، جزء:۱۴، ۷/۱۷۸، حدیث:۳۹۱۰۸

www.dawateislami.net

उम्मती केहने का ह़क़ अदा नहीं हो सकता।[1] आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने नातिया दीवान **"ह़दाइक़े बख़्शिश"** में लिखते हैं :

पेशे ह़क़ मुज़्दा शफ़ाअ़त का सुनाते जाएंगे
आप रोते जाएंगे हम को हंसाते जाएंगे
वुस्अ़तें दी हैं ख़ुदा ने दामने महबूब को
जुर्म खुलते जाएंगे और वोह छुपाते जाएंगे
आंख खोलो ग़मज़दो, देखो वोह गिर्यां आए हैं
लौहे दिल से नक़्शे ग़म को अब मिटाते जाएंगे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 155, 156)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर कीजिए ! आक़ाए नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को उम्मत से कैसी उल्फ़त है कि दुन्या में तो उम्मत को याद फ़रमाते ही रहे, दुन्या में तो उम्मत पर एह़सानात फ़रमाते रहे, दुन्या में तो उम्मत के लिए आसानियों की राहें हमवार करवाते रहे, दुन्या में तो उम्मत की बिगड़ी बनाते रहे मगर क़ुरबान जाइए ! बरोज़े क़ियामत भी आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत को याद फ़रमाएंगे और उम्मतियों की मदद भी फ़रमाएंगे, बिला शुबा येह उम्मत पर हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इतना बड़ा एह़सान है कि अगर एक तो क्या, करोड़ों ज़िन्दगियां भी मिल जाएं, तब भी उम्मत इस एह़सान का बदला नहीं चुका सकती।

12 हफ़्ते तक इजतिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत कर लीजिए

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जब नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम से इतनी महब्बत फ़रमाते हैं, तो हमें भी चाहिए कि

1...आशिक़े अक्बर, स. 53

www.dawateislami.net

हम भी मीठे मीठे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी महब्बत का सुबूत दें, वोह ऐसे कि उन के फ़रामीन पर अ़मल करें, ख़ुद भी सुन्नतों पर अ़मल करें और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं। इस का बेहतरीन ज़रीआ़ आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तहरीक दावते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाना भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हर बुध को इस्लामी बहनों का हफ़्तावार इजतिमाअ़ होता है, जिस में महब्बते रसूल के जाम पिलाने के साथ साथ नेकियां करने, गुनाहों से बचने, अपने दिल में हक़ीक़ी इ़श्क़े रसूल की शम्अ़ रौशन करने की तरग़ीबात दिलाई जाती हैं, लिहाज़ा आप भी कम अज़ कम अगले 12 हफ़्तों तक के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में न सिर्फ़ ख़ुद बल्कि अपने साथ कम अज़ कम एक इस्लामी बहन को लाने की निय्यत कर लीजिए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! माहे रबीउ़ल अव्वल का महीना अपनी बरकतें लुटाता हुवा हमारे दरमियान जल्वा फ़रमा है। येह वोह मुक़द्दस महीना है जिस में हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस दुन्या में तशरीफ़ लाए। आप के मीलाद की ख़ुशी में हर मुसलमान अपने अपने अन्दाज़ में ख़ुशियां मनाता है, हमें भी मनानी चाहिए लेकिन इस दफ़्आ़ हम अपनी ख़ुशी यूं मनाएं कि हम अपने प्यारे आक़ा की मीलाद की ख़ुशी में इस्लामी बहनों में रसाइल तक़्सीम करें, बिल ख़ुसूस रिसाला "**सुब्हे बहारां**" और बिल उ़मूम दीगर रसाइल भी तक़्सीम करें। हो सकता है हमारी इस छोटी सी कोशिश से किसी इस्लामी बहन को नेकियों भरी ज़िन्दगी नसीब हो जाए और वोह गुनाहों से बच कर दूसरी इस्लामी बहनों को नेकी की दावत देने वाली बन जाए।

www.dawateislami.net

लिहाज़ा हर इस्लामी बहन ह़स्बे तौफ़ीक़ ज़ियादा, वरना 112 या कम अज़ कम 12 रुपये के मक्तबतुल मदीना के रसाइल और मदनी फूलों के मुख़्तलिफ़ पेम्फ़लेट बांटे और तक़्सीम करवाए। इसी त़रह़ सारा साल कुछ न कुछ रसाइल तक़्सीम कर के नेकी की दावत की धूमें मचाइए, शादी, ग़मी की तक़ारीब में और अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब की ख़ात़िर भी तक़्सीमे रसाइल की तरकीब कीजिए और दीगर इस्लामी बहनों को भी इस की तरग़ीब दीजिए, ढेरों ढेर सवाब मिलेगा।

बांट कर मदनी रसाइल दीन को फैलाइए
कर के राज़ी ह़क़ को, ह़क़दारे जिनां बन जाइए

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ताज़ियत के मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे ताज़ियत करने के चन्द मदनी फूल सुनती हैं। पेहले 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए : (1) जो किसी मुसीबत ज़दा से ताज़ियत करेगा, उस के लिए उस मुसीबत ज़दा जितना सवाब है।[1] (2) जो बन्दए मोमिन अपने किसी मुसीबत ज़दा भाई की ताज़ियत करेगा, **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन उसे करामत का जोड़ा पेहनाएगा।[2] ❖ ताज़ियत का माना है : मुसीबत ज़दा को सब्र की तल्क़ीन करना। ❖ ताज़ियत मस्नून (यानी सुन्नत) है।[3] ❖ दफ़्न से पेहले भी ताज़ियत जाइज़ है मगर अफ़्ज़ल येह है कि दफ़्न के बाद हो, येह उस वक़्त है कि

1...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی اجر من عزی مصابا، ۲/۳۳۸، حدیث: ۱۰۷۵

2...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب من عزی مصابا، ۲/۲۶۸، حدیث: ۱۶۰۱

3...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, 1 / 852

www.dawateislami.net

औलियाए मय्यित जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ न करते हों, वरना उन की तसल्ली के लिए दफ़्न से पेश्तर (पेहले) ही करे।[1] ❖ मुस्तह़ब येह है कि मय्यित के तमाम अक़ारिब को ताज़ियत करें, छोटे, बड़े, मर्द व औ़रत सब को मगर औ़रत को उस के मह़ारिम ही ताज़ियत करें। ताज़ियत में येह कहे : **अल्लाह** पाक मय्यित की मग़फ़िरत फ़रमाए और उस को अपनी रह़मत में जगह अ़त़ा फ़रमाए।[2] ❖ मय्यित के अइज़्ज़ा (यानी रिश्तेदारों) का घर में बैठना कि लोग उन की ताज़ियत को आएं, इस में ह़रज नहीं।[3] ❖ जो एक बार ताज़ियत कर आए, उसे दोबारा ताज़ियत के लिए जाना मक्रूह है।[4]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) और 120 सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले **"101 मदनी फूल"** और **"163 मदनी फूल"** हदिय्यतन ह़ासिल कीजिए और मुत़ालआ़ फ़रमाइए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...الجوهرة النيرة، كتاب الصلاة، باب الجنائز، ص ۱۴۱

2...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, 1 / 852

3...الدر المختار على الدر المختار، كتاب الصلاة، مطلب في كراهة الضيافة من اهل الميت، ۳/ ۱۷۶

4...الدر المختار مع رد المحتار، كتاب الصلاة، باب صلاة الجنازة، ۳/ ۱۷۷

www.dawateislami.net

बयान : 13 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

ताजदारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रहमत निशान है : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक उस पर दस रहमतें उतारता है और जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** पाक उस पर सौ रहमतें उतारता है और जो मुझ पर सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शहीदों के साथ रखेगा।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

---

1 ...معجم اوسط، ۵/ ۲۵۲، حدیث: ۷۲۳۵

2 ...معجم کبیر، ۶/ ۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। ❖ जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اِنْ شَآءَ الله आज हम **"कमालाते मुस्तफ़ा"** से मुतअ़ल्लिक़ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगी, जिस में सब से पेहले हम सुनेंगी कि मुख़्तसर सा खाना 1400 सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को कैसे काफ़ी हो गया ? और बकरी कैसे ज़िन्दा हो गई ? मोजिज़ा किसे केहते हैं ? करामत क्या होती है ? मऊनत और इस्तिद्राज क्या है ? येह भी सुनेंगी कि **अल्लाह** पाक ने हमारे नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर कैसी इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत अ़त़ा फ़रमाई है, इस के साथ साथ नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

जब किसी को बरकत की दुआ देते, तो कैसी बरकतें ज़ाहिर होती थीं, इस बारे में भी सुनेंगी। **अल्लाह** करे हम सारा बयान तवज्जोह के साथ सुनने में काम्याब हो जाएं।

बकरी कान झाड़ती उठ खड़ी हुई

मश्हूर सह़ाबिए रसूल, ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं : (ग़ज़्वए ख़न्दक़ के मौक़ेअ़ पर) ख़न्दक़ खोदते वक़्त अचानक एक ऐसी चट्टान ज़ाहिर हो गई जो किसी से न टूटती थी। जब हम ने बारगाहे रिसालत में येह माजरा अ़र्ज़ किया, तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठे, तीन दिन का फ़ाक़ा था और पेट मुबारक पर पथ्थर बंधा हुवा था, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने हाथ मुबारक से फावड़ा मारा, तो वोह चट्टान रेत के बिखरे हुवे बड़े टुकड़े की त़रह़ बिखर गई।[1]

एक और रिवायत में यूं भी आया है कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस चट्टान पर तीन मरतबा फावड़ा मारा, हर बार मारने पर उस में से एक रौशनी (Light) निकलती थी और उस रौशनी में आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शाम व ईरान और यमन के शह्रों को देख लिया और इन तीनों मुल्कों के फ़त्ह़ होने की सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को ख़ुश ख़बरी दी।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मुसल्सल फ़ाक़ों (भूका रेहने) की वज्ह से नबिय्ये करीम, रसूले अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पेट मुबारक पर पथ्थर बंधा हुवा देख कर मेरा दिल भर आया। मैं हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त ले कर अपने घर आया और अपनी ज़ौजा से कहा : मैं ने नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को

---

1 ...بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الخندق۔۔۔الخ، حدیث: ۳/۵۱، حدیث: ۴۱۰۱

2 ...المواھب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی، باب غزوۃ الخندق...الخ، ۳/۳۱

www.dawateislami.net

इस क़दर शदीद भूक की हालत में देखा है कि मुझ से सब्र न हो सका, क्या घर में कुछ खाना है ? उन्हों ने कहा : घर में एक साअ़ (तक़रीबन चार किलो) जव के इलावा कुछ भी नहीं । मैं ने कहा : तुम जल्दी से उस जव को पीस कर गूंध लो । फिर मैं ने अपने घर का पला हुवा एक बकरी का बच्चा ज़ब्ह़ कर के उस की बोटियां बनाईं और ज़ौजा से कहा : जल्द से जल्द सालन और रोटियां तय्यार कर लो, मैं हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुला कर लाता हूं । चलते वक़्त ज़ौजा ने कहा : देखो ! आक़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इलावा सिर्फ़ चन्द ही अस्ह़ाब عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को साथ लाना क्यूंकि खाना कम है, ज़ियादा अफ़राद ला कर मुझे रुस्वा मत कर देना । ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه ने ख़न्दक़ पर आ कर आहिस्ता आवाज़ में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! एक साअ़ (तक़रीबन 4 किलो) आटे की रोटियां और एक बकरी के बच्चे का गोश्त मैं ने घर में तय्यार करवाया है, लिहाज़ा आप चन्द लोगों के साथ चल कर खा लीजिए । येह सुन कर हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ ख़न्दक़ वालो ! जाबिर ने खाने की दावत दी है, लिहाज़ा सब लोग इन के घर चल कर खाना खा लें । फिर मुझ से फ़रमाया : जब तक मैं न आ जाऊं, रोटियां मत पकवाना । चुनान्चे, जब हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए, तो गूंधे हुवे आटे में अपना थूक मुबारक डाल कर बरकत की दुआ़ फ़रमाई और गोश्त की हांडी में भी अपना थूक मुबारक डाल दिया । फिर रोटी पकाने का हुक्म दिया और फ़रमाया : हांडी चूल्हे से न उतारी जाए । जब रोटियां पक गईं, तो ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه की ज़ौजा ने हांडी से गोश्त निकाल कर देना शुरूअ़ किया, एक हज़ार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने पेट भर कर खाना खा लिया मगर गूंधा हुवा आटा जितना पेहले था, उतना ही रेह गया और हांडी चूल्हे पर उसी त़रह़ जोश मारती रही ।[1]

1...सीरते मुस्तफ़ा, 325-327, बि तग़य्युरिन क़लील, بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الخندق۔۔۔الخ، ۳/۵۱، حدیث:۴۱۰۱، ملخصاً

www.dawateislami.net

ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : फिर नबिय्ये करीम, रसूले अ़ज़ीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बरतन के बीच में खाई हुई हड्डियों (Bones) को जम्अ़ किया, उन पर अपना हाथ मुबारक रखा और कुछ कलाम पढ़ा जिसे मैं ने नहीं सुना । अभी जिस का गोश्त खाया था, वोही बकरी अचानक कान झाड़ते हुवे उठ खड़ी हुई । आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : अपनी बकरी ले जाओ ! मैं बकरी अपनी ज़ौजए मोह़तरमा के पास ले आया । वोह (ह़ैरत से) बोलीं : येह क्या ? मैं ने कहा : **अल्लाह** पाक की क़सम ! येह हमारी वोही बकरी है जिस को हम ने ज़ब्ह़ किया था, दुआ़ए मुस्त़फ़ा से **अल्लाह** करीम ने इसे ज़िन्दा कर दिया है । येह सुन कर उन की ज़ौजए मोह़तरमा बे साख़्ता पुकार उठीं : मैं गवाही देती हूं कि बेशक वोह **अल्लाह** पाक के सच्चे रसूल हैं ।[1]

मुर्दों को जिलाते हैं, रोतों को हंसाते हैं आलाम मिटाते हैं, बिगड़ी को बनाते हैं
सरकार खिलाते हैं, सरकार पिलाते हैं सुल्त़ानो गदा सब को सरकार निभाते हैं

(फ़ैज़ाने सुन्नत, स. 350)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

कमालाते मुस्त़फ़ा की झलक

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर कीजिए ! हमारे हां खाना कम हो और खाने वाले अफ़राद ज़ियादा हो जाएं, तो सिवाए खाने की मिक़्दार बढ़ाने के और कोई चारा नहीं होता । चार किलो आटा और बकरी का बच्चा चाहे कितना भी सेह़तमन्द हो मुश्किल से पचास, साठ अफ़राद के पेट भर कर खाने का सामान बन सकता है लेकिन नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़

1 ...خصائص کبریٰ، باب آیاتہ فی احیاء الموتی و کلامھم، ۲/ ۱۱۲

www.dawateislami.net

उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के थूक मुबारक की बरकत से इतना खाना न सिर्फ़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मुकम्मल जमाअ़त को पूरा हो गया बल्कि जितना पकाया था उतना ही बाक़ी बचा रहा और फिर बकरी की बची हुई हड्डियों पर कलाम पढ़ा, तो वोह गोश्त पोस्त पेहन कर पेहले जैसी बकरी हो कर कान झाड़ती उठ खड़ी हुई । येह हिकायत सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कई कमालात को वाज़ेह़ करती है ।

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस ह़दीसे पाक के तह़्त जो कुछ इरशाद फ़रमाया है, उस में से कुछ सुनती हैं : ❖ जिन अफ़राद ने खाना खाया उन की तादाद 1400 थी । उन में से 1000 तो ख़न्दक़ खोदने वाले थे और 400 वोह ह़ज़रात थे जो बाद में बचे खुचे रहे जो मदीने शरीफ़ के घरों, बाज़ारों वग़ैरा में थे, मदीनए मुनव्वरा के बच्चे, औ़रतें भी इस दावत में शामिल कर ली गई थीं, ग़रज़ कि खाने वालों के मेले लग गए थे । ख़ुश नसीब थे वोह लोग जो इस बरकत वाले खाने से मुशर्रफ़ हुवे । ❖ हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन सब की दावत कर दी, उस दिन लंगर हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का था (और) घर ह़ज़रते जाबिर (رَضِیَ اللهُ عَنْه) का, लिहाज़ा येह एलान और दावत बिल्कुल दुरुस्त है । जो चीज़ इस्तिमाल से घटे नहीं, वोह मालिक की बिग़ैर इजाज़त इस्तिमाल की जा सकती है, जैसे किसी के चराग़ की रौशनी में मुत़ालआ़ कर लेना, किसी की दीवार से साया ले लेना । आज येह खाना उन खाने वालों के इस्तिमाल से घटेगा नहीं, लिहाज़ा ह़ज़रते जाबिर (رَضِیَ اللهُ عَنْه) की बिग़ैर इजाज़त हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब को दावत दे दी । ❖ ह़ज़रते जाबिर (رَضِیَ اللهُ عَنْه) तमाम आदमियों को दावत देने और उन में एलान करने से ह़ैरान रेह गए, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की ह़ैरानी मुलाह़ज़ा फ़रमाई और तस्कीन (तसल्ली) देने के लिए येह फ़रमाया : घबराओ नहीं !

www.dawateislami.net

अल्लाह (पाक) फ़ज़्ल करेगा, जो लाएगा, वोह खिलाएगा, तुम इतना करना कि मेरे आने से पेहले हांडी चूल्हे से न उतारना और आटा पकाना शुरूअ़ न करना फिर क़ुदरते ख़ुदा का तमाशा देखना। ❖ इस वाक़िए़ में हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लुआ़ब (थूक) शरीफ़ के बहुत से मोजिज़ात हैं : बोटियों में कसरत व बरकत, शोरबे के पानी में बरकत, शोरबे के नमक, मिर्च मसालहे, घी में बरकत व कसरत, आटे में बरकत व कसरत, जिस लकड़ी से येह चीज़ें पकाई गईं उस में बरकत, रोटी पकाने वाली के हाथ में क़ुव्वत व ता़क़त, वरना इतनी बड़ी जमाअ़त की दावत के लिए कई मन गोश्त, लकड़ियां, आटा चाहिए, बहुत पकाने वाले और बहुत तन्नूर चाहिएं, जैसा कि आज कल शादियों की दावतों में देखा जाता है। ❖ (ह़ज़रते) मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के अ़सा (यानी लाठी) से पानी के 12 चश्मे पथ्थर (Stone) से फूटे, यहां हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लुआ़ब (थूक मुबारक) से हांडी से बोटियों, शोरबे के चश्मे फूटे।[1]

धारे चलते हैं अ़त़ा के वोह है क़त़रा तेरा
तारे खिलते हैं सख़ा के वोह है ज़र्रा तेरा

फ़ैज़ है या शहे तस्नीम निराला तेरा
आप प्यासों के तजस्सुस में है दरया तेरा

आस्मां ख़्वान, ज़मीं ख़्वान, ज़माना मेहमान
साह़िबे ख़ाना लक़ब किस का है तेरा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 15, 16)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 177-179, मुल्तक़त़न

www.dawateislami.net

मोजिज़े की तारीफ़

हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मोजिज़े की तारीफ़ बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : वोह काम जिस के मुक़ाबले से बल्कि उस की समझ से मख़्लूक़ आजिज़ हो, उसे **"मोजिज़ा"** केहते हैं। शरीअ़त की इस्तिलाह़ में मोजिज़ा हर वोह अ़जीबो ग़रीब ख़िलाफ़े आ़दत काम है जो नुबुव्वत का दावा करने वाले के हाथ पर ज़ाहिर हो। दावए नुबुव्वत से पेहले जो (ख़िलाफ़े आ़दत काम) नबी के हाथ पर ज़ाहिर हो, उसे केहते हैं **"इरहास"**। औलियाउल्लाह के हाथ पर जो अ़जीब बात ज़ाहिर हो, उसे केहते हैं **"करामत"**। आ़म मोमिनीन के हाथ पर अगर कभी कोई अ़जीब बात ज़ाहिर हो, वोह है **"मऊ़नत"** और कुफ़्फ़ार के हाथ से जो अ़जूबा (अ़जीबो ग़रीब काम) ज़ाहिर हो, वोह है **"इस्तिद्राज"**। मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : सारे नबियों के मोजिज़े क़िस्से (Stories) बन गए, हमारे हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बहुत से मोजिज़े ता क़ियामत देखने में आएंगे, ज़िक्रे कसीर, महबूबिय्यते कुरआने मजीद, पथ्थरों, जानवरों पर हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का नाम कन्दा (नक़्श किया हुवा) मिलना वग़ैरा, येह ज़िन्दा जावेद मोजिज़ात हैं। हुज़ूर के औलियाउल्लाह, उन की करामतें, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ज़िन्दा मोजिज़े हैं।[1]

जामेउ़ल मोजिज़ात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मोजिज़ा, नबी की नुबुव्वत की दलील हुवा करता है, लिहाज़ा **अल्लाह** पाक ने हर नबी को उस दौर के

1...मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 162

www.dawateislami.net

माहोल और उन की उम्मत के मिज़ाजे अक़्लो फ़हम (सोचने समझने की सलाहिय्यत) के मुनासिब मोजिज़ात से नवाज़ा, मसलन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के दौरे नुबुव्वत में चूंकि जादू (Magic) के ज़रीए कारनामे अपनी तरक़्क़ी की आला तरीन मन्ज़िल पर पहुंचे हुवे थे, इस लिए **अल्लाह** पाक ने आप को **"यदे बैज़ा"** (सफ़ेद हाथ) और **"अ़सा"** (लाठी) के मोजिज़ात अ़ता फ़रमाए, जिन से आप ने जादूगरों के साहिराना (जादूई) कारनामों पर इस त़रह़ ग़लबा ह़ासिल फ़रमाया कि तमाम जादूगर सजदे में गिर पड़े और आप पर ईमान लाए। इसी त़रह़ ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में इल्मे त़िब इन्तिहाई तरक़्क़ी पर पहुंचा हुवा था और उस दौर के त़बीबों यानी डॉक्टरों ने बड़े बड़े अमराज़ का इलाज कर के अपनी फ़न्नी महारत से तमाम इन्सानों को मस्ह़ूर (अपने क़ाबू में) कर रखा था, इस लिए **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को मादरज़ाद (पैदाइशी) अन्धों और कोढ़ियों को शिफ़ा देने और मुर्दों को ज़िन्दा कर देने का मोजिज़ा अ़ता फ़रमाया, जिस को देख कर आप के दौर के अत़िब्बा (यानी डॉक्टरों) के होश उड़ गए और वोह ह़ैरान रेह गए, बिल आख़िर उन्हों ने इन मोजिज़ात को इन्सानी कमालात से बाला तर (बहुत ऊंचा) मान कर आप की नुबुव्वत का इक़रार कर लिया। अल ग़रज़ ! हर नबी को उस दौर के माहोल के मुत़ाबिक़ और उस की क़ौम के मिज़ाज और उन की त़बीअ़त के मुनासिब किसी को एक, किसी को दो, किसी को इस से ज़ियादा मोजिज़ात अ़ता हुवे मगर नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां, सरवरे कौनो मकां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चूंकि तमाम नबियों के भी नबी हैं और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुक़द्दसा तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस ज़िन्दगियों का ख़ुलासा (Summary) है, आप की तालीम तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की तालीमात का इत्र (यानी निचोड़) है और आप दुन्या में एक आ़लमगीर दीन ले कर तशरीफ़ लाए थे और आ़लमे काइनात में अव्वलीनो आख़िरीन

www.dawateislami.net

(पेहले और बाद) की तमाम अक़्वाम और मिल्लतें आप की मुक़द्दस दावत की मुख़ातब थीं, इस लिए **अल्लाह** पाक ने आप की ज़ाते मुक़द्दसा को अम्बियाए साबिक़ीन (पिछले नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के तमाम मोजिज़ात का मजमूआ (Collection) बना दिया और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को क़िस्म क़िस्म के ऐसे बे शुमार मोजिज़ात से सरफ़राज़ फ़रमाया जो हर तबक़े, हर गिरोह (जमाअ़त), हर क़ौम और तमाम अहले मज़ाहिब के मिज़ाजे अ़क़्लो फ़हम के लिए ज़रूरी थे।[1]

इस के इलावा बे शुमार ऐसे मोजिज़ात से भी **अल्लाह** पाक ने अपने आख़िरी पैग़म्बर, शफ़ीए महशर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुमताज़ फ़रमाया जो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़साइस केहलाते हैं, यानी येह आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वोह कमालातो मोजिज़ात हैं जो किसी और नबी व रसूल को अ़ता नहीं किए गए।[2] लिहाज़ा हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात जामेउ़ल मोजिज़ात है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सब से औला व आला हमारा नबी !

तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तमाम कमालात, तमाम अच्छाइयां, औसाफ़ और सारे के सारे मोजिज़ात आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात में मौजूद हैं, तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अफ़्ज़लिय्यत को क़ुरआने पाक में भी बयान किया गया। चुनान्चे, पारह 3, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 253 में इरशादे बारी है :

1...सीरते मुस्तफ़ा, स. 712 ता 714, मुलख़्ख़सन व मुल्तक़तन

2...सीरते मुस्तफ़ा, स. 820, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ (پ۳، البقرة: ۲۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह रसूल हैं, कि हम ने इन में एक को दूसरे पर अफ़्ज़ल किया, इन में किसी से **अल्लाह** ने कलाम फ़रमाया और कोई वोह है जिसे सब पर दरजों बुलन्द किया।

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 1, सफ़्हा नम्बर 379 पर इस आयते करीमा के तह़्त लिखा है : ❖ जिन के बारे में फ़रमाया गया कि हम ने उन्हें दरजों बुलन्दी अ़ता फ़रमाई, इस से मुराद हमारे आक़ा व मौला, मल्जा व मावा (पनाह मिलने की जगह) हुज़ूरे पुरनूर, सय्यिदुल अम्बिया, जनाबे मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। ❖ आप को कसीर (बे शुमार) दरजात के साथ तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई। ❖ इस जगह आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नाम का ज़िक्र न फ़रमाना भी आप की बुलन्दिए शान के लिए है। इस त़रह़ कि बताना मक़्सूद है कि जब भी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर फ़ज़ीलत का ज़िक्र किया जाए, तो किसी और त़रफ़ गुमान न जाए बल्कि सिर्फ़ हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ात ही ज़ेह्न में आए। ❖ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वोह ख़साइस (Qualities) व कमालात जिन में आप तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर फ़ाइक़ व अफ़्ज़ल हैं और उन में आप का कोई शरीक नहीं, बे शुमार हैं क्यूंकि क़ुरआने करीम में येह इरशाद हुवा है कि दरजों बुलन्द किया और उन दरजों का कोई शुमार क़ुरआने करीम में ज़िक्र नहीं फ़रमाया गया, तो अब उन दरजों की कौन ह़द लगा सकता है। ❖ आप को मिलने वाले ख़साइस में से कुछ येह हैं कि आप की रिसालत आ़म्मा है, यानी तमाम काइनात आप की उम्मत है। आप पर नुबुव्वत ख़त्म की गई। आप को तमाम अम्बियाए किराम

www.dawateislami.net

عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ज़ियादा मोजिज़ात अ़ता फ़रमाए गए। आप की उम्मत को तमाम उम्मतों पर अफ़्ज़ल किया गया। हौज़े कौसर, मक़ामे महमूद, शफ़ाअ़ते कुब्रा आप को अ़ता हुई। शबे मेराज ख़ास क़ुर्बे इलाही आप को मिला। इस के इ़लावा बे इन्तिहा ख़साइस आप को अ़ता हुवे।[1]

सब से औला व आला हमारा नबी सब से बाला व वाला हमारा नबी
अपने मौला का प्यारा हमारा नबी दोनों आ़लम का दुल्हा हमारा नबी
बुझ गईं जिस के आगे सभी मश्अ़लें शम्अ़ वोह ले कर आया हमारा नबी
ख़ल्क़ से औलिया, औलिया से रुसुल और रसूलों से आला हमारा नबी
मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार ताजदारों का आक़ा हमारा नबी
क्या ख़बर कितने तारे खिले छुप गए पर न डूबे, न डूबा हमारा नबी

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 138, 139)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मोजिज़ात बे शुमार हैं। **अल्लाह** पाक ने अपनी अ़ता से आप को ऐसा ज़बरदस्त इख़्तियार दिया और कुव्वत अ़ता फ़रमाई है कि जिस का अन्दाज़ा भी नहीं किया जा सकता। आप चाहें तो चांद के टुकड़े कर दें, आप चाहें तो डूबा सूरज पलटा दें, आप चाहें तो पानी में पथ्थर तैरा दें, आप चाहें तो लकड़ियां बल्ब की त़रह़ रौशनी देने लगें, आप चाहें तो थूक मुबारक डाल कर खारी कुंवों को मीठा कर दें, आप चाहें तो उंगलियों से पानी के चश्मे बहा दें, आप चाहें तो दरख़्तों और पथ्थरों से कलाम करें, आप चाहें तो दरख़्त आप की बारगाह में ह़ाज़िरी को आएं, आप चाहें तो थोड़ा सा दूध सत्तर आदमियों को काफ़ी हो जाए, आप चाहें

1...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पा. 3, अल बक़रह, तह़्तुल आयत : 253, 1 / 380

www.dawateislami.net

तो थोड़ा सा खाना कसीर जमाअ़त को काफ़ी हो, आप चाहें तो जानवर इन्सानी बोली बोलने लगें, अल ग़रज़ ! आप जैसा चाहें इस दुन्याए रंगो बू में तसर्रुफ़ फ़रमाएं, आप के पास सब इख़्तियारात हैं। आइए ! हुसूले इल्मे दीन की निय्यत से चन्द मज़ीद मोजिज़ाते रसूल सुनती हैं : चुनान्चे,

खाने में बरक्त हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मुझे मेरे वालिद ने बताया : हम एक बार जंगी सफ़र में नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे और ज़ादे राह तक़रीबन ख़त्म हो चुका था, जब भूक की शिद्दत ने तंग किया, तो लोगों ने आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बात की इजाज़त (Permission) त़लब की, कि बाज़ सुवारियां ज़ब्ह़ कर ली जाएं ताकि कुछ तो भूक कम की जा सके। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने जब येह देखा कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें इस बात की इजाज़त देने ही वाले हैं, तो उन्हों ने आगे बढ़ कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! अगर हम अपनी सुवारियां ज़ब्ह़ कर के खाना शुरूअ़ कर दें, तो दुश्मन के सामने हम भूके और बिग़ैर सुवारियों के होंगे। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरी राए येह है कि आप हमारा बचा हुवा ज़ादे राह मंगवाएं फिर उसे जम्अ़ फ़रमाएं फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस में बरकत की दुआ़ फ़रमाएं, तो **अल्लाह** पाक आप की दुआ़ से उस खाने में ऐसी बरकत पैदा फ़रमाएगा कि वोह खाना हम सब के लिए काफ़ी व वाफ़ी होगा। तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बचा हुवा ज़ादे राह त़लब फ़रमाया। चुनान्चे, जिस के पास जो कुछ बचा हुवा था, सब ने बारगाहे रिसालत में ला कर पेश कर दिया। रावी केहते हैं : فَجَمَعَهَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ثُمَّ قَامَ فَدَعَا مَاشَآءَ اللّٰهُ اَنْ يَّدْعُوَ

www.dawateislami.net

प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन तमाम चीज़ों को एक जगह जम्अ़ कर दिया फिर खड़े हुवे और उस पर **अल्लाह** पाक की मर्ज़ी से जो दुआ़ फ़रमानी थी, फ़रमा दी। फिर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लश्कर के तमाम लोगों को हुक्म इरशाद फ़रमाया : अपने अपने बरतन इस से भर लें। रावी फ़रमाते हैं : فَمَا بَقِيَ فِي الْجَيْشِ وِعَاءٌ اِلَّامَلَاُوْهُ وَبَقِيَ مِثْلُهٗ लश्कर में मौजूद तमाम के तमाम बरतन उस से भर गए और वोह वैसा ही रहा, उस में भी कुछ कमी न आई। येह देख कर हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इतना मुस्कुराए कि आप की मुबारक दाढ़ें ज़ाहिर हो गईं। इरशाद फ़रमाया : اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنِّيْ رَسُوْلُ اللهِ لَا يَلْقَى اللهَ عَبْدٌ مُّؤْمِنٌ بِهِمَا اِلَّا حُجِبَتْ عَنْهُ النَّارُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** पाक के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं **अल्लाह** पाक का रसूल हूं। येह दोनों कलिमात पढ़ने वाला कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक से इस ह़ाल में मुलाक़ात करेगा कि उस के और दोज़ख़ के दरमियान एक आड़ (Barrier) क़ाइम कर दी जाएगी।[1]

कौनैन बनाए गए सरकार की ख़ातिर
कौनैन की ख़ातिर तुम्हें सरकार बनाया

कुन्जी तुम्हें दी अपने ख़ज़ानों की ख़ुदा ने
महबूब किया, मालिको मुख़्तार बनाया

(ज़ौक़े नात, स. 47-48)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़दीसे पाक से जहां रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ़ की बरकतें मालूम हुईं, वहीं अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِيَ اللهُ عَنْه के तर्ज़े

1 ...مسند امام احمد، مسند المکیین، ۵/ ۲۶۴، حدیث: ۱۵۴۴۹

www.dawateislami.net

अ़मल से येह भी पता चला कि हमेशा दूसरों की ख़ैर ख़्वाही की कोशिश करनी चाहिए।

ख़ैर ख़्वाही कीजिए !

अफ़्सोस ! आज हमारे मुआ़शरे में ख़ैर ख़्वाही का जज़्बए ख़ैर भी दम तोड़ता नज़र आ रहा है, ह़ालांकि हमारा दीन **''दीने इस्लाम''** इन्सानिय्यत का सब से बड़ा ख़ैर ख़्वाह है। एक दूसरे की भलाई चाहना और ख़ैर ख़्वाही करना इस की तालीमात का सुनेहरी बाब है। रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की ख़ूब तरग़ीब इरशाद फ़रमाई है। चुनान्चे, ह़ज़रते तमीम दारी رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दीन, ख़ैर ख़्वाही है। हम ने अ़र्ज़ की : किस की ? फ़रमाया : **अल्लाह** पाक की, उस की किताब, उस के रसूल और मुसलमानों के इमामों और अ़वाम की।[1]

मक्तबतुल मदीना की किताब **''मुन्तख़ब ह़दीसें''** सफ़ह़ा नम्बर 231 पर लिखा है : ख़ैर ख़्वाही के मफ़्हूम में बड़ी वुस्अ़त है और ह़क़ीक़त तो येह है कि **''मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही''** येह एक ऐसा अ़मले ख़ैर है कि अगर हर मुसलमान इस तालीमे नुबुव्वत को ह़िर्ज़े जान बना कर इस पर अ़मल शुरूअ़ कर दे, तो एकदम मुसलमानों के बिगड़े हुवे मुआ़शरे की काया पलट जाए और मुस्लिम मुआ़शरा आराम व राह़त और सुकूनो इत़्मीनान का एक ऐसा गेहवारा बन जाए कि दुन्या ही में बिहिश्त (जन्नत) के सुकून व इत़्मीनान का जल्वा नज़र आने लगे।[2]

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان ان الدین النصیحت، ص۵۱، حدیث: ۱۹۶

2...मुन्तख़ब ह़दीसें, स. 231

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! लफ़्ज़े **"ख़ैर ख़्वाही"** अपने मफ़्हूम के एतिबार से आ़म है, मसलन अपने महा़रिम और दीगर इस्लामी बहनों के साथ नर्मी व भलाई से पेश आना, उन की माली मदद करना, उन की परेशानी दूर करना, उन्हें कपड़े फ़राहम करना, उन्हें खाना खिलाना, उन्हें आराम व सुकून फ़राहम करना, उन की ज़रूरी ख़्वाहिशात को पूरा करना, शरई रेहनुमाई करना या करवा देना, भटकी हुई इस्लामी बहनों को राहे रास्त पर लाना, अल ग़रज़ ! किसी भी त़रह़ से इस्लामी बहनों के साथ ख़ैर ख़्वाही करना सवाब का काम है लेकिन **अफ़्सोस** ! फ़ी ज़माना हमारी ह़ालत येह है कि ❖ हम **"या शैख़ ! अपनी अपनी देख"** के तह़्त सिर्फ़ अपने मुआ़मलात सुलझाने की फ़िक्र में रेहती हैं । ❖ हमारे आस पास कितनी इस्लामी बहनें परेशान ह़ाल हैं, हमें इस का कोई एह़सास नहीं होता । ❖ वोह इस्लामी बहनें जिन से हमारा रोज़ाना वासित़ा पड़ता है, उन में से कितनी ख़ुश दिली से और कितनी परेशान चेहरों से हमें मिलती हैं, हम ने कभी इस पर ग़ौर किया ? ❖ हमारी जानने वालियों में से कितनी इस्लामी बहनें क़र्ज़ों में जकड़ी हुई हैं बल्कि ख़ानदान में हमारे कितने महा़रिम रिश्तेदार ग़ुर्बत व अफ़्लास की चक्की में पिस रहे हैं, हमें इस की कोई ख़बर नहीं । ❖ हमारी पड़ोसनों को दो वक़्त का खाना भी नसीब होता है या नहीं ? हमें इस से कोई सरोकार नहीं । ❖ पेहनने के लिए मुनासिब कपड़े भी मिलते हैं या नहीं ? हमें इस से कोई ग़रज़ नहीं । ❖ कितनी बीमार इस्लामी बहनों की रातों की नींद और दिन का सुकून पैसा न होने की वज्ह से बरबाद हो रहा है, इस त़रफ़ हमारी तवज्जोह ही नहीं होती ।

याद रखिए ! अच्छी मुसलमान ख़ातून वोही है जो अपने लिए पसन्द करे, वोही दूसरी इस्लामी बहन के लिए भी पसन्द करे । इस बात को पेशे नज़र रखते हुवे हमें भी चाहिए कि जो हम अपने लिए पसन्द करें, वोही अपनी इस्लामी बहन के लिए भी पसन्द करें । आइए ! अपने

www.dawateislami.net

दिल में प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुख्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही का जज़्बा बेदार करने के लिए फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनती हैं। चुनान्चे,

ख़ैर ख़्वाही की फ़ज़ीलत

इरशाद फ़रमाया : लोगों के लिए भी वोही पसन्द करो, जो अपने लिए करते हो और जो अपने लिए ना पसन्द करते हो, उसे दूसरों के लिए भी ना पसन्द करो, जब तुम बोलो, तो अच्छी बात करो या ख़ामोश रहो।[1]

इजतिमाअ़ की तरग़ीब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस्लामी बहनों की दीनी ख़ैर ख़्वाही का एक बेहतरीन ज़रीआ़ उन्हें आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी के तह़्त होने वाले इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करवाना भी है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक हो कर इस्लामी बहनें न सिर्फ़ इल्मे दीन ह़ासिल करती हैं बल्कि अपनी दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिए भी कोशिशें करती हैं, यूं इल्मे दीन के साथ साथ अ़मले ख़ैर की बरकतें भी पाती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हज़ारों मक़ामात पर इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त होते हैं, जिन में लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें शिर्कत कर के इल्मे दीन ह़ासिल करते और इस मदनी मक़्सद के साथ वापस लौटते हैं कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है,** اِنْ شَآءَ الله"

---

1 ...مسند امام احمد، مسند الانصار، ۸/ ۲۶۶، حدیث: ۲۲۱۹۳

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! सिर्फ़ मुल्के मुर्शिद में इस्लामी भाइयों के सात सौ से ज़ाइद जबकि इस्लामी बहनों के सात हज़ार से ज़ाइद हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त होते हैं। आप तमाम इस्लामी बहनों से गुज़ारिश है कि कम अज़ कम 12 हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में पाबन्दी से शिर्कत की निय्यत कीजिए। **अल्लाह** करीम अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

ख़ज़ाने लुटाने वाले आक़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम मोजिज़ाते मुस्तफ़ा से मुतअ़ल्लिक़ सुन रही थीं। आप عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सरापा मोजिज़ा हैं, जितनी कसरत से मोजिज़ात आप से ज़ाहिर हुवे और किसी नबी से नहीं हुवे। अहादीसे त़य्यिबा में कई ऐसे वाक़िआ़त मिलते हैं कि जब सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तवज्जोह से थोड़ा सा खाना कई अफ़राद के लिए कई कई महीनों के लिए काफ़ी हो जाता था। इन वाक़िआ़त से अन्दाज़ा होगा कि **अल्लाह** पाक ने अपने मदनी ह़बीब صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कितने इख़्तियारात अ़ता फ़रमाए हैं। जिस के ह़क़ में आप के हाथ उठ जाते या जिस के लिए आप के मुबारक होंट ह़रकत फ़रमाते, दुन्या व आख़िरत की बरकतें उस का मुक़द्दर बन जातीं। आइए ! इल्मे दीन ह़ासिल करने की निय्यत से दो मोजिज़ात सुनती हैं : चुनान्चे,

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर कुछ खाना त़लब किया, आप صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे निस्फ़ वस्क़ (यानी तक़रीबन 120 किलोग्राम) जव दे दिए, वोह आदमी, उस की बीवी और उन के मेहमान (एक अ़र्से तक) वोही जव खाते रहे, यहां तक कि एक दिन उस

www.dawateislami.net

शख़्स ने वोह जव माप (तोल) लिए फिर वोह हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुवा, तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर तुम उसे न मापते (यानी न तोलते), तो तुम वोह जव खाते रेहते और वोह यूंही बाक़ी रेहते।[1]

सहाबिए रसूल, हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه का बयान है : मैं हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में कुछ खजूरें (Dates) ले कर हाज़िर हुवा और अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ! इन खजूरों में बरकत की दुआ फ़रमा दीजिए। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन खजूरों को जम्अ कर के दुआए बरकत फ़रमा दी और इरशाद फ़रमाया : तुम इन को अपने तोशादान में रख लो और जब चाहो हाथ डाल कर इस में से निकालते रहो लेकिन कभी तोशादान झाड़ कर ख़ाली न करना। हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه उन खजूरों में से ख़ुद भी खाते, लोगों को भी खिलाते और मनों के हिसाब से **अल्लाह** पाक की राह में भी देते। आप हमेशा उस थैली को अपनी कमर से बांधे रेहते थे, यहां तक कि अमीरुल मोमिनीन, हज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ عَنْه की शहादत के दिन वोह थैली उन की कमर से कट कर कहीं गिर गई।[2]

इन्हें ख़ुदा ने किया अपने मुल्क का मालिक
इन्हीं के क़ब्ज़े में रब के ख़ज़ाने आए हैं
जो चाहेंगे, जिसे चाहेंगे, येह उसे देंगे
करीम हैं येह ख़ज़ाने लुटाने आए हैं
सुनोगे "**ला**" न ज़बाने करीम से **नूरी**
येह फ़ैज़ो जूद के दरया बहाने आए हैं

(सामाने बख़्शिश, स. 139)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1 ...مسلم، کتاب الفضائل، باب فی معجزات النبی، ص۹۶۳، حدیث: ۵۹۴۶

2 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب لابی بریرۃ، ۵/۴۵۴، حدیث: ۳۸۶۵

www.dawateislami.net

तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ीद मोजिज़ातो कमालात के बारे में जानने के लिए मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा मदनी रसाइल को ख़ुद भी पढ़िए और दूसरी इस्लामी बहनों में तक़्सीम भी कीजिए। अगर हम चाहती हैं कि मुआ़शरे की इस्लाह़ हो जाए, अगर हम चाहती हैं कि इस्लामी बहनों में भी ह़क़ीक़ी मदनी इन्क़िलाब आ जाए, अगर हम चाहती हैं कि इस्लामी बहनें भी ज़ेवरे इ़ल्म से आरास्ता हो जाएं, अगर हम चाहती हैं कि इस्लामी बहनें भी नेक व परहेज़गार बन जाएं, अगर हम चाहती हैं कि मुआ़शरे से बे ह़याई का ख़ातिमा हो जाए, अगर हम चाहती हैं कि इस्लामी बहनें, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه, मर्कज़ी मजलिसे शूरा, आ़लमी मजलिसे मुशावरत और अपने वालिदैन की फ़रमां बरदार बन जाएं, अगर हम चाहती हैं कि **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम से राज़ी हो जाएं, अगर हम चाहती हैं कि इस्लामी बहनों को भी सह़ाबए किराम व सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ اَجْمَعِيْن, औलियाए किराम व वलिय्यात رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की सच्ची पक्की मह़ब्बत व ग़ुलामी नसीब हो जाए, तो मक्तबतुल मदीना से मदनी रसाइल ह़ासिल कर के इन्हें इस्लामी बहनों और अपने मह़ारिम रिश्तेदारों में तक़्सीम कर के अपने लिए सदक़ए जारिया का सामान कीजिए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं। ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने

www.dawateislami.net

जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की, उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।[1]

बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब सुनती हैं : ❖ चार ज़ानू (यानी पालती मार कर) बैठना नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है। ❖ जहां कुछ धूप और कुछ छांव हो, वहां न बैठें। **अल्लाह** पाक के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई साए में हो और उस पर से साया रुख़्सत हो जाए और वोह कुछ धूप, कुछ छांव में रेह जाए, तो उसे चाहिए कि वहां से उठ जाए।[2] ❖ क़िब्ला रुख़ हो कर (क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के) बैठें।[3] ❖ जब कभी इजतिमाअ़ या मेह़फ़िल में आएं, तो इस्लामी बहनों को फलांग कर आगे न जाएं, जहां जगह मिले, वहीं बैठ जाएं। ❖ जब बैठें, तो जूते उतार लें, आप के क़दम आराम पाएंगे।[4] ❖ मेह़फ़िल से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ तीन बार पढ़ लें, तो गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे और जो इस्लामी बहन मेह़फ़िले ख़ैर व मेह़फ़िले ज़िक्र में पढ़े, तो उस के लिए उस ख़ैर पर मोह़र लगा दी जाएगी। वोह दुआ येह है : سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ **तर्जमा :** तेरी ज़ात पाक है और ऐ **अल्लाह** पाक ! तेरे ही लिए तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई

---

1 ...مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵

2 ...ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی الجلوس بین الظل والشمس، ۴/۳۳۸، حدیث: ۴۸۲۱

3...रसाइले अत्तारिय्या, हिस्सा : 2, स. 229

4 ...جامع صغیر، ص ۴۰، حدیث: ۵۵۴

www.dawateislami.net

माबूद नहीं, तुझ से बख़्शिश चाहती हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करती हूं।[1]

❖ जब कोई सय्यिदा इस्लामी बहन या वालिदैन आएं, तो ताज़ीमन खड़ी हो जाना सवाब है।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात), 120 सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"**, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले **"101 मदनी फूल"** और **"163 मदनी फूल"** हदिय्यतन त़लब कीजिए और पढ़िए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1 ...ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، ۴/۳۴۷، حدیث: ۴۸۵۷

www.dawateislami.net

बयान : 14 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब जुमेरात का दिन आता है, **अल्लाह** करीम फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं, वोह लिखते हैं कौन जुमेरात के दिन और जुम्आ की रात मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ता है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।[2]

अहम नुक्ता : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा

1...کنز العمال، کتاب الاذکار، باب فی الصلاۃ علیہ۔۔۔الخ، جز: ۱، ۱/ ۲۵۰، حدیث: ۲۱۷۴

2...معجم کبیر، ۶/ ۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

कर बयान सुनूंगी । ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी । ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी । ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी । ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी । ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी । ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं । ❖ जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज के हमारे बयान का मौज़ूअ़ है **"इमाम मालिक का इश्क़े रसूल"** जिस में हम आ़लिमे मदीना, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुख़्तसर तआ़रुफ़, आप की ख़िदमात और आप के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने रसूल सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगी । शह्रे मदीना, ख़ाके मदीना और ह़दीसे पाक के अदबो ताज़ीम के बारे में आप की सीरत के चन्द ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त भी बयान करेंगे । इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कितने बड़े इ़बादत गुज़ार थे, तिलावते क़ुरआन से आप को कैसी मह़ब्बत थी और आप का अन्दाज़े इ़बादत किस क़दर ह़सीन था, इस बारे में उ़लमाए किराम के इरशादात भी सुनेंगी । **अल्लाह** करे हम दिलजम्ई के साथ अव्वल ता आख़िर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल कर लें ।

आइए ! सब से पेहले एक वाक़िआ़ सुनती हैं । चुनान्चे,

www.dawateislami.net

इमाम मालिक और मस्जिदे नबवी का अदब

एक दफ़्आ ख़लीफ़ा अबू जाफ़र मन्सूर ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मस्जिदे नबवी शरीफ़ में मुनाज़रा किया, दौराने मुनाज़रा अबू जाफ़र की आवाज़ कुछ बुलन्द हुई, तो इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस को (नेकी की दावत देते हुवे) फ़रमाया : ऐ अमीरल मोमिनीन ! इस मस्जिद में अपनी आवाज़ ऊंची न करो क्यूंकि **अल्लाह** पाक ने एक जमाअ़त को अदब सिखाते हुवे इरशाद फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ (پ۲۶،الحجرات:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी आवाज़ें ऊंची न करो उस ग़ैब बताने वाले (नबी) की आवाज़ से ।

दूसरी जमाअ़त की तारीफ़ करते हुवे फ़रमाया :

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ (پ۲۶،الحجرات:۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं रसूलुल्लाह के पास ।

और एक क़ौम की मज़म्मत बयान करते हुवे फ़रमाया :

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ (پ۲۶،الحجرات:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं ।

फिर इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : बेशक रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व ह़ुर्मत अब भी उसी त़रह़ है जिस त़रह़ आप की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में थी । येह सुन कर अबू जाफ़र ख़ामोश हो गया । फिर पूछा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! मैं क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के दुआ़ मांगूं या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर ?

www.dawateislami.net

फ़रमाया : तुम क्यूं हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुंह फेरते हो ? हालांकि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हारे और तुम्हारे वालिद हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक की बारगाह में वसीला हैं, लिहाज़ा तुम हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से शफ़ाअत मांगो फिर **अल्लाह** करीम, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअत क़बूल फ़रमाएगा।[1]

आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बारगाहे रिसालत में अर्ज़ करते हैं :

तुझ से छुपाऊं मुंह, तो करूं किस के सामने
क्या और भी किसी से तवक़्क़ोअ़ नज़र की है

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 226)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! मालिकिय्यों के अ़ज़ीम रेहनुमा, हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कैसे ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल थे। आप अपनी ज़ात के लिए तो सब कुछ बरदाश्त कर लिया करते थे लेकिन अगर कोई रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मस्जिद शरीफ़ में आवाज़ बुलन्द कर के बे अदबी करता, तो आप को जोश आ जाता, आप उस की इस ना मुनासिब हरकत पर ख़ामोश न रेह पाते और उसी वक़्त उसे नेकी की दावत देते हुवे बारगाहे रिसालत के आदाब (Manners) याद दिलाते कि येह वोह मुक़द्दस मक़ाम है जिस के आदाब हमारे रब ने क़ुरआने करीम में बयान फ़रमाए हैं।

इस वाक़िए में जहां हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इश्क़े रसूल का ज़ुहूर है, वहीं येह भी पता चला कि आप नेकी की दावत

1...الشفاء، الباب الثالث، فصل واعلم ان حرمة النبی۔۔۔ الخ، ۲/ ۴۱

www.dawateislami.net

का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देते थे । **अफ़्सोस** ! अब नेकी की दावत का जज़्बा गुज़रते दिन के साथ साथ ठन्डा होता जा रहा है । अगर हम नेक आमाल कर भी लें, तो दूसरी इस्लामी बहनों को नेकी की दावत देने और बुराई से रोकने में सुस्ती का शिकार हो जाती हैं, ह़ालांकि अह़ादीसे मुबारका में बुराई से रोकने की तरग़ीबात मौजूद हैं । चुनान्चे,

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : तुम में से कोई जब किसी बुराई को देखे, तो उसे चाहिए कि बुराई को अपने हाथ से बदल दे और जो अपने हाथ से बदलने की कुव्वत न रखे, उसे चाहिए कि अपनी ज़बान से बदल दे और जो अपनी ज़बान से बदलने की भी त़ाक़त न रखे, उसे चाहिए कि अपने दिल में बुरा जाने और येह कमज़ोर तरीन ईमान की अ़लामत है ।[1]

क्या हम दिल में बुरा जानती हैं ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपने आप से सुवाल कीजिए कि किसी को गुनाह करती देख कर हाथ या ज़बान से रोकने में ख़ुद को बेबस पाने की सूरत में क्या हम ने दिल में बुरा जाना ? **सद करोड़ अफ़्सोस** ! अगर हमें हमारी पसन्द के खाने न मिलें, हमारी पसन्द के कपड़े न मिलें, तो ज़रूर ना गवार गुज़रता है, बेटा स्कूल की छुट्टी कर ले, तो ज़रूर गुस्सा आता है लेकिन घरवालों (मसलन वालिदैन, बहन भाइयों) की रोज़ाना पांचों नमाज़ें क़ज़ा हो रही हों, तो माथे पर बल तक नहीं आता, उन्हें समझाने की कोशिश तक नहीं की जाती ।

ज़रा सोचिए ! म्यूज़िक बज रहा है, बेशक रोकने पर क़ुदरत नहीं मगर क्या येह हमारे दिल में खटकता है ? क्या हम इसे बुरा महसूस करती

1...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون النھی عن المنکر۔۔۔الخ، ص۴۸، حدیث:۱۷۷

www.dawateislami.net

हैं ? जी नहीं ! इस लिए कि ख़ुद अपने मोबाइल में भी तो مَعَاذَ الله म्यूज़ीकल ट्यून (Musical Tune) मौजूद है । किसी इस्लामी बहन ने झूट बोला, क्या हमें ना गवार गुज़रा ? जी नहीं ! क्यूं ? इस लिए कि ख़ुद अपनी ज़बान से भी مَعَاذَ الله झूट निकल ही जाता है । येह मिसालें सिर्फ़ चोट करने के लिए हैं, वरना बहुत सी इस्लामी बहनों की ह़ालत येह है कि अपने फ़ोन में म्यूज़ीकल ट्यून नहीं, गाली और झूट की आ़दत नहीं फिर भी **"दिल में बुरा जानने"** का ज़ेह्न नहीं । अगर रिज़ाए इलाही के लिए ह़क़ीक़ी मानों में बुराई को दिल में बुरा जानने की सोच बन जाए, कुढ़ने की आ़दत पड़ जाए, तब तो दूसरी इस्लामी बहनों को समझाना भी शुरूअ़ कर देंगी, यूं हर त़रफ़ सुन्नतों की बहारें आ जाएंगी और नेकी की दावत की धूम मच जाएगी । **अल्लाह** पाक हमारे ह़ाल पर रह़्म फ़रमाए और हमें अ़क़्ले सलीम दे कि हम भी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत और नेकी की दावत की धूम मचाने वालियां बन जाएं ।

इस ह़िकायत से एक नुक्ता येह भी मिला कि आ़लिमे मदीना, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रौज़ए रसूल की त़रफ़ रुख़ कर के दुआ़ करने को न सिर्फ़ जाइज़ समझते थे बल्कि इस अ़मल की ताकीद भी फ़रमाते । चूंकि आप आ़लिमे मदीना भी थे, लिहाज़ा अगर रौज़ए रसूल की त़रफ़ रुख़ कर के दुआ़ करना नाजाइज़ या शिर्क होता, तो आप ज़रूर इस अ़मल से रोकते और इस की हरगिज़ इजाज़त न देते । गोया आप का इश्क़ येह केहता था कि काबे की अहम्मिय्यत व अ़ज़मत से इन्कार नहीं मगर याद रखो ! काइनात में जिस को जो कुछ भी मिला है बल्कि मिल रहा है, वोह मक्की मदनी मुस्त़फ़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े ही मिल रहा है । जैसा कि इमामे इश्क़ो मह़ब्बत, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه **"ह़दाइक़े बख़्शिश"** में लिखते हैं :

www.dawateislami.net

ला व रब्बिल अ़र्श जिस को जो मिला उन से मिला
बटती है कौनैन में नेमत रसूलुल्लाह की

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 152)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! अब आ़लिमे मदीना, ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुख़्तसर तआ़रुफ़ सुनती हैं । चुनान्चे,

सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत व सिलसिलए नसब

ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत दुरुस्त तरीन क़ौल के मुत़ाबिक़ (माहे रबीउ़ल अव्वल) 93 हिजरी मदीनए मुनव्वरा में हुई ।[1] आप का नाम "**मालिक**" और कुन्यत "**अबू अ़ब्दुल्लाह**" है । आप का सिलसिलए नसब येह है : मालिक बिन अनस बिन मालिक बिन अबू आ़मिर । आप के परदादा (*Great Grand father*) अबू आ़मिर यमन से मदीनए मुनव्वरा मुन्तक़िल हो कर नेमते इस्लाम से सरफ़राज़ हुवे और सह़ाबी होने का शरफ़ ह़ासिल किया ।[2] ह़दीसे पाक की मश्हूर किताब "**मुअत्ता इमाम मालिक**" ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की तस्नीफ़े लत़ीफ़ है ।[3] ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का विसाल मदीनए मुनव्वरा में 179 हिजरी माहे रबीउ़ल अव्वल में हुवा, जन्नतुल बक़ीअ़ में सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1...تذکرۃ الحفاظ، رقم : ۱۹۹، مالک بن انس بن مالک، ۱/ ۱۵۷

2...ترتیب المدارک، ۱/ ۷۴ ملخصاً

3...ترتیب المدارک، ۱/ ۱۰۰-۱۰۱ مفہوماً

www.dawateislami.net

के शहज़ादे, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के क़ुर्ब में आप को दफ़्न किया गया।[1] और यहीं पर आप का मज़ार मुबारक भी है।

आ़लिमे मदीना का हुल्या मुबारक

आ़लिमे मदीना, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का क़द लम्बा, जिस्म भारी और रंग ज़र्दी माइल सफ़ेद था, सर और दाढ़ी के बाल सफ़ेद, निहायत अच्छे लिबास वाले थे, आप शह्रे अ़दन के बने हुवे निहायत उ़म्दा और मेहंगे कपड़े पेहनते थे, इस के इ़लावा ख़ुरासान और मिस्र के आला क़िस्म के कपड़े भी पेहना करते थे, आप का लिबास अक्सर सफ़ेद होता था और आप इ़त्र लगाया करते थे।[2]

आ़लिमे मदीना के अल्क़ाबात

आप को इमामुल अइम्मा, आ़लिमे मदीना और इमामे दारिल हिजरत के अल्क़ाब से भी याद किया जाता है।

आ़लिमे मदीना के असातिज़ा की तादाद

अ़ल्लामा ज़ुरक़ानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने 900 से ज़ियादा उ़लमाए किराम से इ़ल्म ह़ासिल किया।[3]

1...وفیات الاعیان، ۴/۵ملخصاً

2...बोस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 13, मुल्तक़त़न

3...شرح الزرقانی علی الموطا، ۱/۳۵

www.dawateislami.net

दर्सो तदरीस और फ़तवा लिखना

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 17 साल की उ़म्र में इ़ल्मे दीन पढ़ना शुरूअ़ किया । आप के असातिज़ा भी आप के पास मसाइल के ह़ल के लिए आते थे । आप ने तक़रीबन 70 साल तक फ़तावा लिखे और लोगों को इ़ल्मे दीन सिखाते रहे । बड़े बड़े उ़लमाए किराम आप से शरीअ़त और ह़दीस का इ़ल्म ह़ासिल करते रहे ।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आ़लिमे मदीना, ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वोह अ़ज़ीम मुह़द्दिस और बहुत बड़े आ़लिमे दीन हैं जिन्हें मुह़द्दिसीन व उ़लमाए किराम में एक ख़ुसूसी (Special) मक़ाम ह़ासिल है, बाज़ अह़ादीस में भी आप के मक़ामो मर्तबे की त़रफ़ इशारा किया गया है । आइए ! इसी बारे में 2 रिवायतें सुनती हैं : चुनान्चे,

इमाम मालिक की शान में 2 रिवायात

1. फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : इ़ल्म ख़त्म हो जाएगा, तो आ़लिमे मदीना से ज़ियादा इ़ल्म वाला बाक़ी न रहेगा ।[2]
2. फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : अ़न क़रीब लोग (इ़ल्म के लिए) सफ़र करेंगे, तो आ़लिमे मदीना से ज़ियादा इ़ल्म वाला कोई न पाएंगे ।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुह़द्दिसीने किराम के नज़दीक **''आ़लिमे मदीना''** से मुराद ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम

1...شرح الزرقانی علی الموطا، ۱/۳۵، سیر اعلام النبلاء، رقم: ۱۱۸۰، مالک الامام، ۷/۳۸۷ ملخصاً

2...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی عالم المدینۃ، ۴/۳۱۱، حدیث: ۲۶۸۹ ملتقطا

3...مستدرک، کتاب العلم، باب یوشک الناس۔۔۔الخ، ۱/۲۸۰، حدیث: ۳۱۴

www.dawateislami.net

मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हैं ।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारी राए येह है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इ़लावा कोई भी "**आ़लिमे मदीना**" के नाम से मारूफ़ नहीं । लोगों ने ह़ुसूले इ़ल्म के लिए जितना आप की त़रफ़ सफ़र किया, इतना किसी की त़रफ़ नहीं किया ।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक सच्चे आ़शिक़े रसूल थे, इ़श्क़े रसूल आप की नस नस और रग रग में समाया हुवा था । **अल्लाह** पाक के मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने के सबब आप नबियों के सरवर, रसूलों के अफ़्सर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौशन फ़रामीन, शह्रे मदीना और ख़ाके मदीना से वालिहाना अ़क़ीदत रखते बल्कि इन की इन्तिहाई ताज़ीमो तौक़ीर और अदबो एह़तिराम करते थे । आइए ! तरग़ीब के लिए चन्द ईमान अफ़रोज़ झल्कियां मुलाह़ज़ा कीजिए । चुनान्चे,

इमाम मालिक और ह़दीसे पाक का अदब

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (ने 17 साल की उ़म्र में दर्से ह़दीस देना शुरूअ़ किया) जब अह़ादीसे मुबारका सुनानी होती (तो नहाते), चौकी (मस्नद) बिछाई जाती और उ़म्दा लिबास पेहन कर ख़ुश्बू लगा कर निहायत आ़जिज़ी के साथ अपने ह़ुजरए मुबारका से बाहर तशरीफ़ ला कर उस पर बा अदब बैठते, (दर्से ह़दीस के दौरान कभी पेहलू न बदलते) और जब तक उस मजलिस में ह़दीसें पढ़ी जातीं, अंगेठी (आग

1...التمهید لابن عبد البر، زید بن ریاح، ۲/۶۷۴، تحت الحدیث: ۱۲۲

2...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی عالم المدینة، ۴/۳۱۱ ملخصا

www.dawateislami.net

रखने के बरतन) में ऊ़द (एक क़िस्म की काली लकड़ी जो आग में जल कर निहायत उ़म्दा ख़ुश्बू देती है) व लोबान (एक क़िस्म का गोंद जो आग पर रखने से ख़ुश्बू देता है) सुलगता (जलता) रेहता।[1]

बिच्छू का डसना मगर दर्से ह़दीस न छोड़ना

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दर्से ह़दीस दे रहे थे कि बिच्छू ने आप को 16 डंक मारे, दर्द की शिद्दत से चेहरए मुबारक पीला पड़ गया मगर दर्से ह़दीस जारी रखा (और पेहलू तक न बदला)। जब दर्स ख़त्म हुवा और लोग चले गए, तो मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आज मैं ने आप में एक अ़जीब बात देखी है कि बिच्छू ने आप को 16 डंक मारे मगर आप ने पेहलू नहीं बदला, इस में क्या ह़िक्मत थी ? फ़रमाया : मैं ने ह़दीसे रसूल की ताज़ीम की बिना पर सब्र किया।[2]

चेहरे का रंग तब्दील हो जाता

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सामने नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र किया जाता, तो आप के चेहरे का रंग तब्दील (Change) हो जाता और कमर मुबारक झुक जाती। एक दिन ह़ाज़िरीन ने इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से उन की इस कैफ़िय्यत के बारे में पूछा, तो आप ने फ़रमाया : जो कुछ मैं ने देखा है, तुम देखते, तो मुझ पर एतिराज़ न करते। मैं ने क़ारियों के सरदार, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर

1...बोस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 19-20

2...الشفاء، الباب الثالث، فصل واعلم ان حرمة النبی۔۔۔الخ، ۲/۴۶

www.dawateislami.net

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से जब भी कोई ह़दीस पूछी, तो वोह अ़ज़मते ह़दीस और यादे रसूल में रो देते, यहां तक कि मुझे उन के ह़ाल पर रह़म आने लगता।[1] **ऐ काश** ! हमें भी इ़श्क़े रसूल और यादे नबी में रोना नसीब हो जाए।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और ताज़ीमे ख़ाके मदीना

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के दरवाज़े पर ख़ुरासान या मिस्र के घोड़े बंधे हुवे देखे, उन से ज़ियादा उ़म्दा घोड़े मैं ने कभी न देखे थे। मैं ने अ़र्ज़ की : येह कितने उ़म्दा घोड़े हैं। तो आप ने फ़रमाया : मैं येह सब आप को तोह़फ़े में देता हूं। मैं ने अ़र्ज़ की : एक घोड़ा आप अपने लिए रख लें। तो आप ने फ़रमाया : मुझे **अल्लाह** पाक से ह़या आती है कि इस मुबारक ज़मीन को अपने घोड़े के क़दमों से रौंदूं जिस में **अल्लाह** पाक के रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हैं।[2]

क़ज़ाए ह़ाजत में एह़तियातें

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ताज़ीमे ख़ाके मदीना की वज्ह से मदीनए मुनव्वरा में कभी भी क़ज़ाए ह़ाजत नहीं की, इस के लिए हमेशा ह़रमे मदीना से बाहर (Outside) तशरीफ़ ले जाते थे, अलबत्ता ह़ालते मरज़ में मजबूर थे।[3]

1...الشفاء، الباب الثالث، فصل واعلم ان حرمة النبی۔۔۔الخ، ۲/۴۲ ملخصاً

2...احیاء علوم، کتاب العلم، باب ثانی فی العلم المحمود والمذموم واقسامهما واحکامهما، ۱/۴۸

3...बोस्तानुल मुह़द्दिसीन, स. 19

www.dawateislami.net

मदीना इस लिए **अ़त्तार** जानो दिल से है प्यारा
कि रेहते हैं मेरे आक़ा मेरे सरवर मदीने में

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 283)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कितने ज़बरदस्त आ़शिक़े रसूल थे, जो न सिर्फ़ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात बल्कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने के सबब ह़दीसे रसूल, ख़ाके मदीना और शह्रे मुस्त़फ़ा से किस क़दर अ़क़ीदतो मह़ब्बत फ़रमाते थे । **ऐ काश** ! इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सदक़े हमें भी ह़दीसे रसूल के अदब की मदनी सोच नसीब हो जाए और हम भी शह्रे मुस्त़फ़ा के ह़सीन तसव्वुरात में गुम रेहने की आ़दत बना लें । اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रेहना इ़श्क़े रसूल के ह़ुसूल का बेहतरीन ज़रीआ़ है, लिहाज़ा आप भी इस मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिए ! जिस त़रह़ आ़लिमे मदीना, इ़श्क़े रसूल की दौलत से मालामाल थे, जिस त़रह़ आ़लिमे मदीना एक सच्चे आ़शिक़े रसूल थे, जिस त़रह़ आ़लिमे मदीना का सीना शह्रे मुस्त़फ़ा की मह़ब्बत से सरशार था, जिस त़रह़ आ़लिमे मदीना निस्बते रसूल की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत से पूरी त़रह़ वाक़िफ़ थे, जिस त़रह़ आ़लिमे मदीना ह़दीसे रसूल का दिल नशीन अन्दाज़ में अदबो एह़तिराम करते थे, जिस त़रह़ आ़लिमे मदीना ह़दीसे रसूल की ख़िदमत की बदौलत अ़वाम व ख़वास में मश्हूरो मारूफ़ थे, इसी त़रह़ आ़लिमे मदीना की मुबारक सीरत का एक दिलकश पेहलू येह भी है कि आप इबादतो रियाज़त और तिलावते क़ुरआन के भी बहुत ज़ियादा शैदाई थे । आइए ! उ़लमाए किराम की ज़बानी आप की इ़बादतो रियाज़त और तिलावते क़ुरआन से

www.dawateislami.net

महब्बत की चन्द ईमान अफ़रोज़ झल्कियां सुन कर अपने अन्दर इबादत का जज़्बा बेदार करने की कोशिश करती हैं। चुनान्चे,

इमाम मालिक की इबादतो रियाज़त

❖ हज़रते सय्यिदुना अल्लामा क़ाज़ी इयाज़ मालिकी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : हज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन हबीब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जब भी किसी (इस्लामी) महीने की आमद होती, तो इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उस महीने की पेहली रात को शब बेदारी फ़रमाया करते, यानी रात भर जाग कर इबादत करते। ❖ मज़ीद फ़रमाते हैं : मेरे ख़याल में आप येह इबादत महीने का इस्तिक़्बाल करने की ग़रज़ से किया करते थे। ❖ आप की साहिबज़ादी, फ़ातिमा बिन्ते मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا फ़रमाती हैं : हज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हर रात अपना वज़ीफ़ा पूरा करते थे और जब जुम्आ़ की रात आती, तो पूरी रात **अल्लाह** पाक की इबादत में मश्ग़ूल रेहते। ❖ हज़रते मुग़ीरा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान है : एक मरतबा रात के वक़्त लोगों के सो जाने के बाद मैं हज़रते इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास से गुज़रा, मैं ने देखा कि आप खड़े हो कर नमाज़ में मश्ग़ूल हैं, जब आप सूरए फ़ातिहा पढ़ चुके, तो सूरए "اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ" शुरूअ़ कर दी। हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जब इस आयते करीमा पर पहुंचे :

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىِٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝٨ (پ۳۰، التکاثر: ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से नेमतों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा।

तो बहुत देर तक रोते रहे। मैं आप की तिलावत सुनने में मश्ग़ूल हो गया और वहीं खड़ा रहा, आप इसी आयत को दोहराते रहे और रोते रहे, यहां तक कि सुब्ह़ चमकने लगी फिर आप ने रुकूअ़ किया। मैं अपने घर की

www.dawateislami.net

जानिब रवाना हो गया, मैं वुज़ू कर के मस्जिद में हाज़िर हुवा, तो क्या देखता हूं कि मस्जिद में (इल्मे दीन की) मजलिस क़ाइम है, लोग आप के इर्द गिर्द हल्क़ा बना कर बैठे हुवे हैं और आप के चेहरए मुबारक में ख़ूबसूरत नूर चमक रहा है। ❖ मुहम्मद बिन ख़ालिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब भी मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का चेहरए मुबारक देखता हूं, तो आप के चेहरे में मुझे आख़िरत (का ख़ौफ़ रखने वालों) की निशानियां नज़र आती हैं, जब आप कलाम फ़रमाते हैं, तो मैं जान लेता हूं कि हक़ आप के मुंह से निकलता है। ❖ हज़रते अबू मुस्अ़ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रात के एक हिस्से में लम्बे रुकूअ़ और सुजूद करते थे, जब आप नमाज़ में खड़े होते, तो यूं लगता जैसे कोई ख़ुश्क लकड़ी हो। जब आप को कोड़ों की सज़ा दी गई, तो आप से कहा गया : मुख़्तसर नमाज़ पढ़ लिया करें। फ़रमाया : बन्दे को चाहिए कि वोह **अल्लाह** पाक के लिए जो भी अ़मल करे, अच्छी त़रह़ करे। (पारह 29, सूरतुल मुल्क की आयत नम्बर 2 में) **अल्लाह** पाक फ़रमाता है :

لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا (پ۲۹، الملک: ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुम में कौन ज़ियादा अच्छे अ़मल करने वाला है।

❖ हज़रते इब्ने वह्ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से ज़ियादा मुत्तक़ी व परहेज़गार नहीं देखा। ❖ इब्ने क़ासिम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे हज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ख़ादिम ने बताया : हज़रते इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 40 साल तक अक्सर इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा की। ❖ इब्ने वह्ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दिन व रात में नफ़्ल इबादात अक्सर अकेले में करते थे ताकि कोई देख न

www.dawateislami.net

सके ।[1] ❖ अ़ल्लामा शुऐ़ब ह़रीफ़ीश رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सह़री के वक़्त कसरत के साथ नमाज़, ज़िक्रे इलाही और अवरादो वज़ाइफ़ का एहतिमाम फ़रमाते फिर दर्सो तदरीस (इ़ल्मे दीन पढ़ाने) में मश्ग़ूल हो जाते ।[2]

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते हो — कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही
इ़बादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी — करम हो करम या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कितने बड़े इ़बादत गुज़ार थे जो दिन रात तिलावते क़ुरआन व नफ़्ल इ़बादात में मश्ग़ूल रहा करते थे, आप का अन्दाज़े इ़बादत भी कितना प्यारा था कि नफ़्ल इ़बादत हमेशा अकेले में करते थे ताकि लोग आप को इ़बादत गुज़ार न समझें मगर **आह** ! इ़बादत के ह़वाले से हमारा किरदार निहायत ख़राब है, हम दूसरों की कोताहियों को तो नोट करती हैं मगर अपना मुह़ासबा (Accountability) नहीं करतीं, मसलन हम सोचें कि क्या हम रोज़ाना पांच वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ें पढ़ती हैं ? अगर पढ़ती हैं, तो क्या पाबन्दी से पढ़ती हैं ? जल्दी जल्दी पढ़ती हैं या इत़मीनान से ? क्या हम इ़बादात में इख़्लास पैदा करने की कोशिश करती हैं ? नेकियां कर के दूसरों पर बिला वज्ह इज़्हार कर के कहीं इन्हें ज़ाएअ़ तो नहीं कर बैठतीं ? क्या नफ़्ल इ़बादात की अदाएगी हमारे मामूलात में शामिल है ? हम रोज़ाना कितने पारे तिलावत करती हैं ? अगर तिलावत करती हैं, तो क्या क़वाइदो मख़ारिज की रिआ़यत भी करती हैं ?

1...ترتیب المدارک، ۱/۹۲، ملتقطاً

2...ह़िकायतें और नसीह़तें, स. 421

www.dawateislami.net

क्या तिलावते कुरआन कर के या सुन कर हमें ख़ौफ़े खुदा से कभी रोना आया ? क्या हम दुरूदे पाक की कसरत करती हैं ? क्या हमारे लब भी ज़िक्रुल्लाह से तर रेहते हैं ? क्या हमारी आंखों से भी ख़ौफ़े खुदा के सबब आंसू बेहते हैं ? क्या हम नफ़्ल रोज़े रख पाती हैं ? क्या हमारा ज़ियादा वक़्त इबादत में गुज़रता है ? क्या हम मोबाइल, इन्टरनेट और सोश्यल मीडिया का 100 फ़ीसद दुरुस्त इस्तिमाल करती हैं ? क्या मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में हमारा पढ़ने या पढ़ाने का मामूल है ? क्या हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत और हैसिय्यत के मुताबिक़ मदनी रसाइल तक़्सीम कर पाती हैं ?

अगर ऐसा नहीं है, तो जल्द अज़् जल्द इन कामों को अपनी ज़िन्दगी में दाख़िल करें, बिल ख़ुसूस हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत और मदनी रसाइल तक़्सीम करने में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें । हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ और मदनी रसाइल की तो क्या ही बात है कि इन की बरकत से इस्लामी बहनें न सिर्फ़ इल्मे दीन हासिल करती हैं बल्कि अपनी दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिए भी कोशिशें करती हैं, यूं इल्मे दीन के साथ साथ अ़मले ख़ैर की बरकतें भी पाती हैं ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه हज़ारों मक़ामात पर इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त होते हैं जिन में लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें शिर्कत कर के इल्मे दीन हासिल करते और इस मदनी मक़्सद के साथ वापस लौटते हैं कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है,** اِنْ شَآءَ الله ।" लिहाज़ा तमाम इस्लामी बहनें हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में पाबन्दी से शिर्कत की निय्यत कीजिए, अगर हम पाबन्दी से हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करेंगी, तो हमें इस की ढेरों ढेर बरकात नसीब होंगी । **अल्लाह**

www.dawateislami.net

करीम तमाम इस्लामी बहनों को पाबन्दी के साथ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करने और दूसरी इस्लामी बहनों को भी शिर्कत करवाने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए।

तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ शुदा रसाइल में मालूमात का क़ीमती ख़ज़ाना होता है, येह रसाइल आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी की मश्हूरी का ज़रीआ़ है। इन रसाइल में ज़ाहिरी व बात़िनी अमराज़ की निशान देही और इन का इ़लाज भी तज्वीज़ किया जाता है, इन रसाइल के मुत़ालए़ की बरकत से कई इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब आ चुका है। लिहाज़ा मक्तबतुल मदीना से ज़ियादा तादाद में रसाइल ह़ासिल करें और इन्हें इस्लामी बहनों और अपने मह़ारिम रिश्तेदारों में तक़्सीम कर के अपने लिए सदक़ए जारिया का सामान कीजिए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

इश्क़े रसूल के तक़ाज़े

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इश्क़े रसूल के बारे में सुन रही हैं। यक़ीनन आज कसीर मुसलमान सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इ़श्क़ो मह़ब्बत का दावा करते हैं मगर याद रहे ! येह दावा उसी सूरत में सच्चा माना जा सकता है जब हम इश्क़े रसूल के तक़ाज़ों (Demands) पर भी ह़क़ीक़ी माना में अ़मल करेंगी। इ़श्क़े रसूल किन बातों का तक़ाज़ा करता है ? आइए ! उन में से 4 बातों के मुतअ़ल्लिक़ सुनती हैं :

www.dawateislami.net

﴾1﴿...इताअ़त व इत्तिबाअ़

इश्क़ का सब से बुन्यादी तक़ाज़ा येह है कि महबूब की इताअ़त व इत्तिबाअ़ की जाए । लिहाज़ा महबूबे दो जहान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जिन बातों का हुक्म दिया है उन पर अ़मल किया जाए, जिन चीज़ों से मन्अ़ फ़रमाया है उन से बचा जाए, जिन चीज़ों से पसन्दीदगी का इज़्हार फ़रमाया है उन्हें अपनी पसन्द का हिस्सा बनाया जाए और जिन चीज़ों से नफ़रत व बेज़ारी का इज़्हार फ़रमाया है उन से नफ़रत व बेज़ारी ज़ाहिर की जाए ।

﴾2﴿...ताज़ीमो तकरीम

इश्क़ का एक तक़ाज़ा येह भी है कि बीबी आमिना के लाल, रसूले बे मिसाल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हद दरजा ताज़ीमो तकरीम की जाए । **अल्लाह** पाक ने अपने पाकीज़ा कलाम में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ताज़ीमो तौक़ीर करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है । चुनान्चे, पारह 26, सूरतुल फ़त्ह की आयत नम्बर 9 में इरशादे बारी है :

وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ (پ۲۶، الفتح:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रसूल की ताज़ीमो तौक़ीर करो ।

﴾3﴿...कसरते ज़िक्र

इश्क़ का एक तक़ाज़ा कसरते ज़िक्र भी है । इन्सान जिस से इश्क़ो महब्बत का दावा करता है, तो कसरत के साथ उस का ज़िक्र भी करता है क्यूंकि आ़शिक़े सादिक़ को अपने महबूब के ज़िक्र से लज़्ज़त मिलती है । चूंकि हमारे इश्क़ो महब्बत का मर्कज़ सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

की ज़ाते मुबारका है, इस लिए हमें चाहिए कि हम कसरत से आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र करें, झूम झूम कर शरई तक़ाज़ों के मुताबिक़ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नातें पढ़ें और सुनें, आप की शानें बयान करें और सुनें और दुरूदे पाक की कसरत करती रहें, اِنْ شَآءَ الله इस की ख़ूब ख़ूब बरकतें नसीब होंगी।

﴾4﴿...दोस्तों से दोस्ती, दुश्मनों से दुश्मनी

इश्क़ के तक़ाज़ों में से एक येह भी है कि जिस त़रह़ एक सच्चे आ़शिक़ को अपने मह़बूब से निस्बत रखने वाली हर चीज़ से मह़ब्बत होती है, अपने मह़बूब के दोस्तों और उस के अ़ज़ीज़ों से अ़क़ीदत होती है, इसी त़रह़ उस के दुश्मनों से दुश्मनी रखना, उन से तअ़ल्लुक़ (Relation) न रखना भी इ़श्क़ का तक़ाज़ा है। लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम भी सरवरे कौनैन, नबिय्ये ह़रमैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली चीज़ों को मह़बूब रखें, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दोस्तों यानी सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और आप के अहले बैते अत़्हार رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से मह़ब्बतो उल्फ़त रखें, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तअ़ल्लुक़ रखने वालों की बे अदबी व गुस्ताख़ी करने वालियों से बचें और दूसरों को भी बचाएं।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर हम दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहेंगी, तो न सिर्फ़ इश्क़े मुस्त़फ़ा नसीब होगा बल्कि इस के तक़ाज़े पूरे करने की सोच भी नसीब होगी। **अल्लाह** करीम हम सब को दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रखे।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं। सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की, उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।[1]

चलने की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **"163 मदनी फूल"** से चलने की सुन्नतें और आदाब सुनती हैं। पारह 15, सूरए बनी इसराईल की आयत नम्बर 37 में इरशादे बारी है :

وَ لَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَ لَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿۳۷﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل: ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन में इतराता न चल, बेशक तू हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा।

❖ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : एक शख़्स दो चादरें ओढ़े हुवे इतरा कर चल रहा था और घमन्ड में था, वोह ज़मीन में धंसा दिया गया, वोह क़ियामत तक धंसता ही जाएगा।[2] ❖ रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चलते, तो ज़रा सा आगे झुक कर चलते, गोया कि आप बुलन्दी से उतर रहे हैं।[3] ❖ अगर कोई रुकावट न हो, तो रास्ते के

---

1 ... مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵

2 ... مُسلِم، کتاب اللباس والزینۃ، باب تحریم التبختر فی المشی ... الخ، ص ۸۹۰، حدیث: ۵۴۶۵، ملخصاً

3 ... شمائل ترمذی، باب ما جاء فی مشیۃ رسول اللہ، ص ۸۷، رقم: ۱۱۸

www.dawateislami.net

किनारे किनारे दरमियानी रफ़्तार से चलिए, न इतना तेज़ कि लोगों की निगाहें आप की त़रफ़ उठें और न इतना आहिस्ता कि आप बीमार लगें। ❖ राह चलने में परेशान नज़री (यानी बिला ज़रूरत इधर उधर देखना) सुन्नत नहीं, नीची नज़रें किए पुर वक़ार त़रीक़े पर चलिए। ❖ चलने या सीढ़ी चढ़ने, उतरने में येह एह़तियात़ कीजिए कि जूतों की आवाज़ पैदा न हो। ❖ चलते हुवे जो भी चीज़ आड़े आए, उसे लातें मारना येह क़त़्अन ग़ैर मुहज़्ज़ब त़रीक़ा है, इस त़रह़ पाउं ज़ख़्मी होने का भी अन्देशा रेहता है। ❖ अख़्बारात या लिखाई वाले डिब्बों, पेकेटों और मिनरल वॉटर की ख़ाली बोतलों वग़ैरा पर लात मारना बे अदबी है।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) और 120 सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले **"101 मदनी फूल"** और **"163 मदनी फूल"** हदिय्यतन त़लब कीजिए और पढ़िए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान : 15 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो मुझ पर जुम्आ़ के दिन और रात में सौ मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, अल्लाह पाक उस की सौ ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा, सत्तर आख़िरत की और तीस दुन्या की और **अल्लाह** पाक एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देगा, जो उस दुरूदे पाक को मेरी क़ब्र में यूं पहुंचाएगा जैसे तुम्हें तह़ाइफ़ पेश किए जाते हैं, बिला शुबा मेरा इ़ल्म मेरे विसाल के बाद वैसा ही होगा जैसा मेरी ज़िन्दगी में है।[1]

उन पर दुरूद जिन को कसे बे कसां कहें
उन पर सलाम जिन को ख़बर बे ख़बर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 209)

कलामे रज़ा की वज़ाह़त : यानी उस आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद हों जो बे सहारों का सहारा हैं और उन पर सलाम हो जो बे ख़बरों की भी ख़बर रखते हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...جمع الجوامع، ۷/۱۹۹، حدیث: ۲۲۳۵۵

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[1]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। ❖ जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत हासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ...معجم کبیر، ۲/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रबीउ़ल अव्वल का मुबारक महीना चल रहा है, हर त़रफ़ प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्र के चर्चे हैं । कहीं आप की विलादत का ज़िक्र है, तो कहीं आप के कमालात की बात है । कहीं आप की सीरत का बयान है, तो कहीं आप की मुबारक सूरत का जिक्रे ख़ैर है ।

तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब

اَلْحَمْدُ لِلّٰه आशिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी से वाबस्ता इस्लामी बहनें भी मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा मदनी रसाइल तक़्सीम कर के मीलादे मुस्त़फ़ा की ख़ुशियां मनाने और बांटने में मसरूफ़ नज़र आती हैं । याद रखें ! मदनी रसाइल तक़्सीम करना सीरते रसूल को उजागर करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है, मदनी रसाइल तक़्सीम करना इ़श्के़ रसूल को फ़रोग़ देने का ज़रीआ़ है, मदनी रसाइल तक़्सीम करना लोगों तक दुरुस्त इस्लामी मालूमात पहुंचाने का ज़रीआ़ है, मदनी रसाइल तक़्सीम करने की बरकत से ज़ाहिरी व बात़िनी अमराज़ की निशान देही और इन का इ़लाज करने में मदद मिलती है, मदनी रसाइल तक़्सीम करना सवाबे जारिया का बेहतरीन ज़रीआ़ है । लिहाज़ा आप भी मक्तबतुल मदीना से ज़ियादा तादाद में मदनी रसाइल ह़ासिल कर के इन्हें इस्लामी बहनों और अपने मह़ारिम रिश्तेदारों में तक़्सीम कर के अपने लिए सदक़ए जारिया का सामान कीजिए और जश्ने विलादत की ख़ुशियों में शामिल हो जाइए ।

आइए ! रबीउ़ल अव्वल की मुनासबत से आज हम **''इमदादे मुस्त़फ़ा के वाक़िआत''** पर मुश्तमिल बयान सुनती हैं : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم मुश्किल ह़ालात में किस त़रह़ रसूले ख़ुदा, शाहे अर्ज़ो समा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रयाद करते, हमारे

www.dawateislami.net

आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किस त़रह़ अपने उम्मतियों की मदद करते हैं, येह भी सुनेंगी । इसी त़रह़ आक़ा करीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जानवरों की भी फ़रयाद सुनते और इमदाद करते हैं, इस के भी चन्द वाक़िआ़त सुनेंगी । इस के साथ और भी कई त़रह़ के निकात सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगी । **अल्लाह** करे ! दिलजम्ई़ के साथ हम अव्वल ता आख़िर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल कर लें । आइए ! सब से पेहले एक वाक़िआ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

सैफ़ुल्लाह की फ़रयाद

दावते इस्लामी के इदारे मक्तबतुल मदीना की किताब **"फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर"** के सफ़ह़ा नम्बर 384 पर लिखा है : अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करिमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को मुसैलिमा कज़्ज़ाब की सरकोबी (यानी उसे कुचलने) के लिए रवाना फ़रमाया और फिर ह़ज़रते सय्यिदुना शुरह़बील رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को उन की मदद के लिए भेजा लेकिन उन दोनों के आगे उस बद बख़्त ने हथियार न डाले क्यूंकि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुन्या से तशरीफ़ ले जाने के बाद मुसैलिमा कज़्ज़ाब का कारोबार चमक उठा था और तक़रीबन एक लाख से ज़ाइद अफ़राद उस के गिर्द जम्अ़ हो गए थे । ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करिमा और ह़ज़रते सय्यिदुना शुरह़बील رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से भी उस की ख़ूब लड़ाई हुई जिस में उस के कई लोग मारे गए, इतने में इन दोनों सह़ाबा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا की मदद के लिए ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه भी आ पहुंचे । आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के लश्कर की तादाद चौबीस हज़ार थी और मुसैलिमा कज़्ज़ाब के पास उस वक़्त चालीस हज़ार फ़ौज थी । दोनों लश्कर बहादुरी से लड़े और जंग का नक़्शा कई बार तब्दील हुवा, कभी ह़ालात मुसलमानों के ह़क़ में हो जाते और कभी

www.dawateislami.net

मुर्तदीन (यानी इस्लाम से फिर जाने वालों) का पलड़ा भारी रेहता । ثُمَّ بَرَزَ خَالِدٌ وَدَعَا اِلَى الْبَرَازِ وَنَادٰى بِشِعَارِهِمْ وَكَانَ شِعَارُهُمْ يَا مُحَمَّدَاهْ، فَلَمْ يَبْرُزْ اِلَيْهِ اَحَدٌ اِلَّا قَتَلَهٗ जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को यक़ीन हो गया कि बनू ह़नीफ़ा क़बीले वाले उस वक़्त तक नहीं हटेंगे जब तक मुसैलिमा कज़्ज़ाब को क़त्ल न कर दिया जाए, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बज़ाते ख़ुद मैदान में तशरीफ़ लाए और मुक़ाबले के लिए मुसैलिमा कज़्ज़ाब के शहसुवारों को त़लब किया और मुसलमानों के शिआ़र यानी आ़दत के मुत़ाबिक़ **''या मुह़म्मदा''** का नारा लगाया और उस वक़्त जंग में मुसमलानों का शिआ़र येह था कि वोह मुश्किल वक़्त में ब आवाज़े बुलन्द येह नारा लगया करते थे : **''या मुह़म्मदा''** यानी या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! हमारी मदद फ़रमाइए । इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने भी नारा लगाया और फिर दुश्मनों की त़रफ़ से जो भी मुक़ाबले पर आया आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उस की गरदन उड़ा दी । बिल आख़िर मुसैलिमा कज़्ज़बा के साथियों को शिकस्त हुई और वोह सारे भाग खड़े हुवे । मुसलमानों की एक जमाअ़त ने उन का पीछा किया, बहुत सारों को वासिले जहन्नम किया और बहुत सारों को गिरिफ़्तार कर के क़ैदी बना लिया । इस के साथ बहुत सा माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ आया ।[1]

आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपने नातिया दीवान **''ह़दाइक़े बख़्शिश''** में यूं अ़र्ज़ करते हैं :

फ़रयाद उम्मती जो करे ह़ाले ज़ार में
मुमकिन नहीं कि ख़ैरे बशर को ख़बर न हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 130)

1...फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, स. 384, बि तग़य्युरिन, क़लील

www.dawateislami.net

शेर की मुख़्तसर वज़ाह़त : यानी भला येह कैसे हो सकता है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुसीबत में फंसा हुवा कोई उम्मती ख़ुलूसे निय्यत के साथ आप को पुकारे मगर तमाम मख़्लूक़ात में सब से बेहतरीन शख़्सिय्यत यानी हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ महशर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस पर आई हुई मुसीबत से बे ख़बर रहें।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा वाक़िए़ में जिस जंग का ज़िक्र है वोह जंगे यमामा है, जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللهُ عَنْه मुश्किल घड़ी में शहनशाहे कौनो मकान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बाद मदीनए मुनव्वरा से बहुत दूर हो कर भी **''या मुह़म्मदा''** के नारे लगा रहे हैं। ग़ौर फ़रमाइए ! वोह ख़ालिद बिन वलीद जिन्हें मक्की मदनी सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सैफ़ुम्मिन सुयूफ़िल्लाह यानी **अल्लाह** पाक की तलवारों में से एक तलवार के ख़ित़ाब से नवाज़ा, वोह ख़ालिद बिन वलीद जो ख़ुद नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तरबियत याफ़्ता थे, वोह ख़ालिद बिन वलीद जो ऐसे अ़ज़ीम लश्करे इस्लाम के सिपेह सालार थे जिस में रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तरबियत याफ़्ता और शरीअ़त के पाबन्द बड़े बड़े सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان मौजूद थे, अगर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बाद आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मदद के लिए पुकारना जाइज़ न होता, तो यक़ीनन दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ख़ामोश न रेहते बल्कि उसी वक़्त आप को इस अ़मल से रोक देते मगर उन्हों ने न रोका। लिहाज़ा उन का न रोकना ही इस बात की दलील बन गया कि ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللهُ عَنْه का अ़मल शरअ़न जाइज़ था, लिहाज़ा जब कभी कोई मुसीबत आ जाए तो पूरी तवज्जोह और

www.dawateislami.net

कामिल यक़ीन से रसूले काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मदद के लिए पुकारिए और दिल में येह यक़ीन रखिए कि रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न सिर्फ़ मेरी फ़रयाद सुन रहे हैं बल्कि **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से मेरी मदद भी फ़रमाएंगे ।

या रसूलल्लाह के नारे से हम को प्यार है
हम ने येह नारा लगाया अपना बेड़ा पार है
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना कैसा ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिए ! रब्बे करीम की ज़ात के इ़लावा किसी ग़ैर से मदद मांगना बिल्कुल जाइज़ है, शरीअ़त में इस की कहीं भी मुमानअ़त मौजूद नहीं है बल्कि **अल्लाह** पाक के इ़लावा दूसरों से मदद मांगने का सुबूत मौजूद है जबकि अ़क़ीदा येह होना चाहिए कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن उस की अ़त़ा से मदद फ़रमाते हैं । जो लोग इस त़रह़ की बातें बनाते हैं कि सिर्फ़ रब्बे करीम ही से मदद मांगनी चाहिए, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से मदद नहीं मांगनी चाहिए, येह उन पर शैत़ानी वार होता है, इस त़रह़ की बातें करने वाले बसा अवक़ात अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और औलियाए इ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की तौहीन भी कर जाते हैं और तौहीने अम्बिया के सबब सीधा कुफ़्र में जा पड़ते हैं ।

इस वस्वसे की काट के लिए येह बात ज़ेह्न में बिठा लीजिए कि ह़क़ीक़तन मदद फ़रमाना सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की ज़ाते पाक के साथ ही ख़ास है । उस की अ़त़ा के बिग़ैर कोई ज़र्रा भी फ़ाएदा नहीं दे सकता ।

www.dawateislami.net

हां ! उस की अ़ता से उस के मुक़र्रब बन्दे या दीगर जानदार व बे जान चीज़ें **"फ़ाएदा व नुक़्सान"** के मालिक हो सकते हैं। जैसा कि पारह 1, सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 45 में रब्बे करीम का इरशाद है :

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِؕ (پ۱، البقرة:۴۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो।

ज़रा ग़ौर कीजिए ! वोह मददगारे ह़क़ीक़ी व मददगारे आ़लम **अल्लाह** पाक ख़ुद फ़रमा रहा है कि सब्र और नमाज़ से मदद मांगो। तो अगर **अल्लाह** करीम के इलावा मदद मांगना जाइज़ होता, तो **अल्लाह** पाक येह हुक्म क्यूं इरशाद फ़रमाता कि सब्र और नमाज़ से मदद चाहो ! क्यूंकि सब्र और नमाज़ ख़ुदा नहीं है बल्कि ग़ैरे ख़ुदा हैं। इसी त़रह़ पारह 5, सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 64 में इरशाद होता है :

وَ لَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَ اسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا(۶۴)

(پ۵، النساء:۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें, तो ऐ मह़बूब ! तुम्हारे हुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए, तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।

इमामे अहले सुन्नत, आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस आयत के तह़त इरशाद फ़रमाते हैं : क्या **अल्लाह** पाक (अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के गुनाहों को) अपने आप नहीं बख़्श सकता था फिर येह क्यूं फ़रमाया कि ऐ नबी ! तेरे पास ह़ाज़िर हों और तू **अल्लाह** (पाक) से इन की बख़्शिश चाहे, तो येह (तौबा जैसी) दौलत व नेमत पाएंगे। (रब्बे करीम का गुनाहगारों को दरे मुस्त़फ़ा पे ह़ाज़िरी का हुक्म देना और वहां

www.dawateislami.net

रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना सिफ़ारिशी बनवाना येही ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना है और) येही हमारा मत़लब है, जो क़ुरआन की आयत साफ़ फ़रमा रही है।[1]

ख़ुद अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने भी **अल्लाह** पाक के सिवा ग़ैरों से मदद मांगी है और ख़ुद क़ुरआने पाक में इस को बयान किया गया है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने ह़वारियों से मदद त़लब फ़रमाई। चुनान्चे, पारह 28, सूरतुस्सफ़ की आयत नम्बर 14 में इरशाद होता है :

قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْۤ اِلَى اللّٰهِؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ

(پ۲۸، الصف: ۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ईसा बिन मरयम ने ह़वारियों से कहा था कौन है जो **अल्लाह** की त़रफ़ हो कर मेरी मदद करें, ह़वारी बोले हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं।

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को जब तब्लीग़ (नेकी की दावत) के लिए फ़िरऔ़न के पास जाने का हुक्म हुवा, तो उन्हों ने बन्दे की मदद ह़ासिल करने के लिए बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की। चुनान्चे, पारह 16, सूरए طٰهٰ की आयत नम्बर 29 ता 31 में इरशाद होता है :

وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ اَهْلِيْۙ(۲۹) هٰرُوْنَ اَخِيْۙ(۳۰) اشْدُدْ بِهٖۤ اَزْرِيْۙ(۳۱)

(پ۱۶، طٰہٰ: ۲۹تا۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरे लिए मेरे घर वालों में से एक वज़ीर कर दे, वोह कौन मेरा भाई हारून उस से मेरी कमर मज़बूत़ कर।

1...फ़तावा रज़विय्या, 21 / 305

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यक़ीनन इन आयाते मुबारका को सुन कर इस शैत़ानी वस्वसे की ज़रूर काट हो गई होगी, क्यूंकि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने भी **अल्लाह** करीम के सिवा दूसरों से मदद मांगी है अगर مَعَاذَاللہ **अल्लाह** पाक के सिवा किसी से मदद मांगना दुरुस्त न होता, तो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام येह काम कभी भी न करते और अगर कोई ऐसा करता, तो ज़रूर उस को मन्अ़ फ़रमा देते ।

हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुबारका में मदद करने की तो मिसालें मौजूद हैं कि अगर सब जम्अ़ की जाएं, तो एक अ़ज़ीमुश्शान किताब तय्यार हो सकती है ।

आइए ! मुख़्तसरन चन्द मिसालें सुनती हैं :

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने थोड़े से खाने से पूरे लश्कर को सेर फ़रमा दिया ।[1] आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने दूध के एक प्याले से 70 सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم اَجْمَعِیْن को सेराब कर दिया ।[2] उंगलियों से पानी के चश्मे जारी कर के चौदह सौ या इस से भी ज़ाइद अफ़राद को सेराब कर दिया ।[3] लुआ़बे दहन (थूक मुबारक) से बहुत से लोगों को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाई ।[4] जंगे बद्र में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क्काशा رَضِیَ اللهُ عَنْه की तलवार टूट गई, तो वोह ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें एक छड़ी दी जो उन के हाथ में पहुंचते ही तलवार बन गई ।[5] जंगे उहुद के मौक़ेअ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللهُ عَنْه की आंख तीर लगने से निकल गई, तो वोह ढेला (आंख

1...بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الحدیبیۃ۔۔۔الخ، ۳/۵۱-۵۲، حدیث: ۴۱۰۱، ماخوذا

2...بخاری، کتاب الرقاق، باب کیف کان عیش النبی۔۔۔الخ، ۴/۲۳۴، حدیث: ۶۴۵۲، موخوذا

3...بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الحدیبیۃ، ۳/۶۹، حدیث: ۴۱۵۲، ماخوذا

4...خصائص کبری، باب آیاتہ فی ابراء المرضی۔۔۔الخ، ۲/۱۵۲، ماخوذا

5...جامع الاصول، عکاشہ بن محصن، ۱۳/۳۲۴، ملخصا

www.dawateislami.net

के अन्दर का गोल हिस्सा) ले कर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हो गए, तो आप ने उन की आंख ठीक कर दी, उन्हें आंख अ़त़ा कर दी ।[1] ग़ज़्वए ख़ैबर के मौक़ेअ़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना सलमा बिन अकूअ़ رَضِیَ اللهُ عَنْه अपनी टूटी हुई पिन्डली ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे, तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसी वक़्त उन की पिन्डली को दुरुस्त कर दिया ।[2] क़ह़त़ से नजात पाने के लिए एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ عَنْه ने दुआ़ की दरख़ास्त की, ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई, तो ऐसी बारिश बरसी कि हफ़्ता भर रुकने का नाम न लिया ।[3] सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم اَجْمَعِيْن एक मरतबा सफ़र में प्यास से बे क़रार हुवे, तो बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अपनी प्यास के बारे में अ़र्ज़ की । सरकारे काइनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उंगलियों से पानी के चश्मे बहा कर उन्हें सेराब कर दिया ।[4] नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन कअ़ब رَضِیَ اللهُ عَنْه ने जन्नत मांगी, तो उन्हें जन्नत भी अ़त़ा कर दी ।[5]

जहां बानी अ़त़ा कर दें भरी जन्नत हिबा कर दें
नबी मुख़्तारे कुल हैं जिस को जो चाहें अ़त़ा कर दें
जहां में उन की चलती है वोह दम में क्या से क्या कर दें
ज़मीं को आसमां कर दें सुरय्या को सरा कर दें

(सफ़ीनए बख़्शिश, स. 11)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...مصنف ابن ابی شیبہ، کتاب الفضائل، باب فی فضل الانصار، ۷/۲۷۰، حدیث: ۳۳۰۳۱، ملخصا

2...بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر، ۳/۸۳، حدیث: ۴۲۰۶، ملخصا

3...بخاری، کتاب الاستسقاء، باب الاستسقاء علی المنبر، ۱/۳۴۸، حدیث: ۱۰۱۵، ماخوذا

4...بخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ۔۔۔الخ، ۲/۴۹۵، حدیث: ۳۵۷۹، ماخوذا

5...مسلم کتاب الصلاۃ، باب فضل السجود۔۔۔الخ، ص۱۹۹، حدیث: ۱۰۹۴، ماخوذا

www.dawateislami.net

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की तरग़ीब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस त़रह़ के मज़ीद ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त सुनने के लिए आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी के तह़त होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में ख़ुद भी शिर्कत कीजिए और दूसरी इस्लामी बहनों को भी इस की भरपूर तरग़ीब दिलाइए बल्कि हो सके, तो इजतिमाअ़ में उन्हें अपने साथ ले कर आइए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक हो कर इस्लामी बहनें न सिर्फ़ इ़ल्मे दीन ह़ासिल करती हैं बल्कि सीरते रसूल के ह़सीन वाक़िआ़त सुन कर अपने सीनों में इ़श्क़े रसूल को बढ़ाने का सामान करती हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه हज़ारों मक़ामात पर इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त होते हैं, जिन में लाखों इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें शिर्कत कर के इ़ल्मे दीन ह़ासिल करते और इस मदनी मक़्सद के साथ वापस लौटते हैं कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ الله

लिहाज़ा आप तमाम इस्लामी बहनें कम अज़् कम 12 हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में पाबन्दी से शिर्कत की निय्यत कीजिए अगर हम पाबन्दी से हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करेंगी, तो हमें इस की ढेरों ढेर बरकात नसीब होंगी। **अल्लाह** करीम हम तमाम इस्लामी बहनों को पाबन्दी के साथ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करने और दूसरी इस्लामी बहनों को भी शिर्कत करवाने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बिला शको शुबा हमारे आक़ा व मौला, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने उम्मतियों पर मेहरबान हैं

www.dawateislami.net

और बहुत ज़ियादा लुत्फ़ो इनायत भी फ़रमाते हैं । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم अपने हर उम्मती को न सिर्फ़ पेहचानते हैं बल्कि मुश्किल ह़ालात में फंसे उम्मतियों की इमदाद भी फ़रमाते हैं । आइए ! इस ज़िम्न में दो ईमान अफ़रोज़ रूह़ानी वाक़िआ़त सुनती हैं । चुनान्चे,

सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने चेहरे की सियाही दूर फ़रमा दी

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने दौराने त़वाफ़ एक शख़्स को हर क़दम पर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हुवे देखा । तो उस से पूछा : ऐ भाई ! سُبْحٰنَ الله، لَآ اِلٰهَ اِلَّا الله के बजाए दुरूदे पाक का विर्द किए जा रहे हो, इस में क्या राज़ है ? तो वोह पूछने लगा : **अल्लाह** पाक आप को मुआ़फ़ फ़रमाए, आप कौन हैं ? मैं ने बताया : मैं सुफ़्यान सौरी हूं । तो उस ने कहा : अगर आप अहले ज़माना में अजनबी न होते, तो मैं आप को अपने ह़ाल और इस राज़ की ख़बर न देता । फिर बोला कि मैं अपने वालिदे गिरामी के साथ ह़ज्जे बैतुल्लाह के इरादे से चल पड़ा, दौराने सफ़र मेरे वालिदे मोह़तरम बीमार हो गए, उन का चेहरा सियाह (Black) हो गया, आंखें नीली पड़ गईं और पेट फूल गया, मैं ने रोते हुवे येह पढ़ा : اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (پ۲، البقرة:۱۵۶) **(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना ।) (थोड़ी देर बाद) उसी वीराने में मेरे वालिद का इन्तिक़ाल हो गया फिर मैं ने उन के चेहरे पर चादर डाल दी । अचानक मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा और मैं सो गया । मैं ने एक शख़्स को देखा कि उस से ज़ियादा ह़सीनो जमील और साफ़ सुथरे लिबास वाला मैं ने कभी नहीं देखा था । वोह मेरे वालिदे मोह़तरम के क़रीब तशरीफ़ लाए और उन के चेहरे से चादर हटा कर अपना मुबारक हाथ चेहरे पर फेरने लगे, तो उन का चेहरा दूध से ज़ियादा सफ़ेद हो गया फिर उन्हों ने पेट पर हाथ फेरा, तो वोह

www.dawateislami.net

पेहले की त़रह़ हो गया। फिर वोह पलटने लगे, तो मैं खड़ा हो गया और मैं ने उन की चादर को थाम कर पूछा : या सय्यिदी ! **अल्लाह** पाक आप पर रह़्म फ़रमाए, आप कौन हैं ? जिन के सबब **अल्लाह** पाक ने मेरे वालिदे मोह़तरम पर इस वीराने में येह एह़सान फ़रमाया है। उन्हों ने पूछा : क्या तुम मुझे नहीं पेहचानते ? मैं **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हूं। तेरा येह बाप बहुत बड़ा गुनाहगार था लेकिन मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक भेजता था, जब येह इस बीमारी में मुब्तला हुवा, तो मुझ से फ़रयाद की और बेशक जो मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है, मैं उस की फ़रयाद को पहुंचता हूं। फिर मैं बेदार हुवा, तो देखा कि मेरे वालिदे गिरामी का चेहरा सफ़ेद और फूला हुवा पेट दुरुस्त हो चुका था।[1] तब से मैं हर वक़्त दुरूदे पाक पढ़ता रेहता हूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दर्द और सूजन से नजात बख़्श दी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अह़मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (एक दफ़्आ़ दौराने ग़ुस्ल) ह़म्माम (नहाने की जगह) में गिरने के सबब मुझे हाथों में सख़्त तक्लीफ़ महसूस हो रही थी फिर मेरे हाथों में सूजन भी हो गई, इसी तक्लीफ़ के आ़लम में मुझे नींद आ गई, सोया तो ख़्वाब में जनाबे रिसालते मआब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जल्वा नज़र आया। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! तुम्हारे दुरूद ने मुझे (तुम्हारी जानिब) मुतवज्जेह किया। सुब्ह़ उठा, तो मुस्तफ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से सूजन और दर्द का नामो निशान तक मिट चुका था।[2]

1...تفسیر روح البیان، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۵۶، ۷/۲۲۵

2...سعادۃ الدارین، الباب الرابع فیما ورد من لطائف۔۔۔الخ، ص۱۴۰

www.dawateislami.net

मुझे आफ़तों ने घेरा, है मुसीबतों का डेरा
या नबी मदद को आना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 427)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुश्किल वक़्त में अपने उम्मतियों की किस त़रह़ मदद फ़रमाते हैं ! बयान कर्दा वाक़िआ़त में जहां आक़ाए दो जहां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़ाहिरी विसाल के बाद मदद करना साबित हो रहा है, वहीं दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत का भी बयान है और येह भी मालूम हुवा ! दुरूदे पाक पढ़ने से बड़ी से बड़ी बला टल जाती है नीज़ दुरूदे पाक पढ़ने वालों पर सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुसूसी शफ़्क़तें फ़रमाते और मुसीबत के वक़्त उन की ह़ाजत रवाई भी फ़रमाते हैं । लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम फ़ुज़ूल कामों में अपना वक़्त बरबाद करने के बजाए उठते, बैठते, चलते, फिरते हर वक़्त अपनी ज़बान को ज़िक्रो दुरूद से तर रखने की कोशिश करें । आइए ! बत़ौरे तरग़ीब दुरूदे पाक पढ़ने से ह़ासिल होने वाली बरकात के मुतअ़ल्लिक़ सुनती हैं । चुनान्चे,

मश्हूर मुह़द्दिस, ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ❖ दुरूद शरीफ़ से मुसीबतें टलती हैं । ❖ बीमारियों से शिफ़ा ह़ासिल होती है । ❖ ख़ौफ़ दूर होता है । ❖ ज़ुल्म से नजात ह़ासिल होती है । ❖ दुश्मनों पर फ़त्ह़ (*Victory*) ह़ासिल होती है । ❖ **अल्लाह** पाक की रिज़ा ह़ासिल होती है । ❖ दिल में उस की मह़ब्बत पैदा होती है । ❖ फ़िरिश्ते उस का ज़िक्र करते हैं । ❖ आमाल की तक्मील होती है । ❖ दिलो जान, अस्बाब व माल की पाकीज़गी ह़ासिल

www.dawateislami.net

होती है। ❖ दुरूद पढ़ने से ख़ुशहाली आती है। ❖ बरकतें हासिल होती हैं। ❖ औलाद दर औलाद चार नस्लों तक बरकत रेहती है। ❖ दुरूद शरीफ़ पढ़ने से क़ियामत की हौलनाकियों से नजात हासिल होती है। ❖ मौत की सख़्तियों में आसानी होती है। ❖ दुन्या की तबाहकारियों से नजात मिलती है। ❖ तंगदस्ती दूर होती है। ❖ भूली हुई चीज़ें याद आ जाती हैं। ❖ फिरिश्ते घेर लेते हैं। ❖ दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाली जब पुल सिरात से गुज़रेगी, तो नूर फैल जाएगा और वोह उस में साबित क़दम हो कर पलक झपकने में नजात पा जाएगी। ❖ अज़ीम तर सआदत येह है कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाली का नाम हुज़ूर, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश किया जाता है। ❖ ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत बढ़ती है, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ूबियां दिल में घर कर जाती हैं। ❖ कसरते दुरूद शरीफ़ से हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तसव्वुर ज़ेहन में क़ाइम हो जाता है। ❖ ख़ुश नसीबों को क़ुर्बते मुस्तफ़ा नसीब हो जाती है। ❖ ख़्वाब में सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब होता है। ❖ फ़िरिश्ते मरहबा केहते हैं और महब्बत रखते हैं। ❖ फ़िरिश्ते उस के दुरूद को सोने के क़लमों से चांदी की तख़्तियों पर लिखते और उस के लिए दुआए मग़फ़िरत करते हैं और ज़मीन पर सैर करने वाले फ़िरिश्ते दुरूद शरीफ़ को सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में पढ़ने वाली और उस के बाप के नाम के साथ पेश करते हैं।[1]

दुखों ने तुम को जो घेरा है तो दुरूद पढ़ो
जो हाज़िरी की तमनना है तो दुरूद पढ़ो
صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1…जज़्बुल क़ुलूब, स. 229, बि तग़्युरिन क़लील

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इमदादे मुस्त़फ़ा का बाब बहुत वसीअ़ व कुशादा है। नबियों के सुल्त़ान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم की मुश्किल कुशाई का येह फ़ैज़ान सिर्फ़ इन्सानों तक ही मह़दूद नहीं, इस लिए कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم सिर्फ़ इन्सानों ही के नबी नहीं बल्कि तमाम मख़्लूक़ात की त़रफ़ नबी बना कर भेजे गए हैं। लिहाज़ा जिस त़रह़ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दुख्यारे उम्मतियों की फ़रयादें सुनते और **अल्लाह** पाक की अ़त़ा से उन की मुश्किल कुशाई फ़रमाते हैं, इसी त़रह़ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم मुसीबत में मुब्तला जानवरों, परिन्दों ह़त्ता कि बे जान चीज़ों की भी फ़रयादें सुनते, उन की बोलियां समझ लेते और उन की मदद भी फ़रमाते हैं। चुनान्चे,

ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद तो अ़रबी बोलते थे मगर सारी ज़बानें समझते थे, ह़त्ता कि जानवरों की बोलियां भी समझ लेते थे, इस लिए ऊंटों, चिड़यों (*Sparrows*) ने हुज़ूरे (अन्वर) صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم के आस्ताने पर फ़रयादें कीं और दादें पाईं।[1] एक और जगह फ़रमाते हैं : (हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم को) पथ्थर (भी) सलाम करते थे, लकड़ी का सुतून **''ह़न्नाना''** हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم) के फ़िराक़ (यानी आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم की जुदाई) में रोया, आप (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم) से दिल का दुख दर्द कहा और हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم) ने सब कुछ समझ लिया। आज हुज़ूरे (अन्वर) صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم के दरवाज़े पर हर उम्मती अपनी बोली में हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم) से फ़रयादें करता है, कोई तर्जमा करने वाला दरमियान में नहीं होता, सब की सुनते, समझते हैं, सब की फ़रयाद

1...मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 119, बि तग़य्युरिन क़लील

www.dawateislami.net

रसी करते (फ़रयाद को पहुंचते) हैं, येह है हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का सब ज़बानें जानने का सुबूत।[1] मज़ीद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते (सय्यिदुना) सुलैमान (عَلَيْهِ السَّلَام) सिर्फ़ चिड़यों, च्यूंटियों की बोली समझते थे, हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) शजरो ह़जर (दरख़्त और पथ्थर), ख़ुश्को तर सारी मख़्लूक़ की बोली जानते हैं। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ह़ाजत रवा, मुश्किल कुशा हैं, येह वोह मस्अला है जिसे जानवर भी मानते हैं :[2]

आइए ! अब हम जानवरों से मुतअ़ल्लिक़ इमदादे मुस्तफ़ा के दो ईमान अफ़रोज़ रूह़ानी वाक़िआ़त सुनती हैं : चुनान्चे,

हरनी की फ़रयाद

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मदीने की गलियों से गुज़र रहा था, हमारा गुज़र एक आराबी के ख़ैमे के पास से हुवा जिस के साथ एक हरनी भी बंधी हुई थी। हरनी (Female Deer) ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह ख़ैमे वाला आराबी मुझे शिकार कर के ले आया है, ह़ालांकि मेरे दो बच्चे जंगल में मौजूद हैं, येह मुझे छोड़ता नहीं कि जंगल में अपने बच्चों को दूध पिला आऊं। हरनी की फ़रयाद सुन कर आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर मैं तुझे छोड़ दूं, तो क्या पलट कर वापस आ जाएगी ? अ़र्ज़ की : जी हां ! अगर मैं ऐसा न करूं, तो **अल्लाह** पाक मुझे (नाजाइज़) टेक्स वुसूल करने वाले का सा अ़ज़ाब दे, तो। हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे छोड़ दिया, वोह बड़ी तेज़ी व बे क़रारी से जंगल की त़रफ़ चली गई, अभी थोड़ी ही देर गुज़री थी कि

1...मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 38

2...मिरआतुल मनाजीह़, 8 / 239

www.dawateislami.net

वोह ख़ुशी ख़ुशी वापस आ गई । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे ख़ैमे के साथ बांध दिया, इतने में वोह आराबी भी पानी का मश्कीज़ा उठाए बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो गया । नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : क्या येह हरनी हमें बेचोगे ? उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह बतौ़रे हदिय्या पेशे ख़िदमत है । चुनान्चे, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने हरनी को आज़ाद फ़रमा दिया । ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक की क़सम ! मैं ने उस हरनी को देखा कि वोह जंगल (Jungle) में तस्बीह़ और कलिमए त़य्यिबा पढ़ती हुई जा रही थी ।[1]

ऊंट की फ़रयाद

ह़ज़रते सय्यिदुना याला बिन मुर्रा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : एक दिन हम हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र पर जा रहे थे, अचानक हमारा गुज़र एक ऐसे ऊंट के पास से हुवा जिस पर पानी की मश्कीज़ें लादी जा रही थीं, जब ऊंट ने हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा, तो वोह बिलबिलाने (आवाज़े निकालने) लगा और अपनी गरदन को झुका लिया । हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم उस के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : इस ऊंट का मालिक कहां है ? (इतने में) वोह आ गया । हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम इसे मेरे हाथ बेच दो । उस ने कहा : बल्कि येह मैं आप को तोह़फ़तन पेश करता हूं । आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बल्कि इसे बेच दो । उस ने कहा : बल्कि तोह़फ़तन पेश किया, अलबत्ता वोह ऐसे घराने का है जिस का ज़रीअ़ए रोज़गार इस के सिवा और

1 ... دلائل النبوة، باب ماجاء فی کلام الظبیة ... الخ، ۶/۳۵

www.dawateislami.net

कोई नहीं। हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बहर हाल जब तुम ने इस का मुआ़मला ज़िक्र कर ही दिया है, तो सुनो ! इस ने काम ज़ियादा लेने और चारा कम देने की शिकायत की है, लिहाज़ा इस के साथ अच्छा सुलूक किया करो।[1]

अपने मौला की है बस शाने अ़ज़ीम — जानवर भी करें जिन की ताज़ीम
संग करते हैं अदब से तस्लीम — पेड़ सजदे में गिरा करते हैं
हां यहीं करती हैं चिड़यां फ़रयाद — हां यहीं चाहती है हरनी दाद
इसी दर पर शुतुराने नाशाद — गिलए रंजो इ़ना करते हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 112-113)

कलामे रज़ा की वज़ाहत : पेहले दो मिसरओं का मत़लब येह है कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में तो चिड़यां भी आ कर फ़रयाद करती हैं, हरनी मदद त़लब करती है जबकि ऊंट भीक व ग़म की कहानी सुनाते हैं। तीसरे और चोथे मिसरए़ का मत़लब येह है कि हमारे आक़ा व मौला, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी शान तो देखो ! जानवर उन का एह़तिराम करते हैं, पथ्थर अदब से सलाम करते हैं और दरख़्त उन्हें सजदा करते हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुश्बू की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे ख़ुश्बू लगाने के बारे में चन्द मदनी फूल बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं। पेहले 2 फ़रमाने मुस्त़फ़ा मुलाह़ज़ा कीजिए : (1) फ़रमाया : मुझे तुम्हारी दुन्या में से तीन चीजें मह़बूब हैं : ख़ुश्बू,

1 ...دلائل النبوة، ذكر المعجزات الثلاث التى شهدن ...الخ، ٦/٢٣

www.dawateislami.net

औ़रतें और मेरी आंखों की ठन्डक नमाज़ बनाई गई ।[1] (2) फ़रमाया : चार चीज़ें नबियों की सुन्नत में दाख़िल हैं । निकाह़, मिस्वाक, ह़या और ख़ुश्बू लगाना ।[2] ❖ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुश्बू का तोह़फ़ा रद (ना मन्ज़ूर) नहीं फ़रमाते (थे) ।[3] ❖ नमाज़ में रब्बे करीम से मुनाजात (**अल्लाह** पाक की तारीफ़ और अपनी आ़जिज़ी का इज़्हार) है, तो इस के लिए ज़ीनत (ख़ूब सूरती इख़्तियार) करना, इत्र लगाना मुस्तह़ब है ।[4] ❖ आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم हमेशा उ़म्दा ख़ुश्बू इस्तिमाल करते और इसी की दूसरे लोगों को भी तल्क़ीन फ़रमाते (थे) ।[5] ❖ ना ख़ुश गवार बू यानी बदबू आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ना पसन्द फ़रमाते (थे) ।[6] ❖ औ़रतों के लिए मेहक की मुमानअ़त उस सूरत में है जबकि वोह ख़ुश्बू अजनबी मर्दों तक पहुंचे, अगर वोह घर में इत्र लगाएं जिस की ख़ुश्बू ख़ावन्द (शौहर) या औलाद, मां-बाप तक ही पहुंचे, तो ह़रज नहीं ।[7] ❖ इस्लामी बहनों को ऐसी ख़ुश्बू नहीं लगानी चाहिए जिस की ख़ुश्बू उड़ कर ग़ैर मर्दों तक पहुंच जाए ।[8] ❖ इरशाद फ़रमाया : औ़रत जब ख़ुश्बू लगा कर किसी मजलिस के पास से गुज़रती है, तो वोह ऐसी और ऐसी है, यानी बदकारी करने वाली है ।[9] ❖ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते करीमा

1...نسائی، کتاب عشرۃ النساء، باب حب النساء، ص۶۴۴، حدیث: ۳۹۴۵

2...مشکاۃ، کتاب الطہارۃ، باب السواک، ۱/۸۸، حدیث: ۳۸۲

3...सुन्नतें और आदाब, स. 85

4...नेकी की दावत, स. 207

5...सुन्नतें और आदाब, स. 83

6...सुन्नतें और आदाब, स. 83

7...सुन्नतें और आदाब, स. 85

8...सुन्नतें और आदाब, स. 86

9...ترمذی، کتاب الادب، باب ما جاء فی کراھیۃ خروج المرأۃ متعطرۃ، ۴/۳۶۱، حدیث: ۲۷۹۵

www.dawateislami.net

थी कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **"मुश्क"** (खुश्बूदार काले रंग का मादा जो एक क़िस्म के हरन की नाफ़ से निकलता है) सरे अक़्दस के मुक़द्दस बालों और दाढ़ी मुबारक में लगाते (थे)।[1] ❖ ऐर फ्रेशनर के इस्तिमाल से इजतिनाब करना (बचना) चाहिए।[2]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा 16 (304 सफ़ह़ात) नीज़ 120 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"सुन्नतें और आदाब"** हदिय्यतन त़लब कीजिए और बग़ौर इस का मुत़ालआ़ फ़रमाइए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...सुन्नतें और आदाब, स. 83

2...सुन्नतें और आदाब, स. 84

www.dawateislami.net

बयान : 16 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : मेरा जो उम्मती इख़्लास के साथ मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़े, **अल्लाह** पाक उस पर दस रह़मतें उतारेगा, उस के दस दरजात बुलन्द फ़रमाएगा, उस के लिए दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा।[1]

मेरी ज़बान तर रहे ज़िक्रो दुरूद से
बेजा हंसूं कभी, न करूं गुफ़्तगू फ़ुज़ूल

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 243)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1...سنن کبریٰ للنسائی، کتاب عمل الیوم ۔۔۔الخ، باب ثواب الصلاۃ ۔۔۔الخ، ۶/۲۱، حدیث: ۹۸۹۲

2...معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। ❖ जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اِنْ شَآءَ الله आज के बयान में हम **"अम्बियाए किराम की नेकी की दावत के वाक़िआ़त"** के बारे में सुनेंगी, जिस में हम सुनेंगी कि ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام अपनी क़ौम को कितने अ़र्से तक दीन की दावत देते रहे और आप की क़ौम आप के साथ क्या सुलूक करती थी। इस के साथ साथ येह भी सुनेंगी कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने किस त़रह़ बेहतरीन ह़िक्मते अ़मली से मलिकए सबा को दीन की दावत दी और वोह कैसे अपनी क़ौम के साथ आप पर ईमान लाई।

www.dawateislami.net

इस के साथ साथ हम येह भी सुनेंगी कि हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दीन की दावत देने पर कितना सताया गया और आप ने उन सताने वालों के साथ क्या सुलूक किया । इस के साथ साथ मज़ीद कई निकात भी सुनने की सआ़दत ह़ासिल करेंगी । आइए ! सब से पेहले **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام और आप की नेकी की दावत के बारे में सुनती हैं । चुनान्चे,

ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام और नेकी की दावत

ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام, ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام के पड़पोते हैं, चालीस या पचास साल की उ़म्र में आप ने नुबुव्वत का एलान फ़रमाया ।[1] नव सौ पचास साल तक अपनी क़ौम को दावत देते रहे ।[2] आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी क़ौम के लोगों को बुराइयों से रोका, उन्हें तक़्वा इख़्तियार करने और बात़िल माबूदों को छोड़ कर सिर्फ़ माबूदे ह़क़ीक़ी की इ़बादत करने का हुक्म दिया ।[3] आप عَلَيْهِ السَّلَام एक लम्बा अ़र्सा अपनी क़ौम को तब्लीग़ फ़रमाते रहे ।[4] और तब्लीग़ (नेकी की दावत) के लिए आप ने हर त़रीक़ा इस्तिमाल किया लेकिन सिर्फ़ चन्द ख़ुश नसीब ही आप पर ईमान लाए, लोगों की अक्सरिय्यत ह़क़ सुनने और मानने को तय्यार न थी ।[5] उल्टा वोह बद नसीब लोग त़रह़ त़रह़ से आप की तह़क़ीर करते और त़रह़ त़रह़ की तक्लीफ़ों से आप को सताते, यहां तक कि कई बार उन ज़ालिमों ने

1…सिरातुल जिनान, 3 / 347, माख़ूज़न
2…सिरातुल जिनान, 4 / 425
3…पा. 29, नूह़ : 2-3, मफ़्हूमन
4…पा. 20, अल अन्कबूत : 14, मफ़्हूमन
5…पा. 12, हूद : 40, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

आप को इस क़दर मारा कि आप बेहोश हो गए और लोगों ने आप को मुर्दा ख़याल कर के कपड़ों में लपेट कर मकान में डाल दिया, जब आप होश में आए, तो फिर मकान से निकल कर दीन की तब्लीग़ फ़रमाने लगे। इसी त़रह़ वोह ज़ालिम बारहा आप का गला घोंटते रहे, यहां तक कि आप का दम घुटने लगा और आप बेहोश हो जाते मगर इन तक्लीफ़ों और मुसीबतों पर भी आप येही दुआ़ फ़रमाया करते थे कि ऐ मेरे परवर दगार ! तू मेरी क़ौम को बख़्श दे और हिदायत अ़त़ा फ़रमा क्यूंकि येह मुझ को नहीं जानते। नव सौ साल से ज़ाइद अ़र्सा गुज़र गया और आप नेकी की दावत देते रहे मगर क़ौम अपनी सरकशी से बाज़ न आई, तो ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने **अल्लाह** पाक की बारगाह में अपनी कोशिश और क़ौम की हटधर्मी के बारे में अ़र्ज़ की और उन की तबाही व बरबादी की दुआ़ की। **अल्लाह** पाक ने उन की क़ौम के ना फ़रमानों पर तूफ़ान (Storm) का अ़ज़ाब भेजा और वोह लोग डूब कर हलाक हो गए। कुरआने पाक में आप عَلَيْهِ السَّلَام की तब्लीग़ (नेकी की दावत) के वाक़िआ़त को मुख़्तलिफ़ जगह काफ़ी तफ़्सील से बयान फ़रमाया गया है।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام में से ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने दौराने तब्लीग़ कितनी तक्लीफ़ें बरदाश्त फ़रमाईं लेकिन फिर भी नेकी का ह़ुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने के अहम फ़रीज़े को नहीं छोड़ा। येह ह़क़ीक़त है कि नेकी की दावत देने वालों को बड़ी मुसीबतों और मुश्किलात का सामना करना पड़ता है मगर जब कोई इस राह में मुस्तक़िल मिज़ाजी से साबित क़दम रेहते हुवे सब्रो तह़म्मुल के साथ इस अहम फ़रीज़े को अन्जाम दे, तो

1...अ़जाइबुल कुरआन, स. 311, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

अल्लाह पाक ग़ैब से उस की काम्याबी (Success) का सामान पैदा फ़रमा देता है, वोह रब्बे करीम दिलों को बदलने वाला और हिदायत देने वाला है, वोह रब्बे करीम एक लम्हे में लोगों के दिलों को बदल देता है और उन के दिलों में हिदायत का नूर पैदा फ़रमा देता है । तमाम ही अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अपनी क़ौमों को नेकी की दावत पेश करते हुवे उन्हें रब के एक होने का यक़ीन दिलाया और बातिल माबूदों को पूजने के बजाए **अल्लाह** पाक की इबादत की तरफ़ बुलाया, तो उन में से कुछ लोग उन पर ईमान लाते और अक्सर उन की दावत क़बूल करने से इन्कार कर देते मगर उन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने भी अपनी कोशिश जारी रखते हुवे इस फ़रीज़े को निभाने में कोई कमी न छोड़ी । आइए ! अब हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नेकी की दावत का वाक़िआ सुनती हैं । चुनान्चे,

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नेकी की दावत

जब फ़िरऔन ने ख़ुदा होने का दावा किया, तो **अल्लाह** पाक ने अपने रसूल, हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को फ़िरऔन की तरफ़ भेजा ।[1] हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام दीने हक़ की दावत देने फ़िरऔन के महल (Palace) पहुंचे, वहां वोह अपनी क़ौम के इज़्ज़तदार लोगों के साथ मौजूद था । हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : **अल्लाह** पाक ने मुझे रसूल बना कर भेजा है और मैं तुम्हारे पास उस का पैग़ाम ले कर आया हूं ।[2] फ़िरऔन ने कहा : मैं तो ख़ुद ही ख़ुदा हूं और येह भी याद रखो ! अगर तुम ने इन्कार किया, तो मैं तुम्हें क़ैद कर दूंगा ।[3] जब फ़िरऔन ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बातें

1...पा. 15, ताहा : 44

2...تفسیر خازن، ۳/۱۳۴

3...पा. 19, अश्शुअ़रा : 29, मफ़्हूमन

www.dawateislami.net

मानने से इन्कार कर दिया और उन्हें क़ैद करने की धमकी दी, तो ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़िरऔ़न से कहा : मुझे मेरे रब्बे करीम ने मोजिज़ात अ़ता किए हैं । फ़िरऔ़न ने कहा : हमें भी दिखाओ वोह मोजिज़ात क्या हैं ? ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना अ़सा ज़मीन पर फेंका, तो वोह बहुत बड़ा अज़्दहा बन गया और जब आप ने अज़्दहे को पकड़ा, तो दोबारा अ़सा बन गया । फ़िरऔ़न ने कहा : और भी कुछ लाए हो ? तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने हाथ को गिरेबान में डाल कर निकाला, तो हाथ सूरज की त़रह़ चमकने लगा ।[1]

ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जब अपने मोजिज़े दिखा चुके, तो फ़िरऔ़न ने सरदारों से कहा : येह तो जादूगर है और अपने जादू के ज़ोर पर तुम से तुम्हारा मुल्क छीनना चाहता है, मश्वरा दो कि अब क्या करें ?[2] सरदारों ने उसे शह्रों से जादूगरों को बुलाने का मश्वरा दिया । जब तमाम जादूगर जम्अ़ हो गए, तो लोगों में मेले का एलान कर दिया गया कि सब लोग मेले वाले दिन जम्अ़ हो जाएं ।[3] जब मेले वाले दिन सब एक जगह जम्अ़ हो गए और मुक़ाबला हुवा, तो जादूगरों ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के सामने अपनी रस्सियां और लक्ड़ियां फेंक दीं, उन्हों ने अपने जादू का इतना ज़बरदस्त मुज़ाहरा किया कि देखने वालों को मैदान में सांप ही सांप नज़र आने लगे ।[4] ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना अ़सा ज़मीन पर फेंका, तो वोह बहुत बड़ा अज़्दहा बन गया ।[5] और तमाम सांपों (Snakes) को खा

1...पा. 19, अश्शुअ़रा : 29 ता 33, मुलख़्ख़सन

2...पा. 19, अश्शुअ़रा : 34 ता 35, मुलख़्ख़सन

3...पा. 19, अश्शुअ़रा : 36 ता 39, मुलख़्ख़सन

4...تفسیر خازن، ۲/۱۲۷

5...पा. 19, अश्शुअ़रा : 32

www.dawateislami.net

गया ।[1] जादूगर येह मन्ज़र देख कर फ़ौरन सजदे में गिर गए और मुसलमान हो गए क्यूंकि उन्हें यक़ीन हो गया था कि येह जादू नहीं बल्कि **मोजिज़ा** है ।[2] मगर फ़िरऔनी ज़ुल्मो सितम, अपनी ना फ़रमानी और कुफ़्र पर क़ाइम रहे ।[3]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना ! हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने भी तमाम चीज़ों की परवा किए बिग़ैर दीने हक़ की दावत दी और इस राह में दी गई धमकियां भी आप के मक़्सद को नाकाम न कर सकीं, आप इस्तिक़ामत के साथ नेकी की दावत और तब्लीगे़ दीन का फ़रीज़ा सर अन्जाम देते रहे । आप का येह अ़मल हमारे लिए भी एक बेहतरीन मिसाल है कि हम भी अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इस मक़्सद को अपनी ज़िन्दगी का एक अहम मक़्सद समझें ।

याद रखिए ! ज़िन्दगी में क़दम क़दम पर आज़माइशें आती हैं, **अल्लाह** पाक अपने बन्दों को कभी मरज़ से आज़माता है, तो कभी जानो माल की कमी से उन का इम्तिहान लिया जाता है, कभी दुश्मन के ख़ौफ़ का सामना करना पड़ता है, तो कभी किसी नुक़्सान से दो चार होना पड़ता है, कभी मुसीबतें घेर लेती हैं, तो कभी नित नए फ़ितने इस्तिक़्बाल करते हैं। येह तो आ़म ज़िन्दगी की ह़ालत है जबकि राहे दीन और तब्लीगे़ दीन तो ख़ुसूसिय्यत से ऐसा रास्ता है जिस में क़दम क़दम पर तकालीफ़ का सामना करना पड़ता है, इस में आज़माइशें कई गुना बढ़ जाती हैं, इसी से खरे और खोटे में पेहचान होती है, इसी से **अल्लाह** पाक के फ़रमां बरदार व ना फ़रमान के रास्ते जुदा होते हैं, इस से इ़श्क़े ह़क़ीक़ी के खोखले नारे

1...पा. 19, अश्शुअ़रा : 45

2...تفسیر خازن، ۲/۱۲۷

3...تفسیر خازن، ۲/۳۰تا۳۲ ملتقطاً وملخصاً

www.dawateislami.net

लगाने वालों और ह़क़ीक़त में इस का दम भरने वालों में फ़र्क़ ज़ाहिर होता है। ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام पर अक्सर क़ौम का ईमान न लाना, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का आग में डाला जाना, अपने ह़क़ीक़ी बेटे को क़ुरबानी के लिए पेश करना, ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام का मुख़्तलिफ़ मुसीबतों का सामना करना, उन की औलाद और अम्वाल को ख़त्म कर दिया जाना, ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का मिस्र और मदयन की त़रफ़ हिजरत करना, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का सताया जाना और कई अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का शहीद किया जाना, येह सब आज़माइशों और सब्र ही की मिसालें हैं। इन मुक़द्दस हस्तियों की आज़माइशें और सब्र हर मुसलमान के लिए एक नमूने (Model) की ह़ैसिय्यत रखती हैं, लिहाज़ा हर इस्लामी बहन को चाहिए कि उसे जब भी कोई मुसीबत आए और वोह किसी तक्लीफ़ में मुब्तला हो, तो बे सब्री करने, किसी के सामने अपनी परेशानी का रोना रोने के बजाए **अल्लाह** पाक की ज़ात पर भरोसा रखे और सब्र का दामन थामे रखे।

याद रखिए ! बीमारी और परेशानी पर शिक्वा शिकायत करने से मुसीबत दूर नहीं हो जाती बल्कि बे सब्री करने से सब्र का अज्र ज़ाएअ़ हो जाता है। बिला ज़रूरत बीमारी व मुसीबत का इज़्हार करना भी अच्छी बात नहीं। चुनान्चे, सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे छुपाया और लोगों से उस की शिकायत न की, तो **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे।[1]

1...مُعْجَم اَوْسَط، ۱/۲۱۴، حدیث: ۷۳۷

www.dawateislami.net

मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह तो बड़े रुत्बे वालों की शान है कि (वोह) तक्लीफ़ का भी उसी त़रह़ इस्तिक़्बाल करते हैं जैसे राह़त (आराम व सुकून) का (इस्तिक़्बाल करते हैं) मगर हम जैसे (लोग) कम से कम इतना तो करें कि (जब कोई मुसीबत या तक्लीफ़ आ जाए तो) सब्रो इस्तिक़्लाल से काम लें और जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ (यानी रोना पीटना) कर के आते हुवे सवाब को हाथ से न (जाने) दें। सब जानते हैं कि बे सब्री से आई हुई मुसीबत जाती न रहेगी फिर उस बड़े सवाब (जो मुसीबतों में सब्र करने पर मिलता है उस) से मेह़रूमी दोहरी (दुगनी) मुसीबत है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की नेकी की दावत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अम्बियाए किराम में से एक ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام भी हैं। आइए ! इन के बारे में कुछ सुनती हैं : चुनान्चे, मन्क़ूल है : ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने **अल्लाह** पाक से दुआ़ की थी कि उन्हें ऐसी हुकूमत अ़त़ा की जाए जो किसी और को न मिली हो।[2] ऐसी बे मिस्ल सल्त़नत (हुकूमत) की दुआ़ करने का मक़्सद येह था कि वोह सल्त़नत (Empire) भी आप का मोजिज़ा हो। आप की येह दुआ़ क़बूल हुई, आप عَلَيْهِ السَّلَام को 13 साल की उ़म्र में सल्त़नत अ़त़ा की गई और 40 साल तक आप ने हुकूमत फ़रमाई।[3] जिन्नों, इन्सानों, परिन्दों और जानवरों सब पर आप की हुकूमत थी और आप हर एक की ज़बान

1...बहारे शरीअ़त, 1 / 799, मुलख़्ख़सन

2...पा. 23, صٓ : 35

3...تفسیر خازن، ۳/۴۰۴، ۴۱۴

www.dawateislami.net

जानते थे।[1] आप के लश्कर में जिन्नात और जानवरों की त़रह़ परिन्दों का एक दस्ता भी शामिल हुवा करता था। एक मरतबा आप عَلَيْهِ السَّلَام मक्कए मुकर्रमा से वापस आते हुवे यमन के अ़लाक़े **"सन्आ़"** पहुंच कर ठेहर गए। परिन्दों के दस्ते में मौजूद **"हुदहुद"** ने इस मौक़ेअ़ को ग़नीमत जाना और सैर को निकल गया, वोह उड़ते उड़ते मुल्के **"सबा"** की मलिका **"बिल्क़ीस"** के बाग़ में पहुंच गया, वहां उसे एक और हुदहुद नज़र आया, उस हुदहुद ने मलिका बिल्क़ीस और उस की सल्त़नत, लश्कर और तख़्त के बारे में बताया और बिल्क़ीस की सल्त़नत का नज़्ज़ारा भी करवाया, इस लिए उसे काफ़ी देर हो गई।[2] हुदहुद की ज़िम्मेदारी होती थी कि जहां भी ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ठेहरा करते, वहां येह पानी की निशान देही करता क्यूंकि वोह पानी के क़रीब या दूर होने के बारे में जान लेता था, जहां उसे पानी नज़र आता, वोह अपनी चोंच से उस जगह को खोदना शुरूअ़ कर देता फिर जिन्नात आते और उस जगह को खोद कर पानी निकाल लेते थे। ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام जब उस जगह उतरे, तो आप को पानी की ह़ाजत हुई, लश्कर वालों ने पानी तलाश किया लेकिन उन्हें न मिला, हुदहुद को देखा गया ताकि वोह पानी के बारे में बताए लेकिन हुदहुद मौजूद न था।[3] जब हुदहुद, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंचा, तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से ताख़ीर का सबब पूछा। उस ने निहायत अदब से अ़र्ज़ की : मैं मुल्के सबा की ख़बर लाया हूं, उस मुल्क पर एक औ़रत हुकूमत कर रही है, उस के पास हर वोह चीज़ है जो बादशाहों के शायाने शान है और उस के पास एक बहुत बड़ा और

1...تفسیر خازن، ۳/۴۰۴

2...تفسیر معالم التنزیل، ۳/۳۵۳

3...تفسیر معالم التنزیل، ۳/۳۵۳، ملتقطا

www.dawateislami.net

आ़लीशान तख़्त भी है, वोह औ़रत और उस की क़ौम शैत़ान के बेहकाने की वज्ह से **अल्लाह** पाक को छोड़ कर सूरज को सजदा करती है, ह़ालांकि **अल्लाह** पाक के सिवा कोई माबूद नहीं।[1] जब हुदहुद ने अपनी पूरी बात सुना दी, तो ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : हम (तुम्हारा इम्तिह़ान ले कर) देखते हैं कि तुम ने सच कहा है या झूट। फिर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने हुदहुद को एक ख़त़ (Letter) दिया और कहा : मेरा येह ख़त़ ले जाओ और उस पर फेंक दो फिर दूर हट कर देखना कि वोह क्या जवाब देते हैं। एक दिन जब मलिका बिल्क़ीस वज़ीरों और दरबारियों के साथ बैठी हुई थी, इतने में हुदहुद आया और उस ने ख़त़ मलिका पर फेंक दिया। मलिका ने ख़त़ उठाया और उस पर लगी हुई मोह्र देख कर वज़ीरों से कहा : मेरे पास एक बहुत बड़े बादशाह का इ़ज़्ज़त वाला ख़त़ आया है। फिर उस ने ख़त़ पढ़ कर सुनाया, उस ख़त़ का मज़मून क़ुरआने पाक में भी बयान फ़रमाया गया है। चुनान्चे, पारह 19, सूरतुन्नम्ल की आयत नम्बर 30 और 31 में इरशाद होता है :

اِنَّهٗ مِنْ سُلَیْمٰنَ وَ اِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۙ(۳۰) اَلَّا تَعْلُوْا عَلَیَّ وَ اْتُوْنِیْ مُسْلِمِیْنَ ۧ(۳۱)

(پ۱۹، النمل: ۳۰، ۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : बेशक वोह सुलैमान की त़रफ़ से है और बेशक वोह **अल्लाह** के नाम से है जो निहायत मेहरबान रह़म वाला है। येह कि मेरे मुक़ाबले में बुलन्दी न चाहो और मेरे पास फ़रमां बरदार बनते हुवे ह़ाज़िर हो जाओ।

फिर मलिका ने अपने मुशीरों (Advisors) से मश्वरा किया। तै येह पाया कि पेहले ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ तोह़फ़ा भेजा जाए,

1...تفسیر معالم التنزیل، ۳/۳۵۴، ملتقطا

www.dawateislami.net

इसी से मालूम हो जाएगा कि वोह बादशाह हैं या नबी, अगर वोह सिर्फ़ बादशाह हैं, तो तोह़फ़ा क़बूल कर लेंगे, और अगर नबी हैं, तो क़बूल नहीं करेंगे बल्कि वोह सिर्फ़ इसी पर राज़ी होंगे कि हम उन के दीन की पैरवी करें । ऐसे ही हुवा, यानी ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने सारे तोह़फ़े वापस लौटा दिए और नुमाइन्दे से फ़रमाया : अगर मलिका और उस की क़ौम के लोग मेरे पास मुसलमान हो कर ह़ाज़िर न हुवे, तो उन का अन्जाम येह होगा कि हम उन्हें जंग में शिकस्त दे कर वहां से निकाल देंगे । नुमाइन्दे ने आ कर मलिका बिल्क़ीस को जब बताया, तो उसे यक़ीन हो गया कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام सिर्फ़ बादशाह नहीं बल्कि **अल्लाह** पाक के नबी भी हैं फिर वोह ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام से मुलाक़ात करने के लिए एक लश्कर ले कर आप की त़रफ़ रवाना हुई, जब वोह ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के दरबार के क़रीब पहुंची, तो आप ने अपने दरबारियों में से अपने एक वज़ीर, ह़ज़रते आसिफ़ बिन बरख़िया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से पलक झपकने से पेहले उस का तख़्त मंगवाया ।[1] और अपने ख़ादिमों को हुक्म दिया कि मलिका के तख़्त की शक्लो सूरत को तब्दील कर दिया जाए ताकि हम देखें कि वोह अपने तख़्त को पेहचान पाती है या नहीं ? जब मलिका बिल्क़ीस, ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के दरबार में आई, तो उस से पूछा गया : क्या तेरा तख़्त ऐसा ही है ? उस ने जवाब दिया : गोया येह वोही है ! उसे बताया गया कि येह तेरा ही तख़्त है । फिर उसे कहा गया : सेह्न में आ जाओ । वोह सेह्न शफ़्फ़ाफ़ शीशे का बना हुवा था, उस के नीचे पानी जारी था, पानी में मछलियां तैर रही थीं और उस सेह्न के दरमियान में ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام अपने तख़्त पर तशरीफ़ फ़रमा थे । मलिका ने जब उस

1 ...تفسیر معالم التنزیل، ۳/ ۳۵۹، ۳۶۰ملتقطاً

www.dawateislami.net

सेहून को देखा, तो वोह समझी कि पानी बेह रहा है । ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने उस से फ़रमाया : येह पानी नहीं ! बल्कि येह तो शीशे से बना हुवा एक सेहून है । येह सुन कर मलिका बिल्क़ीस ह़ैरान रेह गई और उस ने यक़ीन कर लिया कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का मुल्क और ह़ुकूमत **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से है । जब ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने उसे दावते इस्लाम दी, तो उस ने **अल्लाह** पाक के एक होने का इक़रार करते हुवे इस्लाम क़बूल कर लिया और सूरज की इबादत को छोड़ कर **अल्लाह** पाक की इबादत करना शुरूअ़ कर दी ।[1]

नेकी की दावत में ह़िक्मते अ़मली की अहम्मिय्यत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना ! कैसे दिलकश अन्दाज़ में ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने ग़ैर मुस्लिमों तक दीन का पैग़ाम पहुंचाया, यक़ीनन येह आप की ह़िक्मत से भरपूर दावत का असर था कि उन लोगों ने **अल्लाह** करीम के एक होने का इक़रार करते हुवे इस्लाम क़बूल कर लिया । इस वाक़िए़ से येह भी मालूम हुवा कि नेकी की दावत देने में हमेशा ह़िक्मत और तदबीर (*Strategy*) को मद्दे नज़र रखना चाहिए, बसा अवक़ात ह़िक्मत और समझदारी बड़ी बड़ी रुकावटों से बचा लेती है, इस लिए मौक़ेअ़ की मुनासबत से ह़िक्मते अ़मली और पक्की तदबीर से भी काम लेना चाहिए । ख़ुद क़ुरआने पाक में इस की तरग़ीब दिलाई गई है । चुनान्चे, पारह 14, सूरतुन्नह़ूल की आयत नम्बर 125 में इरशाद होता है :

1...تفسیر معالم التنزیل، ۳/۳۶۱، ۳۶۰ملتقطاً

www.dawateislami.net

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ (پ۱۴، النحل: ۱۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से और उन से उस त़रीक़े पर बह़स करो जो सब से बेहतर हो।

तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान में इस आयते करीमा के तह़्त लिखा है : इस आयत में तीन त़रीक़ों से लोगों को इस्लाम की दावत देने का ह़ुक्म फ़रमाया : (1) **ह़िक्मत के साथ :** इस से वोह मज़बूत़ दलील मुराद है जो ह़क़ को वाज़ेह़ और शुब्हात (यानी वस्वसों) को ज़ाइल (ख़त़्म) कर दे। (2) **अच्छी नसीह़त के साथ :** इस से मुराद तरग़ीबो तरहीब है, यानी किसी काम को करने की तरग़ीब देना और कोई काम करने से डराना। (3) **सब से अच्छे त़रीक़े से बह़स करने के साथ :** इस से मुराद येह है कि **अल्लाह** पाक की त़रफ़ उस की आयात और दलाइल से बुलाएं।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस में कोई शक नहीं कि अगर हम क़ुरआन की बताई हुई इन तीन बातों को मद्दे नज़र रखना शुरूअ़ कर दें, तो हमारी दी हुई नेकी की दावत में पेहले से कई गुना ज़ियादा असर पैदा हो सकता है। आइए ! ह़िक्मते अ़मली और नर्म गुफ़्तगू से लबरेज़ नेकी की दावत देने का एक ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

मीठे बोल की बरक्तें

ख़ुरासान के एक बुज़ुर्ग को ख़्वाब में ह़ुक्म हुवा : तातारी क़ौम में इस्लाम की दावत पेश करो ! उस वक़्त हलाकू का बेटा **तगूदार** इक़्तिदार में था। वोह बुज़ुर्ग सफ़र कर के तगूदार के पास तशरीफ़ ले आए। सुन्नतों

1...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पा. 14, अन्नह़ल, तह़्तुल आयत : 125, 5 / 403, बि तग़य्युरिन

www.dawateislami.net

के पैकर, चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजाए मुसलमान मुबल्लिग़ को देख कर उसे मस्ती सूझी और केहने लगा : मियां ! येह तो बताओ ! तुम्हारी दाढ़ी के बाल अच्छे या मेरे कुत्ते की दुम ? बात अगर्चे ग़ुस्सा दिलाने वाली थी मगर चूंकि वोह एक समझदार मुबल्लिग़ थे, लिहाज़ा निहायत नर्मी (और हिक्मते अ़मली) के साथ फ़रमाने लगे : मैं भी अपने ख़ालिक़ो मालिक, **अल्लाह** पाक का कुत्ता हूं, अगर जां निसारी और वफ़ादारी से उसे ख़ुश करने में काम्याब हो जाऊं, तो मैं अच्छा, वरना आप के कुत्ते की दुम ही मुझ से अच्छी । तगूदार ने अपने **''ज़हरीले कांटे''** के जवाब में उस बा अ़मल मुबल्लिग़ की त़रफ़ से **''ख़ुश्बूदार फूल''** पाया, तो पानी पानी हो गया और नर्मी से बोला : आप मेरे मेहमान (*Guest*) हैं, मेरे ही यहां क़ियाम फ़रमाइए । चुनान्चे, आप उस के पास मुक़ीम हो गए । तगूदार रोज़ाना रात आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर होता और आप निहायत ही शफ़्क़त के साथ उसे नेकी की दावत पेश करते । आप की इनफ़िरादी कोशिश ने तगूदार के दिल में इन्क़िलाब पैदा कर दिया । वोही तगूदार जो कल तक इस्लाम को सफ़ह़ए हस्ती से मिटाने के दरपै था, आज इस्लाम का शैदाई बन चुका था । उसी बा अ़मल मुबल्लिग़ के हाथों तगूदार अपनी पूरी तातारी क़ौम समेत मुसलमान हो गया और उस का इस्लामी नाम **''अह़मद''** रखा गया ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मुबल्लिग़ को कैसा होना चाहिए ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यक़ीनन अगर तगूदार के कड़वे जुम्ले पर वोह बुज़ुर्ग ग़ुस्से में आ जाते, तो हरगिज़ येह नताइज बर आमद

1...ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 154, बि तग़य्युरिन क़लील

www.dawateislami.net

न होते । लिहाज़ा कोई कितना ही ग़ुस्सा दिलाए, हमें अपनी ज़बान को क़ाबू में ही रखना चाहिए कि ज़बान जब बेक़ाबू हो जाती है, तो बाज़ अवक़ात बने बनाए खेल भी बिगाड़ कर रख देती है ।

इस हिकायत से येह भी मालूम हुवा कि नेकी की दावत देते हुवे बसा अवक़ात सख़्त लहजों, कड़वे जुम्लों, ख़राब चेहरों और नेकी की दावत क़बूल करने से मुंह मोड़ने वालियों से भी सामना करना पड़ जाता है, ऐसी सूरत में भी सब्र का दामन हाथ से न जाने देना चाहिए, दिल बड़ा करना चाहिए, हिम्मत और हौसले से काम लेना चाहिए और इस अ़ज़ीम काम की अहम्मिय्यत को समझते हुवे इख़्लास के साथ नेकी की दावत देने पर ही तवज्जोह रखनी चाहिए । याद रखिए ! नेकी की दावत देना ऐसा बेहतरीन काम है जिस में नाकामी की कोई वज्ह तो हो ही नहीं सकती क्यूंकि अच्छी निय्यत की सूरत में नेकी की दावत देने वाली सवाबे आख़िरत की हक़दार तो हो ही जाती है । जैसा कि :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : किसी बुज़ुर्ग ने अपने बेटे को नसीहत करते हुवे फ़रमाया : नेकी की दावत देने वाले मुसलमान को चाहिए कि अपने आप को सब्र का आ़दी बनाए और **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से नेकी की दावत के (बदले) मिलने वाले सवाब पर यक़ीन रखे । जिस को सवाब का कामिल यक़ीन हो, उस को इस मुबारक काम में तक्लीफ़ महसूस नहीं होती ।[1] इस्लामी बहनों की त़रफ़ से पहुंचने वाली तक्लीफ़ की वज्ह से नेकी की दावत देने से रुकना नहीं चाहिए कि हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने तकालीफ़ बरदाश्त करने के बा वुजूद 950 साल तक तब्लीग़ फ़रमाई (यानी नेकी की दावत दी) ।

1...इह़याउल उ़लूम, 2 / 410

www.dawateislami.net

तब्लीग़े दीन (नेकी की दावत) के लिए जुरअत और हिम्मत की ज़रूरत होती है, बुज़दिल और डरपोक इन्सान तब्लीग़ (नेकी की दावत) का ह़क़ अदा नहीं कर सकता।[1]

नेकी की दावत देने का मुआ़मला हो या बुराई से मन्अ़ करने का, हर सूरत नर्मी को पेशे नज़र रखना चाहिए कि नर्मी के जो फ़वाइद हैं, वोह सख़्ती से हरगिज़ ह़ासिल नहीं हो सकते। इसी त़रह़ येह बात भी ज़ेह्न नशीन रखिए कि मुबल्लिग़ा को हर जगह मुबल्लिग़ा ही होना चाहिए, उसे हर वक़्त, हर जगह अपना अन्दाज़ सुन्नतों भरा रखना चाहिए और मौक़ेअ़ की मुनासबत से नेकी की दावत देने में शर्म भी नहीं करनी चाहिए। एक मुबल्लिग़ा को किन औसाफ़ से मालामाल होना चाहिए। आइए ! सुनती हैं :

मुबल्लिग़ा के औसाफ़

❖ मुबल्लिग़ा अरकाने इस्लाम की पाबन्दी और सुन्नते रसूल की ह़क़ीक़ी आईनादार हो क्यूंकि ज़ेवरे इ़ल्म के साथ अ़मल की क़ुव्वत, दावत को ज़ियादा मुअस्सिर और कारआमद बनाती है। ❖ नेकी की दावत देते वक़्त ख़ालिस **अल्लाह** पाक की रिज़ा की निय्यत पर दिली तवज्जोह रहे, इस अ़ज़ीम काम के बदले में किसी दुन्यवी मालो जाह या नुमूदो नुमाइश की त़लब न हो बल्कि सिर्फ़ बारगाहे इलाही से अज्रो सवाब की उम्मीद रखने वाली हो। ❖ मुबल्लिग़ा अपने इ़ल्म की कसरत, ज़ोरे बयान और सलाह़िय्यत व क़ाबिलिय्यत पर नहीं बल्कि **अल्लाह** पाक पर भरोसा करने वाली हो कि वोही हिदायत देने वाला है। ❖ मुबल्लिग़ा

1...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पा. 11, यूनुस, तह़्तुल आयत : 81, 4 / 358, बि तग़य्युरिन

www.dawateislami.net

हुस्ने अख़्लाक़ की पैकर और नर्मी की आ़दी हो। ❖ मुबल्लिग़ा को कभी राहे ख़ुदा में कोई मुश्किल पेश आ जाए, किसी सख़्त कलाम इस्लामी बहन से वासिता़ पड़ जाए, तो सब्र करने वाली हो। ❖ मुबल्लिग़ा के लिए ज़रूरी है कि ह़ालात भांप कर और मौक़अ़ देख कर उस के मुत़ाबिक़ गुफ़्तगू करे। ❖ मुबल्लिग़ा को ख़ुद किसी बहूसो तकरार में नहीं उलझना चाहिए। ❖ मुबल्लिग़ा को चाहिए कि हमेशा **अल्लाह** पाक की रह़मत पर नज़र रखे और मायूसी को क़रीब भी न आने दे।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नेकी की दावत देना और बुराई से मन्अ़ करना येह वोह बुन्यादी मक़्सद है जिस की तक्मील के लिए अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इस काइनात में तशरीफ़ लाए। क़ुरआने पाक की सूरए अम्बिया में ह़ज़रते मूसा, ह़ज़रते हारून, ह़ज़रते इब्राहीम, ह़ज़रते लूत़, ह़ज़रते इस्ह़ाक़, ह़ज़रते याक़ूब, ह़ज़रते नूह़, ह़ज़रते दावूद, ह़ज़रते सुलैमान, ह़ज़रते अय्यूब, ह़ज़रते इस्माईल, ह़ज़रते इदरीस, ह़ज़रते ज़ुलकिफ़्ल, ह़ज़रते यूनुस, ह़ज़रते ज़करिय्या, ह़ज़रते यह़या और ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के वाक़िआ़त बयान फ़रमाए गए। इन तमाम वाक़िआ़त को बयान करने के बाद फ़रमाया गया : सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येही एक मक़्सद था कि वोह मख़्लूक़ को **अल्लाह** पाक की इ़बादत की दावत दें।[2] इमामुल अम्बिया, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी नेकी की दावत देने और बुराई से मन्अ़ करने का अ़ज़ीम मन्सब (*Status*) ले कर इस दुन्या में जल्वा अफ़रोज़ हुवे, आज जहां कहीं दीन की रौशन

1...सरकार का अन्दाज़े तब्लीग़े दीन, स. 20 ता 24, मुलख़्ख़सन, बि तग़य्युरिन
2...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, 6 / 277, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

किरनों से येह ज़माना रौशन हो रहा है, येह सब हमारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दी हुई नेकी की दावत का सदक़ा है, आप की ही मुसल्सल मेह़नतों और कोशिशों से दीन का झन्डा हर सम्त लेहराया। आइए ! आक़ा करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नेकी की दावत देने की एक झलक मुलाह़ज़ा कीजिए।

त़ाइफ़ में नेकी की दावत

इब्तिदाए इस्लाम में जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने त़ाइफ़ वालों को इस्लाम की दावत देने के लिए त़ाइफ़ का सफ़र फ़रमाया, तो ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللهُ عَنْه भी आप के साथ थे। त़ाइफ़ में बड़े बड़े मालदार लोग रेहते थे, इन में "**अम्र**" का ख़ानदान तमाम क़बाइल का सरदार शुमार किया जाता था। येह लोग तीन भाई थे : (1) इब्ने अ़ब्दे यालील (2) मस्ऊ़द और (3) ह़बीब। हुज़ूरे पाक عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام इन तीनों के पास तशरीफ़ ले गए और इस्लाम की दावत दी। इन तीनों ने इस्लाम क़बूल नहीं किया बल्कि इन्तिहाई गुस्ताख़ाना जवाब दिया। इन बद नसीबों ने इसी पर बस नहीं किया बल्कि त़ाइफ़ के शरीरों को आप عَلَيْهِ السَّلَام के साथ बुरा सुलूक करने पर उभारा। चुनान्चे, इन शरीरों ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर हर त़रफ़ से ह़म्ला कर दिया और आप पर पथ्थर बरसाने लगे, यहां तक कि आप का जिस्मे नाज़नीन ज़ख़्मों से लहू लुहान हो गया, नालैने मुबारक ख़ून से भर गईं। जब आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ख़्मों से बेताब हो कर बैठ जाते, तो येह ज़ालिम इन्तिहाई बे दर्दी के साथ आप का बाज़ू पकड़ कर उठाते और जब आप चलने लगते, तो फिर आप पर पथ्थरों की बारिश करते और साथ साथ त़ाना ज़नी करते, गालियां देते, तालियां बजाते, हंसी उड़ाते। ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिसा رَضِیَ اللهُ عَنْه दौड़ दौड़ कर हुज़ूरे अक़्दस

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم पर आने वाले पथ्थरों को अपने बदन पर लेते थे और हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم को बचाते थे, यहां तक कि वोह भी ख़ून में नहा गए और ज़ख़्मों से निढाल हो गए फिर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने अंगूर के एक बाग़ में पनाह ली।[1]

जंगे उहुद से भी सख़्त दिन

इस सफ़र के लम्बे अ़र्से बाद एक मरतबा उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या जंगे उहुद के दिन से भी ज़ियादा सख़्त कोई दिन आप पर गुज़रा है ? तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हां ! ऐ आ़इशा ! वोह दिन मेरे लिए जंगे उहुद के दिन से भी ज़ियादा सख़्त था, जब मैं ने ता़इफ़ में वहां के एक सरदार "**इब्ने अ़ब्दे यालील**" को इस्लाम की दावत दी, उस ने दावते इस्लाम को ह़क़ारत से ठुकरा दिया और ता़इफ़ वालों ने मुझ पर पथराव किया, मैं इस रन्जो ग़म में सर झुकाए चलता रहा, यहां तक कि मक़ामे "**क़रनुस्सआ़लिब**" में पहुंच कर मेरे होशो ह़वास बह़ाल हुवे। वहां पहुंच कर जब मैं ने सर उठाया, तो क्या देखता हूं कि एक बदली (बादल का छोटा सा टुकड़ा) मुझ पर साया किए हुवे है। उस बादल में से ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे आवाज़ दी और कहा : **अल्लाह** पाक ने आप की क़ौम का क़ौल और उन का जवाब सुन लिया और अब आप की ख़िदमत में पहाड़ों का फ़िरिश्ता ह़ाज़िर है ताकि वोह आप के हुक्म की तामील करे। हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ واٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है : पहाड़ों का फ़िरिश्ता मुझे सलाम कर के अ़र्ज़ करने लगा :

1...مواہب لدنیہ، ہجرتہ صلی اللہ علیہ وسلم، ۱/۱۳۶، ۱۳۷

www.dawateislami.net

ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! अगर आप चाहते हैं कि मैं "**अख़्शबैन**" (अबू क़ुबैस और क़ुऐक़िआन) दोनों पहाड़ों को इन पर उलट दूं, तो मैं उलट देता हूं। येह सुन कर हुज़ूर रहमते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया : नहीं ! बल्कि मैं उम्मीद करता हूं कि **अल्लाह** पाक इन की नस्लों से अपने ऐसे बन्दों को पैदा फ़रमाएगा जो सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की ही इबादत करेंगे और शिर्क नहीं करेंगे।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस वाक़िए से जहां सरकारे नामदार, दो आ़लम के मुख़्तार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नेकी की दावत देने का अ़ज़ीम जज़्बा ज़ाहिर हो रहा है, वहीं आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ुव्वते बरदाश्त और मुआ़फ़ करना भी ज़ाहिर हो रहा है। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुकम्मल ज़िन्दगी सब्रो तह़म्मुल से भरी हुई है, ज़ालिमों ने आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े, पथ्थर बरसाए, राह में कांटे बिछाए, डराया, धमकाया, क़त्ल की साज़िशें कीं मगर काइनात के आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी कोई इन्तिक़ामी कारवाई न की, खुद भी सब्र से काम लिया और रेहती दुन्या तक अपने मानने वालों को भी मुसीबतों में सब्र की तल्क़ीन इरशाद फ़रमाई। चुनान्चे,

आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ढारस निशान है : जिसे कोई मुसीबत पहुंचे, उसे चाहिए कि अपनी मुसीबत के मुक़ाबले में मेरी मुसीबत याद करे, बेशक वोह सब मुसीबतों से बढ़ कर है।[2]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिए ! इनफ़िरादी ज़िन्दगी हो या इजतिमाई, घरेलू हो या समाजी, सब्र के बिग़ैर ज़िन्दगी की किताब

1...بخاری، کتاب بدء الخلق، باب اذا قال احدکم آمین...الخ، ۲/۳۸۶، حدیث: ۳۲۳۱

2...جامع کبیر، ۷/۹۸، حدیث: ۲۱۳۴۶

www.dawateislami.net

ना मुकम्मल रेहती है। आज ज़रूरत इस चीज़ की है कि हम हर वक़्त सब्र की सुवारी पर सुवार रहें, मुसीबतों, परेशानियों, बेजा मुख़ालफ़तों और ग़मों का सामना होता ही रहेगा, सब्र इन तमाम चीज़ों का बेहतरीन जवाब है। **अल्लाह** पाक हमें सब्र की दौलत अ़ता फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं। शहनशाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ज़ुल्फ़ों और सर के बालों वग़ैरा की सुन्नतें और आदाब

आइए ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के रिसाले **"163 मदनी फूल"** से सर के बालों वग़ैरा की सुन्नतें और आदाब सुनती हैं : ❖ औ़रत का सर मुन्डवाना ह़राम है।[2] ❖ औ़रत को सर के बाल कटवाना नाजाइज़ व गुनाह है और उस पर लानत आई। शौहर ने ऐसा करने को कहा, जब भी येही हुक्म है कि औ़रत ऐसा करने में गुनहगार होगी क्यूंकि शरीअ़त की ना फ़रमानी करने में किसी (यानी मां-बाप या

1...مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵

2...फ़तावा रज़विय्या, 22 / 664, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

शौहर वग़ैरा) का केहना नहीं माना जाएगा।[1] ❖ छोटी बच्चियों के बाल मर्दाना त़र्ज़ पर न कटवाइए, बचपन ही से इन को लम्बे बाल रखने का ज़ेह्न दीजिए। ❖ बाज़ लोग सीधी या उल्टी जानिब मांग निकालते हैं, येह सुन्नत के ख़िलाफ़ है। ❖ सुन्नत येह है कि बीच में मांग निकाली जाए। ❖ आज कल क़ैंची या मशीन के ज़रीए बालों को मख़्सूस त़र्ज़ पर काट कर कहीं बड़े, तो कहीं छोटे कर दिए जाते हैं, ऐसे बाल रखना सुन्नत नहीं। ❖ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के बाल हों, वोह उन का इकराम करे।[2] यानी उन को धोए, तेल लगाए और कंघा करे। ❖ सर में मेहंदी लगा कर सोना नहीं चाहिए। एक ह़कीम का केहना है : इस त़रह़ मेहंदी लगा कर सो जाने से सर वग़ैरा की गर्मी आंखों में उतर आती है, जो बीनाई के लिए नुक़्सान देह है।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात), 120 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**सुन्नतें और आदाब**" और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले "**163 मदनी फूल**" और "**101 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिए और बग़ौर इन का मुत़ालआ़ फ़रमाइए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, 3 / 588

2...ابو داود، کتاب الترجل، باب فی اصلاح الشعر، ۴/ ۱۰۳، حدیث: ۴۱۶۳

www.dawateislami.net

बयान : 17 हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नूरबार है : زَيِّنُوْا مَجَالِسَكُمْ بِالصَّلَاةِ عَلَيَّ فَاِنَّ صَلَاتَكُمْ عَلَيَّ نُوْرٌ لَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना, बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिए नूर होगा।[1]

ज़िक्रो दुरूद हर घड़ी विर्दे ज़बां रहे
मेरी फ़ुज़ूल गोई की आदत निकाल दो

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 305)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1...جامع صغیر، ص ۲۸۰، حدیث: ۴۵۸۰

2...معجم کبیر، ۱۸۵/۶، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। ❖ जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत हासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! اِنْ شَآءَ الله ! आज के इस हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में हम सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ख़ानदान की शानो अ़ज़मत, मसलन ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदैन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا का तक़्वा, नानाजान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के हालात, आप की फूफीजान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا की करामत और इस के इलावा कुछ मदनी फूल सुनने की सआ़दत हासिल करेंगी। **अल्लाह** करे ! हम सारा बयान तवज्जोह और दिलजम्ई के साथ सुनने की सआ़दत हासिल कर लें।

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه निहायत आ़लीशान घराने में पैदा हुवे, आप का ख़ानदान ज़ोह्दो तक़्वा की वज्ह से बहुत मश्हूर था । आप की वालिदा का नाम **''फ़ातिमा बिन्ते शैख़ अ़ब्दुल्लाह सौमई** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا**''** वालिदा की कुन्यत **''उम्मुल ख़ैर''** जबकि लक़ब **''अमतुल जब्बार''** (**अल्लाह** पाक की कनीज़) था ।[1] आप के वालिदे गिरामी का नामे मुबारक **''सय्यिद मूसा''** कुन्यत **''अबू सालेह़''** जबकि लक़ब **''जंगी दोस्त''** है । हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वालिद की निस्बत से ह़सनी (और वालिदए माजिदा की त़रफ़ से हुसैनी सय्यिद) हैं । आप के वालिदे गिरामी, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने वक़्त के मश्हूरे ज़माना औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن में से थे ।[2] अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ख़ानदाने ग़ौसे पाक की शानो अ़ज़मत बयान करते हुवे लिखते हैं :

मुकर्रम शहा तेरे सारे के सारे
हैं आबाओ अज्दाद या ग़ौसे आज़म

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 555)

आइए ! सब से पेहले हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदैने करीमैन के तक़्वा व परहेज़गारी से मुतअ़ल्लिक़ एक दिलचस्प वाक़िआ़ सुनती हैं । चुनान्चे,

वालिदैने ग़ौसे पाक का तक़्वा

मन्क़ूल है : ह़ज़रते अबू सालेह़ मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दरया के किनारे बैठे थे कि एक सेब (Apple) बेहता हुवा आया, आप ने उसे

1...सीरते ग़ौसे आज़म, स. 27, मुलख़्ख़सन
2...ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. 16

www.dawateislami.net

खा लिया। सेब खाने के बाद आप पर ख़ौफ़े ख़ुदा का ग़लबा हुवा और आप इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करने लगे कि न जाने येह सेब किस का था ? और क्या इस त़रह़ ना मालूम सेब खाना मेरे लिए ह़लाल हो सकता है ? येह ख़याल पैदा होते ही आप अपना क़ुसूर मुआ़फ़ करवाने के लिए सेब के मालिक की तलाश में दरया के किनारे चल दिए। एक लम्बा सफ़र करने के बाद आप को दरया के क़रीब एक निहायत अ़ज़ीमुश्शान इमारत नज़र आई जिस में सेब का एक बहुत बड़ा दरख़्त लगा हुवा था जिस की शाख़ों पर पके हुवे सेब लगे हुवे थे और सेबों से भरी येह शाख़ें पानी पर फैली हुई थीं, आप को यक़ीन हो गया कि जो सेब मैं ने खाया था वोह इसी दरख़्त का है। चुनान्चे, आप ने लोगों से उस दरख़्त के मालिक के बारे में पूछा, तो पता चला कि उस बाग़ के मालिक तो अपने ज़माने के मश्हूर आ़बिदो ज़ाहिद, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हैं।

ग़ौसे पाक के नानाजान का तआ़रुफ़

याद रहे ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जीलान शरीफ़ के बुज़ुर्गों में से थे, जो निहायत मुत्तक़ी व परहेज़गार और बा कमाल वली थे।

सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सौमई का मक़ामो मर्तबा

ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अबू मुह़म्मद अद्दारबानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दुआ़एं बहुत जल्द क़बूल हो जाती थीं, आप का मक़ामो मर्तबा बारगाहे इलाही में इतना बुलन्दो बाला था कि अगर आप किसी से (किसी शरई वज्ह के सबब कभी) नाराज़ हो जाते, तो **अल्लाह** करीम उस से बदला लेता और जिस से आप ख़ुश हो जाते, तो **अल्लाह** पाक उस को इन्आ़मो इकराम से नवाज़ता। आप

www.dawateislami.net

जिस्मानी कमज़ोरी के बा वुजूद भी कसरत से नवाफ़िल अदा फ़रमाते और ज़िक्रो अज़्कार में मश्ग़ूल रेहते थे। **अल्लाह** पाक की अ़ता से आप अक्सर ग़ैब की ख़बरें बता दिया करते थे और जैसा आप ने फ़रमाया होता, ह़क़ीक़त में भी वैसा ही हो जाया करता था, बिला शुबा येह आप की एक शानदार करामत थी।[1]

बहर ह़ाल जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को बाग़ के मालिक, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुतअ़ल्लिक़ इ़ल्म हो गया, तो आप बिग़ैर किसी ताख़ीर के उन की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हो गए और सारा माजरा अ़र्ज़ करने के बाद उन से मुआ़फ़ी चाही। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه चूंकि विलायत के आला मर्तबे पर फ़ाइज़ थे, लिहाज़ा आप समझ गए कि येह शख़्स **अल्लाह** करीम के मक़्बूल बन्दों में से एक बन्दा है, जभी तो अपना क़ुसूर मुआ़फ़ करवाने की ख़ातिर इतना लम्बा सफ़र कर के यहां तक आया है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने आप की बात सुन कर फ़रमाया : 12 साल हमारी ख़िदमत में रहोगे तब ही मुआ़फ़ी मिलेगी। क़ुरबान जाइए ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पर जिन्हों ने बिग़ैर किसी बह़सो तकरार के इस शर्त़ को बख़ुशी मन्ज़ूर फ़रमा लिया और 12 साल तक उन की सोह़बते बा बरकत में रेह कर उन की ख़िदमत करते रहे, जब 12 साल पूरे हो गए, तो अगला इम्तिह़ान आप का इस्तिक़्बाल करने के लिए तय्यार था और इस दफ़्आ़ का इम्तिह़ान शायद पिछले इम्तिह़ान से अ़जीब और सख़्त था, वोह येह कि वलिय्ये कामिल, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने आप से फ़रमाया : एक ख़िदमत और भी है और वोह येह कि मेरी एक लड़की है

1...بهجة الاسرار، ذكر نسبه وصفته، ص ۱۷۲ ملخصا

www.dawateislami.net

जिस में चार ऐ़ब हैं : (1) आंखों से अन्धी है। (2) कानों से बेहरी है। (3) हाथों से माज़ूर है और (4) पाउं से लंगड़ी है। तुम्हें उस से निकाह़ भी करना होगा और दो साल तक मज़ीद मेरी ख़िदमत भी करनी होगी, इस के बाद जहां तुम्हारा जी चाहे, चले जाना।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه चूंकि इस्लामी तालीमात से आगाह, ख़ौफ़े ख़ुदा के पैकर और बेहतरीन सोच रखने वाले थे, लिहाज़ा आप ने इस शर्त़ को भी क़बूल फ़रमा लिया। अब आप का दूसरा इम्तिह़ान भी शुरूअ़ हो गया, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सौमई़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपनी शहज़ादी का निकाह़ आप से कर दिया, निकाह़ के बाद जैसे ही अपनी ज़ौजा से आप का सामना हुवा, तो आप एक अ़जीब सी कश्मकश में मुब्तला हो गए क्यूंकि निगाहों के सामने जो मन्ज़र दिखाई दे रहा था, वोह बताई गई सूरते ह़ाल के बिल्कुल ही उलट (*Opposite*) था, क्या देखते हैं कि आप की ज़ौजए मोह़तरमा के तो तमाम ही आज़ा सह़ीह़ सलामत हैं। येह मन्ज़र देख कर आप अपनी नई नवेली दुल्हन के क़रीब तक न गए बल्कि वहीं से वापस पलट आए और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सौमई़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से माजरा बयान किया। उन्हों ने फ़रमाया : परेशान होने की ज़रूरत नहीं ! तुम्हारी ज़ौजा वोही है जिसे तुम अभी अभी देख कर आ रहे हो। बात दरअस्ल येह है कि मैं ने अपनी लड़की की जो जो बातें तुम से बयान की थीं वोह सब की सब उस में मौजूद हैं। वोह आंखों से अन्धी है, इस से मेरी मुराद येह थी कि **"ना मह़रम के लिए उस की आंखें अन्धी हैं"** कानों से बेहरी है, इस से मेरी मुराद येह थी कि **"नाह़क़ बात सुनने के लिए उस के कान बेहरे हैं"** हाथों से माज़ूर है, इस से मेरी मुराद येह थी कि **"ग़ैर मर्दों को छूने के लिए उस के हाथ माज़ूर हैं"** और पाउं से माज़ूर है, इस से मेरी मुराद

www.dawateislami.net

येह थी कि "**अपने शौहर के हुक्म के ख़िलाफ़ क़दम उठाने के लिए उस के पाउं लंगड़े हैं ।**" जब आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सौमई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ज़बानी अपनी नई नवेली दुल्हन के मुतअ़ल्लिक़ वज़ाह़तें सुनीं, तो आप के दिल को क़रार आ गया, आप के दिल में अपनी ज़ौजा की अहम्मिय्यत उजागर हो गई और **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से आप को अपने ज़माने के ज़बरदस्त वली की बहुत सी अच्छी ख़ूबियों से आरास्ता ख़ूबसूरत और ख़ूब सीरत बेटी का शौहर बनने का शरफ़ नसीब हुवा ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा ह़िकायत से हमें मालूम हुवा : (1) **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे, बन्दों के हुक़ूक़ के मुआ़मले में इन्तिहाई हुस्सास होते हैं, **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे ख़ौफ़े ख़ुदा वाले होते हैं, **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे फ़िक्रे आख़िरत की नेमत से मालामाल होते हैं, **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे एक गुमनाम सेब खाने के बारे में भी अपना मुह़ासबा करते हैं, **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे अपने क़ुसूर को मुआ़फ़ कराने की ख़ातिर बड़े जतन करते हैं । अब ज़रा हम अपना एह़तिसाब करें कि क्या हमारे अन्दर भी येह ख़ूबियां पाई जाती हैं ? क्या हम भी दूसरों के हुक़ूक़ पूरे तौर पर अदा करती हैं ? क्या हमारे दिल भी ख़ौफ़े ख़ुदा से सरशार हैं ? क्या हम भी अपने आमाल का मुह़ासबा करती हैं ? क्या हम भी अपने क़ुसूर मुआ़फ़ करवाने के लिए कोशिशें करती हैं ? **अफ़्सोस** ! आज कल हुक़ूक़ुल इ़बाद का ज़रा भी ख़याल नहीं रखा जाता, हमारी ज़ात से किस को तक्लीफ़ पहुंच रही है, किस की ह़क़ तलफ़ी हो

1...सीरते ग़ौसे आज़म, स. 26, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

रही है, इस त़रफ़ ज़रा भी तवज्जोह नहीं दी जाती । **अल्लाह** पाक हमें हुक़ूक़ुल्लाह की अदाएगी के साथ साथ हुक़ूक़ुल इबाद भी अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

हुक़ूक़ुल इबाद **आह** ! होगा मेरा क्या ?
करम मुझ पे कर दे करम या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 110)

(2) दूसरी बात येह मालूम हुई : पेहले की ख़वातीन में ना मह़रमों से शरई पर्दा करने का मदनी जज़्बा कूट कूट कर भरा हुवा था । जैसा कि सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की वालिदा के बारे में हम ने सुना, येही वज्ह है कि उन की नस्लों में औलियाए कामिलीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن पैदा हुवा करते थे । मगर **आह** ! अब तो हर त़रफ़ बे पर्दगी व बे ह़याई की आफ़त ने अपने पन्जे गाढ़ रखे हैं, त़िब, सफ़र, तालीम, बैंकिंग, सेह़त, खेल, तिजारत, मीडिया और टेलीकॉम वग़ैरा मुख़्तलिफ़ शोबाजात में औ़रतों की एक वाज़ेह़ तादाद तअ़य्युनात (तैनात) होती है । दुन्यवी शोबाजात में अ़वामी रेहनुमाई और ख़िदमत का शायद ही कोई ऐसा शोबा (*Department*) हो जहां बे पर्दा और मॉडर्न औ़रतें मौजूद न होती हों । इसी त़रह़ मंगनी, शादी, वलीमा, ईदे सईद, सालगिरह, अ़क़ीक़ा, वेलन्टाइन डे, न्यू ईयर नाइट, बसन्त और जश्ने आज़ादी के मवाक़ेअ़ पर भी अक्सर ख़वातीन चादर और चार दीवारी का तक़द्दुस पामाल कर के सरे आ़म बे ह़याई के तमाम रेकॉर्ड्ज़ तोड़ डालती हैं । ह़ालांकि **अल्लाह** करीम ने औ़रतों को अपने घरों में ठेहरी रेहने का हुक्म और शरई ज़रूरत व ह़ाजत के बिग़ैर अपने घरों से निकलने से मन्अ़ फ़रमाया है । चुनान्चे, पारह 22, सूरतुल अह़ज़ाब, आयत नम्बर 33 में फ़रमाया गया :

www.dawateislami.net

وَقَرْنَ فِیْ بُیُوْتِكُنَّ وَ لَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِیَّةِ الْاُوْلٰى (پ۲۲، الاحزاب: ۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घरों में ठेहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी।

बयान कर्दा आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : यानी ऐ मेरे ह़बीब की अज़्वाज ! तुम अपने घरों में ठेहरी रहो और अपनी रेहाइश गाहों में सुकूनत पज़ीर रहो (और शरई ज़रूरत के बिग़ैर घरों से बाहर न निकलो)। याद रहे ! इस आयत में ख़ित़ाब अगर्चे अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللهُ عَنْهُنَّ को है लेकिन इस ह़ुक्म में दीगर औ़रतें भी दाख़िल हैं।[1]

वोह बहनें जो पेहनें सदा मदनी बुर्क़अ़
उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आज़म

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 550)

(3) तीसरी बात येह मालूम हुई : जो मां-बाप मुत्तक़ी व परहेज़गार, इ़बादात गुज़ार, शर्मो ह़या के पैकर और मदनी रंग में रंगे हुवे होते हैं, तो येही ख़ुसूसिय्यात उन की औलाद में भी मुन्तक़िल हो जाती हैं और **अल्लाह** पाक ऐसों की नस्लों को भी संवार देता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : बेशक **अल्लाह** पाक इन्सान की नेकूकारी से उस की औलाद और औलाद, दर औलाद की इस्लाह़ फ़रमा देता है, उस की नस्ल और उस के पड़ोसियों में उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है और वोह सब **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से अमान में रेहते हैं।[2]

1...تفسیر روح البیان، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیت: ۳۳، ۷/ ۱۷۰

2...تفسیر دُرِّمَنثور، پ۱۶، الکھف، تحت الآیت: ۸۲، ۵/ ۴۲۲

www.dawateislami.net

हां ! मां-बाप ही अगर फ़ैशन के दीवाने होंगे, मां-बाप ही फ़िल्में ड्रामे देखने और गाने बाजे सुनने के शैदाई होंगे, मां-बाप ही बे अ़मली का शिकार होंगे, मां-बाप ही ज़रूरी दीनी मसाइल से ना वाक़िफ़ होंगे, मां-बाप ही सुन्नतों से मुंह मोड़े हुवे होंगे, मां-बाप ही बे पर्दगी व बे ह़याई और त़रह़ त़रह़ के बात़िनी अमराज़ का शिकार हों, तो ऐसों की औलाद बा अ़मल व बा किरदार और आ़शिक़े रसूल बन जाए, ऐसा होना काफ़ी मुश्किल है। लिहाज़ा मां-बाप को चाहिए कि सब से पेहले वोह ख़ुद इ़ल्मो अ़मल के ज़ेवर से आरास्ता हों, ख़ुसूसन फ़र्ज़ उ़लूम सीखें, सुन्नतें अपनाएं, शर्मो ह़या के पैकर बनें और अपने ज़ाहिरो बात़िन को इस्लामी तालीमात के मुत़ाबिक़ संवारने की कोशिश करें ताकि वोह अपनी औलाद की सह़ीह़ माना में तरबियत करने में काम्याब हो सकें।

याद रखिए ! औलाद की इस्लामी त़रीक़े से तरबियत करना वालिदैन की अहम तरीन ज़िम्मेदारियों में शामिल है। **अल्लाह** करीम तमाम वालिदैन को अपनी और अपनी औलाद की इस्लामी त़रीक़े के मुत़ाबिक़ तरबियत कर के अपने आप को और अपनी औलाद को जहन्नम की आग से बचाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मेरी आने वाली नस्लें तेरे इ़श्क़ ही में मचलें
उन्हें नेक तू बनाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 429)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नेकी की दावत देना और बुराई से मन्अ़ करना इस्लाह़े उम्मत और उम्मते मुस्त़फ़ा की ख़ैर ख़्वाही का बेहतरीन ज़रीआ़ है, येह वोह अ़ज़ीमुश्शान काम है जिस को तमाम ही अम्बियाए

www.dawateislami.net

किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने बेहतरीन अन्दाज़ में सर अन्जाम दिया। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे गिरामी, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी **अल्लाह** पाक के मक़्बूल वली थे, आप का सीना भी इस्लाह़े उम्मत और उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के मुक़द्दस जज़्बे से सरशार था, लिहाज़ा आप ने नबियों और वलियों के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे नेकी की दावत के इस अ़ज़ीम फ़रीज़े को अच्छी त़रह़ अन्जाम दिया। आइए ! आप का नेकी की दावत देने के अन्दाज़ पर मुश्तमिल एक दिल नशीन वाक़िआ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

शराब के मटके तोड़ दिए

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ मूसा जंगी दोस्त رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक दिन जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जा रहे थे, देखा कि बादशाहे वक़्त के चन्द मुलाज़िम शराब के मटके सरों पर उठाए बादशाह के मह़ल की त़रफ़ बढ़े चले जा रहे थे। जब आप ने येह मन्ज़र देखा, तो बुराई से रोकने के मुक़द्दस जज़्बे से सरशार हो कर आगे बढ़े और उन के मटकों को तोड़ दिया। आप के रोबो दबदबे, जलाल और बुज़ुर्गी को देख कर किसी भी मुलाज़िम को कुछ केहने की हिम्मत न हुई लेकिन उन्हों ने जाते ही बादशाह के सामने सारा वाक़िआ़ बयान कर दिया। बादशाह ने कहा : सय्यिद मूसा (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) को फ़ौरन मेरे दरबार में पेश करो। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिद मूसा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दरबार में तशरीफ़ ले आए, तो बादशाह ने ग़ुस्से में पूछा : आप कौन होते हैं मेरे मुलाज़िमीन की मेह़नत को ज़ाएअ़ करने वाले ? ह़ज़रते सय्यिद मूसा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं मोह़तसिब (यानी निगरानी करने वाला) हूं और मैं ने अपना फ़र्ज़ अदा किया है। बादशाह ने कहा : आप किस के हुक्म से मोह़तसिब (यानी निगरानी करने वाले) मुक़र्रर किए गए

www.dawateislami.net

हैं ? मूसा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने रोबदार लेह्जे में जवाब दिया : जिस के हुक्म से तुम हुकूमत कर रहे हो। आप के इस इरशाद से ख़लीफ़ा पर ऐसी रिक़्क़त त़ारी हुई कि वोह घुटनों पर सर रख कर बैठ गया और थोड़ी देर बाद सर उठा कर अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मटकों को तोड़ने में क्या हिक्मत थी ? ह़ज़रते सय्यिद अबू सालेह़ मूसा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे ह़ाल पर शफ़्क़त करते हुवे तुम्हें दुन्या व आख़िरत की रुस्वाई और ज़िल्लत से बचाने की ख़ात़िर ऐसा किया। ख़लीफ़ा पर आप की इस हिक्मत भरी गुफ़्तगू का बहुत असर हुवा और मुतास्सिर हो कर वोह आप की ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : आ़लीजाह ! आप मेरी त़रफ़ से भी मोह़तसिब के मन्सब पर मामूर हैं। आप ने बड़ी बे नियाज़ी से फ़रमाया : जब मैं **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से मामूर हूं, तो फिर मुझे मख़्लूक़ की त़रफ़ से मामूर होने की क्या ज़रूरत है ? उसी दिन से आप **"जंगी दोस्त"** के लक़ब से मश्हूर हो गए।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा हिकायत से मालूम हुवा ! **अल्लाह** वाले जाहो मन्सब रखने वालों के रोबो दबदबे से मुतास्सिर नहीं होते, **अल्लाह** वाले ऊंचे मन्सब वालों की ख़ुशामद व चापलूसी नहीं करते, **अल्लाह** वाले दुन्यवी ओ़ह्दों पर फ़ाइज़ लोगों को बुराई में मुब्तला देख कर ख़ामोश नहीं रेह पाते, **अल्लाह** वाले उन्हें भी नसीह़त (*Advice*) फ़रमाते हैं क्यूंकि दौलतमन्दों की ख़ुशामद तो वोह करे जिसे दुन्या की ज़लील दौलत पाने का लालच हो जबकि **अल्लाह** वाले तो क़नाअ़त की क़ीमती दौलत से मालामाल होते हैं, **अल्लाह** वालों की नज़र दौलतमन्दों के फ़ानी माल पर नहीं बल्कि रह़मते इलाही पर होती है। यहां येह बात भी याद रखें कि हमारा काम सिर्फ़ नेकी की दावत देना और बुराई से मन्अ़

1...ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. 16, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

करना है, मनवाना हमारा काम नहीं है, अलबत्ता अगर कहीं किसी ग़ैर शरई काम को रोकने की क़ुदरत (Power) है, तो उसे रोकना भी ज़रूरी होगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

वालिदए मोहतरमा के औसाफ़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे मोहतरम की सीरत के बारे में सुन रही थीं। आइए ! अब हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْها के बारे में भी कुछ सुनती हैं : चुनान्चे, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वालिदए माजिदा, उम्मुल ख़ैर, हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْها (अपने) वक़्त की इन्तिहाई नेक सीरत ख़ातून और तक़्वा व परहेज़गारी की पैकर थीं।[1] आप दीगर बहुत सी बेहतरीन ख़ूबियों से भी आरास्ता थीं मगर आप की ज़ात में एक ख़ास (Special) बात येह भी थी कि आप तिलावते क़ुरआन की बहुत शैदाई थीं और कसरत से तिलावते क़ुरआन करना आप का मामूल था, इस का असर येह हुवा कि जनाबे ग़ौसे आज़म, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने आप के पेट में रेह कर पूरे 18 पारे याद कर लिए थे। चुनान्चे,

18 पारे सुना दिए

मन्क़ूल है कि जब शहनशाहे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पांच साल की उ़म्र में पेहली बार "**बिस्मिल्लाह**" पढ़ने की रस्म के लिए किसी बुज़ुर्ग के पास बैठे, اَعُوْذُبِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم और بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ी फिर सूरए फ़ातिहा और الٓمّٓ से ले कर 18 पारे सुना दिए। उन बुज़ुर्ग

1...सीरते ग़ौसे आज़म, स. 51, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

ने कहा : बेटे ! और पढ़िए, कहा : बस मुझे इतना ही याद है क्यूंकि मेरी मां को भी इतना ही याद था। जब मैं अपनी मां के पेट में था, उस वक़्त वोह पढ़ा करती थीं, मैं ने सुन कर याद कर लिया था।[1]

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आंखें वोह है तल्वा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 19)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा ह़िकायत से जिस त़रह़ हमारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की वालिदए माजिदा के शौक़े तिलावत का पता चला, वहीं येह भी मालूम हुवा कि हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पैदाइशी वली हैं, आप की करामात का ज़ुहूर आप के पैदा होते ही शुरूअ़ हो गया था और वालिदा के पेट में 18 पारे याद फ़रमा कर दुन्या में जल्वागर हुवे थे। इस वाक़िए़ से हमें भी दर्स मिलता है कि हम भी कुछ न कुछ वक़्त निकाल कर तिलावते क़ुरआने करीम की सआ़दत पाएं, इस मक़्सद के लिए मद्रसतुल मदीना बालिग़ात में पढ़ें या पढ़ाएं। **अल्लाह** करीम हमें अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस त़रह़ हमारे ग़ौसे पाक के नानाजान विलायत के बुलन्द मन्सब पर फ़ाइज़ थे, जिस त़रह़ हमारे ग़ौसे पाक के वालिदे मोह़तरम आसमाने विलायत का रौशन सितारा थे, जिस त़रह़ हमारे ग़ौसे पाक की वालिदए माजिदा, **अल्लाह** पाक की मक़्बूल वलिय्या थीं, इसी त़रह़ हमारे ग़ौसे पाक की फूफीजान को भी **अल्लाह**

1...रिसाला : मुन्ने की लाश, स. 4, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

करीम ने विलायत का मर्तबा अ़ता फ़रमाया था, आप एक बा करामत वलिय्या थीं और आप का मक़ामो मर्तबा **अल्लाह** पाक की बारगाह में इस क़दर बुलन्दो बाला था कि लोग बारिश के लिए दुआ़एं करवाने के लिए आप की पाक बारगाह में ह़ाज़िरी दिया करते और **अल्लाह** पाक की रह़मत का नज़्ज़ारा करते। आइए ! हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की फूफीजान की एक ईमान अफ़रोज़ करामत मुलाह़ज़ा कीजिए। चुनान्चे,

ग़ौसे पाक की फूफीजान की करामत

एक दफ़्आ़ जीलान में बारिशें न होने की वज्ह से ख़ुश्क साली हो गई (यानी लोग पानी की बूंद बूंद को तरस गए), लोगों ने नमाज़े इस्तिस्क़ा (यानी बारिश के लिए पढ़ी जाने वाली नमाज़) पढ़ी लेकिन बारिश न हुई, तो लोग आप की फूफीजान, ह़ज़रते सय्यिदा उम्मे आ़इशा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْها के घर आए और उन से बारिश के लिए दुआ़ करने की दरख़ास्त (*Request*) की। वोह अपने घर के सेहून की त़रफ़ तशरीफ़ लाई और ज़मीन पर झाड़ू दे कर दुआ़ मांगी : ऐ रब्बे करीम ! मैं ने तो झाड़ू दे दी, अब तू छिड़काव फ़रमा दे (यानी बारिश से सेराब फ़रमा दे)। कुछ ही देर में आसमान से बारिश बरसना शुरूअ़ हो गई, लोग अपने घरों को इस ह़ाल में लौटे कि तमाम के तमाम पानी से तर थे और पूरा जीलान ख़ुशह़ाल हो गया।[1]

बख़्श दे मेरी सारी ख़त़ाएं　　खोल दे मुझ पर अपनी अ़त़ाएं
बरसा दे रह़मत की बरखा　　या **अल्लाह** मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 123)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...بهجة الاسرار، ذكر نسبه وصفته، ص ۷۳ ملخصاً

www.dawateislami.net

औलियाए किराम की महब्बत की बरकात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! औलियाए किराम की महब्बत बिगड़ियां बना देती है, औलियाए किराम की महब्बत शैतान से बचने का काम्याब तरीन हथियार है, औलियाए किराम की महब्बत शैतान के वारों को पेहचानने का ज़बरदस्त ज़रीआ़ है, औलियाए किराम की महब्बत रब्बे करीम की पेहचान का ज़रीआ़ है, औलियाए किराम की महब्बत गुनाहों से नफ़रत सिखाती है, औलियाए किराम की महब्बत दुन्या व आख़िरत की भलाइयां पाने का नुस्ख़ा है, औलियाए किराम की महब्बत विलायत की मन्ज़िल तक पहुंचा देती है, अल ग़रज़ ! औलियाए किराम से महब्बत करने वाली इस्लामी बहन इन के फ़ुयूज़ो बरकात से ख़ूब मालामाल होती और रिज़ाए इलाही पाने में काम्याब हो जाती है । हमें चाहिए कि हम भी **अल्लाह** पाक की नेक बन्दियों की सोहबत इख़्तियार करें और अपनी दुन्या व आख़िरत को बेहतर बनाएं ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! **अल्लाह** पाक ने हमारे ग़ौसे पाक को येह ताक़तो कुव्वत बख़्शी है कि आप शैतान के ख़ुफ़्या वारों को न सिर्फ़ अच्छी तरह पेहचानते हैं बल्कि **अल्लाह** पाक की अ़ता से इन को नाकाम बनाने का इख़्तियार भी रखते हैं । आइए ! सुनती हैं कि आप की सोहबत से फ़ैज़याब होने की बरकत से आप की ज़ौजा, शैतान के वार से कैसे महफ़ूज़ रहीं । चुनान्चे,

शैतान के ख़ुफ़्या वार को नाकाम बना दिया

हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के शहज़ादे, सय्यिद शैख़ अ़ब्दुल जब्बार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी वालिदए माजिदा के बारे में फ़रमाते हैं : जब भी

www.dawateislami.net

वालिदए मोहतरमा किसी अन्धेरे मकान में तशरीफ़ ले जातीं, तो वोह जगह चराग़ की तरह रौशन (Bright) हो जाती । एक मौक़ेअ पर मेरे वालिदे मोहतरम, सय्यिदुना ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी वहां तशरीफ़ ले आए, जैसे ही उन की नज़र उस रौशनी पर पड़ी, तो वोह रौशनी ग़ाइब हो गई । आप ने इरशाद फ़रमाया : येह चराग़ दर हक़ीक़त शैतान था जो तुम्हारी ख़िदमत करता था और तुम्हें गुमराह करने के लिए आता था, इस लिए मैं ने उसे ख़त्म कर दिया, अब मैं तुम्हारी इस रौशनी को रहमानी नूर में तब्दील किए देता हूं। चुनान्चे, इस के बाद जब भी अम्मीजान किसी अन्धेरे मकान में तशरीफ़ ले जातीं, तो वहां ऐसी रौशनी हो जाती जैसे चांद की चांदनी होती है।[1]

अल मदद या ग़ौसे आज़म दस्तगीरे बेकसां
फंस गई है नाव तूफ़ां में लगा दें आप पार

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 222)

سُبْحٰنَ الله ! सुना आप ने ! क़ुत्बे रब्बानी, महबूबे सुब्हानी, शैख़ सय्यिद अबू मुहम्मद अब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कैसी शानो शौकत वाले हैं कि आप के वुजूदे मस्ऊद की बरकत से शैतान भाग गया और आप की ज़ौजए मोहतरमा उस मर्दूद के ख़ुफ़्या वार से महफ़ूज़ हो गईं । बयान कर्दा हिकायत से जहां सरकारे बग़दाद, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की करामत ज़ाहिर हुई, वहीं येह भी मालूम हुवा कि शैतान बड़ा मक्कारो अय्यार है, वोह तरह तरह के जादूई करतब (Magical Tricks) भी दिखाता है, उस के वार से हमेशा ख़बरदार रेहना चाहिए, अपनी अक़्ल व होश्यारी पर एतिमाद करने के बजाए **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम पर नज़र रखनी चाहिए।

---

1 ...بهجة الاسرار، ذكر فضل أصحابه ويشراهم، ص۱۹۶، ملخصاً

www.dawateislami.net

याद रहे ! जिस के पास माल होता है, उस के पास चोर आता है, जिस के पास दौलते ईमान है, उस के पास ईमान का लुटेरा **शैत़ान** ज़रूर आता है, जिस का ईमान जितना मज़बूत़ होता है, उस के पास उसी क़दर नेकियों के ख़ज़ाने की भी कसरत होती है, लिहाज़ा वहां शैत़ान बहुत ज़ियादा ज़ोर लगाता है । हमारे पीरो मुर्शिद, हुज़ूरे ग़ौसे आज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ज़ौजए मोह़तरमा के पास ईमान व आमाल के ख़ज़ाने के अम्बार देख कर शैत़ान ने डाका डालने और उन को गुमराह करने की ख़त़रनाक कोशिश की मगर वलियों के सरदार, हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बरकत से वोह मर्दूद नाकाम व ना मुराद हो गया।

दमे नज़्अ़ शैत़ां न ईमान ले ले
ह़िफ़ाज़त की फ़रमा दुआ ग़ौसे आज़म

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 553)

बैअ़त होने की तरग़ीब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप भी अपने ईमान व आमाल की ह़िफ़ाज़त के लिए ग़ौसे पाक के दामने करम से वाबस्ता हो जाइए । आइए ! शैत़ानी चालों से बचने के लिए ग़ौसे पाक की ग़ुलामी का पट्टा अपने गले में डाल लीजिए । आइए ! ग़ौसे पाक के दामने करम से वाबस्ता हो जाइए और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़रीए क़ादिरी अ़त्त़ारी सिलसिले में बैअ़त हो कर फ़ैज़ाने ग़ौसे पाक से मालामाल हो जाइए ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रहे ! किसी पीरे कामिल से बैअ़त होने की बहुत बरकतें और बड़े फ़ाएदे हैं । मसलन ❖ इस की बरकत से ईमान की ह़िफ़ाज़त नसीब होती है । ❖ नमाज़, रोज़े की पाबन्दी नसीब होती है । ❖ फ़र्ज़ उ़लूम सीखने की सोच मिलती है । ❖ ह़लाल,

www.dawateislami.net

ह़राम की पेहचान नसीब होती है । ❖ जज़्बए ईमानी नसीब होता है । ❖ शैत़ान से ह़िफ़ाज़त होती है । ❖ दिल में इबादत का शौक़ और तिलावते कुरआन का ज़ौक़ मिलता है । ❖ बुरी सोह़बत से बचने का ज़ेह्न बनता है । ❖ दीन की मालूमात ह़ासिल होती हैं । ❖ गुनाहों से तौबा नसीब होती है । ❖ दीनी व दुन्यावी परेशानियां दूर होती हैं । ❖ इन्सान का किरदार अच्छा हो जाता है । अल ग़रज़ ! पीरे कामिल से बैअ़त होने की ढेरों ढेर बरकतें नसीब होती हैं ।

मिला सिलसिला क़ादिरी फ़ज़्ले रब से
मैं हूं किस क़दर बख़्तवर ग़ौसे आज़म

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 557)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं । सरकारे अबद क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।[1]

घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **"101 मदनी फूल"** से घर में आने जाने की सुन्नतें व आदाब सुनती हैं । चुनान्चे, ❖ जब भी घर से बाहर निकलें, तो येह दुआ़ पढ़िए :

---

1 ... مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

तर्जमा : **अल्लाह** पाक के नाम से, मैं ने **अल्लाह** करीम पर भरोसा किया, **अल्लाह** पाक के बिग़ैर न ताक़त है, न कुव्वत।[1] اِنْ شَآءَ اللّٰه ! इस दुआ को पढ़ने की बरकत से सीधी राह पर रहेंगी, आफ़तों से हिफ़ाज़त होगी और **अल्लाह** करीम की मदद शामिले हाल रहेगी। ❖ घर में दाख़िल होने की दुआ : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ وَ خَیْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَ بِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَ عَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! मैं तुझ से दाख़िल होने की और निकलने की भलाई मांगती हूं, **अल्लाह** पाक के नाम से हम (घर में) दाख़िल हुई और उसी के नाम से बाहर आईं और अपने रब्बे करीम पर हम ने भरोसा किया।[2] ❖ दुआ पढ़ने के बाद घरवालों को सलाम करें फिर बारगाहे रिसालत में सलाम अ़र्ज़ करें, इस के बाद सूरतुल इख़्लास शरीफ़ पढ़ें, اِنْ شَآءَ اللّٰه ! रोज़ी में बरकत और घरेलू झगड़ों से बचत होगी। ❖ अगर ऐसे मकान (ख़्वाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो, तो येह कहिए : اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ (**तर्जमा :** हम पर और **अल्लाह** करीम के नेक बन्दों पर सलाम), तो फ़िरिश्ते इस सलाम का जवाब देंगे।[3] या इस त़रह़ कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِیُّ (यानी या नबी ! आप पर सलाम) क्यूंकि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक मुसलमानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है।[4] ❖ जब किसी के घर में दाख़िल होना चाहें, तो इस त़रह़ कहिए : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم क्या मैं अन्दर आ सकती हूं ? ❖ अगर

1...ابو داود، کتاب الادب، باب مایقول اذا خرج۔۔۔الخ، ۴/۴۲۰حدیث: ۵۰۹۵

2...ابو داود، کتاب الادب، باب مایقول الرجل اذا دخل۔۔۔الخ، ۴/۴۲۰حدیث: ۵۰۹۶

3...رَدُّالْمُحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، ۹/۶۸۲

4...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, 3 / 435

www.dawateislami.net

दाख़िले की इजाज़त न मिले, तो बख़ुशी लौट जाइए, हो सकता है किसी मजबूरी के तहूत आप को इजाज़त न दी हो।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात), 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" नीज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" ह़ासिल कीजिए और पढ़िए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान : 18 हर मुबल्लिग़ा बयान करने से पहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बे मिसाल है : जो रोज़े जुम्आ मुझ पर 100 बार दुरूदे पाक पढ़े, जब वोह क़ियामत के रोज़ आएगा, तो उस के साथ एक नूर होगा अगर वोह नूर पूरी मख़्लूक़ में भी तक़्सीम कर दिया जाए, तो सब को किफ़ायत करे।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा

1...حلیۃ الاولیاء ابراھیم بن ادھم، ۸/۲۹، رقم: ۱۱۳۴۹

2...معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۳

www.dawateislami.net

कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रीकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। ❖ जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! माहे रबीउ़ल आख़िर जारी है। इस महीने को क़ुत्बे रब्बानी, ग़ौसे समदानी, क़िन्दीले नूरानी, शहबाज़े ला मकानी, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से ख़ास निस्बत ह़ासिल है, इसी मुनासबत से हम आज के बयान में ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और अपने दीगर बुज़ुर्गाने दीन के चन्द औसाफ़े ह़मीदा का ज़िक्र सुनेगीं। इस में कुछ शक नहीं कि **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे ख़ौफ़े ख़ुदा, कसरते इबादत, जज़्बए इस्लाहे उम्मत, फ़िक्रे आख़िरत, हुस्ने अख़्लाक़, ज़ोह्दो तक्वा, आ़जिज़ी व इन्केसारी, इत्तिबाए शरीअ़त, अ़फ़्वो दरगुज़र, सब्रो शुक्र, मह़ब्बते इलाही, मुह़ासबए नफ़्स और मुख़ालफ़ते शैत़ान समेत कई औसाफ़े ह़मीदा के पैकर होते हैं। हुसूले बरकत के लिए आज हम ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और दीगर नेक बन्दों से मुतअ़ल्लिक़ तीन

www.dawateislami.net

सिफ़ात का ज़िक्रे ख़ैर सुनेंगी । सब से पेहले इबादतो रियाज़त से मुतअ़ल्लिक़ सुनेंगी, हमारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इबादत के कैसे शैदाई थे, इस के कुछ वाक़िआ़त सुनने के साथ दीगर औलियाए किराम की इबादतो रियाज़त से मुतअ़ल्लिक़ भी सुनेंगी । ज़िमनन इबादते इलाही की अहम्मिय्यत और इस के फ़वाइद से मुतअ़ल्लिक़ कुछ मदनी फूल भी सुनने की सआ़दत पाएंगी । ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और दीगर औलियाए किराम में पाए जाने वाले एक और नेक वस्फ़ "**ख़ौफ़े ख़ुदा**" से मुतअ़ल्लिक़ भी कुछ वाक़िआ़त बयान किए जाएंगे । साथ ही ख़ौफ़े ख़ुदा की अहम्मिय्यत और इस के फ़वाइद भी ज़िक्र किए जाएंगे । इस के बाद इल्मे दीन की अहम्मिय्यत और बुज़ुर्गाने दीन के बचपन ही से इल्मे दीन सीखने के कुछ वाक़िआ़त भी पेश किए जाएंगे । **अल्लाह** करे कि हमें दिलजम्ई के साथ अव्वल ता आख़िर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ बयान सुनने की सआ़दत नसीब हो जाए । आइए ! सब से पेहले ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की इबादत का एक वाक़िआ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और कसरते इबादत

ह़ज़रते शैख़ मुह़म्मद बिन अबुल फ़त्ह़ हरवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं कुछ रातें हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में रहा, उन रातों में आप का येह मामूल मैं ने देखा कि तिहाई रात तक नफ़्ल पढ़ते और फिर ज़िक्रो अज़्कार में मसरूफ़ हो जाते फिर कुछ अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ते । मैं ने अपनी आंखों से देखा कि कभी आप का जिस्म कमज़ोर (Weak) हो जाता, कभी सेह़तमन्द, किसी वक़्त मेरी निगाहों से ग़ाइब हो जाते फिर थोड़ी देर बाद आ जाते और क़ुरआने करीम पढ़ते, यहां तक कि रात का

www.dawateislami.net

दूसरा हिस्सा गुज़र जाता, सजदे बहुत तवील करते, अपने चेहरे को ज़मीन पर रखते, तहज्जुद अदा फ़रमाते और मुराक़बे व मुशाहदे में तुलूए फ़ज्र तक बैठे रेहते फिर निहायत इज्ज़ो नियाज़ और खुशूअ से दुआ मांगते, उस वक़्त आप को ऐसा नूर ढांप लेता कि नज़रों से ग़ाइब हो जाते, यहां तक कि नमाज़े फ़ज्र के लिए दरे दौलत से बाहर निकलते।[1]

एक और रिवायत में खुद गौ़से पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी इबादतो रियाज़त के मामूलात बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : मैं पच्चीस सालों तक तन्हा बयाबानों और वीरानों में रियाज़त करता रहा और पन्दरह साल तक मैं ने इशा इस तरह अदा की, कि उस के बाद खत्मे कुरआन करता इस हाल में कि मैं एक पाउं पे खड़ा रेहता। एक रात सीढ़ी पर चढ़ते हुवे मेरे नफ़्स ने मुझ से कहा : तुम एक घड़ी भी आराम नहीं करते ? तो मैं ने नफ़्स की येह बात अपने लिए खतरा समझते हुवे येह किया कि एक पाउं पर खड़ा हो गया और कुरआने पाक पढ़ना शुरूअ कर दिया और तब तक ऐसे ही खड़ा रहा जब तक कि कुरआने पाक खत्म न हो गया।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

गौ़से पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शान

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! हमारे गौ़से पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इबादतो रियाज़त के कैसे शैदाई थे, इबादत से महब्बत का आलम येह था कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने रात को मुख़्तलिफ़ हिस्सों में तक़्सीम किया हुवा था, रात के किसी हिस्से में ज़िक्रो अज़्कार करते, किसी हिस्से

1... بهجة الاسرار ص ۱۶۴، ملخصاً

2... نزهة الخاطر الفاتر: ۵۰

www.dawateislami.net

में नवाफ़िल अदा करते, कभी लम्बे लम्बे सजदे करते, तो कभी ग़ौरो फ़िक्र में मसरूफ़ हो जाते, किसी वक़्त तिलावते क़ुरआन करते, तो कभी इज्ज़ो इन्केसारी के साथ दुआ़एं मांगने में मश्ग़ूल हो जाते, सारी रात येही सिलसिला रेहता। ❖ यक़ीनन येह आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ही की शान है कि कई कई सालों तक जंगलों और वीरानों में इ़बादत करते रहे। ❖ येह भी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ही की शान है कि पन्दरह साल तक इ़शा की नमाज़ इस त़रह़ से अदा की, कि उस के बाद एक पाउं पर खड़े हो कर ख़त्मे क़ुरआन करते। ❖ येह भी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ही की शान है कि चालीस साल (Fourty Years) तक इ़शा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाई। ❖ और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मामूल था कि जब बे वुज़ू होते, तो फ़ौरन वुज़ू फ़रमाते और दो रक्अ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़ा करते।[1]

ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه और हमारा किरदार

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौर कीजिए ! एक त़रफ़ तो हमारे सामने सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मुक़द्दस ह़यात है जबकि दूसरी त़रफ़ हम अपने ह़ाल पर भी नज़र करें। ❖ ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मामूल था कि दिन रात इ़बादत में गुज़ारा करते जबकि हम अपनी ज़िन्दगियां न जाने किन किन फ़ुज़ूल कामों में बरबाद कर रही हैं। ❖ ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बहुत बड़े वलिय्युल्लाह होने के बा वुजूद आख़िरी उ़म्र तक इ़बादत करने और नेकियां कमाने में मसरूफ़ रहे जबकि हम में से कुछ इस्लामी बहनें ऐसी भी हैं जो अपनी सारी ज़िन्दगी ग़फ़्लत में गुज़ार कर बुढ़ापे में भी नेकियों की त़रफ़ माइल नहीं होतीं। ❖ ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

1... بهجة الاسرار، ذكر طريقه، ص ٢٦٤ ملخصا

www.dawateislami.net

नमाज़ के बहुत पाबन्द थे जबकि हम फ़र्ज़ नमाजों को सुस्ती की वज्ह से छोड़ देती हैं या फिर क़ज़ा कर के पढ़ती हैं। ❖ ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने सारी ज़िन्दगी अपने नानाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ में गुज़ारी जबकि हम नित नए फ़ैशनों, दुन्या की रंगीनियों और बे पर्दगी में मुब्तला हैं। अल ग़रज़ ! हमारा ह़ाल येह है कि हम ने ज़िन्दगी को बस खाने, पीन, सोने, जागने और फ़ुज़ूल कामों में गुज़ारने का नाम दे दिया है और अपने अस्लाफ़ के त़रीक़े से बहुत दूर हो गई हैं। हमें चाहिए कि आज मुयस्सर आने वाली इन चन्द सांसों को ग़नीमत जानें और ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो कर इबादत में ज़िन्दगी गुज़ारें।

इबादते इलाही की बरकतें

याद रखिए ! अल्लाह पाक की कसरत से इबादत करना अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का शेवा है, **अल्लाह** पाक की इबादत करना औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का त़रीक़ा है, **अल्लाह** पाक की इबादत करना दिल में मह़ब्बते इलाही के पैदा होने का सबब (Cause) है, **अल्लाह** पाक की इबादत करना शैत़ान के चुंगल से निकलने का त़रीक़ा है, **अल्लाह** पाक की इबादत करना कुर्बे इलाही पाने का बाइ़स है, **अल्लाह** पाक की इबादत करना गुनाहों के मरज़ से शिफ़ा पाने का ज़रीआ़ है, **अल्लाह** पाक की इबादत करना ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़ का बाइ़स है, **अल्लाह** पाक की इबादत करना रूह़ की ताज़गी का बाइ़स है, **अल्लाह** पाक की इबादत करना दिलों के इत़्मीनान का बाइ़स है, **अल्लाह** पाक की इबादत करना शरीअ़त को मत़्लूब है, **अल्लाह** पाक की इबादत करना हर बन्दए मोमिन पर ह़क़ है, अल ग़रज़ ! हमारी पैदाइश का मक़्सद ही **अल्लाह** पाक की इबादत करना है। जैसा कि पारह 27, सूरतुज़्ज़ारियात,

www.dawateislami.net

आयत नम्बर 56 में **अल्लाह** पाक इन्सान के मक़्सदे ह़यात को बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाता है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾ (پ۲۷، الذّٰریٰت:۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी लिए) बनाए कि मेरी बन्दगी करें।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस आयते मुबारका में वाज़ेह़ बयान है कि इन्सानों और जिन्नों को **अल्लाह** पाक की इ़बादत के लिए पैदा किया गया है और जब हमारे ख़ालिक़ो मालिक **अल्लाह** करीम ने हमें हमारी तख़्लीक़ का मक़्सद (Purpose) बता दिया है, तो अब हम पर भी लाज़िम है कि हम इस मक़्सद को पाने में मसरूफ़ हो जाएं और ख़ूब ख़ूब **अल्लाह** पाक की इ़बादत करें।

अगर हम बुज़ुर्गाने दीन की सीरत का जाइज़ा लें, तो हमें मालूम होगा कि ❖ **अल्लाह** पाक के तमाम नेक बन्दे इ़बादतो रियाज़त के शैदाई होते थे। ❖ उन के शबो रोज़ इ़बादत व बन्दगी में बसर होते। ❖ हर वक़्त यादे इलाही में मुन्हमिक रेहना उन का महबूब तरीन मश्ग़ला होता। आइए ! ज़ौक़े इ़बादत बढ़ाने और बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चलने के लिए औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की कसरते इ़बादत के तीन वाक़िआ़त सुनती हैं : चुनान्चे,

﴾1﴿...रात भर इ़बादत और दिन भर रोज़ा

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीबे नज्जार رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه रात भर इ़बादत करते और दिन भर रोज़ा रखते और इफ़्तार के लिए जो खाना ह़ाज़िर किया जाता, वोह भी दूसरों में तक़्सीम फ़रमा देते और ख़ुद सारी रात भूके ही क़ियाम में गुज़ार देते। जब सुब्ह़ क़रीब होने लगती, तो

www.dawateislami.net

आ़जिज़ी व इन्केसारी के साथ बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ (दुआ़) करते : मैं ग़फ़्लत के समुन्दरों में डूबा रहा और गुनाह के मैदानों में चलता रहा। या इलाही ! येह तेरा ज़लील, गुनहगार और बीमार बन्दा तेरे बाबे करम पर हाज़िर है और तुझ से पनाह का त़लबगार है।[1]

इ़बादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी
करम हो करम या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हो सकता है हुज़ूरे ग़ौसे पाक और ह़ज़रते ह़बीबे नज्जार की इ़बादात का वाक़िआ़ सुन कर किसी इस्लामी बहन के दिल में येह वस्वसा आए कि येह तो मर्द थे, मर्द इतनी देर खड़े हो कर इ़बादत कर सकते हैं, हम औ़रतें कमज़ोर हैं, हम इतनी देर खड़ी नहीं हो सकतीं, हम सारा दिन घर का काम काज कर के रात को इतनी इ़बादत कैसे करें ? तो आइए ! इस वस्वसे को भी दूर कर लीजिए और देखिए पेहले की औ़रतें भी केसै कसरत से इ़बादत करती थीं। चुनान्चे,

﴾2﴿...बिग़ैर चराग़ के घर रौशन रेहता !

अपने ज़माने की मश्हूर वलिय्या, ह़ज़रते ह़फ़्सा बिन्ते सीरीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا जो कि ख़्वाबों का इ़ल्म रखने वाले बहुत बड़े आ़लिम और इमाम, ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सीरीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बहन हैं, येह शह़रे बसरा की इन्तिहाई इ़बादत गुज़ार ख़ातून थीं, आप सारी रात नमाज़ पढ़ते हुवे गुज़ार देतीं और नमाज़ में आधा क़ुरआने पाक तिलावत फ़रमातीं। बसा

1...الروض الفائق، باب فی الزہد وذکر الصالحین، ص ۲۴۶ ملخصا

www.dawateislami.net

अवक़ात अपनी नमाज़ पढ़ने की जगह पर इतनी देर नमाज़ में खड़ी रेहतीं कि आप का चराग़ (Lamp) बुझ जाता लेकिन आप के लिए सुब्ह़ तक (चराग़ की रौशनी के बिग़ैर) घर रौशन रेहता।[1]

﴾3﴿...ऐ नफ़्स ! तू कितना सोएगा ?

मश्हूर वलिय्या, ह़ज़रते राबिआ़ बसरिय्या رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا के बारे में मन्क़ूल है कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا की वफ़ात तक येह आ़दत रही कि सारी रात नमाज़ पढ़ती रेहतीं और जब फ़ज्र का वक़्त क़रीब होता, तो थोड़ी देर के लिए सो जातीं फिर बेदार हो कर केहतीं : ऐ नफ़्स ! तुम कितना सोओगे और कितना जागोगे ? अ़न क़रीब तुम ऐसी नींद सो जाओगे कि उस के बाद क़ियामत की सुब्ह़ को ही बेदार होगे।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ौफ़े ख़ुदा की अहम्मिय्यत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि **अल्लाह** के नेक बन्दे और नेक बन्दियां कितनी इ़बादत करते, मुनाजात करते और सारी सारी रात **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करते, क़ुरआने पाक की तिलावत करते, अल ग़रज़ ! ज़िन्दगी भर इ़बादतो रियाज़त में मसरूफ़ रेहते थे। इस की एक वज्ह येह भी है कि येह लोग **अल्लाह** पाक से बहुत डरते थे और ख़ौफ़े ख़ुदा के पैकर होते थे। यक़ीनन ख़ौफ़े ख़ुदा एक बहुत बड़ी नेमत है, हमारी उख़रवी नजात के लिए ख़ौफ़े ख़ुदा बड़ी अहम्मिय्यत का ह़ामिल है

1...روح البیان، ۶/۲۴۲ الفرقان، تحت الآیۃ: ۶۴

2...روح البیان، ۶/۲۴۲ الفرقان، تحت الآیۃ: ۶۴

www.dawateislami.net

क्यूंकि इबादात की बजा आवरी और ममनूअ़ चीज़ों से बाज़ रेहने का अ़ज़ीम ज़रीआ़ ख़ौफ़े ख़ुदा ही है। नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : رَأْسُ الْحِكْمَةِ مَخَافَةُ اللّٰهِ हिक्मत का सर चश्मा, **अल्लाह** पाक का ख़ौफ़ है।[1] जबकि **अल्लाह** पाक ख़ुद पारह 4, सूरए आले इमरान, आयत नम्बर 175 में इरशाद फ़रमाता है :

وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۵﴾ (پ۴، اٰلِ عمران:۱۷۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मुझ से डरो, अगर ईमान रखते हो।

मालूम हुवा कि ख़ौफ़े ख़ुदा बन्दए मोमिन के ईमान की निशानी है। आइए ! सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के ख़ौफ़े ख़ुदा का एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनती हैं। चुनान्चे,

ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का ख़ौफ़े ख़ुदा

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ सअ़दी शीराज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मस्जिदुल ह़राम में कुछ लोग काबतुल्लाह शरीफ़ के क़रीब इबादत में मसरूफ़ थे। अचानक उन्हों ने एक शख़्स को देखा कि दीवारे काबा से लिपट कर ज़ारो क़ित़ार रो रहा है और उस के लबों पर येह दुआ़ जारी है : ऐ **अल्लाह** पाक ! अगर मेरे आमाल तेरी बारगाह के लाइक़ नहीं हैं, तो बरोज़े क़ियामत मुझे अन्धा (Blind) उठाना। लोगों को येह अ़जीबो ग़रीब दुआ़ सुन कर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा। चुनान्चे, उन्हों ने दुआ़ मांगने वाले से पूछा : ऐ शैख़ ! हम तो क़ियामत में आ़फ़िय्यत के त़लबगार हैं और आप अन्धा उठाए जाने की दुआ़ फ़रमा रहे हैं ! इस में क्या राज़ है ? उस शख़्स ने रोते हुवे जवाब दिया : मेरा मत़लब येह है कि अगर मेरे आमाल

---

1 ... شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالٰی، ۱/۴۷۱، حدیث: ۷۴۴

www.dawateislami.net

अल्लाह पाक की बारगाह के लाइक़ नहीं, तो मैं क़ियामत में इस लिए अन्धा उठाया जाना पसन्द करता हूं कि मुझे लोगों के सामने शर्मिन्दा न होना पड़े। वोह सब लोग इस आ़रिफ़ाना जवाब को सुन कर बेहद मुतास्सिर हुवे लेकिन अपने मुख़ात़ब को पेहचानते न थे। इस लिए पूछा : ऐ शैख़ ! आप कौन हैं ? उस ने जवाब दिया : मैं अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी हूं।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का जज़्बए ख़ौफ़े ख़ुदा मरह़बा ! **ऐ काश** कि हम भी ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाली बन जाएं। यक़ीनन ख़ौफ़े ख़ुदा बहुत बड़ी नेमत है, जिसे येह नेमत नसीब हो जाए, उस की दुन्या भी अच्छी होती है और उस की आख़िरत भी संवर जाती है क्यूंकि जब इन्सान में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा होता है, तो उस का गुनाहों से बचना और नेकियां करना बहुत आसान हो जाता है, ख़ौफ़े ख़ुदा नेकियों की रग़बत पैदा करने का बेहतरीन नुस्ख़ा है, ख़ौफ़े ख़ुदा गुनाहों से बचाने का आला है, ख़ौफ़े ख़ुदा ईमान की मज़बूत़ी की अ़लामत (Sign) है, ख़ौफ़े ख़ुदा **अल्लाह** पाक की मारिफ़त व क़ुर्बत का ज़रीआ़ है, ख़ौफ़े ख़ुदा शरीअ़त का पासदार बनाने वाला है, ख़ौफ़े ख़ुदा इन्सान के ज़ाहिर को संवारने वाला है, ख़ौफ़े ख़ुदा इन्सान के बात़िन का निगेहबान है, ख़ौफ़े ख़ुदा हुक़ूक़ुल इ़बाद की अदाएगी का मुह़ाफ़िज़ है, ख़ौफ़े ख़ुदा हुक़ूक़े इलाही की अदाएगी का भी ज़ामिन है, ख़ौफ़े ख़ुदा से दुन्या अच्छी होती है, ख़ौफ़े ख़ुदा से क़ब्र में भी उजाले फैलते हैं और ख़ौफ़े ख़ुदा मह़शर की परेशानियों से भी बचाने वाला है, अल ग़रज़ ! येह एक ऐसी सिफ़त है जो बन्दे में कई नेक ख़ूबियों और अच्छी आ़दतों के पैदा होने का सबब है।

1...ख़ौफ़े ख़ुदा, स. 119

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ौफ़े ख़ुदा केहते किसे हैं ? आइए ! येह भी समाअ़त कर लीजिए । चुनान्चे, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी मायानाज़ किताब **"कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा 26 पर फ़रमाते हैं : ख़ौफ़े ख़ुदा से मुराद येह है कि **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर, उस की बे नियाज़ी, उस की नाराज़ी, उस की गिरिफ़्त (पकड़), उस की त़रफ़ से दिए जाने वाले अ़ज़ाबों, उस के ग़ज़ब और इस के नतीजे में ईमान की बरबादी वग़ैरा से ख़ौफ़ज़दा रेहने का नाम **"ख़ौफ़े ख़ुदा"** है । येह नेक सिफ़त भी औलियाए किराम की ज़िन्दगियों का लाज़िमी (Compulsory) जुज़ होती है, ख़ुद सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बा वुजूद बहुत बड़े आ़बिदो ज़ाहिद होने के ख़ौफ़े ख़ुदा में अपनी मिसाल आप थे । इस के साथ हमारे दीगर अस्लाफ़ भी ख़ौफ़े ख़ुदा से मामूर होते थे । जैसा कि :

फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه का ख़ौफ़े ख़ुदा

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ عَنْه के बारे में मन्क़ूल है कि आप ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब अक्सर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते, नमाज़ में ख़ौफ़े ख़ुदा से मुतअ़ल्लिक़ आयात सुन कर आप की ह़ालत ग़ैर हो जाती थी । आप के शहज़ादे, सह़ाबिए रसूल, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْه के पीछे नमाज़ अदा की, तो मैं ने 3 सफ़ों के पीछे से आप के रोने की आवाज़ सुनी ।[1] एक बार

1 ...حلیۃ الاولیاء،عمر بن الخطاب، ۱/۸۸، رقم: ۱۳۴

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ज़मीन से एक मिट्टी का ढेला उठाया और फ़रमाया : **ऐ काश** ! मैं मिट्टी का ढेला होता, **ऐ काश** ! मेरी मां ने मुझे न जना होता, **ऐ काश** ! मैं कुछ भी न होता, **ऐ काश** ! मैं कोई भूली बिसरी शै होता।[1]

अपने ईमान की फ़िक्र कीजिए

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते हुवे बत़ौरे आ़जिज़ी मिट्टी का ढेला बनने की ख़्वाहिश कर रहे हैं क्यूंकि मिट्टी को बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ नहीं होता, उसे नज़्अ़ की सख़्तियों, क़ब्र की वह़शतों और जहन्नम की सज़ाओं से वासिता नहीं पड़ेगा । ग़ौर कीजिए कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ क़त़ई जन्नती होने के बा वुजूद **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ नहीं, तो हमें **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर का किस क़दर ख़ौफ़ होना चाहिए और हमें अपने ईमान की सलामती की कितनी ज़ियादा फ़िक्र करनी चाहिए !

अफ़्सोस कि आज इस्लामी बहनों की भी एक तादाद है जो दुन्या की मस्तियों में ऐसी ग़र्क़ हुई है कि ईमान की सलामती की फ़िक्र को ब ज़ाहिर फ़रामोश करती नज़र आ रही है, ऐसियों के लिए मक़ामे इ़ब्रत है कि आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि उ़लमाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "जिस को (ज़िन्दगी में) सल्बे ईमान (ईमान छिन जाने) का ख़ौफ़ न हो, नज़्अ़ के वक़्त उस का ईमान सल्ब हो जाने का शदीद ख़त़रा है ।" इसी वज्ह से तो **अल्लाह** पाक ने हमें अपने ख़ौफ़ से

1 ... مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام عمر بن خطاب، ۸/۱۵۲، حدیث: ۳۹

www.dawateislami.net

डरते रेहने और आख़िरी दम तक इस्लाम पर साबित क़दम रेहने की ताकीद फ़रमाते हुवे पारह 4, सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 102 में इरशाद फ़रमाया है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾ (پ۴، آل عمران: ۱۰۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है और हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस आयते मुबारका से ख़ौफ़े ख़ुदा की अहम्मिय्यत मालूम होती है । येही वज्ह थी कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन **अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ से रोने वाले थे, हमारे बुज़ुर्गाने दीन नेक आमाल की कसरत के बा वुजूद उन पर तक्या न करने वाले थे, हमारे बुज़ुर्गाने दीन फ़िक्रे आख़िरत के लिए बेचैन रेहने वाले थे, हमारे बुज़ुर्गाने दीन क़ब्रो ह़श्र के ख़ौफ़ से लरज़ने वाले थे, हमारे बुज़ुर्गाने दीन **अल्लाह** पाक से उसी त़रह़ डरने वाले थे जैसा **अल्लाह** पाक से डरने का ह़क़ है, हमारे बुज़ुर्गाने दीन **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से हमेशा ख़ौफ़ज़दा रेहने वाले थे और हमारे बुज़ुर्गाने दीन अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिए कुढ़न रखने वाले थे । बिला शुबा येह लोग ईमान के ह़क़ीक़ी माना में क़द्रदान थे, इन्हें अपने आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान ''اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْم'' आमाल का दारो मदार ख़ातिमे पर है ।[1] पर पूरा पूरा यक़ीन था, जभी उन के शबो रोज़ सिर्फ़ इसी फ़िक्र में बसर होते कि कहीं हमारा ईमान हम से छीन न लिया जाए । हमें भी इस से इ़ब्रत पकड़नी चाहिए और हमें चाहिए कि

1 ...بخاری، کتاب القدر، باب العمل بالخواتیم، ۴/۲۷۴، حدیث: ۶۶۰۷

www.dawateislami.net

फ़ानी दुन्या के धोके में मुब्तला रेहने और अपना क़ीमती वक़्त फ़ुज़ूलिय्यात, नाजाइज़ व ह़राम कामों में बरबाद करने के बजाए ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिए कोशां रहें, उठती बैठती, चलती फिरती तौबा व इस्तिग़फ़ार करें और अपने ज़ाहिरो बात़िन को गुनाहों से पाक रखें, हर अ़मल **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिए करें और हर वक़्त **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से डरती रहें। **अल्लाह** पाक हमें हमेशा ख़ौफ़े ख़ुदा से बे क़रार रेहने की सआ़दत नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तेरे डर से सदा थरथराऊं, ख़ौफ़ से तेरे आंसू बहाऊं
कैफ़ ऐसा दे, ऐसी अदा की, मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 128)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ और तह़सीले इल्मे दीन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! हम सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ और दीगर बुज़ुर्गाने दीन के पाकीज़ा औसाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ सुन रही थीं। इन औसाफ़ में से एक वस्फ़ "**ह़ुसूले इल्म**" भी है। यक़ीनन आज इल्मे दीन के ह़ुसूल के लिए जो सहूलिय्यात (Facilities) हैं, वोह पेहले कभी न थीं, पेहले तह़सीले इल्म के लिए क़दम क़दम पर मुश्किलात पेश आती थीं फिर भी हमारे अस्लाफ़ बचपन ही से इल्मे दीन की त़रफ़ माइल हो जाते थे, यूं आख़िर दम तक उन का तालीम व तअ़ल्लुम (यानी इल्म ह़ासिल करने और दूसरों तक इल्म पहुंचाने) का सिलसिला जारी रेहता था। ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ भी बचपन ही से इल्मे दीन सीखने में मश्ग़ूल हो गए थे। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

मन्क़ूल है कि अभी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कमसिन थे कि अपनी वालिदए मोहतरमा की इजाज़त से इल्मे दीन के हुसूल के लिए बग़दाद पहुंचे थे।[1] दौरे तालिबे इल्मी के कुछ वाक़िआ़त बयान करते हुवे सरकारे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه खुद फ़रमाते हैं : मैं अपने तालिबे इल्मी के ज़माने में असातिज़ा से सबक़ ले कर जंगल की तरफ़ निकल जाया करता था फिर दिन हो या रात, आंधी हो या मूसलाधार बारिश, गर्मी हो या सर्दी अपना मुताल़आ़ जारी रखता था, उस वक़्त मैं अपने सर पर एक छोटा सा इमामा बांधता और मामूली तरकारियां खा कर पेट की आग बुझाया करता, कभी कभी येह तरकारियां भी हाथ न आतीं क्यूंकि भूख के मारे हुवे दूसरे फ़ुक़रा भी उधर का रुख़ कर लिया करते थे, ऐसे मवाक़ेअ़ पर मुझे शर्म आती थी कि मैं दरवेशों की ह़क़ तलफ़ी करूं, मजबूरन वहां से चला जाता और अपना मुताल़आ़ (Study) जारी रखता फिर नींद आती, तो ख़ाली पेट ही कंकरियों से भरी हुई ज़मीन पर सो जाता।[2]

इल्मे दीन की बरकतें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस वाक़िए़ से हमें भी दर्स ह़ासिल करना चाहिए और अपनी औलाद को बचपन से ही इल्मे दीन सीखने पर लगा देना चाहिए। इल्मे दीन के फ़ज़ाइल की तो क्या ही बात है ! मक्तबतुल मदीना की किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3, सफ़ह़ा 618 पर लिखा है : ❖ इल्म ऐसी चीज़ नहीं जिस की फ़ज़ीलत और

1...بهجة الاسرار، ذكر طريقه، ص ١٦٧ ملخصا

2...قلائد الجواہر، ص ٩ ملخصا

www.dawateislami.net

ख़ूबियों के बयान करने की ह़ाजत हो, सारी दुन्या जानती है कि इ़ल्म बहुत बेहतर चीज़ है । ❖ इस का ह़ासिल करना बुलन्दी की अ़लामत है । ❖ येही वोह चीज़ है जिस से इन्सानी ज़िन्दगी काम्याब और ख़ुश गवार होती है । ❖ येही वोह चीज़ है जिस से दुन्या व आख़िरत सुधरती है ❖ (और इ़ल्म से) वोह इ़ल्म मुराद है जो कुरआनो ह़दीस से ह़ासिल हो । ❖ येही वोह इ़ल्म है जिस से दुन्या व आख़िरत दोनों संवरती हैं । ❖ येही वोह इ़ल्म है जो ज़रीअ़ए नजात है । ❖ येही वोह इ़ल्म है जिस की कुरआनो ह़दीस में तारीफ़ें आई हैं ❖ और येही वोह इ़ल्म है जिस की तालीम की त़रफ़ तवज्जोह दिलाई गई है ।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वाक़ेई इ़ल्मे दीन ही एक ला ज़वाल दौलत है, इ़ल्मे दीन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की मीरास है, इ़ल्मे दीन कुर्बते इलाही का रास्ता है, इ़ल्मे दीन हिदायत का सर चश्मा है, इ़ल्मे दीन गुनाहों से बचने का ज़रीआ़ है, इ़ल्मे दीन ख़ौफ़े ख़ुदा को बेदार करने का नुस्ख़ा है, इ़ल्मे दीन दुन्या व आख़िरत की इ़ज़्ज़त पाने का सबब है, इ़ल्मे दीन मुर्दा दिलों की ह़यात (Life) है, इ़ल्मे दीन ईमान की सलामती का मुह़ाफ़िज़ है, इ़ल्मे दीन ख़ल्क़े ख़ुदा की मह़ब्बत पाने का सबब है, अल ग़रज़ ! इ़ल्मे दीन बे शुमार ख़ूबियों का जामेअ़ है । इ़ल्मे दीन में दीन भी है, इ़ल्मे दीन में दुन्या भी है, इ़ल्मे दीन में सुकून भी है, इ़ल्मे दीन में इत़मीनान भी है, इ़ल्मे दीन में लज़्ज़त भी है, इ़ल्मे दीन में आराम भी है । लिहाज़ा अ़क़्लमन्द वोही है जो इ़ल्मे दीन में मश्ग़ूल हो कर दुन्या के साथ नजाते आख़िरत की बेहतरी का भी सामान कर जाए ।

1…बहारे शरीअ़त, 3 / 618, बि तग़य्युरिन

www.dawateislami.net

अफ़्सोस ! हमारे मुआ़शरे की अक्सरिय्यत न तो ख़ुद इ़ल्मे दीन सीखने की त़रफ़ मुतवज्जेह होती है और न ही अपनी औलाद को इ़ल्मे दीन सिखाती है । अपने होनहार बच्चों को दुन्यावी उ़लूमो फ़ुनून तो ख़ूब सिखाए जाते हैं मगर सुन्नतें सिखाने की त़रफ़ तवज्जोह नहीं की जाती, येह ख़्वाहिश तो की जाती है कि मेरा बेटा डॉक्टर, इन्जीनियर, प्रोफ़ेसर और कम्प्यूटर प्रोग्रामर बने मगर अपनी औलाद को आ़लिमे दीन, मुफ़्तिए इस्लाम और शैख़ुल ह़दीस बनाने की सोच ख़त्म होती जा रही है । ह़ालांकि :

अस्लाफ़ का शौक़े इ़ल्मे दीन

इ़ल्मे दीन एक ऐसी अनमोल दौलत है कि बड़े बड़े बादशाह ख़ुद भी इस दौलत को पाने की कोशिश करते और अपनी औलाद को भी इ़ल्मे दीन की तालीम दिलवाते । आइए ! इस पर कुछ वाक़िआ़त सुनती हैं । चुनान्चे, एक बार बादशाहे वक़्त, ख़लीफ़ा हारून रशीद ने (अपने बेटे) मामून रशीद की तालीम के लिए ह़ज़रते इमाम किसाई (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) से अ़र्ज़ किया तो आप ने फ़रमाया : मैं यहां पढ़ाने न आऊंगा, शेहज़ादा मेरे ही मकान पर आ जाया करे । हारून रशीद ने अ़र्ज़ की : वोह वहीं ह़ाज़िर हो जाया करेगा मगर उस का सबक़ पेहले हो । फ़रमाया : येह भी न होगा बल्कि जो पेहले आएगा, उस का सबक़ पेहले होगा । ग़रज़ ! मामून रशीद ने पढ़ना शुरूअ़ किया, इत्तिफ़ाक़न एक रोज़ हारून रशीद का गुज़र हुवा, देखा कि इमाम किसाई (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) अपने पाउं धो रहे हैं और मामून रशीद पानी डालता है । बादशाह ग़ज़बनाक हो कर उतरा और मामून रशीद को कोड़ा मार कर कहा : ओ बे अदब ! ख़ुदा ने दो हाथ किस लिए दिए हैं ? एक हाथ से पानी डाल और दूसरे हाथ से इन का पाउं धो ।[1]

1...मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 144

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस वाक़िए से जहां उस्ताज़ के बेहद अदबो ताज़ीम करने का दर्स मिला, साथ येह भी मालूम हुवा ! ख़लीफ़ा हारून रशीद की अपनी औलाद को इल्मे दीन सिखाने की दिली ख़्वाहिश थी, जभी उस ने हज़रते इमाम किसाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से अपने बेटे को पढ़ाने की इल्तिजा (*Request*) की और इस सिलसिले में इमाम किसाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की तमाम शर्तें भी क़बूल कीं ।

इसी तरह अमीरुल मोमिनीन, हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपनी औलाद की तालीमो तरबियत का निहायत उम्दा इन्तिज़ाम किया । जलीलुल क़द्र मुहद्दिस, हज़रते सय्यिदुना सालेह बिन कैसान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जो ख़ुद उन के भी उस्ताज़ थे, इन्हें अपनी औलाद का अतालीक़ (निगरान उस्ताज़) मुक़र्रर फ़रमाया ।[1]

इस तरह हमारे अस्लाफ़ भी बचपन ही से इल्मे दीन की तहसील में मसरूफ़ हो जाया करते थे । मन्क़ूल है कि हुज्जतुल इस्लाम, हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे मोहतरम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ुद अगर्चे पढ़े लिखे न थे लेकिन आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को इल्मे दीन की अहम्मिय्यत का बहुत एहसास था, जभी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की दिली ख़्वाहिश थी कि उन के दोनों साहिब ज़ादगान मुहम्मद ग़ज़ाली और अहमद ग़ज़ाली رَحِمَهُمَا الله ज़ेवरे इल्मे शरीअत व तरीक़त से आरास्ता हों, इसी मक़्सद के लिए उन्हों ने अपने साहिब ज़ादगान के लिए कुछ असासा भी बचाया जो उन के इन्तिक़ाल पर इन दोनों सआदत मन्द बेटों के हुसूले इल्म और सफ़रे तक्मीले इल्म में बहुत काम आया ।[2]

1...उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की 425 हिकायात, स. 55

2...مقدمۂ احیاء العلوم مترجم از علامہ صدیق ہزاروی، ص ۸ ملخصاً

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ सरकारे आला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी बचपन ही से इल्मे दीन की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे, यहां तक कि साढ़े चार साल की नन्ही सी उ़म्र में क़ुरआने मजीद नाज़िरा मुकम्मल पढ़ने की नेमत से बारयाब हो गए और सिर्फ़ तेरह साल, दस माह, चार दिन की उ़म्र में तमाम मुरव्वजा उ़लूम की तक्मील अपने वालिदे माजिद, रईसुल मुतकल्लिमीन, मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से की।[1]

मदनी इन्आ़मात को अपना लीजिए

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यक़ीनन आज के बयान को सुनने के बाद हमारे अन्दर कसरत से इबादत करने, अपने दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करने और इल्मे दीन ह़ासिल करने का जज़्बा पैदा हुवा होगा । तो आइए ! मैं आप को इस जज़्बे को परवान चढ़ाने का नुस्ख़ा बताती हूं। इस जज़्बे को परवान चढ़ाने का नुस्ख़ा है आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाना, हर बुध को इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करना और मदनी इन्आ़मात के रिसाले पर अ़मल करना । जी हां ! मदनी इन्आ़मात के रिसाले को खोल कर इस में दिए गए सुवालात के जवाबात में ख़ुद ही **''हां''** या **''ना''** के ज़रीए अपने आमाल के अच्छे, बुरे होने का जाइज़ा लेते हुवे हम अपनी ग़लतियों को सुधार सकती हैं, अपने दिल में इबादत का शौक़ और ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा कर सकती हैं क्यूंकि येह मदनी इन्आ़मात हमें रोज़ाना अपनी ही

1...ह़यातेआला ह़ज़रत, स. 71, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

क़ाइम कर्दा ख़ुद एह़तिसाबी की अ़दालत में ह़ाज़िर कर के अपने ही ज़मीर से फ़ैसला करवाते और हमें अपनी इस्लाह़ व नजात का मौक़अ़ फ़राहम करते हैं। दर ह़क़ीक़त येह मदनी इन्आ़मात जन्नत में ले जाने वाले आमाल करने और जहन्नम में ले जाने वाले आमाल से बचने की तरग़ीब का मजमूआ़ हैं। लिहाज़ा आप से गुज़ारिश है कि आप भी आज ही से मदनी इन्आ़मात का रिसाला बस्ते से ह़ासिल कर लीजिए और इस पर अ़मल शुरूअ़ कर दीजिए, اِنْ شَآءَ الله आप को भी गुनाहों से बचने के साथ नेकियां करने और सुन्नतों पर अ़मल करने का जज़्बा नसीब होगा। **अल्लाह** पाक हमें मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बैअ़त होने (मुरीद बनने) के निकात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे बैअ़त होने (मुरीद) के निकात बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं। चुनान्चे, ❖ दुन्या में किसी नेक को अपना इमाम बना लेना चाहिए, शरीअ़त में तक़्लीद कर के और त़रीक़त में बैअ़त कर के ताकि ह़श्र अच्छों के साथ हो।[1] ❖ ईमान की ह़िफ़ाज़त का एक ज़रीआ़ किसी मुर्शिदे कामिल से मुरीद होना भी है।[2] ❖ शैख़े जामेए़ शराइत़ से बैअ़त होना सुन्नते मुतवारिसए मुस्लिमीन है और इस में बे शुमार मनाफ़ेअ़ व बरकते दीनो दुन्या व आख़िरत हैं।[3] ❖ पीर उमूरे आख़िरत के लिए बनाया

1...आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 13
2...आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 12
3...फ़तावा रज़विय्या, 26 / 575

www.dawateislami.net

जाता है ताकि उस की रेहनुमाई और बातिनी तवज्जोह की बरकत से मुरीद **अल्लाह** पाक व रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़गी वाले कामों से बचते हुवे रिज़ाए रब्बुल अनाम के मुताबिक़ अपने शबो रोज़ गुज़ार सकें।[1] ❖ जो किसी शैख़े जामेए शराइत से बैअत हो, तो दूसरे से बैअत न हो।[2] ❖ हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का मुरीद बनने में ईमान के तह़फ़्फ़ुज़, मरने से पेहले तौबा की तौफ़ीक़, जहन्नम से आज़ादी और जन्नत में दाख़िले जैसे अ़ज़ीम मनाफ़ेअ़ मौजूद हैं।[3] ❖ मुरीद बनने में ताख़ीर नहीं करनी चाहिए।[4] ❖ एक मुरीद के दो शैख़ नहीं हो सकते। ❖ जो मुरीद दो पीरों के दरमियान मुश्तरक हो, वोह काम्याब नहीं होता।[5] ❖ जो पीर सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा, आ़लिम, ग़ैरे फ़ासिक़ हो और उस का सिलसिला आख़िर तक मुत्तसिल हो, उस से बैअत के लिए वालिदैन ख़्वाह शौहर किसी की इजाज़त की ह़ाजत नहीं।[6] ❖ पीर के अफ़्आ़लो अक़्वाल पर एतिराज़ सख़्त ह़राम और मूजिबे महरूमिए बरकाते दारैन है।[7] ❖ मुरीद को मिलने वाला फ़ैज़ ब ज़ाहिर किसी भी बुज़ुर्ग या साहिबे मज़ार से मिले मगर इसे अपने मुर्शिदे कामिल का फ़ैज़ ही तसव्वुर करना चाहिए।[8] ❖ मुरीद को हर वक़्त मोह़तात और बा अदब रेहना चाहिए कि ज़रा सी

1...आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 13
2...फ़तावा रज़विय्या, 26 / 579
3...फ़िक्रे मदीना, स. 161
4...आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 22
5...फ़तावा रज़विय्या, 26 / 580
6...फ़तावा रज़विय्या, 26 / 584
7...फ़तावा रज़विय्या, 26 / 588
8...आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 98

www.dawateislami.net

ग़फ़्लत और बे एह़तियाती दीनो दुन्या के किसी ऐसे बड़े नुक़्सान का सबब बन सकती है जिस की शायद तलाफ़ी भी न हो सके ।[1] ❖ ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब कोई मुरीद अदब का ख़याल नहीं रखता, तो वोह लौट कर वहीं पहुंच जाता है जहां से चला था ।[2]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात), 120 सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" नीज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन त़लब कीजिए और इन का मुत़ालआ़ कीजिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 70

2...الرسالة القشيرية، باب الآداب، ص ٣١٩

www.dawateislami.net

बयान : 19 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पेहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

रसूले अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है :

مَنْ صَلّٰى عَلَيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرًا بِهَا مَلَكٌ مُوَكَّلٌ بِهَا حَتّٰى يُبَلِّغَنِيْهَا

जो मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ता है, **अल्लाह** करीम उस पर दस रह़मतें उतारता है और एक फ़िरिश्ता उस दुरूदे पाक को मुझ तक पहुंचाने पर मुक़र्रर है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पेहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[2]

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1...معجم کبیر، ۸/۱۳۴، حدیث: ۷۶۱۱

2...معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

बयान सुनने की नियतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से नियतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इ़ल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اَذْكُرُوااللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰه वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रेकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। ❖ जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत हासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! आज के बयान में हम मुख़्तलिफ़ अवरादो वज़ाइफ़ की बरकतों से मुतअ़ल्लिक़ सुनने की सआ़दत हासिल करेंगी। अभी हम ने दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल जो ह़दीसे पाक सुनी उस से येह मालूम होता है कि दुरूदे पाक एक ऐसा बेहतरीन वज़ीफ़ा है कि हमारा दुरूदो सलाम हमारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनते हैं। लिहाज़ा ख़ुसूसन दुख़्यारी, ग़म की मारी, मुसीबतों और अमराज़ में मुब्तला इस्लामी बहनें, इसी त़रह़ मक्के शरीफ़ और मदीने पाक की ह़ाज़िरी की तड़प रखने

www.dawateislami.net

वाली इस्लामी बहनों को चाहिए कि वोह उठते, बैठते, चलते, फिरते हर वक़्त प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ज़ियादा से ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़ने की आ़दत बनाएं बल्कि इसे अपना वज़ीफ़ा बना लें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दुरूदे पाक की फ़ज़ीलतों पर मुश्तमिल बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं, उ़लमाए किराम और आ़लिमात भी इस की फ़ज़ीलतें, फ़ाएदे और इस की बरकतों को बयान फ़रमाते ही रेहते हैं। आइए ! मज़ीद सुनती हैं कि दुरूदे पाक की कसरत करने की कैसी कैसी बरकतें मिलती हैं : चुनान्चे,

तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, जिल्द 8, सफ़ह़ा नम्बर 81 पर लिखा है : (1) जो ख़ुश नसीब मुसलमान, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजता है, उस पर **अल्लाह** पाक, फ़िरिश्ते और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद दुरूद भेजते हैं। (2) दुरूद शरीफ़ ख़त़ाओं का कफ़्फ़ारा बन जाता है। (3) दुरूद शरीफ़ से आमाल पाकीज़ा हो जाते हैं। (4) दुरूद शरीफ़ से दरजात बुलन्द होते हैं। (5) गुनाहों की मग़्फ़िरत कर दी जाती है। (6) दुरूद भेजने वाले मुसलमान के लिए दुरूद ख़ुद इस्तिग़्फ़ार करता है। (7) उस के नामए आमाल में अज्र (सवाब) का एक क़ीरात़ लिखा जाता है, जो उ़हुद पहाड़ की मिस्ल होता है। (8) दुरूद पढ़ने वाले मुसलमान को अज्र (सवाब) का पूरा पूरा पैमाना मिलेगा। (9) दुरूद शरीफ़ उस मुसलमान के लिए दुन्या व आख़िरत के तमाम उमूर (कामों) के लिए काफ़ी हो जाएगा जो अपने वज़ाइफ़ का तमाम वक़्त दुरूदे पाक पढ़ने में बसर करता हो। (10) मसाइब (मुसीबतों) से नजात मिल जाती है। (11) दुरूदे पाक की हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم गवाही देंगे। (12) दुरूदे पाक पढ़ने से शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है। (13) दुरूद शरीफ़ से **अल्लाह** पाक की रिज़ा और उस की रह़मत ह़ासिल होती है। (14) **अल्लाह** पाक की

www.dawateislami.net

नाराज़ी से अम्न मिलता है। (15) अ़र्श के साए के नीचे जगह मिलेगी। (16) मीज़ान में नेकियों का पलड़ा भारी होगा। (17) ह़ौज़े कौसर पर ह़ाज़िरी का मौक़अ़ मुयस्सर आएगा। (18) क़ियामत की प्यास से ह़िफ़ाज़त होगी। (19) जहन्नम की आग से छुटकारा मिलेगा। (20) पुल सिरात़ पर चलना आसान होगा। (21) मरने से पेहले जन्नत की मन्ज़िल दिखा दी जाएगी। (22) दुरूद शरीफ़ तंगदस्त के ह़क़ में सदक़े के क़ाइम मक़ाम होगा। (23) येह सरापा पाकीज़गी व त़हारत है। (24) दुरूद के विर्द से माल में बरकत होती है। (25) इस की वज्ह से सौ बल्कि इस से भी ज़ियादा ह़ाजात पूरी होती हैं। (26) येह एक इ़बादत है। (27) दुरूद शरीफ़ **अल्लाह** पाक के नज़्दीक पसन्दीदा आमाल में से है। (28) दुरूद शरीफ़ मजालिस (महाफ़िल) की ज़ीनत है। (29) दुरूद शरीफ़ से ग़ुर्बत व फ़क़्र दूर होता है। (30) ज़िन्दगी की तंगी दूर हो जाती है। (31) इस के ज़रीए ख़ैर के मक़ाम तलाश किए जाते हैं। (32) दुरूद शरीफ़ से दुरूद पढ़ने वाली ख़ुद, उस के बेटे, पोते नफ़्अ़ (फ़ाएदा) पाएंगे, वोह भी नफ़्अ़ (फ़ाएदा) ह़ासिल करेगा जिस को दुरूदे पाक का सवाब पहुंचाया गया। (33) **अल्लाह** पाक और उस के रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब नसीब होगा। (34) दुरूदे पाक नूर है। (35) निफ़ाक़ (मुनाफ़क़त) और ज़ंग (क़ाट) से दिल पाक हो जाता है। (36) ख़्वाब में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत होती है। (37) दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाली, लोगों की ग़ीबत से महफ़ूज़ रेहती है। दुरूद शरीफ़ तमाम आमाल से ज़ियादा बरकत वाला और अफ़्ज़ल अ़मल है। (38) दुरूद शरीफ़ दीनो दुन्या में ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श (यानी फ़ाएदा देने वाला) है और इस के इलावा इस वज़ीफ़े में समझदार इस्लामी बहन के लिए बहुत वसीअ़ (ज़ियादा) सवाब है, जो आमाल के ज़ख़ाइर को इकठ्ठा करने पर ह़रीस है

www.dawateislami.net

और अ़ज़ीम फ़ज़ाइल, बेहतरीन मनाक़िब और कसीर फ़वाइद पर मुश्तमिल अ़मल के लिए जो कोशां है। **अल्लाह** करीम हमें ब कसरत दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِیْن[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! अब सब से पेहले कुरआने करीम से अवरादो वज़ाइफ़ का सुबूत सुनती हैं : चुनान्चे, **अल्लाह** करीम पारह 17, सूरए अम्बिया, आयत नम्बर 87 में इरशाद फ़रमाता है :

فَنَادٰی فِی الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ ۝

(پ۱۷، انبیا: ۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : तो उस ने अन्धेरों में पुकारा कि तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू हर ऐब से पाक है, बेशक मुझ से बेजा हुवा।

ह़ज़रते सअ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ह़ज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام ने मछली के पेट में जब दुआ़ मांगी, तो येह कलिमात कहे : لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ जो मुसलमान इन कलिमात के साथ किसी मक़्सद के लिए दुआ़ मांगे, तो **अल्लाह** पाक उसे क़बूल फ़रमाता है।[2]

ह़ज़रते साद बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हम नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब बैठे हुवे थे, तो आप ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ के बारे में ख़बर न दूं कि जब तुम में से किसी शख़्स पर कोई मुसीबत या दुन्या की बलाओं में से कोई बला नाज़िल हो और वोह उस के ज़रीए दुआ़ करे, तो उस की मुसीबत व बला दूर हो जाए।

1...तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, 8 / 81, बि तग़य्युरिन

2...ترمذی، کتاب الدعوات، ۸۱-باب، ۵/۳۰۲، الحدیث: ۳۵۱۶

www.dawateislami.net

आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की गई : क्यूं नहीं ! इरशाद फ़रमाया : (वोह चीज़) ह़ज़रते यूनुस की दुआ ''لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ'' है।[1]

वज़ीफ़े की बरकत से बेड़ियां टूट गईं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! वज़ीफ़ों की मज़ीद बरकात सुनती हैं : चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का बयान है : ह़ज़रते मालिक अश्जई رَضِیَ اللهُ عَنْه, नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : मेरा बेटा औ़फ़ (दुश्मनों की) क़ैद में है। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से इरशाद फ़रमाया : तुम अपने बेटे की त़रफ़ येह पैग़ाम भिजवा दो कि **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे कसरत से لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ पढ़ने का हुक्म देते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللهُ عَنْه को दुश्मनों ने ज़न्जीरों में जकड़ा हुवा था मगर इस वज़ीफ़े की बरकत से उन की ज़न्जीरें टूट गईं, वोह दुश्मनों की क़ैद से निकल कर उन की एक ऊंटनी पर सुवार हो कर चल पड़े। रास्ते में एक चरागाह में दुश्मनों के जानवर चर रहे थे, आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने उन्हें पुकारा, तो वोह सब के सब दौड़ते भागते हुवे आप رَضِیَ اللهُ عَنْه के पीछे पीछे चल पड़े, जब आप घर पहुंचे, तो दरवाज़े (Door) पर आ कर अपने वालिदैन को पुकारा, तो उन के वालिदैन ख़ुशी से झूम उठे और ह़ैरत भी कर रहे थे कि औ़फ़ तो क़ैद में थे फिर यहां कैसे आ गए ? बहर ह़ाल जब उन के वालिदैन और उन का ख़ादिम दरवाज़े की त़रफ़ गए, तो देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَضِیَ اللهُ عَنْه के साथ बहुत सारे ऊंट मौजूद हैं। आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अपने वालिदैन को

---

1 ... مستدرك، كتاب الدعاء والتكبير...الخ، باب من دعا بدعوة ذي النون...الخ، ۲/۱۸۳، حديث: ۱۹۰۷

www.dawateislami.net

अपने और ऊंटो के बारे में बताया। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के वालिदे मोहतरम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से फ़रमाया : ठेहरो ! मैं रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर इन ऊंटों के बारे में पूछ लूं (कि येह ऊंट हमारे लिए हलाल हैं या नहीं ?) चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के वालिदे मोहतरम ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर पूरा वाक़िआ अ़र्ज़ कर दिया। तो मदीने के सुल्तान صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से इरशाद फ़रमाया : उन ऊंटों का तुम जो चाहो करो (यानी वोह ऊंट तुम्हारे लिए हलाल हैं)।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि अवरादो वज़ाइफ़ की कैसी कैसी बरकतें ज़ाहिर होती हैं कि जब हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने दुश्मनों की क़ैद में रेहते हुवे हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़ता कर्दा वज़ीफ़े को कसरत से पढ़ा, तो **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से मदद आई, ज़न्जीरें ख़ुद बख़ुद टूट गईं, क़ैद से आज़ादी नसीब हो गई, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की करामत से ऊंटों का रेवड़ आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की आवाज़ पर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पीछे पीछे चल पड़ा और आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ **अल्लाह** पाक की रह़मत और उस की इनायतों का नज़्ज़ारा करने के बाद ख़ुशी ख़ुशी अपने घर की जानिब चल पड़े।

बयान कर्दा ह़िकायत में जहां बहुत से निकात हैं, वहीं लाह़ौल शरीफ़ की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत भी मालूम हुई कि येह एक ऐसा त़ाक़तवर (Powerful) वज़ीफ़ा है जो मुश्किलात से निकालने में बहुत फ़ाएदा देता है, लिहाज़ा जब भी कोई मुश्किल या बीमारी आ जाए, मसलन दिल में घबराहट होती हो, जानी या माली नुक़्सान हो जाए, सामान

1... تفسیر ابن کثیر، پ۲۸، سورۃ الطلاق، تحت الآیۃ: ۲، ۸/۳۰۲، ۱۷۰

www.dawateislami.net

या रक़म चोरी हो जाए, घर में आग लग जाए, ना इन्साफ़ी या धोका हो जाए, दुश्मनों का ख़ौफ़ सुकून ख़त्म कर दे, ह़ालात ख़राब हो जाएं, नाह़क़ किसी मुक़द्दमे (Case) में फंसा दिया जाए, कोई ह़ादिसा हो जाए, जिन से क़र्ज़ लिया था वोह क़र्ज़ लौटाने का मुत़ालबा करें, आंधी, सैलाब या ज़लज़ला आ जाए, घर में कोई बीमार हो जाए, तो لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه ज़ियादा से ज़ियादा पढ़ा जाए, اِنْ شَآءَ اللّٰه फ़ाएदा होगा और फ़ाएदा क्यूं न हो कि ख़ुद रसूले पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ह़क़ बयान करने वाली मुबारक ज़बान से लाह़ौल शरीफ़ के फ़ज़ाइल और इस की बरकात को बयान फ़रमाया है । आइए ! बरकत ह़ासिल करने के लिए हम भी 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनती हैं : चुनान्चे,

1. इरशाद फ़रमाया : لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ पढ़ा करो क्यूंकि येह जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है ।[1]
2. इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े के बारे में न बताऊं ? अ़र्ज़ की : वोह क्या है ? इरशाद फ़रमाया : لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ।[2]
3. इरशाद फ़रमाया : जिस ने لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ पढ़ा, तो येह (उस के लिए) 99 बीमारियों की दवा है, उन में सब से हल्की बीमारी परेशानी व ग़म है ।[3]
4. इरशाद फ़रमाया : ऐ अ़ली ! मैं तुम्हें ऐसे कलिमात न बता दूं जिन्हें तुम मुसीबत के वक़्त पढ़ लो ? अ़र्ज़ की : ज़रूर इरशाद फ़रमाइए !

1...مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب استحباب خفض الصوت بالذکر، ص ۱۱۱۲، حدیث: ۲۷۰۴

2...مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی لاحول ولاقوۃ۔۔۔الخ، ۱۱۸/۱۰، حدیث: ۱۶۸۹۷

3...الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی قول لاحول، ۲۹۱/۲، حدیث: ۲۴۴۸

www.dawateislami.net

आप पर मेरी जान कुरबान ! तमाम अच्छाइयां मैं ने आप ही से सीखी हैं । इरशाद फ़रमाया : जब तुम किसी मुश्किल में फंस जाओ, तो इस त़रह़ पढ़ो : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ पस **अल्लाह** पाक इस की बरकत से जिन बलाओं को चाहेगा, दूर फ़रमा देगा ।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उ़लमाए किराम ने भी लाह़ौल शरीफ़ की बरकतों को बयान फ़रमाया है । चुनान्चे, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : सूफ़ियाए किराम (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ) फ़रमाते हैं : जो कोई सुब्ह़ो शाम 21 बार लाह़ौल शरीफ़ (यानी لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ) पानी पर दम कर के पी लिया करे, तो اِنْ شَآءَ اللّٰه वस्वसए शैत़ानी से नजात मिलेगी ।[2]

सुब्ह़ो शाम की तारीफ़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **''शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या''** के सफ़ह़ा नम्बर 11 पर सुब्ह़ और शाम की तारीफ़ बयान करते हुवे तह़रीर फ़रमाते हैं : आधी रात गुज़रने के बाद से सूरज की पेहली किरन चमकने तक **''सुब्ह़''** है, इस सारे वक़्त में जो कुछ पढ़ा जाए, उसे सुब्ह़ में पढ़ना कहेंगे और ज़ोहर का वक़्त शुरूअ़ होने से ले कर गुरूबे आफ़्ताब तक **''शाम''** है, इस पूरे वक़्फ़े में जो कुछ पढ़ा जाए, उसे शाम में पढ़ना कहेंगे ।[3]

1...عَمَلُ الْيَوْمِ وَاللَّيْلَةِ، ص۱۲۰

2...मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 87, मुलख़्ख़सन

3...शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या, स. 11

www.dawateislami.net

आइए ! "**फ़तावा रज़विय्या**" जिल्द 23, सफ़हा नम्बर 398 से अवरादो वज़ाइफ़ के मुतअ़ल्लिक़ कुछ मालूमाती निकात सुनती हैं : चुनान्चे,

1. जब भी कोई वज़ीफ़ा पढ़ा जाए, तो वोह किसी जाइज़ काम को पूरा करने के लिए **अल्लाह** पाक की बारगाह में आ़जिज़ी करने का ज़रीआ़ हो। वज़ीफ़े को **अल्लाह** पाक की बारगाह में वसीला बनाए और सवाब की निय्यत से वज़ीफ़ा करें।
2. अगर वज़ीफ़ा सिर्फ़ इसी निय्यत से किया जाए कि मेरा काम हो जाए, तब भी जाइज़ तो है मगर सवाब नहीं मिलेगा।
3. येह कैसे पता चले कि वज़ीफ़ा सवाब व दुआ़ समझ कर, कर रही हैं या अपना मक़्सद पाने के लिए ? इस की एक निशानी येह है कि अगर वज़ीफ़ा करने के बा वुजूद मक़्सद न मिला, तो वज़ीफ़ा ही छोड़ दिया, तो येह वज़ीफ़ा अपना काम निकालने ही के लिए था क्यूंकि अगर दुआ़ व सवाब समझ कर करतीं, तो जारी रेहता।
4. वज़ीफ़ा जाइज़ काम ह़ासिल करने के लिए हो, अगर नाजाइज़ काम के लिए हो, मसलन मियां बीवी में लड़ाई करवाने के लिए, तो ऐसा वज़ीफ़ा ह़राम है।
5. वज़ीफ़ा अगर किसी जाइज़ काम के लिए ही हो मगर किसी नाजाइज़ त़रीक़े से हो, मसलन सिफ़्ली (काले) इ़ल्म वग़ैरा के ज़रीए, तब भी ह़राम है।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! उ़मूमन जब इन्सान बीमार होता है, तो सीधा किसी डॉक्टर या ह़कीम के पास जाता है, वोह डॉक्टर या ह़कीम मरीज़ की ह़ालत के मुत़ाबिक़ उस को चन्द चीज़ों का परहेज़ बताता है,

1...फ़तावा रज़विय्या, 23 / 389, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

मसलन सादा ग़िज़ाएं खाने की ताकीद करता है और केहता है : "अगर परहेज़ करोगे, तो ही दवा असर करेगी, परहेज़ करने से जल्द इलाज हो जाएगा, अगर परहेज़ न किया, तो पैसा ज़ाएअ़ करने के इलावा कुछ हाथ नहीं आएगा ।" अब मरीज़ अगर उस की हिदायत के मुताबिक़ दवा (Medicine) वक़्त पर ले और पाबन्दी से परहेज़ भी जारी रखे, तो اِنْ شَآءَاللہ वोह जल्द सेहतयाब हो जाएगा लेकिन अगर वोह दवा वक़्त पर न खाए, मन्अ़ की गई चीज़ें भी डट कर खाता पीता रहे, उस के दिलो दिमाग़ में इस तरह़ के ख़यालात भी आते रहें कि पता नहीं दवा असर करेगी या नहीं ? पता नहीं मुझे शिफ़ा मिलेगी या नहीं ? कहीं इस से मुझे कोई नुक़्सान तो नहीं हो जाएगा ? तो यक़ीनन येह नादानी है ।

इसी तरह़ अवरादो वज़ाइफ़ का मुआ़मला है कि अगर कोई अवरादो वज़ाइफ़ के उसूलो क़वानीन की पाबन्दी न करे, जिन चीज़ों को करना चाहिए, उन को न करे और जिन से बचना चाहिए, उन को करे, उस के दिलो दिमाग़ में इस के ख़यालात आते रहें कि पता नहीं वज़ीफ़ा करने से बीमारी दूर होगी या नहीं ? वज़ीफ़ा करने से वालिद, शौहर या भाई के रोज़गार में बरकत होगी या नहीं ? वज़ीफ़ा करने से **अल्लाह** पाक की रह़मत होगी या नहीं ? वज़ीफ़ा करने से बच्ची की शादी होगी या नहीं ? कहीं वज़ीफ़ा करने से दिमाग़ ख़राब तो नहीं हो जाएगा ? कहीं वज़ीफ़ा करने से उल्टा मुझे कोई नुक़्सान तो नहीं होगा ? वग़ैरा । तो ऐसी सूरत में अपने मक़्सद में कभी भी काम्याबी नहीं हो सकेगी और न ही अवरादो वज़ाइफ़ का कोई फ़ाएदा नसीब होगा जबकि इस के मुक़ाबले में अवरादो वज़ाइफ़ को शराइत़ व आदाब के साथ करने वालियों को इस के भरपूर फ़ाएदे मिलते हैं । चुनान्चे,

www.dawateislami.net

अवरादो वज़ाइफ़ के ज़रूरी आदाब

जन्नती ज़ेवर में लिखा है : याद रखो ! जिस त़रह़ जड़ी बूटियों और तमाम दवाओं की तासीर उसी वक़्त ज़ाहिर होती है जबकि वोह दवाएं उसी त़रह़ इस्तिमाल की जाएं जो उन के इस्तिमाल का त़रीक़ा है । इसी त़रह़ अ़मलियात और तावीज़ात की भी कुछ शराइत़, कुछ तरकीबें (और) कुछ लवाज़िमात हैं कि जब तक उन सब चीज़ों का ख़याल न किया जाएगा, अ़मलियात की तासीरात ज़ाहिर न होंगी और बरकतें ह़ासिल न होंगी । इन शराइत़ में से सात शर्तें निहायत ही अहम और इन्तिहाई ज़रूरी हैं कि जिन के बिग़ैर कुरआनी आमाल में तासीर की उम्मीद रखना बे वुक़ूफ़ी है । वोह शर्तें येह हैं : चुनान्चे,

आमाल और दुआ़ओं की 7 शराइत़

(1) ह़लाल लुक़्मा खाना और ह़राम ग़िज़ाओं से बचना । (2) सच बोलना और झूट से हमेशा बचते रेहना । (3) निय्यत को दुरुस्त और पाकीज़ा रखना कि हर नेकी **अल्लाह** करीम ही के लिए करना । (4) शरीअ़त के अह़काम की पूरी पूरी पाबन्दी करना । (5) **अल्लाह** करीम के दीन के सुतूनों मसलन कुरआन, काबा, नबी, नमाज़ वग़ैरा की ताज़ीम और बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का हमेशा दिल में अदबो एह़तिराम रखना । (6) जो वज़ीफ़ा भी पढ़ें, मुकम्मल तवज्जोह के साथ पढ़ना । (7) जो अ़मल और वज़ीफ़ा पढ़ें, उस की तासीर पर पूरा पूरा यक़ीन और पुख़्ता अ़क़ीदा रखना, अगर शको शुबा हुवा, तो वज़ीफ़ा या अ़मल में असर न रहेगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बसा अवक़ात अवरादो वज़ाइफ़ की फ़ज़ीलतें और बरकतें सुन कर पढ़ने का ज़ेहन तो बनता है मगर इस पर इस्तिक़ामत नहीं मिल पाती । इस की 2 बुन्यादी वुजूहात हो सकती हैं : एक तो येह कि शायद हमें दुरुस्त पढ़ना नहीं आता, जिस की वज्ह से हम अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ने से महरूम रेहती हैं । इस कमज़ोरी को दूर करना चाहिए । वैसे भी हमें नमाज़ तो पढ़नी ही पढ़नी है, तिलावते क़ुरआन तो करनी ही है, हम क़ुरआने करीम दुरुस्त पढ़ना सीख लें, इस की बरकत से अवरादो वज़ाइफ़ दुरुस्त पढ़ना आसान हो जाएगा । اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आशिक़ाने रसूल की मदनी तहरीक दावते इस्लामी के मदनी माहोल में क़ुरआने करीम को मख़ारिज की दुरुस्ती के साथ पढ़ने का बा क़ाइदा एहतिमाम किया जाता है । **"मजलिसे मद्रसतुल मदीना बालिग़ात"** के तहत मुल्क व बैरूने मुल्क हज़ारों मद्रसतुल मदीना बालिग़ात लगाए जाते हैं, जिन में हज़ारों इस्लामी बहनें मुफ़्त तालीमे क़ुरआन हासिल करने की सआदत हासिल करती हैं । हमें चाहिए कि हम भी उन के साथ शामिल हो कर दुरुस्त मख़ारिज के साथ क़ुरआने करीम सीखने की सआदत हासिल करें ।

अवरादो वज़ाइफ़ में सुस्ती की दूसरी वज्ह येह भी हो सकती है कि शायद हम जल्द घबरा जाती हैं कि फ़ुलां वज़ीफ़े पर तो इतना वक़्त लगता है, मेरे पास तो इतना वक़्त ही नहीं है । इस कमज़ोरी को दूर करने का त़रीक़ा एक मिसाल के ज़रीए समझने की कोशिश करती हैं । चुनान्चे, अगर किसी इन्सान को लम्बे सफ़र पर जाना हो, मसलन बरेली से अजमेर जाना हो, तो वोह वक़्फ़े वक़्फ़े से सड़क पर दिए गए किलोमीटर्ज़ के निशानात को देखता है कि अब इतना सफ़र बाक़ी है, अब इतना सफ़र बाक़ी है, इन किलोमीटर्ज़ के निशानात को देखते रेहने से उसे महसूस होता है कि शायद उस का सफ़र आसान होता जा रहा है, यहां तक कि वोह अपनी मन्ज़िल पर पहुंच जाता है ।

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ सवाब पर नज़र रखी जाए और इब्तिदा में चन्द वज़ाइफ़ के लिए वक़्त का अन्दाज़ा कर लिया जाए कि फ़ुलां वज़ीफ़ा पढ़ने में कितना वक़्त लगता है ? मसलन सूरए मुल्क की तिलावत पर तक़रीबन 5 मिनट लगते हैं, **''शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या ज़ियाइय्या अ़त्तारिय्या''** में दिए गए अवरादो वज़ाइफ़ में से रोज़ाना का एक वज़ीफ़ा है जिसे 70 बार पढ़ना होता है और वोह है ''اَسْتَغْفِرُاللّٰهَ الْعَظِيْمَ وَاَتُوْبُ اِلَيْه'' इस पर तक़रीबन 4 मिनट लगते हैं । 166 बार येह पढ़ना होता है ''لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ'' (आख़िर में ''مُحَمَّدٌرَّسُوْلُ اللّٰه'') इस पर तक़रीबन सवा चार मिनट लगते हैं, 111 बार अगर येह दुरूद शरीफ़ ''صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد'' पढ़ा जाए, तो तक़रीबन साढ़े चार मिनट लगते हैं, तीनों قُلْ (सूरए इख़्लास, सूरए फ़लक़ और सूरए नास) पढ़ने वाली के लिए हर बला से हिफ़ाज़त की ख़ुश ख़बरी है, इस वज़ीफ़े पर तक़रीबन डेढ़ मिनट लगता है । इस त़रह़ हम ग़ौर करती जाएं, कई वज़ाइफ़ और भी ऐसे होंगे जिन पर बहुत मुख़्तसर वक़्त यानी सिर्फ़ चन्द मिनट लगते हैं । इस अन्दाज़ से जाइज़ा लेने से **अल्लाह** पाक की रह़मत से उम्मीद है कि पढ़ने में साबित क़दमी नसीब होगी । اِنْ شَآءَاللّٰه

फिर हम येह भी ग़ौर करें कि रोज़ाना न जाने कितने घन्टे फ़ुज़ूल गुफ़्तगू में गुज़र जाते होंगे, जिस में ग़ीबत भी हो जाती होगी, कई इस्लामी बहनों का दिल दुख जाता होगा, ज़बान की बे एह़तियाती की वज्ह से झूट भी निकल जाता होगा । **अल्लाह** पाक हमें ज़बान का दुरुस्त इस्तिमाल करते हुवे कसरत के साथ अपना ज़िक्र करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए ।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मौजूदा दौर में अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सूरत में एक पीरे कामिल मौजूद हैं, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा तावीज़ातो वज़ाइफ़ इन्तिहाई तासीर वाले होते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही के अ़ज़ीम जज़्बे के तह़्त मश्हूर क़ुरआनी सूरतों, दुरूदों, रूह़ानी व त़िब्बी इलाजों पर मुश्तमिल किताब **''मदनी पंजसूरह''**, इलाज के घरेलू नुस्ख़ों पर मुश्तमिल किताब **''घरेलू इलाज''** और **अल्लाह** करीम के मुबारक नामों की बरकतों से मामूर रिसाला **''40 रूह़ानी इलाज मअ़ त़िब्बी इलाज''** के तोह़फ़े उम्मत को अ़त़ा फ़रमाए हैं। इन के इलावा इन रसाइल **: ''बीमार आ़बिद, ज़िन्दा बेटी कुंवें में फेंक दी, चिड़िया और अन्धा सांप, मेंडक सुवार बिच्छू** और किताब **पर्दे के बारे में सुवाल जवाब''** में भी आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने सैंकड़ों वज़ाइफ़ तह़रीर फ़रमाएं हैं। लिहाज़ा इन क़ुतुबो रसाइल को आज ही मक्तबतुल मदीना के बस्ते से क़ीमतन त़लब कीजिए और दूसरी इस्लामी बहनों को भी तोह़फ़तन पेश कीजिए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! याद रखिए ! जिस त़रह़ तावीज़ात व वज़ाइफ़ मुसीबतों, परेशानियों और बीमारियों से नजात दिलाने में फ़ाएदेमन्द हैं, इसी त़रह़ क़ुरआने करीम की तिलावत करना भी परेशानियों और बीमारियों से छुटकारा पाने का एक बेहतरीन वज़ीफ़ा है। तिलावते क़ुरआन की बरकत और **अल्लाह** पाक की रह़मत से हमारे कई मसाइल ह़ल हो सकते हैं। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

क़ुरआन से इलाज

एक शख़्स ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में गले में दर्द की शिकायत की, तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ुरआन पढ़ा करो।[1] इसी त़रह़ एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : मेरे सीने में तक्लीफ़ है। इरशाद फ़रमाया : क़ुरआन पढ़ो। **अल्लाह** पाक फ़रमाता है :

وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ (پ۱۱، یونس:۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और दिलों की शिफ़ा।

(تفسیر درمنثور، پ۱۱، یونس، تحت الآیہ: ۵۷، ۴/۳۶۶)

बल्कि क़ुरआने करीम तो मुख़्तलिफ़ बीमारियों की बेहतरीन दवा भी है। फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : خَيْرُ الدَّوَاءِ الْقُرْاٰنُ बेहतरीन दवा **"क़ुरआने करीम"** है।[2] ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : यानी बेहतरीन तावीज़ वोह है जो किसी क़ुरआनी आयत के ज़रीए़ से किया जाए। चुनान्चे, पारह 15, सूरए बनी इसराईल की आयत नम्बर 82 में इरशादे बारी है :

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ (پارہ۱۵، بنی اسرائیل:۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और हम क़ुरआन में वोह चीज़ उतारते हैं जो ईमान वालों के लिए शिफ़ा और रह़मत है।

तो क़ुरआने करीम दिल, बदन और रूह़ सब के लिए दवा है। जब बाज़ कलामों की भी ख़ासिय्यतें और फ़ाएदे होते हैं, तो फिर रब्बे

1...شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، ۲/۵۱۹، حدیث: ۲۵۸۰

2...ابن ماجہ، کتاب الطب، باب الاستشفاء بالقرآن، ۴/۱۱۶، حدیث: ۳۵۰۱

www.dawateislami.net

करीम के कलाम के बारे में आप का क्या ख़याल है ? जिस की फ़ज़ीलत दीगर कलामों पर ऐसी है जैसी **अल्लाह** करीम की उस की मख़्लूक़ पर। क़ुरआने पाक में कुछ ऐसी आयात हैं जो ख़ास अमराज़ और मुसीबतों के ख़ातिमे के लिए हैं, उन आयात की पेहचान ख़ास लोगों को होती है।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! क़ुरआने पाक की हर सूरत की अपनी ही फ़ज़ीलत, ख़ासिय्यत और शान है, जो जानो माल की हिफ़ाज़त करने, दुख दर्द मिटा कर दिल में ख़ुशी दाख़िल करने और मरज़ से नजात दिलाने के लिए काफ़ी है। आइए ! तरग़ीब के लिए मक्तबतुल मदीना की किताब "**जन्नती ज़ेवर**" से क़ुरआने पाक की चन्द सूरतों के फ़ज़ाइल व ख़ुसूसिय्यात और फ़वाइद सुनती हैं : चुनान्चे,

क़ुरआनी सूरतों के फ़ज़ाइल व ख़ुसूसिय्यात और फ़वाइद

❖ **सूरतुल फ़ातिहा** 100 मरतबा पढ़ कर जो दुआ मांगी जाए, क़बूल होती है। ❖ **सूरतुल बक़रह** की तिलावत से शैतान घर से भाग जाता है। ❖ **आयतुल कुर्सी** पढ़ने से मोहताजी दूर होती है। ❖ **सूरतुल कहफ़** को हमेशा पढ़ने से दज्जाल के फ़ितनों से हिफ़ाज़त होगी। ❖ **सूरतुद्दुख़ान** पढ़ने से मुश्किल दूर होती है। ❖ जो मरने के क़रीब हो, उस पर **सूरतुल जासिया** का दम करने से उस का ख़ातिमा बिल ख़ैर हो। ❖ **सूरतुल हुजुरात** का पढ़ना और दम कर के पीना घर में ख़ैरो बरकत के लिए मुफ़ीद है। ❖ **सूरतुर्रहमान** 11 बार पढ़ने से तमाम मक़ासिद पूरे होते हैं। ❖ **सूरतुल वाक़िआ** पढ़ने से कभी फ़ाक़ा न होगा।

1...فیض القدیر، ۳/۶۲۸، تحت الحدیث: ۴۰۰۷

www.dawateislami.net

❖ **सूरतुल मुल्क** को हर रात पढ़ने से अ़ज़ाबे क़ब्र से हिफ़ाज़त होगी । ❖ **सूरतुल मुज़्ज़म्मिल** को 11 बार पढ़ने से हर मुश्किल आसान हो जाती है । ❖ **सूरतुन्नाज़िआ़त** पढ़ने से मौत की तक्लीफ़ नहीं होगी । ❖ **सूरए अलम नश्रह़** को जिस माल पर पढ़ दिया जाए, उस में ख़ूब बरकत होगी । ❖ **सूरतुत्तीन** 3 मरतबा पढ़ने से अख़्लाक़ व किरदार बेहतरीन होते हैं । ❖ **सूरतुल अ़लक़** में जोड़ों के दर्द का इलाज है । ❖ **सूरतुल क़द्र** जो सुब्हो शाम पढ़े, **अल्लाह** पाक उस की इ़ज़्ज़त बढ़ा देगा । ❖ **सूरतुल बय्यिना** में बर्स और यरक़ान का इलाज है । ❖ **सूरतुज़्ज़िलज़ाल** चौथाई कुरआन के बराबर है । ❖ जिस को नज़र लगी हो, उस पर **सूरतुल आ़दियात** का दम मुफ़ीद है । ❖ **सूरतुल क़ारिआ़** पढ़ने से बलाओं से हिफ़ाज़त रेहती है । ❖ **सूरतुत्तकासुर** को 300 बार पढ़ने से बहुत जल्द क़र्ज़ अदा हो जाता है । ❖ **सूरतुल अ़स्र** पढ़ने से ग़म दूर हो जाता है । ❖ **सूरतुल हुमज़ह** और **सूरतुल फ़ील** दुश्मन के शर से हिफ़ाज़त और **सूरए कुरैश** जान की हिफ़ाज़त के लिए मुजर्रब है । ❖ **सूरतुल माऊ़न** बड़ी मुश्किल के वक़्त पढ़ना बहुत मुफ़ीद है । ❖ **सूरतुल कौसर** की तिलावत से बे औलाद को औलाद मिल जाती है । ❖ **सूरतुल काफ़िरून** चौथाई कुरआन के बराबर है । ❖ **सूरतुल इख़्लास** तिहाई कुरआन के बराबर है, इस के बहुत फ़ज़ाइल हैं । ❖ **सूरतुल फ़लक़** और **सूरतुन्नास** से जिन्न व शैतान और ह़ासिदों के शर से हिफ़ाज़त रेहती है ।[1] **ऐ काश** ! हम सब को तिलावते कुरआन करने का जज़्बा नसीब हो जाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

1...जन्नती ज़ेवर, स. 588

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करती हूं । ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की, उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की, वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।[1]

सलाम करने की सुन्नतें और आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले "**101 मदनी फूल**" से सलाम करने की सुन्नतें और आदाब सुनती हैं : ❖ मुसलमान (मह़ारिम) से मुलाक़ात करते वक़्त उसे सलाम करना सुन्नत है । ❖ मक्तबतुल मदीना की किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3, सफ़ह़ा 459 पर लिखे हुवे जुज़्इय्ये का खुलासा है : सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को सलाम करने लगी हूं, उस का माल और इ़ज़्ज़तो आबरू सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं उन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानती हूं ।[2] ❖ दिन में कितनी ही बार मुलाक़ात हो, एक कमरे से दूसरे कमरे में बार बार आना जाना हो, वहां मौजूद मह़रमों को सलाम करना कारे सवाब है । ❖ सलाम में पहल करना सुन्नत है । ❖ जो सलाम में पहल करे, वोह **अल्लाह** करीम की मुक़र्रब है । ❖ जो सलाम में पहल करे, वोह तकब्बुर से भी

1...مشکاۃ، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، ۱/۵۵، حدیث: ۱۷۵

2...बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, 3 / 459, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

बरी है । जैसा कि नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : पेहले सलाम केहने वाला तकब्बुर से बरी है ।[1] ❖ सलाम (में पहल करने वाले) पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं ।[2] ❖ اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم केहने से 10 नेकियां मिलती हैं, साथ में وَرَحْمَةُ اللّٰه भी कहें, तो 20 नेकियां हो जाएंगी और وَبَرَكَاتُه शामिल करें, तो 30 नेकियां हो जाएंगी । बाज़ लोग सलाम के साथ जन्नतुल मक़ाम और दोज़ख़ुल ह़राम के अल्फ़ाज़ बढ़ा देते हैं, येह ग़लत़ त़रीक़ा है । ❖ सलाम का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि जिस इस्लामी बहन ने सलाम किया, वोह सुन ले ।

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब **''बहारे शरीअ़त''** ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात), 120 सफ़ह़ात की किताब **''सुन्नतें और आदाब''** और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले **''101 मदनी फूल''** और **''163 मदनी फूल''** हदिय्यतन त़लब कीजिए और इन का मुत़ालआ़ कीजिए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...شعب الایمان، باب فی مقاربۃ و موادۃ اھل الدین، ۶/۴۳۳، حدیث: ۸۷۸۶

2...कीमियाए सआ़दत, 1 / 394

www.dawateislami.net

बयान : 20 हर मुबल्लिग़ बयान करने से पहले कम से कम 3 बार पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه
اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا نَبِيَّ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ يَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हज़रते समुरह सुवाई رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हम सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहरबार में हाज़िर थे कि एक शख़्स हाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! बारगाहे खुदावन्दी में सब से अच्छा अ़मल कौन सा है ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सच बोलना और अमानत अदा करना । (रावी फ़रमाते हैं) : मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मज़ीद कुछ इरशाद फ़रमाइए । फ़रमाया : कसरते ज़िक्र और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना (भी अच्छा अ़मल है) कि येह अ़मल फ़क़्र (यानी ग़ुर्बत) को दूर करता है ।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइए ! **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिए पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेती हैं :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ'' मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है ।[2]

1...القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ علی رسول اللہ۔۔۔الخ، ص ۲۷۳ مختصرا

2...معجم کبیر، ۶/۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

www.dawateislami.net

मस्अला : नेक और जाइज़ काम में जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

मौक़ेअ़ की मुनासबत और नौइय्यत के एतिबार से निय्यतों में कमी बेशी व तब्दीली की जा सकती है। ❖ निगाहें नीची किए ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगी। ❖ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ताज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगी। ❖ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरी इस्लामी बहनों के लिए जगह कुशादा करूंगी। ❖ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगी। घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगी। ❖ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوااللّٰه، تُوْبُوْا اِلَى اللّٰهِ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वाली की दिलजूई के लिए पस्त आवाज़ से जवाब दूंगी। ❖ इजतिमाअ़ के बाद ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़हा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगी। ❖ दौराने बयान मोबाइल के ग़ैर ज़रूरी इस्तिमाल से बचूंगी, न बयान रेकॉर्ड करूंगी, न ही और किसी क़िस्म की आवाज़ कि इस की इजाज़त नहीं। ❖ जो कुछ सुनूंगी, उसे सुन और समझ कर, उस पे अ़मल करने और उसे बाद में दूसरों तक पहुंचा कर नेकी की दावत आ़म करने की सआ़दत हासिल करूंगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह करीम ने हमें ज़िन्दगी की अनमोल नेमत से नवाज़ा है, हमें चाहिए कि इस की क़द्र करें क्यूंकि ज़िन्दगी बर्फ़ की त़रह़ पिघल रही है और मौत अपनी तमाम तर सख़्तियों समेत हमारी त़रफ़ बढ़ रही है, बहुत जल्द हमें मरना, अन्धेरी क़ब्र में उतरना और अपनी करनी का फल भुगतना है। यक़ीनन वोह इस्लामी बहनें ख़ुश नसीब हैं जो मरने से क़ब्ल आख़िरत की तय्यारी कर लेती हैं,

www.dawateislami.net

लिहाज़ा ज़िन्दगी की आख़िरी सांस पूरी होने से पेहले जो भी वक़्त मुयस्सर है, उसे ग़नीमत जान कर अपने रब की रिज़ा ह़ासिल करने में मश्ग़ूल हो जाइए और इस का एक आसान ज़रीआ़ येह है कि हम अपने रब्बे करीम की इबादत कसरत से करें । आज के बयान में हम **"सह़ाबिय्यात की इबादत"** के ह़वाले से सुनेंगी कि वोह नेक हस्तियां अपने रब्बे करीम की कितनी इबादत करती थीं ताकि हम भी उन की सीरत पर चल कर इबादत करें और हमें भी नेक आमाल करने का जज़्बा नसीब हो जाए । आइए ! सब से पेहले ख़ातूने जन्नत, ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की इबादत का एक वाक़िआ़ सुनती हैं : चुनान्चे,

शबे उ़रूसी इबादत में गुज़ारी

ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिए रसूल, ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के लिए मुहाजिरीन व अन्सार के मुअ़ज़्ज़ज़ीन ने निकाह़ के पैग़ामात भेजे लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : मैं ख़ुदाई फ़ैसले का मुन्तज़िर हूं । बिल आख़िर जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم ने निकाह़ का पैग़ाम दिया, तो महबूबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर ख़ुशी व मसर्रत से खिल उठा और मुनासिब इन्तिज़ामात के बाद (हिजरत के दूसरे साल माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र में[1]) अपनी लख़्ते जिगर का निकाह़ फ़रमा दिया । जब इस निकाह़ को एक महीना गुज़र गया, तो सय्यिदुना अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم की ख़्वाहिश पर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बहुत बड़ी दावते त़आ़म का एहतिमाम फ़रमाया और फिर ख़ुद पैदल चल कर काशानए अ़ली तक तशरीफ़ लाए और दुआ़ देते हुवे सय्यिदा ख़ातूने जन्नत को रुख़्सत फ़रमाया । जब रात

1...सीरते सय्यिदुल अम्बिया, स. 296

www.dawateislami.net

का अन्धेरा छा गया और सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم, सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से महब्बत भरी गुफ़्तगू फ़रमाने लगे, तो अचानक आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ने रोना शुरूअ़ कर दिया। शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने हैरान हो कर जब इस अश्कबारी की वज्ह दरयाफ़्त की, तो फ़रमाने लगीं : मैं तो अपनी उस हालत व मुआ़मले के मुतअ़ल्लिक़ सोच कर रो रही हूं कि जब मेरी उ़म्र बीत जाएगी और मुझे क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाएगा, आज मेरा इ़ज़्ज़त व फ़ख़्र के बिस्तर में दाख़िल होना, कल क़ब्र में दाख़िल होने की मानिन्द है। लिहाज़ा चाहिए कि आज रात हम अपने रब्बे करीम की बारगाह में खड़े हो कर इबादत करें कि वोही इबादत का ज़ियादा हक़ रखता है। चुनान्चे, इस के बाद दोनों पाक हस्तियां उठीं और रब्बे करीम की इबादत में मश्ग़ूल हो गईं।[1]

तख़्लीक़े इन्सानी का मक़्सद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शादी ख़ाना आबादी बिला शुबा दो अफ़राद के दरमियान एक ऐसे बन्धन का नाम है जिस के दवाम के लिए ज़ेहनी हम आहंगी और हम मिज़ाजी का एतिबार और लिहाज़ बहुत ज़रूरी है। जब येह बन्धन क़ाइम हो जाता है, तो मसर्रतों और ख़ुशियों का गोया सैलाब होता है जिस में हर एक बेहता चला जाता है मगर क़ुरबान जाइए सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا की मदनी सोच पर ! जब येह पाकीज़ा बन्धन में बंधीं तब भी अपनी क़ब्र को याद करने लगीं। कैसा ख़ौफ़े ख़ुदा था कि दुल्हन बन कर इन्हों ने इस हक़ीक़त से मुंह न मोड़ा कि आज अगर्चे इन्हें दुल्हन बना कर इन के दामन को ख़ुशियों से भर दिया गया है मगर कल इन का जनाज़ा भी तो उठाया जाने वाला है। येही दुन्या

1...الروض الفائق، المجلس الخامس والاربعون: فی زواج علی۔۔۔الخ، ص۲۷۴، ملتقطاً ومفهوماً

www.dawateislami.net

की ह़क़ीक़त है, एक त़रफ़ ख़ुशी के शादियाने बज रहे होते हैं, तो दूसरी त़रफ़ किसी की मय्यित पर आहो फ़ुग़ां का शोर होता है, एक त़रफ़ ख़ुशी व मसर्रत के फूल खिल रहे होते हैं, तो दूसरी त़रफ़ कहीं दुखों और ग़मों की तेज़ धूप वुजूद को जला रही होती है। किसी ने सच कहा कि :

नसीमे सुब्ह़ गुलशन में गुलों से खेलती होगी
किसी की आख़िरी हिचकी किसी की दिल लगी होगी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के इस वाक़िए से येह मालूम होता है कि उन्हों ने न सिर्फ़ एक नबी की बेटी होने का ह़क़ अदा किया बल्कि येह भी साबित कर दिया कि आप वाक़ेई जन्नत की तमाम औ़रतों की सरदार हैं क्यूंकि जहां आप ने मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े मह़शर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आ़लीशान पर अ़मल किया : "अ़क़्लमन्द और समझदार वोह है जो अपने नफ़्स का मुह़ासबा करे और मौत के बाद वाली ज़िन्दगी के लिए अ़मल करे।" वहीं आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا अपने रब की याद से भी ग़ाफ़िल न हुईं बल्कि इस बात को पेशे नज़र रखा कि **अल्लाह** पाक ने उन्हें इस दुन्या में अपनी इबादत के लिए पैदा फ़रमाया है। जैसा कि पारह 27, सूरतुज़्ज़ारियात की आयत नम्बर 56 में इरशाद होता है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾ (پ۲۷، الذّٰریٰت:۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (इसी लिए) बनाए कि मेरी बन्दगी करें।

सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के इस अ़मल को गोया ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, मुह़द्दिसे आज़मे हिन्द, ह़ज़रते मौलाना शाह अबुल मुह़ामिद सय्यिद मुह़म्मद अशरफ़ी जीलानी किछौछवी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने अपने इस शेर में क्या ख़ूब बयान फ़रमाया है :

www.dawateislami.net

दिन को होश्यार रहो, रात को बेदार रहो
चैन की नींद कहां मिलती है तुर्बत के सिवा

(फ़र्श पर अ़र्श, स. 10)

बन्दी, बन्दगी से है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ऊपर बयान कर्दा आयते करीमा को सामने रखते हुवे हर अ़क़्लमन्द इस्लामी बहन भी येह जानती है कि जो चीज़ जिस काम के लिए बनाई जाए, अगर उस काम में न आए, तो बेकार है, लिहाज़ा जो इस्लामी बहन अपने ख़ालिक़ो मालिक को न पेहचाने, उस की बन्दगी व इ़बादत न करे वोह नाम की बन्दी तो है, ह़क़ीक़त में नहीं बल्कि एक बेकार चीज़ है । इस लिए हम केह सकती हैं कि इ़बादत व बन्दगी से बन्दी, बन्दी है और इसी से उस की फ़लाहे़ दुन्यवी व नजाते उख़रवी है ।

मगर अफ़्सोस ! दुन्या की नुहूसत जहां हमें अपने रब्बे करीम की बारगाह में ह़ाज़िरी के इरादे से बाज़ रखती है, वहीं इस की फ़िक्र बन्दगी व आमाले ख़ैर से भी रोकती है । ज़रा सोचिए ! जब दुन्या की फ़िक्र बाइ़से रुकावट है, तो ख़ुद दुन्या किस क़दर रुकावट का बाइ़स होगी, ह़ालांकि येह दुन्या इ़बादत व बन्दगी बजा लाने की जगह है और **अल्लाह** पाक ने हम सब को इसी मक़्सद के लिए पैदा फ़रमाया है । लिहाज़ा हम सब पर लाज़िम है कि हर एतिबार से उस की बन्दगी बजा लाएं और अपने हर फ़ेल को अपने मालिक व ख़ालिक़ की मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ सर अन्जाम दें क्यूंकि अगर हम ने बा वुजूदे क़ुदरत **अल्लाह** पाक की इ़बादत या उस की रिज़ा का ख़याल न रखा बल्कि अपनी शहवत की पैरवी में लगी रहीं और उस की इ़बादत व बन्दगी से मुंह मोड़ा, तो ज़रूर अपने मालिको मौला की त़रफ़ से मलामत और सज़ावार क़रार पाएंगी ।

www.dawateislami.net

एक दिन मरना है आख़िर मौत है कर ले जो करना है आख़िर मौत है
याद रख हर आन आख़िर मौत है बन तू मत अन्जान आख़िर मौत है
मरते जाते हैं हज़ारों आदमी आ़क़िलो नादान आख़िर मौत है
क्या ख़ुशी हो दिल को चन्दे ज़ीस्त से ग़मज़दा है जान आख़िर मौत है
मुल्के फ़ानी में फ़ना हर शै को है सुन लगा कर कान आख़िर मौत है
बारहा **इल्मी** तुझे समझा चुके मान या मत मान आख़िर मौत है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बारगाहे ख़ुदावन्दी तक रसाई ह़ासिल करने के ज़राएअ़ अगर्चे बहुत ज़ियादा हैं मगर इन में सब से ज़ियादा महबूब ज़रीआ़ फ़राइज़ की अदाएगी है । जैसा कि एक ह़दीसे क़ुद्सी में **अल्लाह** करीम का फ़रमाने आ़लीशान है : मेरा बन्दा जिन चीज़ों के ज़रीए मेरा क़ुर्ब चाहता है, उन में मुझे सब से ज़ियादा फ़राइज़ पसन्द हैं ।[1]

याद रखिए ! हर मुसलमान पर दो क़िस्म की इबादात फ़र्ज़ हैं : एक वोह जिन का तअ़ल्लुक़ ज़ाहिरी आज़ा व जवारेह़ से है, यानी नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, निकाह़, ख़रीदो फ़रोख़्त वग़ैरा जबकि दूसरी वोह जिन का तअ़ल्लुक़ क़ल्ब से है, मसलन मुन्जिय्यात यानी आ़जिज़ी व इख़्लास और तवक्कुल वग़ैरा का ह़ुसूल और बात़िनी गुनाह मसलन तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद वग़ैरा से बचाव और मोहलिकात यानी हलाकत में डालने वाली चीज़ों जैसा कि झूट, ग़ीबत, चुग़ली और बोहतान वग़ैरा । हमें इन सब के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी मालूमात ह़ासिल करनी चाहिए ।

1... بخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، ۴/۲۴۸، حدیث: ۶۵۰۲

www.dawateislami.net

सहाबिय्यात और शौक़े इबादत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! फ़राइज़ो वाजिबात की अदाएगी हम पर लाज़िम है जो हम ने हर सूरत में करनी है और अगर हम कसरत से ज़िक्रो फ़िक्र और दीगर इबादात न भी कर सकीं, तो येही हमारे लिए काफ़ी है। अलबत्ता रब्बे करीम का मज़ीद फ़ज़्लो करम पाने के लिए हमें चाहिए कि दीगर इबादात भी गाहे ब गाहे बजा लाएं। आइए ! अपने दिल में इबादत का ज़ौक़ो शौक़ पैदा करने के लिए चन्द सहाबिय्याते तय्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُنَّ की इबादात के वाक़िआत सुनती हैं कि वोह मुक़द्दस हस्तियां किस क़दर इबादत करती थीं। चुनान्चे,

एक बार **अल्लाह** के महबूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद शरीफ़ में तशरीफ़ लाए, तो देखा कि दो सुतूनों के दरमियान एक रस्सी बंधी हुई है। उस के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया, तो मालूम हुवा कि येह रस्सी जनाबे ह़मना बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने बांध रखी है, जब वोह खड़ी हो कर नमाज़ पढ़ती पढ़ती थक जाती हैं, तो इस का सहारा ले लेती हैं। इस पर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद फ़रमाया कि उन्हें चाहिए कि वोह उतनी ही नमाज़ पढ़ा करें जिस क़दर ताक़त रखती हैं और जब थक जाया करें, तो बैठ जाएं।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान कर्दा ह़दीसे पाक में एक सहाबिय्या "**ह़मना बिन्ते जह़श** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا" के मस्जिद में नमाज़ पढ़ने का तज़किरा है। याद रखिए ! येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी की बात है, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बाद ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने औ़रतों को मस्जिद में आने से मन्अ़ कर दिया था। जैसा

1... ابو داود، کتاب التطوع، باب التحاس فی الصلاۃ، ۲/۵۰، حدیث: ۱۳۱۲

www.dawateislami.net

कि ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه ने औ़रतों को मस्जिद से रोक दिया और ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा (رَضِیَ اللهُ عَنْهَا) ने इस की ताईद की और फ़रमाया कि अगर ह़ुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) भी आज के ह़ालात देखते, तो औ़रतों को मस्जिद से रोक देते ।[1]

बयान कर्दा ह़दीसे पाक में बैठ कर नफ़्ल नमाज़ पढ़ने का भी तज़किरा है । तो इस ह़वाले से मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर खड़े हो कर नवाफ़िल पढ़ते पढ़ते थक जाए, तो उसे चाहिए कि बैठ कर पढ़े या कुछ देर आराम कर ले, जैसा कि अगर खड़े खड़े नवाफ़िल पढ़ते थक गया है, तो बैठ कर पढ़े, इस बैठने में اِنْ شَآءَ الله क़ियाम का सवाब मिलेगा या अगर नमाज़े नफ़्ल से थक गया है, तो कुछ देर आराम के लिए बैठ जाए, इस आराम में नफ़्ल का सवाब मिलेगा क्यूंकि येह आराम आइन्दा नफ़्ल की तय्यारी के लिए है । जो आ़दत इ़बादत की तय्यारी के लिए हो, वोह इ़बादत है । इस लिए कहा जाता है कि आ़लिम की नींद इ़बादत है कि इस के ज़रीए़ वोह बहुत से काम करेगा ।[2]

ख़ातूने जन्नत और नफ़्ली इबादत

इसी त़रह़ ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत की इ़बादत के मुतअ़ल्लिक़ आप के शहज़ादे, इमामे ह़सन رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपनी वालिदए माजिदा, ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا को इस ह़ालत में भी देखा है कि आप رَضِیَ اللهُ عَنْهَا मस्जिदे बैत के मेह़राब में सारी सारी रात नमाज़ पढ़ती रेहतीं, यहां तक कि सुब्ह़ तुलूअ़ हो जाती ।[3] येही नहीं बल्कि एक

1...मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 382

2...मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 264

3...मदारिजुन्नुबुव्वत, क़िस्म : पन्जुम, बाब : अव्वल दर ज़िक्रे औलाद, वस्ल दुख़्तरान आं ह़ज़रत عَلَيْهِ السَّلَام, 2 / 461

www.dawateislami.net

रिवायत में तो यहां तक है कि सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا और अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ وَجۡهَهُ الۡكَرِيۡم ने शादी के पेहले तीन दिन और रात इस ह़ालत में बसर किए कि दिन के वक़्त रोज़ा रखते और रात इबादत में गुज़ारते, यहां तक कि चौथे रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **अल्लाह** करीम आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम भेजता है और इरशाद फ़रमाता है कि अ़ली और फ़ात़िमा ने तीन दिन से नींद और बिस्तर को तर्क कर रखा है, इबादत और रोज़ों में मसरूफ़ हैं, उन से इरशाद फ़रमाइए कि **अल्लाह** पाक तुम्हारी वज्ह से मुक़र्रब मलाइका पर फ़ख़्र फ़रमा रहा है और येह कि तुम दोनों बरोज़े क़ियामत गुनहगारों की शफ़ाअ़त करोगे।[1]

अ़त़ा कर आफ़ियत तू नज़्ओ क़ब्रो ह़श्र में या रब
वसीला फ़ात़िमा ज़हरा का कर लुत़्फ़ो करम मौला

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 98)

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते ह़मना बिन्ते जह़श और ख़ातूने जन्नत, सय्यिदा फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की इबादात से मालूम हुवा कि येह नेक हस्तियां फ़राइज़ के साथ साथ हर वक़्त इबादते इलाही की त़रफ़ मुतवज्जेह रेहतीं, रातों को जाग कर इबादत व मुनाजात (दुआ) में मसरूफ़ रेहतीं, येही नहीं बल्कि सय्यिदा ख़ातूने जन्नत को **अल्लाह** पाक की इबादत और उस के ज़िक्रो अज़्कार से इस क़दर महब्बत थी कि अपने घरेलू काम काज करने के साथ साथ यादे इलाही से कभी ग़ाफ़िल न होतीं। चुनान्चे,

---

1...الروض الفائق، المجلس الثامن والاربعون: في زواج علی...الخ، ص ۲۷۸

www.dawateislami.net

खाना पकाते वक़्त भी तिलावत

अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا खाना पकाने की ह़ालत में भी क़ुरआने पाक की तिलावत जारी रखतीं।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने ! ख़ातूने जन्नत, सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا को इबादत का कितना ज़ौक़ो शौक़ था कि आप घरेलू मसरूफ़िय्यत के दौरान भी ज़बान से क़ुरआने करीम की तिलावत जारी रखतीं मगर अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना कई नादान ख़वातीन घर के काम काज के दौरान गाने सुनती हैं, फ़िल्में ड्रामे देखती हैं, गोया गाने बाजों के बिग़ैर उन के काम ही नहीं होते। इसी त़रह़ बाज़ इस्लामी बहनें बच्चों को सुलाते हुवे भी त़रह़ त़रह़ की लोरियां सुनाती हैं या गाने गुनगुना रही होती हैं लेकिन शहज़ादिए रसूल, ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा बतूल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि जब इन के जिगर गोशे, जनाबे ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا) सो रहे होते, तो एक त़रफ़ आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا हाथों से पंखा झोल रही होतीं, तो दूसरी त़रफ़ ज़बान से कलामे इलाही की तिलावत से उन के क़ुलूबो अज़्हान को मुनव्वर फ़रमा रही होतीं।[2]

सह़ाबिय्यात और तिलावते क़ुरआन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को बचपन में सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا ने तिलावते क़ुरआन की जो लोरियां सुनाई थीं, वोह उन के लहू में इस त़रह़ रच बस गई थीं कि इस जहाने फ़ानी से कूच के बाद भी नेज़े की नोक पर आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की ज़बान से

1...सफ़ीनए नूह़, ह़िस्सा : दुवुम, स. 35
2...सफ़ीनए नूह़, ह़िस्सा : दुवुम, स. 35

www.dawateislami.net

तिलावत जारी थी । याद रखिए ! सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के मक़ामे रफ़ीअ़ से कोई येह मत समझे कि येह शायद उन की ख़ुसूसिय्यत थी बल्कि तिलावते क़ुरआन से मह़ब्बत तो तमाम सह़ाबिय्याते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُنَّ की फ़ित़रत में शामिल थी । चुनान्चे,

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे वरक़ा अन्सारिया رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद की बेहतरीन क़ारिया थीं, शबो रोज़ तिलावत में मसरूफ़ रेहतीं, हर रात आप के घर से तिलावत की आवाज़ सुनाई दिया करती । एक रात ख़िलाफ़े मामूल जब आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की आवाज़ सुनाई न दी, तो अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने सुब्ह़ होते ही इरशाद फ़रमाया : आज रात मैं ने अपनी ख़ाला, ह़ज़रते उम्मे वरक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की तिलावत की आवाज़ नहीं सुनी । जब उन के घर तशरीफ़ ले गए, क्या देखते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे वरक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا उसी रात इस दारे फ़ानी से कूच फ़रमा चुकी हैं ।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सुना आप ने कि हमारी सह़ाबिय्याते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُنَّ को क़ुरआने करीम से कैसी बे मिसाल मह़ब्बत थी कि कोई घर में काम काज करते और बच्चों को सुलाते हुवे तिलावते क़ुरआन करती, तो कोई सारी सारी रात तिलावते क़ुरआन करती हुई गुज़ार देतीं । **ऐ काश** ! हमें भी इबादत व तिलावते क़ुरआन का ऐसा ज़ौक़, शौक़ नसीब हो जाए और हमारा कोई लम्ह़ा फ़ुज़ूल कामों में बसर न हो । **ऐ काश** ! हमारी हर घड़ी ज़िक्रो दुरूद के सबब रह़मत भरी गुज़रे । **ऐ काश** ! गाने बाजे सुनने और गुनगुनाने की हमारी आ़दते बद निकल जाए और हम घरेलू कामों में मश्ग़ूल हों या कहीं और, हर वक़्त हमारे लबों पर तिलावते क़ुरआन, ज़िक्रो दुरूद और नाते रसूल जारी रहे ।

1...الاصابة ، رقم:۱۲۲۹۸، امرورقة بنت عبدالله، ۸/۴۸۷ ماخوذا

www.dawateislami.net

इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी
करम हो करम या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश मुरम्मम, स. 105)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

नफ़्ली रोज़े और सहाबिय्यात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सहाबिय्यात رَضِیَ اللهُ عَنْهُنَّ जिस तरह नफ़्ल नमाज़ों और तिलावते क़ुरआन की आदी थीं, इसी तरह सहाबिय्यात फ़र्ज़ रोज़ों के साथ साथ नवाफ़िल रोज़े भी रखतीं थीं क्यूंकि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं और सवाब तो इतना है कि जी चाहता है बस रोज़े रखती ही चली जाएं। उम्मुल मोमिनीन, हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साहिबे मेराज صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : जो बन्दा रोज़े की हालत में सुब्ह करता है, उस के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और उस के आज़ा तस्बीह करते हैं और आस्माने दुन्या पर रेहने वाले (फ़िरिश्ते) उस के लिए सूरज डूबने तक मग़फ़िरत की दुआ करते रेहते हैं, अगर वोह एक या दो रक्अतें पढ़ता है, तो येह आस्मानों में उस के लिए नूर बन जाती हैं और हूरे ईन (यानी बड़ी आंखों वाली हूरों) में से उस की बीवियां केहती हैं : **ऐ अल्लाह** ! इस को हमारे पास भेज दे, हम इस के दीदार की बहुत ज़ियादा मुश्ताक़ हैं। और अगर वोह لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ، سُبْحٰنَ اللهِ، اَللهُ اَكْبَر पढ़ता है, तो सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस का सवाब सूरज डूबने तक लिखते रेहते हैं।[1]

1... شعب الایمان، باب فی الصیام، فضائل الصوم، ۳/۲۹۹، حدیث: ۳۵۹۱

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नफ़्ल रोज़ों पर ह़ासिल होने वाले अज्रो सवाब के हुसूल के लिए हमें भी चाहिए कि हम कसरत से नफ़्ल रोज़े रख कर अज्रो सवाब ह़ासिल करें ।

सदक़ा व ख़ैरात और सह़ाबिय्यात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हम सह़ाबिय्यात की इबादात के ह़वाले से सुन रही हैं । राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करना जहां बहुत बड़ी सआ़दत है, वहीं येह एक अ़ज़ीम इबादत भी है । क़ुरआने पाक में कई मक़ामात पर इस की तरग़ीब और फ़ज़ाइल मौजूद हैं । जैसा कि रब्बे करीम पारह 3, सूरए बक़रह, आयत नम्बर 261 में इरशाद फ़रमाता है :

مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ؕ وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۱﴾

(پ۳، البقرۃ: ۲۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन की कहावत जो अपने माल **अल्लाह** की राह में ख़र्च करते हैं, उस दाने की त़रह़ जिस ने उगाईं सात बालें, हर बाल में सौ दाने और **अल्लाह** इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिए चाहे और **अल्लाह** वुस्अ़त वाला, इ़ल्म वाला है ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस आयते करीमा को सामने रखते हुवे अगर सह़ाबिय्यात की ह़याते त़य्यिबा के इस रुख़ को देखा जाए, तो मालूम होगा कि उन्हों ने कभी भी माल की मह़ब्बत को दिल में जगह न दी बल्कि बसा अवक़ात जो कुछ पास आया, उसे राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिया । जैसा कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने उम्मुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की

www.dawateislami.net

ख़िदमत में एक लाख दराहिम भेजे, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने वोह सब दिरहम एक ही दिन में राहे ख़ुदा में तक़्सीम कर दिए और अपने लिए कुछ भी बचा कर न रखा।[1]

इसी त़रह़ एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की बहन, ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने एक बांदी फ़रोख़्त की, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا के शौहरे नामदार, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने अपनी किसी ग़रज़ के लिए उस बांदी की फ़रोख़्त शुदा रक़म मांगी। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अ़र्ज़ की : मैं तो येह सारी रक़म सदक़ा करने की निय्यत कर चुकी हूं।[2]

येही नहीं बल्कि ऐसी बहुत सी मिसालें सह़ाबिय्याते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُنَّ की ह़याते त़य्यिबा से दी जा सकती हैं कि उन्हों ने कभी भी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने से गुरेज़ न किया। आ़म त़ौर पर कहा जाता है कि औ़रतें अपने ज़ेवरात से बहुत मह़ब्बत करती हैं मगर क़ुरबान जाइए सह़ाबिय्यात के मुक़द्दस जज़्बे पर ! एक मरतबा सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ईद के ख़ुत्बे में उन्हें वाज़ो नसीह़त फ़रमाते हुवे सदक़ा व ख़ैरात का हुक्म दिया, तो उन्हों ने अपने कानों की बालियां और अंगूठियां तक सदक़ा कर दीं।[3]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! तारीख़ ऐसे वाक़िआ़त से भरी पड़ी है कि सह़ाबिय्यात और दीगर सालिह़ात ने कभी भी मालो दौलत को जम्अ़ कर के न रखा बल्कि जब भी जहां भी राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का मौक़अ़ मुयस्सर आया, फ़ौरन ख़र्च कर दिया और अफ़्सोस ! एक हम हैं कि अपनी और अपने बच्चों की दुन्यावी ज़िन्दगी की बेहतरी के लिए बहुत

1...मदारिजुन्नुबुव्वत, क़िस्म : पन्जुम, बाब : दुवुम, उम्मुल मोमिनीन सय्यिदा आ़इशा, 2 / 473

2...مسلم، کتاب السلام، باب جواز ارداف...الخ، ص۹۲۵، حدیث: ۶۹۳۵مفھوما

3...ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب خطبۃ یوم العید، ۱/۴۲۱، حدیث: ۱۱۴۳مفھوما

www.dawateislami.net

कुछ जम्अ़ करती रेहती हैं मगर उख़रवी ज़िन्दगी की बेहतरी के लिए कुछ जम्अ़ करने के मुतअ़ल्लिक़ नहीं सोचतीं, ह़ालांकि हम ने जो कुछ जम्अ़ कर रखा है, उस में हमारा कुछ नहीं क्यूंकि हमारा वोही है जो इस्तिमाल कर लिया या राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिया।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है, इन्सान केहता है : **मेरा माल, मेरा माल**। ह़ालांकि ऐ इब्ने आदम ! तुम्हारा माल वोही है जो तुम ने खा कर फ़ना कर दिया या पेहन कर बोसीदा कर दिया या सदक़ा कर के आगे भेज दिया।[1]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमें चाहिए कि रब्बे करीम ने हमें जो माल अ़त़ा किया है, उस में से कुछ न कुछ राहे ख़ुदा में ख़र्च करती रहें मगर अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना हम ने तवक्कुल व क़नाअ़त का दामन छोड़ दिया, आज रिश्वत सतानी का जो बाज़ार गर्म है और घरों में बे बरकती का रोना रोया जा रहा है, इस की एक बड़ी वज्ह आज की औ़रत भी है क्यूंकि आज की औ़रत की ज़रूरिय्यात हैं कि पूरा होने का नाम ही नहीं लेतीं, आए दिन की शॉपिंग और नित नए डीज़ाइन्ज़ के मल्बूसात व जवेलरी की फ़रमाइशों ने शौहरों को नाजाइज़ आमदनी के ज़राएअ़ इख़्तियार करने पर मजबूर कर दिया है, राहे ख़ुदा में ख़र्च करना तो एक त़रफ़ रहा, कसीर आमदनी के बा वुजूद हर त़रफ़ येही रोना रोया जाता है कि **पूरा नहीं होता**। आज घरों में नाचाक़ियों का भी एक बड़ा सबब येही है कि औ़रतों ने अपने हाथों से अपने घरों को बरबाद करने का बेड़ा उठा रखा है। वोह घर जो कभी अम्न का गेहवारा हुवा करते थे, मर्द शाम को थका मांदा घर आता, तो बीबी बच्चों को देख कर थकन भूल जाता, आज वोह घर के

1 ... مسلم، کتاب الزهد والرقائق، باب الدنیا سجن المومن ... الخ، ص ۱۲۱۰، حدیث: ۷۴۲۰

www.dawateislami.net

बजाए बाहर सुकून महसूस करता है कि घर जाते ही रोज़ की तरह फिर सुनना पड़ेगा कि मुझे येह चाहिए, वोह चाहिए। अल ग़रज़ ! ऐसी कई मिसालें हैं।

इस में शक नहीं कि ताली दोनों हाथों से बजती है और घर को अम्न का गेहवारा बनाने के लिए मर्द व औरत दोनों को अपना अपना किरदार अदा करना चाहिए, लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम अपना किरदार बख़ूबी निभाएं और कभी मर्दों से ऐसे मुतालबात न करें कि उन्हें हमारी वज्ह से किसी गुनाह के काम पर मजूबर होना पड़े बल्कि तवक्कुल का दामन हमेशा थामे रेहना चाहिए और जो रूखी सूखी मिले, उस पर सब्रो शुक्र करना चाहिए और हमेशा अपनी आख़िरत को बेहतर बनाने के लिए कोशिश करनी चाहिए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तब्लीगे़ दीने इस्लाम और सहाबिय्यात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस्लाम में तब्लीगे़ दीन बड़ी अहम इबादत है कि तमाम इबादात का फ़ाएदा अपनी ज़ात को होता है मगर इस का फ़ाएदा दूसरों को होता है और इस में कोई शक नहीं कि बेहतर वोही है जो अपनी ज़ात के साथ साथ दूसरों की इस्लाह़ को भी पेशे नज़र रखे। एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदतुना दुर्रह बिन्ते अबू लहब رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : बेहतरीन बन्दा कौन है ? तो इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक से सब से ज़ियादा डरने वाला, सिलए रेह़मी (यानी रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) करने वाला, अच्छी बातें बताने वाला और बुराइयों से रोकने वाला।[1] गोया कि जो इस्लामी बहन

1...تفسیر روح المعانی، پ۴، سورۃ آل عمران، تحت الآیۃ:۱۰۴، ۲/۳۲۶

www.dawateislami.net

अच्छी बातों का हुक्म दे और बुराइयों से रोके, वोह **अल्लाह** करीम, उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उस की किताब (यानी कुरआने करीम) की नियाबत का फ़रीज़ा सर अन्जाम देती है।[1]

याद रखिए ! तब्लीग़ बेहतरीन जिहाद है।[2] जैसे तब्लीग़ करना बेहतरीन इबादत है, ऐसे ही तब्लीग़ छोड़ देना बदतरीन जुर्म।[3] लिहाज़ा तब्लीगे़ दीने इस्लाम यानी नेकी की दावत को आ़म करने के लिए सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُنَّ का किरदार अगर देखा जाए, तो येह बात रोज़े रौशन की त़रह़ वाज़ेह़ नज़र आती है कि इस मैदान में भी सह़ाबिय्यात किसी भी त़रह़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से पीछे न रहीं बल्कि कई जलीलुद क़द्र सह़ाबा इन्ही सह़ाबिय्याते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُنَّ की इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में इस्लाम की अबदी व सरमदी नेमतों से मालामाल हुवे। मसलन अमीरुल मोमिनीन, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ अपनी बहन की इनफ़िरादी कोशिश के नतीजे में ईमान लाए। इसी त़रह़ सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की नेकी की दावत से मुतास्सिर हो कर दामने मुस्त़फ़ा को थामा। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا जब अपनी क़ौम समेत मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुईं, तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने अपने शौहर मालिक बिन नज़र को भी इस्लाम की दावत पेश की, येह सआ़दत चूंकि उस के नसीब में न थी, लिहाज़ा वोह अपने कुफ़्र पर डटा रहा बल्कि नाराज़ हो गया और फिर बाद में मुल्के शाम जा कर हलाक हो गया।[4] जब उस की हलाकत

1...تفسیر روح المعانی، پ۴، سورۃ آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۰۴، ۲/۳۲۶ مفہوما

2...تفسیر کبیر، پ۴، سورۃ آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۰۴، ۳/۳۱۶

3...तफ़्सीरे नई़मी, पा. 4, सूरए आले इ़मरान, तह़्तुल आयत : 104, 4 / 72

4...الاستیعاب، کتاب کنی النساء، رقم: ۳۵۹۷، ام سلیم بنت ملحان، ۴/۴۹۴ مفہوما

www.dawateislami.net

की ख़बर हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا को मिली, तो उस वक़्त हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक बहुत छोटे थे। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने इरादा कर लिया कि अभी कुछ अ़र्सा निकाह़ न करेंगी।[1] फिर जब इस अ़ह्द को कुछ अ़र्सा गुज़र गया, तो हज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने इन से निकाह़ की ख़्वाहिश का इज़्हार किया। चूंकि वोह अभी मुसलमान न हुवे थे, इस लिए आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने फ़रमाया : मुझे येह ज़ेबा नहीं कि मैं एक मुश्रिक से निकाह़ करूं। फिर फ़रमाने लगीं : ऐ अबू त़ल्ह़ा ! क्या तुम नहीं जानते कि जिन ख़ुदाओं की तुम इबादत करते हो, उन्हें तो बनी फ़ुलां के एक बढ़ई ग़ुलाम ने तराशा है, अगर उन्हें आग में रखोगे, तो वोह उन्हें जला देगी। येह सुन कर उस वक़्त तो वोह चले गए मगर येह बात उन के दिल में घर कर गई। एक रिवायत में है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने फ़रमाया : ऐ अबू त़ल्ह़ा ! क्या तुम नहीं जानते कि जिस ख़ुदा की तुम इबादत करते हो, वोह तो ज़मीन से उगने वाला एक दरख़्त है, जिसे फ़ुलां क़बीले के एक ह़ब्शी ने तराशा है ? उन्हों ने इक़रार किया, तो फ़रमाने लगीं : इस के बा वुजूद तुम्हें शर्म नहीं आती कि ज़मीन से उगने वाली एक लकड़ी को सजदा करते हो ! जिसे फ़ुलां क़बीले के ह़ब्शी ने तय्यार किया है। तो क्या अब गवाही देते हो कि **अल्लाह** के सिवा कोई माबूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** के रसूल हैं ? अगर येह गवाही देते हो, तो मैं शादी को तय्यार हूं और तुम्हारे क़बूले इस्लाम के इलावा कोई और महर का इरादा भी नहीं रखती। इस पर हज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने सोचने के लिए वक़्त मांगा और चल दिए, जब

1...طبقات کبریٰ، رقم: ۴۵۷۱، ام سلیم بنت ملحان، ۸/۳۱۳ ماخوذا

www.dawateislami.net

क़दरे ग़ौरो फ़िक्र के बाद वापस आए, तो शहादतैन पढ़ते हुवे इस्लाम क़बूल कर लिया । फिर ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अपने बेटे, ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ को हुक्म दिया कि वोह उन का निकाह़ पढ़वा दें ।[1]

दीन को तरजीह़ (Priority) दीजिए !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की दीन से मह़ब्बत और तब्लीग़े दीन की कोशिश मरह़बा ! कि जब उन्हें ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ की सूरत में एक मज़बूत़ सहारा मिल रहा था, जो मालदार थे, अपने दौर के मुअ़ज़्ज़ज़ लोगों में शामिल थे, इ़ज़्ज़तो ह़श्मत के मालिक थे, जब उन्हों ने पैग़ामे निकाह़ भेजा, तो ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने ख़ुश होने की बजाए, अपनी क़िस्मत पर नाज़ करने की बजाए, ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ के मालो दौलत की त़रफ़ तवज्जोह देने की बजाए और अपने मुस्तक़्बिल के अच्छे अच्छे ख़्वाब देखने की बजाए, दीन और इस्लाम की दावत देने को सब पर तरजीह़ दी, इस्लाम की ख़िदमत करने को उन्हों ने तरजीह़ दी, नेकी की दावत देने को उन्हों ने तरजीह़ दी और अपने इस अ़मल से उन्हों ने येह बता दिया कि दीन की मह़ब्बत, दीन का प्यार, दीन की ख़िदमत की सोच, नेकी की दावत को तरजीह़ देने का जज़्बा और दीन की तब्लीग़ का जज़्बा ज़ियादा अहम है । इस से अन्दाज़ा लगाएं कि उन्हें दीन से कितना प्यार और तब्लीग़े दीन से कितनी मह़ब्बत थी कि अपनी ज़ात से मुतअ़ल्लिक़ बेहतरियों में भी दीन और नेकी की दावत को पेहले नम्बर पर रखा । अब हमें भी सोचना

---

1 ...طبقات کبریٰ، رقم: ۴۵۷۱، ام سلیم بنت ملحان، ۸/۳۱۳، ۳۱۴ مفهوما

www.dawateislami.net

चाहिए कि हम कितनी नेकी की दावत देतीं हैं, तब्लीगे़ दीन का येह अहम फ़रीज़ा हम कितना अदा करती हैं, ह़ालांकि नेकी की दावत देना बहुत बड़ी इबादत व नेकी है। चुनान्चे,

एक मरतबा नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा फ़रमा थे कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللهُ عَنْه ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! लोगों में सब से अच्छा कौन है ? फ़रमाया : लोगों में से वोह सब से अच्छा है जो कसरत से क़ुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तक़ी हो, सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो और सब से ज़ियादा सिलए रेह़मी (यानी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो।[1] ह़ज़रते सय्यिदुना काबुल अह़बार رَضِیَ اللهُ عَنْه का इरशाद है : जन्नतुल फ़िरदौस ख़ास उस शख़्स के लिए है जो اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر करे, यानी नेकी का हुक्म दे और बुराई से मन्अ़ करे।[2]

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर आप भी नेकी की दावत के येह फ़ज़ाइल ह़ासिल करना चाहती हैं, तो दावते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर इस्लामी बहनों के 8 मदनी कामों के ज़रीए नेकी की दावत आ़म कर के कसीर अज्रो सवाब ह़ासिल कीजिए। अपने दिल में मज़ीद इबादत का जज़्बा बढ़ाने के लिए आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक से वाबस्ता हो जाइए और हर बुध को होने वाले इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत कर लीजिए।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...مسند امام احمد، ۱۰/۴۰۲، حدیث: ۲۷۵۰۴

2...تنبیہ المغترین، ص ۲۳۶

www.dawateislami.net

मेहमान नवाज़ी के आदाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे मेहमान नवाज़ी के चन्द आदाब सुनती हैं : पेहले 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए : (1) जो शख़्स (बा वुजूदे क़ुदरत) मेहमान नवाज़ी नहीं करता, उस में भलाई नहीं ।[1] (2) आदमी की कम अ़क़्ली है कि वोह अपने मेहमान से ख़िदमत ले ।[2] (3) सुन्नत येह है कि मेहमान को दरवाज़े तक रुख़्सत करने जाए ।[3] ❖ मेहमान को चाहिए कि अपने मेज़बान की मसरूफ़िय्यात और ज़िम्मेदारियों का लिह़ाज़ रखे । ❖ ह़ज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेहमान को चार बातें ज़रूरी हैं : (1) जहां बिठाया जाए, वहीं बैठे । (2) जो कुछ उस के सामने पेश किया जाए, उस पर ख़ुश हो (येह न हो कि केहने लगे : इस से अच्छा तो मैं अपने ही घर खाया करता हूं या इसी क़िस्म के दूसरे अल्फ़ाज़) । (3) मेज़बान से इजाज़त लिए बिग़ैर वहां से न उठे और (4) जब वहां से जाए, तो उस के लिए दुआ करे ।[4] ❖ घर या खाने वग़ैरा के मुआ़मलात में किसी क़िस्म की तन्क़ीद करे, न ही झूटी तारीफ़ । मेज़बान भी मेहमान को झूट के ख़त़रे में डालने वाले सुवालात न करे, मसलन केहना **"हमारा खाना कैसा था ? आप को पसन्द आया या नहीं ?"** ऐसे मौक़ेअ़ पर अगर ना पसन्द होने के बा वुजूद मेहमान मुरव्वत (शर्माशर्मी) में खाने की झूटी तारीफ़ करेगा, तो गुनहगार होगा । इस त़रह़ का

1...مسند امام احمد، مسند الشامیین، ۶/ ۱۴۲، حدیث: ۱۷۴۲۴

2...جامع صغیر، ص ۲۸۸، حدیث: ۴۶۸۶

3...ابن ماجه، کتاب الاطعمه، باب الضیافة، ۴/ ۵۲، حدیث: ۳۳۵۸

4...فتاوی هندیه، کتاب الکرابیه، باب ثانی عشر...الخ، ۵/ ۳۴۴

www.dawateislami.net

सुवाल भी न करे कि "**आप ने पेट भर कर खाया या नहीं ?**" कि यहां भी जवाबन झूट का अन्देशा है कि आ़दते कम ख़ोरी या परहेज़ी या किसी भी मजबूरी के तह़्त कम खाने के बा वुजूद इसरार व तकरार से बचने के लिए मेहमान को केहना पड़ जाए कि "**मैं ने ख़ूब डट कर खाया है ।**" ❖ मेज़बान को चाहिए कि मेहमान से वक़्तन फ़ वक़्तन कहे कि "**और खाओ**" मगर इस पर इसरार न करे ।[1] कहीं इसरार की वज्ह से ज़ियादा न खा जाए और येह उस के लिए नुक़्सान देह हो । ❖ मेज़बान को बिल्कुल ख़ामोश न रेहना चाहिए और येह भी न करना चाहिए कि खाना रख कर ग़ाइब हो जाए बल्कि वहां ह़ाज़िर रहे ।[2]

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिए मक्तबतुल मदीना की दो कुतुब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) और 120 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**सुन्नतें और आदाब**" और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दो रिसाले "**101 मदनी फूल**" और "**163 मदनी फूल**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिए और पढ़िए ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

1...فتاوی ھندیہ، کتاب الکرابیہ، باب ثانی عشر...الخ، ۵/۳۴۴

2...فتاوی ھندیہ، کتاب الکرابیہ، باب ثانی عشر...الخ، ۵/۳۴۵

www.dawateislami.net

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़हा	मज़ामीन	सफ़हा
हफ़्तावार इजतिमाअ़ के बयानात का शिडयूल	4	ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन से मह़ब्बत	38
इजमाली फ़ेहरिस्त	5	मुख़्तसर तआ़रुफ़	39
किताब पढ़ने की निय्यतें	6	इमामे ह़ुसैन की इ़बादत	40
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	7	नमाज़ व रोज़े के पाबन्द	41
पेशे लफ़्ज़	9	बच्चों की अच्छी तरबियत करें	44
(1) दुख्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही	11	तिलावते क़ुरआन का जज़्बा	45
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	11	क़ुरआन के बा अ़मल आ़लिम	45
बयान सुनने की निय्यतें	12	तिलावते क़ुरआन और नमाज़ से मह़ब्बत	46
फ़ारूक़े आज़म की एक ख़ानदान की ख़ैर ख़्वाही	13	सदक़ा व ख़ैरात	47
सय्यिदुना फ़ारूक़े आज़म का मुख़्तसर तआ़रुफ़	16	करीम हो तो ऐसा	47
भूके बच्चों वाली ख़ातून की ख़ैर ख़्वाही	17	सदक़ा देने से माल कम नहीं होता	48
माज़ूर, नाबीना, बूढ़ी औ़रत की मदद	18	दूसरा मदनी फूल	49
ख़ैर ख़्वाही की तारीफ़	20	आ़जिज़ी इख़्तियार कीजिए	50
ख़ैर ख़्वाही के फ़ज़ाइल	21	सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब	51
एक शराबी को फ़ारूक़े आज़म की नसीह़त	23	**(3) करबला वालों के करीमाना अन्दाज़**	52
अमीरे अहले सुन्नत और ख़ैर ख़्वाहिए उम्मत	25	दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	52
मक़्रूज़ की इमदाद	27	बयान सुनने की निय्यतें	53
बीमारों की इ़यादत	29	करीम हो तो ऐसा	57
मेहमान नवाज़ी की सुन्नतें और आदाब	31	(1) एक एक हज़ार दीनार की पांच थैलियां	59
(2) इमाम ह़ुसैन की इ़बादात	33	(2) चरवाहे को नवाज़ दिया	59
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	33	सख़ावत व सदक़े के मुतअ़ल्लिक़ फ़रामीने मुस्त़फ़ा	61
बयान सुनने की निय्यतें	34	अनोखी सख़ावत	61
मह़ब्बते इमामे ह़ुसैन का अज्र	35	रिसाला "**इमामे ह़ुसैन की करामात**" का तआ़रुफ़	66
मह़ब्बते इमामे ह़ुसैन की वज्ह से मग़्फ़िरत हो गई	36		

www.dawateislami.net

(1) गालियां देने वाले को दुआ़एं दीं	68
(2) गाली देने वाले के साथ ख़ैर ख़्वाही	69
(3) मैं ने अपना ग़ुस्सा पी लिया	70
तिलावते क़ुरआन के आदाब	72
(4) यज़ीद का बुरा किरदार	75
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	75
बयान सुनने की निय्यतें	75
सरकार की महब्बत पाने का नुस्ख़ा !	76
दुश्मने सहाबा का अन्जाम	78
यज़ीदे पलीद की ख़ुराफ़ात	80
ख़ुराफ़ाते यज़ीद	82
यज़ीद का बुरा किरदार और उस की वज्ह	84
दुन्या से बे रग़बती किसे केहते हैं ?	86
यज़ीद की ख़ुराफ़ात और उन का बॉइकॉट	87
यज़ीद की एक बुराई शराब नोशी	87
शराब ने क्या गुल खिलाए ?	88
यज़ीद की दूसरी बुराई गाने बाजे	89
यजीद की तीसरी बुराई सूद	90
यज़ीद की चौथी बुराई नमाज़ न पढ़ना	93
हुस्ने सुलूक के निकात	96
(5) वक़्त की अहम्मिय्यत	98
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	98
बयान सुनने की निय्यतें	99
ग़फ़्लत की नींद और ज़िन्दगी की बरबादी	100
इब्ने आदम का ठिकाना	102
उ़म्र और बर्फ़ में मुशाबहत	103
माल तक़्सीम करने की भी मोहलत न मिली	104
अभी वक़्त है	108
टाइम पास करने वाले की इस्लाह़	110
एक साल के रोज़े रखे	110
वक़्त ज़ाएअ़ करने वाले उमूर	111
इन्टरनेट (Internet)	112
मोबाइल फ़ोन	113
सीरते ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन	115
अमीरे अहले सुन्नत और वक़्त की क़द्र	116
मुख़्तसर तआ़रुफ़	118
वक़्त की क़द्र करने का त़रीक़ा	119
सुरमा लगाने की सुन्नतें और आदाब	121
(6) मक़ामे सह़ाबा ओ अहले बैत	122
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	122
बयान सुनने की निय्यतें	123
फ़ारूक़े आज़म की अस्ह़ाबे कह्फ़ से मुलाक़ात	124
सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बे मिस्ल हैं	127
शाने सह़ाबा और क़ुरआनो ह़दीस	128
अहले बैत की महब्बत की अहम्मिय्यत	131
ह़ौज़े कौसर क्या है ?	134
सह़ाबए किराम और इश्क़े रसूल	134
सह़ाबए किराम और अहले बैत की महब्बत	136
ताज़ीमे सादात के आदाब	139
(7) इस्लाम मुकम्मल ज़ाबित़ए ह़यात है	142
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	142
बयान सुनने की निय्यतें	143
फ़ारूक़े आज़म का बेहतरीन जवाब	145
मां-बाप से मुतअ़ल्लिक़ इस्लामी तालीमात	148
बड़े भाई के ह़वाले से इस्लामी तालीमात	153

www.dawateislami.net

बड़े भाई से अच्छा सुलूक कीजिए	154	लोगों को नसीहत	180
छोटों पर शफ़्क़त	154	शरीअ़त के मुक़ाबले में बाप दादा की	
बड़े बहन भाइयों पर छोटों के हुक़ूक़	155	पैरवी करना कैसा ?	181
छोटे बहन भाइयों पर बड़ों के हुक़ूक़	156	बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब	183
रिश्तेदारों के ह़वाले से इस्लामी ज़ाबित़ए ह़यात	156	**(9) उम्मते मुस्त़फ़ा की ख़ुसूसिय्यात**	185
मुआ़शरती एतिबार से इस्लामी रेहनुमाई		दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	185
के रौशन पेहलू	159	बयान सुनने की निय्यतें	186
ग़रीब नवाज़ और पड़ोसियों के हुक़ूक़	161	तौरात में उम्मते मुह़म्मदिय्या के फ़ज़ाइल	187
पड़ोसियों के लिए भी गोश्त ख़रीदते थे	161	उम्मते सरकार के अफ़्ज़ल होने की वज्ह	192
अह़काम के ह़वाले से इस्लामी ज़ाबित़ा	162	उम्मते मह़बूब के 6 फ़ज़ाइल	194
सिलए रेह़मी के निकात	163	कम उ़म्री में इ़ल्म का ह़ुसूल	195
(8) मुआ़शरे की रुसूमात	165	ह़िफ़्ज़ व याद दाश्त की सलाह़िय्यत	195
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	165	तीन लाख अह़ादीसे मुबारका	196
बयान सुनने की निय्यतें	166	नबियों के ह़क़ में उम्मते मह़बूब की गवाही	197
रुके दरया को जारी कर दिया फ़ारूक़े आज़म ने	167	त़ाऊ़न इस उम्मत के लिए रह़मत है	198
माहे सफ़र से मुतअ़ल्लिक़ फैले बे बुन्याद ख़यालात	169	उम्मते मुह़म्मदिय्या पर अल्लाह करीम	
अ़रबों में माहे सफ़र को मन्हूस समझा जाता था	170	का ख़ास फ़ज़्लो करम	199
अस्ल नुहूसत तो गुनाहों में है	171	शबे क़द्र अ़त़ा की गई	200
बसन्त मेले और पतंगबाज़ी की आफ़ात	172	उम्मे अ़त्तार का ज़िक्रे ख़ैर	204
येह शादी हुई या एलाने जंग ?	174	लिबास पेहनने की सुन्नतें व आदाब	205
गाने बाजे	175	**(10) आला ह़ज़रत का तसव्वुफ़**	208
मेहंदी की रस्म	176	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	208
म्यूज़ीकल फ़ंक्शन	176	बयान सुनने की निय्यतें	209
मंगनी की रस्म	176	आला ह़ज़रत की बैअ़त व ख़िलाफ़त	210
दूध पिलाई की रस्म	177	तआ़रुफ़े आला ह़ज़रत और सीरते रज़ा	
आतशबाज़ी	177	की झल्कियां	213
"वेलन्टाइन डे" की ख़ुराफ़ात	178	तसव्वुफ़ किस चीज़ का नाम है ?	215
ग़मी, ख़ुशी की नाजाइज़ रस्मों में मुब्तला		इ़यादत के लिए शह़र से बाहर गए	216

www.dawateislami.net

बनावटी सूफ़ी	217
शरीअ़त और त़रीक़त का बाहमी तअ़ल्लुक़	217
ज़ाहिरी और बात़िनी शरीअ़त की ह़क़ीक़त	218
रोज़े में एक वक़्त खाना	221
सफ़रो ह़ज़र में नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम	223
नमाज़ से मह़ब्बत का आ़लम	223
तक़्सीमे रसाइल की धूमें मचाइए	224
हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत की तरग़ीब	225
हफ़्तावार इजतिमाअ़ में क्या होता है ?	226
पाकीज़ा बातें चुनने वाले	226
विलादत व सिलसिलए नसब	227
नाम रखने के आदाब	228
(11) तबर्रुकात की बरकतें	230
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	230
बयान सुनने की निय्यतें	231
क़ह़ूत़साली से नजात मिल गई !	232
तबर्रुकात के फ़वाइद	232
तबर्रुक किसे केहते हैं ?	233
फ़ैज़ पाने के लिए कामिल एतिमाद शर्त़ है	233
क़मीसे यूसुफ़ से शिफ़ा मिलना	234
मक़ामे इब्राहीम से तबर्रुक	235
बद गुमानी से बचिए !	237
नबिय्ये पाक के तबर्रुकात	240
तबर्रुक के अदब की बरकतें	244
जश्ने विलादत के बारे में मक्तूबे अ़त्तार	248
ज़रूरी एह़तियात़	249
तक़्सीमे रसाइल की धूमें मचाइए	251
हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत की तरग़ीब	252
हफ़्तावार इजतिमाअ़ में क्या होता है	253
छींकने की सुन्नतें और आदाब	254
(12) आक़ा करीम की उम्मत से मह़ब्बत	256
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	256
बयान सुनने की निय्यतें	257
लो वोह आया मेरा ह़ामी	258
बरोज़े क़ियामत फ़िक्रे उम्मत का अन्दाज़	261
उम्मत पर शफ़्क़तो रह़मत की चन्द मिसालें	264
उम्मत के लिए दुआ़एं	266
रोने का सबब क्या है ?	269
(1) ता क़ियामत "**उम्मती उम्मती**" फ़रमाएंगे	271
(2) मुह़द्दिसे आज़म ने फ़रमाया	272
12 हफ़्ते तक इजतिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत कर लीजिए	273
तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब	274
ताज़ियत के मदनी फूल	275
(13) कमालाते मुस्त़फ़ा	277
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	277
बयान सुनने की निय्यतें	278
बकरी कान झाड़ती उठ खड़ी हुई !	279
कमालाते मुस्त़फ़ा की झलक	281
मोजिज़े की तारीफ़	284
जामेउ़ल मोजिज़ात	284
सब से औला व आला हमारा नबी !	286
खाने में बरकत हो गई	289
ख़ैर ख़्वाही कीजिए !	291
ख़ैर ख़्वाही की फ़ज़ीलत	293

www.dawateislami.net

इजतिमाअ़ की तरग़ीब ?	293	**(15) इमदादे मुस्त़फ़ा के वाक़िआ़त**	321
ख़ज़ाने लुटाने वाले आक़ा صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم	294	दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	321
तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब	296	बयान सुनने की निय्यतें	322
बैठने की चन्द सुन्नतें और आदाब	297	तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब	323
(14) इमाम मालिक का इश्क़े रसूल	299	सैफ़ुल्लाह की फ़रयाद	324
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	299	ग़ैरुल्लाह से मदद मांगना कैसा ?	327
बयान सुनने की निय्यतें	299	हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की तरग़ीब	332
इमाम मालिक और मस्जिदे नबवी का अदब	301	सरकार ने चेहरे की सियाही दूर फ़रमा दी	333
क्या हम दिल में बुरा जानती हैं ?	303	दर्द और सूजन से नजात बख़्श दी	334
इमाम मालिक की विलादत व सिलसिलए नसब	305	हरनी की फ़रयाद	338
आ़लिमे मदीना का हुल्यए मुबारक	306	ऊंट की फ़रयाद	339
आ़लिमे मदीना के अल्क़ाबात	306	ख़ुश्बू की सुन्नतें और आदाब	340
आ़लिमे मदीना के असातिज़ा की तादाद	306	**(16) अम्बियाए किराम की नेकी की दावत**	343
दर्सो तदरीस और फ़तवा लिखना	307	दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	343
इमाम मालिक की शान में 2 रिवायात	307	बयान सुनने की निय्यतें	344
इमाम मालिक और ह़दीसे पाक का अदब	308	ह़ज़रते नूह़ علیہ السلام और नेकी की दावत	345
बिच्छू का डसना मगर दर्से ह़दीस न छोड़ना	309	ह़ज़रते मूसा की नेकी की दावत	347
चेहरे का रंग तब्दील हो जाता	309	ह़ज़रते सुलैमान की नेकी की दावत	351
इमाम मालिक और ताज़ीमे ख़ाके मदीना	310	नेकी की दावत में ह़िक्मते अ़मली की अहम्मिय्यत	355
क़ज़ाए ह़ाजत में एह़तियातें	310	मीठे बोल की बरकतें	356
इमाम मालिक की इ़बादतो रियाज़त	312	मुबल्लिग़ा को कैसा होना चाहिए ?	357
तक़्सीमे रसाइल की तरग़ीब	316	मुबल्लिग़ा के औसाफ़	359
इश्क़े रसूल के तक़ाज़े	316	त़ाइफ़ में नेकी की दावत	361
(1) इत़ाअ़त व इत्तिबाअ़	317	जंगे उ़ह़ुद से भी सख़्त दिन	362
(2) ताज़ीमो तकरीम	317	सर के बालों की सुन्नतें और आदाब	364
(3) कसरते ज़िक्र	317	**(17) ग़ौसे पाक का ख़ानदान**	366
(4) दोस्तों से दोस्ती, दुश्मनों से दुश्मनी	318	दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	366
चलने की सुन्नतें और आदाब	319	बयान सुनने की निय्यतें	367

www.dawateislami.net

वालिदैने ग़ौसे पाक का तक़्वा	368	मदनी इन्आ़मात को अपना लीजिए	406
ग़ौसे पाक के नानाजान का तआ़रुफ़	369	बैअ़त होने के निकात	407
अ़ब्दुल्लाह सौमई़ का मक़ामो मर्तबा	369	**(19) अवरादो वज़ाइफ़ की बरकतें**	410
शराब के मटके तोड़ दिए	376	दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	410
वालिदए मोह़तरमा के औसाफ़	378	बयान सुनने की निय्यतें	411
18 पारे सुना दिए	378	वज़ीफ़े की बरकत से बेड़ियां टूट गईं	415
ग़ौसे पाक की फूफीजान की करामत	380	सुब्ह़ो शाम की तारीफ़	418
औलियाए किराम की मह़ब्बत की बरकात	381	अवरादो वज़ाइफ़ के ज़रूरी आदाब	421
शैत़ाने के ख़ुफ़्या वार को नाकाम बना दिया	381	आमाल और दुआ़ओं की 7 शराइत़	421
बैअ़त होने की तरग़ीब	383	क़ुरआन से इ़लाज	425
घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब	384	क़ुरआनी सूरतों के फ़ज़ाइल व	
(18) औलियाए किराम के पाकीज़ा औसाफ़	387	ख़ुसूसिय्यात और फ़वाइद	426
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	387	सलाम करने की सुन्नतें और आदाब	428
बयान सुनने की निय्यतें	387	**(20) सह़ाबिय्यात और शौक़े इ़बादत**	430
ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और क़स्रते इ़बादत	389	दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	430
ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की शान	390	बयान सुनने की निय्यतें	431
ग़ौसे पाक और हमारा किरदार	391	शबे उ़रूसी इ़बादत में गुज़ारी	432
इ़बादते इलाही की बरकतें	392	तख़्लीक़े इन्सानी का मक़्सद !	433
(1) रात भर इ़बादत और दिन भर रोज़ा	393	बन्दी, बन्दगी से है	435
(2) बिग़ैर चराग़ के घर रौशन रेहता	394	सह़ाबिय्यात और शौक़े इ़बादत	437
(3) ऐ नफ़्स ! तू कितना सोएगा ?	395	ख़ातूने जन्नत और नफ़्ली इ़बादत	438
ख़ौफ़े ख़ुदा की अहम्मिय्यत	395	खाना पकाते वक़्त भी तिलावत	440
ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े ख़ुदा	396	सह़ाबिय्यात और तिलावते क़ुरआन	440
फ़ारूक़े आ़ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़ौफ़े ख़ुदा	398	नफ़्ली रोज़े और सह़ाबिय्यात	442
अपने ईमान की फ़िक्र कीजिए	399	सदक़ा व ख़ैरात और सह़ाबिय्यात	443
ग़ौसे पाक और तेह़्सीले इ़ल्मे दीन	401	तब्लीग़े दीने इस्लाम और सह़ाबिय्यात	446
इ़ल्मे दीन की बरकतें	402	दीन को तरजीह़ दीजिए !	449
अस्लाफ़ का शौक़े इ़ल्मे दीन	404	मेहमान नवाज़ी के आदाब	451

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

نام کتاب	مؤلف / مصنف / متوفی	مطبوعہ
قرآن مجید		
کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
تفسیر مدارک	ابوالبرکات عبداللہ بن احمد بن محمود النسفی، متوفی ۷۱۰ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۱ھ
تفسیر صاوی	علامہ احمد بن محمد صاوی	دارالفکر بیروت ۱۴۲۱
تفسیر بغوی	ابومحمد حسین بن مسعود البغوی، متوفی ۵۱۶	دارالکتب العلمیہ بیروت
تفسیر قرطبی	امام محمد بن احمد القرطبی، متوفی ۶۷۱ ھ	دارالفکر بیروت
الدرالمنثور	امام جلال الدین بن ابوبکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر بیروت
تفسیر روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۰۵ھ
روح المعانی	ابوالفضل شہاب الدین سید محمود آلوسی، متوفی ۱۲۷۰ ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر بیضاوی	عبداللہ بن عمر بیضاوی، متوفی ۶۸۵ ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر خازن	علی بن محمد بن ابراہیم البغدادی، متوفی ۷۴۱ھ	مطبعہ میمنیہ مصر ۱۳۱۷ھ
تفسیر البحر المحیط	ابوحیان محمد بن یوسف اندلسی، متوفی ۷۴۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۲ھ
تفسیر ابن کثیر	اسماعیل بن عمر بن کثیر دمشقی شافعی، متوفی ۷۷۴ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
تفسیر جمل	علامہ سلیمان جمل	کراچی
تفسیر کبیر	امام فخر الدین محمد بن عمر رازی شافعی، متوفی ۶۰۶ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ
تفسیر خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
نورالعرفان	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	پیر بھائی کمپنی لاہور
تفسیر نعیمی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبہ اسلامیہ، لاہور
تفسیر صراط الجنان	مفتی ابوصالح محمد قاسم قادری	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۵
غرائب القرآن مع غرائب القرآن	شیخ الحدیث حضرت علامہ عبدالمصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
علم القرآن	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابوحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲۶۱ھ	دارالکتاب العربی بیروت ۲۰۰۸ء
سنن ابی داود	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۲۱ھ
سنن الترمذی	امام ابوعیسی محمد بن عیسی ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی، متوفی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۲۰۰۹

www.dawateislami.net

سنن ابن ماجه	امام ابوعبد الله محمد بن يزيد ابن ماجه، متوفى ٢٧٣ھ	دار المعرفه بيروت
مستدرک	ابو عبد الله امام محمد بن عبد الله حاکم نيشاپوری، متوفى ٤٠٤ھ	دار المعرفه بيروت ١٤١٨ھ
مسند امام احمد	ابو عبد الله امام احمد بن محمد بن حنبل الشيبانی، متوفى ٢٤١ھ	دار الفکر بيروت ١٤١٤ھ
المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سليمان بن احمد طبرانی، متوفى ٣٦٠ھ	دار الکتب العلمية بيروت ١٤٢٢ھ
شعب الايمان	امام ابوبکر احمد بن حسين بن علی البيهقی، متوفى ٤٥٨ھ	دار الکتب العلمية بيروت ١٤٢١ھ
مصنف ابن ابی شيبه	محمد بن ابی شيبة العبسی، متوفى ٢٣٥ھ	دار الفکر بيروت ١٤٢٧ھ
موسوعة ابن ابی الدنيا	حافظ ابوبکر عبد الله بن محمد المعروف بابن ابی الدنيا	مکتبة العصرية بيروت
مسند ابی يعلی	ابو يعلی احمد بن علی موصلی، متوفى ٣٠٧ھ	دار الکتب العلمية بيروت ١٤١٨ھ
مسند فردوس	ابو شجاع شيرويه بن شهر دار بن شيرويه الديلمی، متوفى ٥٠٩ھ	دار الکتب العلميه بيروت ١٩٨٦
القربی ابن بشکوال	ابو القاسم خلف بن عبد الملک بن بشکوال، متوفى ٥٧٨	دار الکتب العلمية بيروت
المعجم الکبير	امام ابو القاسم سليمان بن احمد طبرانی، متوفى ٣٦٠ھ	دار احياء التراث العربی بيروت ١٤٢٢ھ
شرح السنة	امام ابو محمد الحسين بن مسعود بغوی	دار الکتب العلمية بيروت ١٤٢٤ھ
السنن الکبری	امام احمد بن شعيب نسائی، متوفى ٣٠٣ھ	دار الکتب العلميه بيروت ١٤١١ھ
جامع الاصول	امام مبارک بن محمد شيبانی المعروف بابن اثير جزری، متوفى ٦٠٦ھ	دار الکتب العلمية بيروت
الترغيب والترهيب	امام زکی الدين عبد العظيم بن عبد القوی منذری، متوفى ٦٥٦ھ	دار الفکر بيروت ١٤١٨ھ
القول البديع	حافظ امام محمد بن عبد الرحمن سخاوی، متوفى ٩٠٢ھ	مؤسسة الريان بيروت ١٤٢٢ھ
الاحسان ترتيب صحيح ابن حبان	امير علاء الدين علی بن بلبان فارسی، متوفى ٧٣٩ھ	دار الکتب العلميه بيروت، ١٤١٧ھ
جامع صغير	امام جلال الدين بن ابوبکر سيوطی شافعی، متوفى ٩١١ھ	دار الکتب العلمية بيروت ١٤٢٥ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدين بن ابوبکر سيوطی شافعی، متوفى ٩١١ھ	دار الکتب العلمية بيروت ١٤٢١
مجمع الزوائد	حافظ نور الدين علی بن ابی بکر هيثمی، متوفى ٨٠٧ھ	دار الفکر بيروت ١٤٢٠ھ
کنز العمال	علامه علی متقی بن حسام الدين برهان پوری، متوفى ٩٧٥ھ	دار الکتب العلمية بيروت ١٤١٩ھ
مشکاة المصابيح	ولی الدين محمد بن عبد الله خطيب، متوفى ٧٤٢ھ	دار الفکر بيروت ١٤٢١ھ
التمهيد	امام يوسف بن عبد الله محمد بن عبد البر، متوفى ٤٦٣ھ	دار الکتب العلميه بيروت
عمدة القاری	امام بدر الدين ابو محمد محمود بن احمد عينی، متوفى ٨٥٥ھ	دار الفکر بيروت ١٤١٨ھ
ارشاد الساری	علامه شهاب الدين احمد بن محمد قسطلانی	مکتبة الرشد ١٤٢٠ھ
فيض القدير	عبد الرؤوف المناوی، متوفى ١٠٠٣ھ	دار الکتب العلمية، بيروت
التيسير	عبد الرؤوف المناوی، متوفى ١٠٠٣ھ	مکتبه امام شافعی رياض ١٤٠٨ھ
شرح زرقانی علی الموطا	محمد زرقانی بن عبد الباقی بن يوسف، متوفى ١١٢٢ھ	دار احياء التراث العربی بيروت
مرآة المناجيح	حکيم الامت مفتی احمد يار خان نعيمی، متوفى ١٣٩١ھ	ضياء القرآن، لاہور

www.dawateislami.net

تفہیم البخاری	علامہ غلام رسول رضوی	فیصل آباد پنجاب
الدرالمختار	محمدبن علی المعروف بعلاء الدین حصکفی، متوفی ۱۰۸۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ
الجوہرۃ النیرۃ	ابوبکربن علی حدادعلیہ الرحمہ، متوفّٰی ۸۰۰ھ	کراچی پاکستان
ردالمحتار	محمدامین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
کتاب الدرر الحکام	قاضی ملاخسرو حنفی	میر محمد کتب خانہ کراچی
فتاوی ھندیہ	شیخ نظام وجماعۃ من علماء الھند، متوفی ۱۱۶۱ھ	کوئٹہ
فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضافاؤنڈیشن لاہور
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
تنبیہ الغافلین	ابو اللیث نصر بن محمد بن احمد السمرقندی، متوفی ۳۷۳ھ	المکتبۃ الحقانیۃ پشاور
تنبیہ المغترین	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرانی	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۵ھ
قوت القلوب	شیخ محمد بن علی المعروف ابوطالب مکی، متوفی ۳۸۶ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
احیاء العلوم	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت ۲۰۰۰ء
احیاء العلوم	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
کیمیائے سعادت	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	انتشارات گنجینہ تہران ۱۳۷۹ھ
منہاج العابدین	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی، متوفی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
کتاب الکبائر	امام محمد بن احمد بن عثمان الذھبی، متوفی ۷۴۸ھ	پشاور پاکستان
الزہد الکبیر	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	مؤسسۃ الکتب الثقافیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
الروض الفائق	علامہ شعیب بن سعد الکافی، متوفی ۸۱۰ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ
الروض الریاحین	امام عبداللہ بن اسعد الیافعی، متوفی ۷۶۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
الانوار القدسیۃ	علامہ عبدالوہاب بن احمد شعرانی	المکتبۃ العلمیۃ بروت
حلیۃ الاولیاء	حافظ ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
البدور السافرۃ	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی، متوفی ۹۱۱	مؤسسۃ الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲ھ
کشف المحجوب	داتا گنج بخش علی بن عثمان ہجویری، متوفی ۴۶۵ھ	نوائے وقت پرنٹرز لاہور
جذب القلوب	شیخ عبدالحق محدث دھلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	النوریہ الرضویہ پبلشنگ کمپنی
رسالہ قشیریۃ	عبدالکریم ہوازن قشیری، متوفّٰی ۴۶۵ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
اخبار الاخیار	شیخ عبدالحق محدث دھلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	فاروق اکیڈمی خیرپور پاکستان
تاریخ ابن عساکر	امام علی بن حسن المعروف ابن عساکر، متوفی ۵۷۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
اسد الغابۃ	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	مراکش ۱۴۱۷ھ

www.dawateislami.net

ترتیب المدارک	عیاض بن موسیٰ مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
سیر اعلام النبلاء	امام محمد بن احمد بن عثمان ذھبی، متوفی ۷۴۸ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۷ھ
تذکرۃ الحفاظ	امام محمد بن احمد بن عثمان الذھبی، متوفی ۷۴۸ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
تہذیب الکمال	یوسف بن الزکی عبد الرحمن بن یوسف مزی، متوفّی ۷۴۴ھ	مؤسسۃ الرسالہ ۱۴۰۰ھ
بستان المحدثین	شاہ عبد العزیز محدث دہلوی، متوفی ۱۲۳۹ھ	کراچی
دلائل النبوۃ	امام ابو بکر احمد بن حسین بن علی البیہقی، متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
دلائل النبوۃ	ابو نعیم الاصبہانی	المکتبۃ العصریۃ
الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی	مراکش ۱۴۱۵ھ
مدارج النبوۃ	شیخ عبد الحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا گجرات
مواہب اللدنیۃ	علامہ شہاب الدین احمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
زرقانی علی المواھب	محمد زرقانی بن عبد الباقی بن یوسف، متوفی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت
شمائل ترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت
الشفا	عیاض بن موسیٰ مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
شرح الشفاء	علامہ قاری علی بن سلطان حنفی، متوفی ۱۰۱۴ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
سیرت سید الانبیا	شیخ کبیر مولانا محمد ہاشم ٹھٹھوی، متوفی ۱۱۷۴ھ	مظہر علم لاہور ۱۴۲۴ھ
سیرت مصطفےٰ	شیخ الحدیث حضرت علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
بستان الواعظین	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
بحر الدموع	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	مکتبۃ دار الفجر دمشق
عیون الحکایات	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
التبصرہ	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۳ھ
بھجۃ الاسرار	ابو الحسن علی بن یوسف، متوفی ۷۱۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۳ھ
قلائد الجواھر	علامہ محمد بن یحی الحلبی متوفی ۵۶۱ھ	ملتزم الطبع والنشر
حکایتیں اور نصیحتیں	مترجمین شعبہ تراجم المدینۃ العلمیہ (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
جنتی زیور	شیخ الحدیث حضرت علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	مفتی اعظم ہند محمد مصطفےٰ رضا خان، متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
الکامل	علامہ عبد اللہ بن عدی جرجانی، متوفی ۲۶۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
الاستیعاب	ابو عمر یوسف عبد اللہ بن محمد بن عبد البر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
طبقات ابن سعد	علامہ محمد بن سعد بن منیع ہاشمی، متوفی ۲۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۹۹۷ء
طبقات کبری	علامہ عبد الوہاب بن احمد بن علی احمد شعرانی	دارالفکر بیروت ۱۴۱۷ھ

www.dawateislami.net

تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین سیوطی، متوفی ۹۱۱	قدیمی کتب خانہ کراچی
الخصائص الکبری	امام جلال الدین سیوطی، متوفی ۹۱۱	دارالکتب العلمیہ بیروت
الصواعق المحرقۃ	علامہ احمد بن حجر ہیتمی مکی، متوفی ۹۷۴ھ	ملتان پاکستان ۱۴۱۰ھ
الیواقیت والجواہر	امام احمد بن علی الشعرانی، متوفی ۹۷۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
تبرکات کا ثبوت	مؤلفین شعبہ فیضان مدنی مذاکرہ المدینۃ العلمیہ (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
الریاض النضرۃ	امام ابو جعفر احمد محب طبری	دارالکتب العلمیہ بیروت
سعادۃ الدارین	علامہ یوسف بن اسماعیل النبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۲
فیضانِ صدیق اکبر	مؤلفین شعبہ فیضان صحابہ واہل بیت المدینۃ العلمیہ (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۳
فیضان فاروق اعظم	مؤلفین شعبہ فیضان صحابہ واہل بیت المدینۃ العلمیہ (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
عاشقِ اکبر	محمد الیاس عطار قادری رضوی دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
عمر بن عبد العزیز کی 425 حکایات	مؤلفین شعبہ اصلاحی کتب المدینۃ العلمیہ (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
مقدمہ احیاء العلوم	علامہ صدیق ہزاروی	پروگریس بکس
نزہۃ الخاطر الفاتر	علامہ علی القاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	قادری کتب خانہ لاہور ۲۰۰۳ء
سیرت غوث اعظم	علامہ عبد الرحیم خان قادری	شبیر برادرز لاہور ۱۴۳۱
غوث پاک کے حالات	مؤلفین شعبہ اصلاحی کتب المدینۃ العلمیہ (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
منے کی لاش	محمد الیاس عطار قادری رضوی دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
فیضان سید کبیر احمد رفاعی	مؤلفین شعبہ فیضان اولیاء وعلماء المدینۃ العلمیہ (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
فیضان بہاء الدین زکریا ملتانی	مؤلفین شعبہ فیضان اولیاء وعلماء المدینۃ العلمیہ (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
حیات اعلیٰ حضرت	مولانا ظفر الدین بہاری، متوفی ۱۳۸۲ھ	مکتبہ نبویہ لاہور ۲۰۰۳ء
فاضل بریلوی علمائے حجاز کی نظر میں	ڈاکٹر محمد مسعود احمد	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور ۲۰۰۰ء
تجلیات امام احمد رضا	خلیفہ مفتی اعظم ہند الحاج قاری محمد امانت رسول قادری	برکاتی پبلشر
فیضانِ اعلیٰ حضرت	محمد ریحان احمد قادری	شبیر برادرز لاہور ۱۴۳۴ھ
شہادت نواسۂ سید الابرار	محمد عبد السلام قادری	نوریہ رضویہ پبلی کیشنز لاہور ۲۰۰۰ھ
سوانح کربلا	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
سفینۂ نوح	مولانا شفیع اوکاڑوی	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
کرامات صحابہ	شیخ الحدیث حضرت علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
تذکرۂ امیرِ اہلسنت (قط2)	مؤلفین شعبہ امیر اہل سنت المدینۃ العلمیہ (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینۃ کراچی
مفتی دعوتِ اسلامی	مؤلفین شعبہ اصلاحی کتب المدینۃ العلمیہ (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینۃ کراچی
محبوب عطار کی 122 حکایات	مؤلفین شعبہ اصلاحی کتب المدینۃ العلمیہ (دعوت اسلامی)	مکتبۃ المدینۃ کراچی

www.dawateislami.net

امامِ اعظم کی وصیتیں	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
آدابِ مرشدِ کامل	مؤلفین شعبہ اصلاحی کتب المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
عطار کا پیارا	مؤلفین شعبہ فیضانِ اولیاء وعلما المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
بہشت کی کنجیاں	شیخ الحدیث حضرت علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
تربیتِ اولاد	مؤلفین شعبہ اصلاحی کتب المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
بہتر کون؟	مؤلفین شعبہ اصلاحی کتب المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
بدگمانی	مؤلفین شعبہ اصلاحی کتب المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
خوفِ خدا	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
غیبت کی تباہ کاریاں	محمد الیاس عطار قادری رضوی دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
نیکی کی دعوت	محمد الیاس عطار قادری رضوی دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	محمد الیاس عطار قادری رضوی دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
کراماتِ فاروقِ اعظم	محمد الیاس عطار قادری رضوی دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
بزرگانِ لاہور	پیر غلام دستگیر	مکتبۃ المدینہ کراچی
برکاتِ آلِ رسول	علامہ یوسف بن اسماعیل نبہانی، متوفی ۱۳۵۰ھ	مکتبہ قادریہ لاہور ۱۴۰۰ھ
سادات کرام کی عظمت	مؤلفین شعبہ فیضان مدنی مذاکرہ المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
فیضانِ سنّت	محمد الیاس عطار قادری رضوی دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
آدابِ طعام	محمد الیاس عطار قادری رضوی دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
یقینِ کامل کی برکتیں	مؤلفین شعبہ فیضان مدنی مذاکرہ المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
ولی اللہ کی پہچان	مؤلفین شعبہ فیضان مدنی مذاکرہ المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
سرکار کا اندازِ تبلیغِ دین	مؤلفین شعبہ فیضان مدنی مذاکرہ المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
سنتیں اور آداب	مؤلفین شعبہ فیضانِ صحابیات وصالحات المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
فکرِ مدینہ	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
اردو دائرۃ المعارف	دانش گاہ پنجاب	لاہور پاکستان
رسائلِ عطاریہ	محمد الیاس عطار قادری رضوی دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ کراچی
شرح شجرہ قادریہ	مؤلفین شعبہ فیضانِ صحابیات وصالحات المدینۃ العلمیہ (دعوتِ اسلامی)	مکتبۃ المدینہ کراچی
حدائقِ بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی
ذوقِ نعت	مولانا حسن رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ کراچی ۱۴۳۹ھ
قبالۂ بخشش	جمیل الرحمن خان قادری رضوی، متوفی ۱۳۴۳ھ	ضیاء الدین پبلیکیشنز کراچی
وسائلِ بخشش مرمّم	محمد الیاس عطار قادری رضوی دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ	مکتبۃ المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

इस्लामी बहनों के हफ़्तावार इजतिमाअ़ में बयानात का शिड्यूल



दुख्यारी उम्मत की ख़ैर ख़्वाही

पहला इज्तिमा, मुलख़्ख़स बकुम मुहर्रमुल हराम 1442 / 19 अगस्त 2020

इमामे हुसैन की इबादात

दूसरा इज्तिमा, 7 मुहर्रमुल हराम 1442 / 26 अगस्त 2020

वक़्त की अहम्मिय्यत

तीसरा इज्तिमा, 14 मुहर्रमुल हराम 1442 / 2 सितम्बर 2020

मक़ामे सब्रो रिज़ा ओ अहले बैत

चौथा इज्तिमा, 21 मुहर्रमुल हराम 1442 / 9 सितम्बर 2020

इस्लाम मुकम्मल ज़ाबितए हयात है

पांचवां इज्तिमा, 28 मुहर्रमुल हराम 1442 / 16 सितम्बर 2020



आक़ा करीम की उम्मत से महब्बत

पहला इज्तिमा, 4 रबीउल अव्वल 1442 / 21 अक्तूबर 2020

कमालाते मुस्तफ़ा

दूसरा इज्तिमा, 11 रबीउल अव्वल 1442 / 28 अक्तूबर 2020

इमाम मालिक का इश्क़े रसूल

तीसरा इज्तिमा, 18 रबीउल अव्वल 1442 / 4 नवम्बर 2020

इमदादे मुस्तफ़ा के वाक़िआत

चौथा इज्तिमा, 25 रबीउल अव्वल 1442 / 11 नवम्बर 2020



मुआशरे की रुसूमात

पहला इज्तिमा, 5 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1442 / 24 सितम्बर 2020

उम्मते मुस्तफ़ा की ख़ुसूसिय्यात

दूसरा इज्तिमा, 12 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1442 / 30 सितम्बर 2020

आला हज़रत का तसव्वुफ़

तीसरा इज्तिमा, 19 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1442 / 7 अक्तूबर 2020

तबर्रुकात की बरकतें

चौथा इज्तिमा, 26 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1442 / 14 अक्तूबर 2020



अम्बियाए किराम की नेकी की दावत

पहला इज्तिमा, 4 रबीउल आख़िर 1442 / 18 नवम्बर 2020

ग़ौसे पाक का ख़ानदान

दूसरा इज्तिमा, 9 रबीउल आख़िर 1442 / 25 नवम्बर 2020

औलियाए किराम के पाकीज़ा औसाफ़

तीसरा इज्तिमा, 16 रबीउल आख़िर 1442 / 2 दिसम्बर 2020

अवरादो वज़ाइफ़ की बरकतें

चौथा इज्तिमा, 23 रबीउल आख़िर 1442 / 9 दिसम्बर 2020

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Triconia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net